संबन्ध	जैनेटिव केस	Genitive case
संबोधन	वाकेटिव केस	Vocative case
सम्प्रदानम्	डेटिव	Dative case
समास	कम्पौंएड	Compound
सर्वनाम	प्रोनाउन	Pronoun
स्वर	वावल	Vowel
स्त्रीप्रत्ययः	फैमीनन टरमीनेशन	Faminine termination
स्त्रीलिंग	फैमीनन जंडर	Faminine gender

स्वर (*Vowels*) १६

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ

ए ऐ ओ औ अं अः

व्यञ्जन (*Consonants*) ३३

कवर्ग–	क ख ग घ ङ	Guttrals
चवर्ग–	च छ ज झ ञ	Palatals
टवर्ग–	ट ठ ड ढ ण	Linguals or Cereblos
तवर्ग–	त थ द ध न	Dentals
पवर्ग–	प फ ब भ म	Labials
अन्तस्थ–	य र ल व	Semi Vowels
ऊष्माण–	श ष स ह	Sibilants Aspirate

अनुस्वार — ं विसर्ग ः

संयुक्त अक्षर (*CombinedLetters*)

क् × ष = क्ष । ज् × ञ = ज्ञ । त् × र् = त्र

(टिप्पण)

१ सम्पूर्ण कवर्ग आदि अक्षरोंमें छोटा अ मिला हुवा है अन्यथा सब व्यञ्जनों की यह आकृति होती है क् ख् ग् घ् ङ् इत्यादि ।

२ ॐ यह अक्षर वेद में अनुस्वार के स्थान पर लगाया जाता है ॥

❀ सन्धि शिक्षा ❀

१ नियम ।

अ, इ, उ और ऋ इन अक्षरों के सामने अपने वर्ण का ह्रस्व या दीर्घ अ, इ उ, ऋ, पड़ा होतो दोनो मिलकर एक दीर्घ हो जाता है। जैसे-

अत्र + अस्ति = अत्रास्ति
मुनि + ईश्वरः = मुनीश्वरः
साधु + उक्तम् = साधूक्तम्
पितृ + ऋणम् = पितॄणम्

२ नियम ।

इ, उ, और ऋ के सामने अपने वर्ण को छोड़कर कोई दूसरा स्वर होतो इ को य्, उ को व्, और ऋ को र् होजावेगा । यथा-

दधि + आनय = दध्यानय
मधु + अरिः = मध्वरिः
धातृ + अंशः = धात्रंशः

३ नियम ।

अ के सामने इ, उ, और ऋ होतो क्रम से दोनों मिलकर इ का ए उ का ओ, ऋ का अर् हो जावेगा, इस को गुण कहते हैं।

उप + इन्द्रः = उपेन्द्रः
विवाह × उत्सवः = विवाहोत्सवः
ब्रह्म × ऋषिः = ब्रह्मर्षिः

४ नियम

अ के सामने ए, ओ, और कहीं २ ऋ आजानेसे दोनों मिलकर ए को ऐ, ओ को औ और ऋ को आर् हो जाता है। इस को वृद्धि कहते हैं। जैसे-

सा + एव = सैव
गङ्गा + ओघः = गङ्गौघः
दश × ऋणम् = दशार्णम्

ओम्

आचार्य कोशः

अर्थात्

हिंदी संस्कृतानुवाद कोष

जिसको

पण्डित रामचरणाचार्य शास्त्री संस्कृत-
प्रोफ़ेसर सादक अजर्टन कालेज
वहावलपुर ने निर्माण
किया

ACHARYA KOSHA

OR

A

Hindi-Sanskrit Dictionary

DESIGNED

To help Students of Schools, Colleges and Pathshalas

IN

Translation from Hindi into Sanskrit

BY

Pandit Ram Charna Acharya Shastri
Professor of Sanskrit
S. E. College, Bahawal Pur.

मार्गशिर सं० १९७१ विक्रम
प्रथम वार १०००

५ नियम ।

पदान्त अकार के सामने ए, ओ, आने पर अकार उन में लीन हो जाता है । जैसे-

हरे+अव=हरेऽव ॥ विष्णो + अव=विष्णोऽव ॥

६ नियम ।

ए, ऐ, ओ, औ, इनके सामने चाहे कोई स्वर आजाय, ए का अय्, ऐ को आय् ओ को अव् औ को आव् होजाता है । जैसे-

हरे+ए=हरये ॥ नै+अकः=नायकः ॥ विष्णो + ए=विष्णवे ॥

पौ× अकः = पावकः ॥

७ नियम ।

सम्बोधन में स्वर सन्धि नहीं होती । जैसे-

हे कृष्ण! अत्रागच्छ

८ नियम ।

द्विवचन का ई, ऊ, और ए हो उसके सामने कोई स्वर आजावे तो संधि नहीं होगी जैसे-

हरी एतौ । विष्णू इमौ । गङ्गे अमू ।

९ नियम ।

त्, द् के सामने च, छ होतो त्, द् को 'च्' होजाता है । ज झ, सामने होतो ज् ट, ठ, सामने आवे तो ट्, ड, ढ के सामने होने पर ड् बनजाता है । जैसेमहत् + चित्रम्= महच्चित्रम् । तद् + च= तच्च । तद् + छाया= तच्छाया । तद् + जितम्= तज्जितम् । तद् + झनत्कारः = तज्झनत्कार तद् + टीका = तट्टीका । महत् + ठकुरः = महट्ठकुरः । उत् + डयनम् =उड्डयनम् । उत् + ढौकते = उड्ढौकते ।

१० नियम ।

त्, द् के सामने लकार होतो त्, द्, का लकार हो जाता है न्, के सामने लकार हो तो अनुनासिक लकार बनता है । जैसे

महत् × लक्षणम्=महल्लक्षणम् । तद् × लयः=तल्लय विद्वान् + लिखति= विद्वाँल्लिँखति ।

ओम्

❀ प्रस्तावना ❀

पूर्ण ब्रह्म परमात्मा के चरण कमलों में कोटिशः अभिवादन करके अभिलषित कार्यका प्रारम्भ करते हैं प्रायः देखा जाता है कि जिस देश ने अथवा जिस भाषा ने उन्नति प्राप्त की है उसका मूल कारण केवलमात्र मातृभाषा की शिक्षा ही रही है इस के सिवाय और कोई हेतु नहीं हो सका जिस प्रकार एक अंगरेज इंगलिश पढ़ कर अपने देशको उन्नत कर सकता है वैसे संस्कृत पढ़ कर नहीं कर सकता और जैसे इंगलिश मातृ भाषा के द्वारा संस्कृत आदि भाषायें सुगमता से सीखने के योग्य होसकता है वैसे दूसरे उपाय से नहीं इसी प्रकार भारतवासी मनुष्य संस्कृत विद्या से जितना देश को लाभ पहुंचा सकता है उतना दूसरी भाषा से नहीं पहुंचा सकता एवं संस्कृत को हिंदी मातृभाषा द्वारा जैसे सुगम सीख सकता है वैसे दूसरे उपाय से नहीं सीख सकता। हमारे अनेक नवयुवक इस समय भी संस्कृत सीखने का उत्साह रखते हैं परन्तु मातृभाषा से संस्कृत की शिक्षा न होने से सफल मनोरथ नहीं हो सकते। यद्यपि इंगलिश से संस्कृत की शिक्षा के कई ग्रन्थ बने हैं। तथापि वह पर्याप्त नहीं हो सकते क्योंकि दोनों ज़बानों के नवीन प्रतीत होने से कठिनता वैसी की वैसी ही बनी रहती है। जो पुस्तकें हिंदी में मिलती हैं वह भी संस्कृत से हिंदी की शिक्षा देती हैं। जिसको कि पाठ्यप्रणालिका के सर्वथा विरुद्ध कहना चाहिये। इस लिये उनसे कोई अधिक लाभ भी नहीं होता जैसे मातृभाषा से शिक्षा का होना आवश्यक है वैसे ही सामयिक शब्दों का प्रयोग होना भी आवश्यक है इस के सिवाय भाषा सर्वव्यापिनी नहीं हो सकती। जब तक सर्वव्यापिनी न हो तब तक मुरदा ज़बान कहलाती है संस्कृत में यह दोनों अभाव विद्यमान हैं इस लिये बड़ा यत्न करने पर भी यह घर २ स्त्री पुरुषों में सर्वव्यापिनी नहीं हो सकी। अत एव ऐसी पुस्तकों की आवश्यकता है कि

१८ नियम ।

अनुस्वार के सामने जिस वग का अक्षर हो उसी वर्ग के पांचवे अक्षर में अनुस्वार बदल जाता है जैसे--

अं × कितः = अङ्कितः । अं + चितः = अञ्चितः । कुं + ठितः = कुण्ठितः
शां × तः = शान्तः । गुं × फितः = गुम्फितः

१९ नियम ।

विसर्ग के सामने क, ख, प, फ, श, प, स, हों तो विसर्ग का विसर्ग रहता है च, छ; हों तो श् ट, ठ, हों तो ष्, त, थ, हों तो स् होजाता है। जैसे-
रामः कुर्यात् । कृष्णः पठति । लक्ष्मणः शंसति ।
गौः×चरति = गौश्चरति । हरिः × टीकते = हरिष्टीकते । रामः × तत्र = रामस्तत्र

२० नियम ।

छोटे अकार के आगे विसर्ग हो और विसर्ग के सामने छोटा अकार हो अथवा वर्गों के पिछले तीन२ अक्षर और य, र, ल, व, ह, कुल बीस व्यञ्जन अक्षरों में से कोई सामने हो तो विसर्ग का ओ होजाता है जैसे---
रामः × अत्र = रामोऽत्र । रामः × गच्छति = रामोगच्छति ।
+ भाति = कृष्णोभाति । नमः + हरये = नमोहरये ।

२१ नियम ।

विसर्ग हो और विसर्ग के आगे छोटे अकार को छोड़ सर्ग का लोप हो जावेगा फिर सन्धि नहीं होगी जैसे-
ते = देवएति । सूर्यः × उदेति = सूर्यउदेति ।

२२ नियम ।

विसर्ग हो और विसर्ग के सामने कोई स्वर, या २० में से कोई अक्षर होतो विसर्ग का लोप होवेगा
मारता इह । नराः × यान्ति = नरा यान्ति ।

२३ नियम ।

आ को छोड़कर अन्य किसी स्वर के आगे विसर्ग हो और विसर्ग के आगे कोई स्वर अथवा २० नियम के २० अक्षरों में से कोई अक्षर होतो विसर्ग को र् हो जायगा । जैसे—
हरिः × अत्र = हरिरत्र । साधुः × नमति = साधुर्नमति ।

जो मातृभाषा हिंदी से संस्कृत की शिक्षादें और नवीन सामयिक शब्दों का प्रयोग सिखलायें।

प्रायः १०-१२ वर्ष से मेरा संबंध पाठशालाओं में तथा मिडिलस्कूलों से लेकर कालिज तक है। मुझे प्रतिसमय यही असुविधा उपस्थित रही कि कोई भी विद्यार्थी हिंदी से संस्कृत में चार पंक्तियों का अनुवाद यथेच्छ नहीं कर सकता है। न तो उन विचारों को कोई शब्द मिलता है न कोई क्रिया मिल सकती है। अक्षर २ और मात्रा २ के लिये अध्यापक का मुख ताकना पड़ता है परिणाम यह होता है कि अनेक विद्यार्थी संस्कृत को छोड़ देते हैं।

यह तो हुई पुरुषों में कठिनाई। इधर कन्याओं में देखिये उन को और भी अधिक कष्ट सहना पड़ता है। क्यू कि वह पुरुषों की भांति न तो इधर उधर फिर कर प्रयोजन सिद्ध करसकती हैं। और नाहीं घरोंमें सर्वत्र विश्वास योग्य अध्यापक मिल सकते हैं जहां कहीं कोई योग्य अध्यापक मिलताभी है वह भी एक दो घंटा ड्यूटी पूरी करके चल देता है फिर ऐसा कोई साधन उन के पास नहीं होता जिससे वह स्वयं अपनी योग्यता बढ़ा सकें। हज़ारों पुत्रीपाठशालाओं के होते भी संस्कृत का वैसा प्रचार नहीं हो सका जैसा कि होना चाहिये। कितनी हमारी पुत्रियां चाहतीं हैं कि प्राज्ञ, विशारद, शास्त्री की परीक्षायें दें परन्तु शिक्षाप्रणालीके कठिन होनेसे हताश होकर मौनावलम्बिनी हो जातीहैं।

इन सब कठिनाइयों को देखकर और संस्कृत को देशव्यापिनी भाषा बनाने के लिये "आचार्य्य कोष" का निर्माण किया गया है। इसमें सम्पूर्ण शिक्षा हिंदी से संस्कृत में लिखी गई है और जहां तक होसका है सामयिक शब्दों का प्रयोग रक्खा गया है। इस ग्रंथ में दो भाग हैं एक व्याकरणभाग तथा द्वितीय शब्दभाग।

व्याकरणभाग में प्रथम उच्चारण, उसके आगे अनुवाद, फिर अभ्यास दिये गए हैं। अभ्यासों की संख्या १६० से कहीं अधिक है। बोल चाल के शब्दों तथा मनोरञ्जक कथाओं के इलावा नीचे लिखे सामयिक शब्दों का प्रयोग दिखलाया गया है। जैसे—इंजन, स्टीम, रेल, तार, मोटरकार, बाईसिकल, ट्राइसिकल, फिटन, कोट, कमीज, वासकट, पतलून, बूट, नकटाई, कालर,

११ नियम ।

त्, द् के सामने नकार मकार होतो दोनो नकारमें परिवर्तित होजातेहैं जैसे
एतद् × नाम = एतन्नाम । एतद् × मधुरम् = एतन्मधुरम्

१२ नियम ।

पदान्त त् द् के सामने शकार होतो त् द् को च् और शकार को छकार होता है जैसे–

महद् ÷ शुभम् = महच्छुभम् ।

१३ नियम ।

क् ग् के सामने हकार हो तो घकार बनजाता है और त् द् के सामने हकार को धकार होजाता है जैसे –
वाग् ÷ हरिः = वाग्घरिः । तद् × हरिः = तद्धरिः

१४ नियम ।

पदान्त न के सामने चकार, छकार होवे तो न को अनुस्वार और श् हो जाता है । तकार सामने आवे तो अनुस्वार और स् होता है । शकार के परे होने पर न् को ञ् और शकार का छकार बनता है । जैसे–
तान् ÷ च = तांश्च । शार्ङ्गिन् ÷ छिन्धि = शार्ङ्गिश्छिन्धि । तान् ÷ तान् = तांस्तान् गर्जन् ÷ शत्रु = गर्जञ्छत्रु ।

१५ नियम ।

ह्रस्व स्वर के आगे पदान्त न हो और न के सामने कोई स्वर हो तो न द्वित्व [डबल] होजाता है । जैसे सन् × अच्युतः = सन्नच्युतः । गुणिन् एहि = गुणिन्नेहि ।

१६ नियम ।

मूर्धन्य षकार के सामने त्, थ्, आवे तो क्रम से ट्, ठ्, होजाता है । जैसे–
पेष् + ता = पेष्टा । षष् + थः = षष्ठः ।

१७ नियम ।

म् के सामने कोई व्यञ्जन हो तो अनुस्वार होता है और यदि स्वर होतो म् स्वर में चला जाता है जैसे––

रामम् + स्मर = रामंस्मर आम्रम् × आनय = आम्रमानय

फुटबाल, मैच, बटन, साबुन, इंगलैंड, जर्मनी, फ्रांस, रूस, अमेरिका, चीन, जापान, इत्यादि इंगलिश शब्द हैं। और अरबी फ़ारसी के जैसे– मुक़दमा, फ़ौजदारी, दीवानी, दफ़ा, कुरकी, इज्रा, ज़मानत, मुचलका, चालान, तमस्सुक, इक़रारनामा, गिरवी, अपील इत्यादि अदालती ग़ैर अदालती कितने ही प्रचलित शब्द दिखलाये गए हैं। हिंदी भाषा के प्रचलित शब्दों का नमूना जैसे–मूढ़ा, कुरसी, पिस्ता, चिलग़ोज़ा, बादाम, अख़रोट, फ़ालसा, पीलु, नारंगी, अंगूर, रवेल, नरगस, चीणा, मट्टर, मसूर, कंगनी, मकई, आलु, कचालु, तोरई, करेला, मेथी, गंडल, शलगम, अचार, मुरब्बा, धनिया, रत्ती, माश, तोला, छटांक, पाव, सेर, पंसेर, मन इत्यादि अनेकों प्रयोग दिये गए हैं।

इस से अतिरिक्त हिंदी भाषा के प्रचलित प्रयोग लिखे गए हैं कि जिन के लिये अनेकों अध्यापकों को सदा कठिनाई उपस्थित होती थी और विद्यार्थियों का सन्देह निवृत्त नहीं होता था जैसे–लिखरहा है। लिखता होगा। लिखरहा होगा। लिखा होगा। लिखने वाला है। देखा जारहा है देखा जारहा होगा देखा गया है। देखा गया होगा। देखा जाता था। देखाजाने वाला है इत्यादि। प्रयोजन यह कि व्याकरण का कोई अंश नहीं छोड़ा गया तथा प्रत्येक अंश संक्षेप रूप से सुगम बना कर इस प्रकार रक्खा गया है कि विद्यार्थी की बुद्धि में शीघ्रता से प्रवेश कर जाय।

दूसरा भाग शब्दों का है शब्दोंका उदाहरणमात्र ऊपर दे दिया गया है शब्द संख्या १०००० दश हज़ारसे कहीं अधिक है। केवल इतना नहीं किन्तु प्रायः प्रसिद्ध धातुओंके प्रयोग कृदन्तों (पार्टसीपल्स) में रूपान्तरूपों (काग्नेटिव) के साथ दिये गए हैं ताकि अनुवाद के समय कठिनाई न हो इस के अतिरिक्त संख्या और पूरण संख्या भी संख्या के साथ लिखे गए हैं। सर्वथा विद्यार्थियों की बुद्धिका विचार सामने रखकर इस की रचना की गई है।

स्कूल कालिजों के विद्यार्थियों के सुभीते के लिये जहां २ उचित समझा गया है वहां २ इंगलिश भी लिखी गई है। एवं अध्यापकों की सुगमता के लिये संस्कृत–इंगलिश तालिका भी दीगई है।

१८ नियम ।

अनुस्वार के सामने जिस वर्ग का अक्षर हो उसी वर्ग के पांचवे अक्षर में अनुस्वार बदल जाता है जैसे--

अं × कितः = अङ्कितः । अं + चितः = अञ्चितः । कुं + ठितः = कुण्ठितः

शां × तः = शान्तः । गुं × फितः = गुम्फितः

१९ नियम ।

विसर्ग के सामने क, ख, प, फ, श, ष, स, हों तो विसर्ग का विसर्ग रहता है च, छ, हों तो श् ट, ठ, हों तो ष्, त, थ, हों तो स् होजाता है। जैसे-

रामः कुर्यात् । कृष्णः पठति । लक्ष्मणः शंसति ।

गौः×चरति = गौश्चरति । हरिः × टीकते = हरिष्टीकते । रामः × तत्र = रामस्तत्र

२० नियम ।

छोटे अकार के आगे विसर्ग हो और विसर्ग के सामने छोटा अकार हो अथवा वर्गों के पिछले तीन२ अक्षर और य, र, ल, व, ह, कुल बीस व्यञ्जन अक्षरों में से कोई सामने हो तो विसर्ग का ओ होजाता है जैसे---

रामः × अत्र = रामोऽत्र । रामः × गच्छति = रामोगच्छति ।

कृष्णः + भाति = कृष्णोभाति । नमः + हरये = नमोहरये ।

२१ नियम ।

छोटे अकार के आगे विसर्ग हो और विसर्ग के आगे छोटे अकार को छोड़ कर कोई स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जावेगा फिर सन्धि नहीं होगी जैसे-

देवः × एति = देवएति । सूर्यः × उदेति = सूर्यउदेति ।

२२ नियम ।

बड़े आ के आगे विसर्ग हो और विसर्ग के सामने कोई स्वर, या २० नियम के २० अक्षरों में से कोई अक्षर होतो विसर्ग का लोप होवेगा

भारताः × इह = भारता इह । नराः × यान्ति = नरा यान्ति ।

२३ नियम ।

अ आ को छोड़कर अन्य किसी स्वर के आगे विसर्ग हो और विसर्ग के आगे कोई स्वर अथवा २० नियम के २० अक्षरों में से कोई अक्षर होतो विसर्ग को र् हो जायगा । जैसे—

हरिः × अत्र = हरिरत्र । साधुः × नमति = साधुर्नमति ।

ग्रन्थ को सामर्थ्य भर सुन्दर बनाने का यत्न किया गया है। ईश्वर की कृपा से संस्कृत सीखने का द्वार खुल गया प्रायमरी से लेकर बी० ए० तक और प्रवेशिका से लेकर शास्त्री तक के विद्यार्थी इस से लाभ उठा सकते हैं। ग्रन्थ-कर्त्ता अपने परिश्रम को तब सफल समझेगा जब पाठशालाओं और स्कूलों के विद्यार्थी इससे लाभ उठाकर सन्तुष्ट होंगे।

ग्रन्थ का सम्पादन थोड़ेकाल में अतिशीघ्रता से हुवा है अतएव त्रुटियों का रहजाना अधिक सम्भव है इस लिये विद्वज्जनों से मेरी प्रार्थना है कि जहां न्यूनता समझें मुझे सूचित करें ताकि द्वितीयवार ठीक हो जावे।

समर्पण।

दोहा—पतित पावन भगवान के, चरण कमल शिरनाय।
करों समर्पण ग्रन्थ यह, लीजे हाथ बढ़ाय ॥
दीनन के बंधु प्रभु दीन वचन सुन कान।
विरद आपना सुमरि कर हूजे कृपानिधान ॥

निवेदक—
रामचरणाचार्य शास्त्री
बहावलपुर (पंजाब)



२४ नियम ।

र् के सामने रकार होतो व्यञ्जन र् का लोप हो जावेगा और उससे पूर्ववर्ती स्वर दीर्घ बन जायगा-- जैसे —

पुनर् × रमते= पुनारमते। हरिर् × रम्यः = हरीरम्यः

शम्भुर् × राजते=शम्भूराजते ।

२५ नियम ।

स और एष के सामने छोटे अकार को छोड़ कर कोई स्वर या व्यञ्जन होतो विसर्ग का लोप होता है ॥ जैसे—

सः + रुद्र = सरुद्र । एषः + देव = एषदेव

२६ नियम ।

ऋ र ष से परे नकारको णकार होता है जैसे—

नृ + नाम् = नृणाम् । रामे × न = रामेण । पुष् × नाति = पुष्णाति ॥

२७ नियम ।

इकारादि स्वर क ड व र और विसर्ग के सामने प्रत्ययका स होतो ष् हो जाता है । जैसे—

मुनि × सु = मुनिषु । आयुः × सु = आयुः षु ।

व्याकरण (*Grammar*)

१ व्याकरण उसको कहते हैं जिससे शब्द औरशब्दार्थ का ज्ञान होताहै ।

२ व्याकरण के तीन विभाग हैं १ मं, शब्द (Words) २य, क्रिया [Verbs] ३य अव्यय [Indeclinables]

३ शब्द उसको कहते हैं जो किसी का नाम प्रकट करे जैसे-- मनुष्य, पशु, पक्षी, वृक्ष, जल, अग्नि, राम, कृष्ण, इत्यादि । सर्वनाम (Pronoun) भी शामिल हैं ।

४ क्रिया उसको कहते हैं जो किसी काम या हरकत को प्रकाशित करती है जैसे--खाता है,होता है, करताहै, है इत्यादि ।

५ अव्यय वह हैं जो इन दोनों से भिन्न अर्थ बतलाते हैं यथा -जैसे, कैसे वैसे, ऐसे, ही, उसके बाद, क्यूं कि, चूंकि, जहां, कहां, वहां, यहां, इत्यादि इनमें २२ उपसर्ग (Prepositions) भी सम्मिलित हैं ।

ओम्

अकाराद क्रम से व्याकरण संकेत तालिका

संस्कृत	इंगलिश	
अपादानम्	अबलेटिवकेस	Ablative
अधिकरणम्	लोकेटिवकेस	Locative
अव्ययः	इण्डीक्लैनेबल	Indeclinable
आशीर्लिङ्	बिनिडिक्टिवमूड	Benedictive Mood
उच्चारण	डिक्लेशन	Declension
उत्तमपुरुष	फ़स्टपरसन	First Person
एकवचन	सिंगुलर	Singular
करण	इंस्टरूमेंटलकेस	Instrumental
काल	टेंस	Tense
कर्तृवाच्य	ऐक्टिववाइस	Active Voice
कर्ता	नामीनेटिव	Nominative case
कर्म	अक्केज्यूटिवकेस	Accusative case
कर्मवाच्य	पैसिववाइस	Passive Voice
कर्मकर्तृवाच्य	पैसिव एकटिव वाइस	Passive Active Voice
कृत्प्रत्ययः	वर्बल अफिक्स	Verbal Affix
क्रिया	वर्ब	Verb
गण	कंजूगेशन	Conjugation
णिजन्त	काज़ेटिव	Causative
तद्धित	नामीनल अफ़िक्स	Nominal Affix
द्विवचन	डुअल	Dual
नपुंसकलिंग	न्यूटरजेण्डर	Neuter Gender
नामधातु	नामीनलवर्ड	Nominal word

६ शब्द विभागमें सात विभक्तियां[Seven cases]१संबोधन(Vocative) रहता है प्रत्येक विभक्ति में तीन वचन (Three Numbers) तीन लिंग [Three Genders] होते हैं सर्वनाम यह हैं-तुम, हम, वह, यह, कौन, जो, सब इत्यादि

७ धातु विभाग में तीन पुरुष (Three Persons)तीन काल (Three Times) ४वृत्तियें Eour Mood) माने गए हैं प्रत्येक पुरुष में तीन२ वचन होते हैं।

८ अव्यय वह हैं कि जिनका स्वरूप कभी नहीं बदलता वह ज्यूं के त्यूं रहकर सब विभक्तियों सब लिंगों और सब वचनों के अर्थ देते रहते हैं। उपसर्ग यह हैं

प्र, परा, अप, सम् अनु अव,निस् निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्,नि,अधि, अपि अति, सु, उद्, अभि, प्रति, परि, उप।

शब्द विभाग

	नाम विभक्ति		अर्थ—
१	प्रथमा—कर्ता	Nominative	है, ने
२	द्वितीया—कर्म	Accusative	को
३	तृतीया—करणम्	Instrumental	करके,ने, से
४	चतुर्थी—सम्प्रदानम्	Dative	लिये,वास्ते
५	पंचमी-अपादानम्	Ablative	से, (१)
६	षष्ठी-संबन्धः	Genitive	का,के,की,रा,रे,री,ना,ने,नी
७	सप्तमी—अधिकरणम्	Locative	में, पे पर,
	संबोधनम्	Vocative	हे, अये, भोःइत्यादि

नोट(१) तृतीया का (से) ज़रीये में आता है और पंचमी का (से) पृथक् होने में लगता है

साधारणतः प्रत्यय [*Termination*]

	एक वचन	द्विवचन	बहु वचन
१	:	औ	अः
२	अम्	औ	अः
३	एन	भ्याम्	भिस्
४	ए	भ्याम्	भ्यस्
५	अत्	भ्याम्	भ्यस्

संस्कृत	इंगलिश	
पुल्लिंग	मैसक्यूलनजेंडर	Masculine
प्रत्यय	टरमीनेशन	Termination
प्रथमपुरुष	थर्डपरसन	ThirdPerson
बहुवचन	प्लूरल	Plural
भविष्यत्काल:	फ्यूचरटेंस	Future Tense
भाववाच्यम्	इनट्रांज़ीटिव पैसिववाइस	Intransitive Passive Voice
भूतकाल	पास्टटेंस	Past Tense
मध्यमपुरुष	सेकंडपरसन	Second Person
यङन्त	फ्रीकनटेटिववर्बस	Frequentative verbs
लङ्	फ़र्स्ट प्रीटिराईट	First Preterite
लट्	प्रेज़िंटटेंस	Present Tense
लिट्	सैकंड प्रीटिराईट	Second Preterite
लुङ्	थर्डप्रीटिराईट	Third Preterite
लुट्	फ़र्स्ट फ्यूचर टेंस	First Future Tense
लृङ्	कंडीशनल मूड	Conditional Mood
लृट्	सैकंड फ्यूचर टेंस	Second Future Tense
लोट्	इम्पैरेटिव मूड	Imperative Mood
वर्त्तमानकाल	प्रेज़िंट टेंस	Present Tense
विधि लिङ्	पुटेंशल मूड	Potential Mood
विभक्ति	केस	Case
विशेषण	एडजेक्टिव	Adjective
व्यञ्जन	कान्सोनेंठ	Consonant
शब्द	वर्ड	Word
संख्यावाचक	न्यूमरल	Numeral
संधि	कंजङ्क्शन	Conjunction
सन्नन्त	डिसीडेरेटिव	Desiderative

६	भ्य	ओस्	आम्
७	इ	ओस्	सु

ऊपर सात विभक्तियों के प्रत्ययों का तीन प्रकार से विभाग कियागया है एक वचन (Singular) द्विवचन (Dual)और बहुवचन [Plural] जहां एक के लिये प्रयोग करना हो वहां एकवचन आता है दोके लिये द्विवचन और दोसे अधिक चाहे जितने हों सबके लिये बहुवचन प्रयुक्त होता है।

तीन लिंग [Three Genders] हैं। पुल्लिंग [Mesculine] स्त्रीलिंग [Feminine] नपुंसक लिंग [Neuter] पुरुष मात्र के लिये पुल्लिंग प्रत्यय लगाये जाते हैं। स्त्रियों के लिये स्त्रीलिंग प्रत्यय और स्त्री पुरुष से भिन्न जो वस्तुवें हैं उनमें नपुंसक लिंग रहता है

शब्द दो प्रकार के हैं एक वह कि जिनके अन्त में स्वर है जैसे — राम, हरि भानु, नेतृ इत्यादि और दूसरे वह हैं कि जिन के अन्त में व्यञ्जन अक्षर हैं जैसे — पठत्, गुणिन्, धनवत् इत्यादि

हम प्रथम पुल्लिंगवाची शब्दों का वर्णन करते हैं अधिक आवश्यक होने से प्रथम सर्वनामों फिर नामों का उच्चारण लिखेंगे

पाठ १

करनेवाला कर्त्ता (Nominative) फ़ायल

सर्वनाम व्यञ्जनान्त पुल्लिंग शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	वहएक	वे दो	वे सब
(तद्)	सः	तौ	ते
	तुमएक	तुम दो	तुम सब
(युष्मद्)	त्वम्	युवाम्	यूयम्
	मैंएक	हम दो	हमसब
(अस्मद्)	अहम्	आवाम्	वयम्
	जोएक	जो दो	जो सब
(यद्)	यः	यौ	ये
	कौनएक	कौन दो	कौन सब
(किम्)	कः	कौ	के
	यह एक	यह दो	यह सब

(इदम्)	अयम्	इमौ	इमे

नाम (Noun) अजन्त पुलिंग शब्द

	एक राम	दो राम	सब राम
(राम)	रामः	रामौ	रामाः
	एक हरि	दो हरि	सब हरि,
(हरि)	हरिः	हरी	हरयः
	एक सूरज	दो सूरज	सब सूरज
(भानु)	भानुः	भानू	भानवः
	एक दाता	दो दाते	सब दाते
(दातृ)	दाता	दातारौ	दातारः

नाम व्यञ्जनान्त पुलिंग शब्द

	एक पढ़ता हुवा	दो पढ़ते हुवे	सब पढ़ते हुवे
(पठत्)	पठन्	पठन्तौ	पठन्तः
	एक गुण वाला	दो गुणवाले	सब गुणवाले
(गुणिन्)	गुणी	गुणिनौ	गुणिनः

धातु विभागमें १० गण Conjugations हैं हरएक गण का विकरण (Cuojugational Sign) भिन्न २ हैं १ म गण में धातु Root के साथ 'अ, लगाया जाता है ।

१ म गण (First Conjugation)
वर्तमान काल (Presentense) लट्

प्रत्यय ।

	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ति	तस्	अन्ति
मध्यम पुरुष	सि	थस्	थ
उत्तम पुरुष	मि	वस्	मस्

मेरे लिये	हम दो के लिये	हम सब के लिये
मह्यम्	आवाभ्याम्	अस्मभ्यम्
जिसके लिये	जिन दो के लिये	जिन सब के लिये
यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
किस के लिये	किन दो के लिये	किन सबके लिये
कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
इस के लिये	इन दो के लिये	इन सब के लिये
अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
राम के लिये	दो रामों के लिये	सब रामों के लिये
रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
हरि के लिये	दो हरियों के लिये	सब हरियों के लिये
हरये	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
सूरज के लिये	दो सूरजों के लिये	सब सूरजों के लिये
भानवे	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
दाता के लिये	दो दाताओं के लिये	सब दाताओं के लिये
दात्रे	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
पढ़ते हुवे के लिये	दो पढ़ते हुवों के लिये	सब पढ़तेहुवोंके लिये
पठते	पठद्भ्याम्	पठद्भ्यः
गुणी के लिये	दो गुणियों के लिये	सब गुणियों के लिये
गुणिने	गुणिभ्याम्	गुणिभ्यः

लृट् भविष्यत्काल

Second Future

प्रत्ययः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	स्यति	स्यतः	स्यन्ति
म० पु०	स्यसि	स्यथः	स्यथ
उ० पु०	स्यामि	स्यावः	स्यामः

होना भू (भव्) १

प्र.पु.	भवति	भवतः (२)	भवन्ति
म.पु.	भवसि	भवथः	भवथ
उ.पु.	भवामि[३]	भवावः	भवामः

होना – अस् ४

प्र० पु०	अस्ति	स्तः	सन्ति
म० पु०	असि	स्थः	स्थ
उ० पु०	अस्मि	स्वः	स्मः

करना = कृ

प्र० पु०	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
म० पु०	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
उ० पु०	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

अनुवादः (१)

वह होता है	वे दो होते हैं	वे सब होते हैं
स भवति	तौ भवतः	ते भवन्ति
तू होता है	तुम दो होते हो	तुम सब होते हो
त्वं भवसि	युवां भवथः	यूयं भवथ
मैं होता हूं	हम दो होते हैं	हम सब होते हैं
अहं भवामि	आवां भवावः	वयं भवामः
वह है	तू है	मैं हूं
सोऽस्ति	त्वमसि	अहमस्मि

---

[१] ए,ओ अर् जब इ,उ ऋ से होते हैं वह गुण कहलाते हैं।
[२] व्यञ्जन स् के सामने कुछ न होतो विसर्ग बनजाता है।
[३] म,व सामने आजाने पर धातुका अ, लंबा हो जाता है।
[४] अस्, कृ दो धातुवें आवश्यक होने से दूसरे गणोंसे लीगई हैं। अर्थात् अस् धातु दूसरे गण की है और कृ धातु आठवें गण की।

शिक्षा ४

* इ पूर्व आजाने से "ष्य" बनजाता है अन्यथा "स्य" रहता है।

भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

अस् का उच्चारण भूवत् है।

करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

*सेट् अनिट् धातु

दीर्घ ऊकारान्त दीर्घ ॠकान्त यु,रु,क्ष्णु,शी स्नु,नु,क्षु,श्वि,डी,श्रि,वृङ्, वृञ्, यह सब सेट् हैं अर्थात् इ लेतीं हैं

नीचे लिखी अनिट् हैं अर्थात् इ नहीं लेतीं।

कान्तों में– शक् १
चान्तों में– पच् मुच् रिच् वच् विच सिच् ६
छान्तों में– प्रच्छ् १
जान्तोंमें–त्यज्-निज्-भञ्ज् भज् भुज् भ्रस्ज् मस्ज् यज् युज् रुज् रञ्ज् विज् स्वञ्ज् सञ्ज् सृज् १५
दान्तों में– अद् क्षुद् खिद् छिद् तुद् नुद् पद्य भिद् विद्य विनद् विन्द् शद् सद् स्विद् स्कन्द् हद् १६
धान्तों में – क्रुध क्षुध् बुध्य बन्ध् युध्य रुध् राध् व्यध् शुध् साध् सिध्य ११
नान्तों में – मन्य, हन् २
पान्तों में=आप् छिप् क्षुप् तप् तिप् तृप्य दृप्य लिप् लुप् वप् शप् स्वप् सृप् १३
भान्तों में– यभ् रभ् लभ् ३
मान्तों में– गम् नम् रम् यम् ४
शान्तों में – क्रुश दंश दिश् दृश मृश् रिश् रुश् लिश् विश् स्पृश् १०
षान्तों में – कृष् त्विष् तुष् द्विष् दुष् पुष्य पिष् विष् शिष् शुष् श्लिष् ११
सान्तों में घस् वस् २
हान्तों में दह् दिह् दुह् नह् मिह् रुह् लिह् वह् ८

वह करता है	तू करता है	मैं करता हूं
स करोति	त्वं करोषि	अहं करोमि

अभ्यास (१)

मैं होता हूं। तू है। वह करता है। दो राम होते हैं। दो हरि करते हैं। दो सूरज हैं। सब पढ़ने हुवे हैं। गुणी करते हैं। यह वह राम है। हरि होते हैं

शिक्षा (१)

अकारान्त पुल्लिंग रामकी भांति सम्पूर्ण अकारान्त पुल्लिंग शब्दोंका उच्चारण होता है जैसे– नर, देव, पर्वत, वृक्ष, इत्यादि।

एवं इकारांत हरि की भांति– मुनि, अग्नि, कलि, ऋषि इत्यादि
उकारान्त भानु की तरह– साधु, विधु, कृशानु, चिकीर्षु इत्यादि
ऋकारान्त दातृ की भांति– कर्तृ, भर्तृ, हर्तृ, नेतृ इत्यादि
तकारान्त पठत् की तरह– पश्यत्, कुर्वत्, भवत्, पचत् इत्यादि
इन्नन्त गुणिन् की भांति– धर्मिन्, शशिन्, मानिन्, गामिन् इत्यादि

शिक्षा (२)

नीचे लिखी धातुवें १ म गण की हैं इनका उच्चारण प्रायः भूधातु के साथ मिलजाता है इस लिये इनका एक २ रूप सर्वत्र लिखा जावेगा शेषरूप प्रत्यय लगाकर उसी प्रकार बना लेने इनके रूप एकबार लेखपुस्तिका पर अवश्य लिख लेने चाहियें।

शब्द	धातु	क्रिया	शब्द	धातु	क्रिया
१ पढ़ना–	पठ्	पठति।	११ देखना–	दृश् (पश्य)	पश्यति
२ दौड़ना–	धाव्	धावति।	१२ पीना–	पा (पिब)	पिबति
३ खाना–	खाद्	खादति।	१३ सूंघना–	घ्रा (जिघ्र)	जिघ्रति
४ हरना–	हृ	हरति।	१४ बुलाना–	ह्वे (ह्वय्)	ह्वयति
५ लेजाना–	नी	नयति।	१५ उगना–	रुह् (रोह्)	रोहति
६ बोना–	वप्	वपति।	१६ बचाना–	रक्ष्	रक्षति
७ याद करना–	स्मृ	स्मरति।	१७ गिरना–	पत्	पतति
८ जाना–	गम् (गच्छ्)	गच्छति।	१८ छोड़ना–	त्यज्	त्यजति
९ देना–	दा (यच्छ्)	यच्छति।	१९ पकाना–	पच्	पचति
१० ठैरना–	स्था (तिष्ठ्)	तिष्ठति।	२० रहना–	वस्	वसति

अनुवादः (४)

राम होवेगा	दो राम होवेंगे	सब राम होवेंगे
रामो भविष्यति	रामौ भविष्यतः	रामा भविष्यन्ति
तू यहां होवेगा	तुम दो कहां होवोगे	तुम सब होवोगे
त्वमत्र भविष्यसि	युवां कुत्र भविष्यथः	यूयं भविष्यथ
मैं होऊंगा	हम दो होवेंगे	हम सब होवेंगे
अहं भविष्यामि	आवां भविष्यावः	वयं भविष्यामः

राम रावण के लिये काफ़ी है । राम के लिये नमस्कार हो ।
(१) रामो रावणाय अलम् । रामाय नमः
बालकों का कल्याण हो । ब्राह्मण को धन देता है
बालकेभ्यः स्वस्ति । (२) ब्राह्मणेभ्यो धनं यच्छति
इज्जत के लिये पढ़ा । अग्नि के लिये होम हो
(३) प्रतिष्ठार्थम् अपठत् । अग्नये स्वाहा

अभ्यास १३

वह करेगा । मैं हाथ से करूंगा । प्रजा के लिये कल्याण हो । गुरु के लिये नमस्कार हो । आगुदा के लिये रोटी मत दो । पित्रों के लिये स्वधा हो । लक्ष्मण मेघनाद के लिये क़ाफ़ी होगा । हम सब हाथ से दान करेंगे । जो भगवान् विधाता करेगा । वह भलाई के लिये होगा । तुम सब तन्दुरुस्ती के लिये ईश्वर को नमस्कार करो ।

१	पठिष्यति	८	गमिष्यति	१५	रोक्ष्यति
२	धाविष्यति	९	दास्यति	१६	रक्षिष्यति
३	खादिष्यति	१०	स्थास्यति	१७	पतिष्यति
४	हरिष्यति	११	द्रक्ष्यति	१८	त्यक्ष्यति
५	नेष्यति	१२	पास्यति	१९	पक्ष्यति
६	वक्ष्यति	१३	घ्रास्यति	२०	वत्स्यति
७	स्मरिष्यति	१४	ह्रास्यति		

(१) अलम्,नमः,स्वस्ति,स्वाहा,स्वधा इनके साथ चतुर्थी विभक्ति लगाई जाती है ।
(२) जिसे दिया जाय उस में चतुर्थी आती है ।
(३) 'अर्थम्' लगा देने से चतुर्थी का अर्थ होता है ।

अभ्यास (२)

राम पढ़ता है । हरि दौड़ता है । भानु खाता है । रावण हरता है । लीडर ले जाता है । किसान बोता है । विद्यार्थी याद करता है । घोड़ा जाता है । राजा देता है । मुसाफ़िर ठैरता है ।

अभ्यास (३)

हम दो देखते हैं । दो राम पीते हैं । दो भौंरे सूंघते हैं । तुम दो बुलाते हो । दो वृक्ष उगते हैं । दो देवता बचाते हैं । दो बेवकूफ गिरते हैं । वे दो छोड़ते हैं । दो ब्राह्मण पकाते हैं । दो दौलतमंद रहते हैं ।

अभ्यास (४)

तुम सब दौड़ते हो । हम सब हरते हैं । वे सब बोते हैं । सब सूरज जाते हैं । सब राम देते हैं । पढ़ते हुये विद्यार्थी देखते हैं । सब राजा लोग सूंघते हैं । सब दरख़्त उगते हैं । बूंदें गिरती हैं । गुणवाले पकाते हैं ॥

पाठ २ यः

जो किया जावे—कर्म	(Accusative)	मफ़ूल
एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
उसको	उन दो को	उन सब को
तम्	तौ	तान्
तुमको	तुम दो को	तुम सब को
त्वाम् [त्वा]	युवाम् [वाँ]	युष्मान् [वः]
मुझको	हम दो को	हम सब को
माम् (मा)	आवाम् (नौ)	अस्मान् (नः)
जिसको	जिन दो को	जिन सब को
यम्	यौ	यान्
किसको	किन दो को	किन सब को
कम्	कौ	कान्
इसको	इन दो को	इन सब को
इमम्	इमौ	इमान्
एक राम को	दो रामों को	सब रामों को
रामम्	रामौ	रामान्

शिक्षा ५

लृट् में गम् आदि ६ धातु अपने असली रूप में आजाती हैं ॥

वर्तमान की क्रिया से पूर्व "पुरा" लगा देने से भविष्यत् काल का अर्थ लिखा जाता है। जैसे खायगा--पुरा खादति।

अभ्यास १४

यह शागिर्द तमाम वेद शास्त्रों को पढ़ेगा। मैं अपने पांव से बहुत जल्दी दौड़ूंगा। तू गर्म जलेबी खायगा। वह मशहूर डकैतिया ऊंट को हरेगा। मैं कलमदान को लेजाऊंगा। तू पिगारा बोवेगा। हरि गुज़रे हुवे ज़माने को याद करेगा। शेर हाथी के लिये काफ़ी होगा। मनुष्य का कल्याण हो। धर्म के लिये मैं पूरा यत्न करूंगा।

अभ्यास १५

हम दो फिर कभी आप को चाकू देवेंगे। वह दो मास की डोलके लिये यहां ठैरेंगे। अगर तुम दो यहां ठैरोगे तो कल्याण को देखोगे। दो सूरजों का कल्याण हो। दो गुणियों के लिये नमस्कार हो। हम दो पिता के बिना दवाई नहीं पीवेंगे। दो कीड़े सुख के साथ फूलको सूंघेंगे। अभी हम दो को भाई बुलायगा। काला सांप महिल को चढ़ेगा। हम दो दाता को बचावेंगे।

अभ्यास १६

मूर्ख गिरेंगे। जो लोग लोभ को छोड़ेंगे। हम सब पुलाव को पकायेंगे। तुम लोग जहां बसोगे। हम सब यतीम के लिये देवेंगे। रजिष्टर को इन्सपैक्टर साहिब देखेंगे। परसों दस रिसाले खूब दौड़ेंगे। ईश्वर सब के लिये कल्याण करेगा विद्यार्थियों को आटा दो। वे प्रोफ़ेसर शागिर्दों के साथ हस्तिनापुर को जावेंगे।

शिक्षा ६

तीनकाल (भूत, भविष्यत, वर्तमान) और लोट् लकार आचुके हैं, बस अनुवाद के लिये साधारणतः यही आते हैं। हां अलबत्ता नाम अभी अधूरे हैं इनकी शेष तीन विभक्तियां रहती हैं।

उपसर्ग (प्रीपोज़ीशन] कि जिनका ज़िकर प्रारंभ में आचुका है। उनका प्रयोग परिचित धातुवों से दिखलाते हैं।

उपसर्ग धातु से पूर्व लगाया जाता है, उपसर्ग लगने से धातु का अर्थ

एक हरि को	दो हरियों को	सब हरियों को
हरिम्	हरी	हरीन्
एक सूरज को	दो सूरजों को	सब सूरजों को
भानुम्	भानू	भानून्
एक दाता को	दो दाताओं को	सब दाताओं को
दातारम्	दातारौ	दातॄन्
एक पढ़ते हुवे को	दो पढ़ते हुवों को	सब पढ़ते हुवों को
पठन्तम्	पठन्तौ	पठतः
एक गुणवाले को	दो गुणवालों को	सब गुणवालों को
गुणिनम्	गुणिनौ	गुणिनः

लोट् (*Imperative mood*)

विधि और आज्ञा अर्थ में होता है ॥

प्रत्यय

	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तु	ताम्	अन्तु
मध्यम पुरुष	अ	तम्	त
उत्तम पुरुष	आनि	आव	आम



भवतु	भवताम्	भवन्तु
भव	भवतम्	भवत
भवानि	भवाव	भवाम



अस्तु	स्ताम्	सन्तु
एधि	स्तम्	स्त
असानि	असाव	असाम



बदल जाताहै, यह परिवर्तन पूर्व आचार्यों के नियत किये हुवे हैं, नये नहींहोते देखिये एक ही धातु उपसर्ग लगनेसे कितने अर्थ देताहै । प्रथम भू को लेतेहैं ॥

ताकतवर होता है ।	तजरबा करता है ।	चारों तरफ़ होता है
प्रभवति	अनुभवति	परिभवति
हारता है	हारता है	
पराभवति	अभिभवति	
मुमकिन होता है	पैदा होता है	
सम्भवति	उद्भवति	

कृ

विकार करता है ।	प्रस्ताव करता है	अधिकार करता है
विकरोति	प्रकरोति	अधिकरोति
नकल करता है ।	रद करता है	बुरा करता है
अनुकरोति	{ पराकरोति निराकरोति	अपकरोति ज़ाहिर करता है
बदला लेता है	साफ़करता है	{ आविस्करोति
प्रति करोति	परिस्करोति	प्रादुस्करोति
बंदगी करता है	मंजूर करता है	बेइज्जतकरता है
नमस्करोति	{ ऊरी करोति उररी करोति स्वी करोति	तिरस्करोति खूबसूरत बनाता है अलङ्करोति

हृ [हर्]

चोट लगाता है	दूरकरता है	निकालता है
प्रहरति	अपहरति	निर्हरति
मुताबिक करता है	फिरता है	क़तल करता है
अनुहरति	विहरति	संहरति
निकालता है	इकट्ठा करता है	खाता है
उद्धरति	समभिहरति (१)	{ आहरति
	कहता है	अभ्यवहरति
	व्याहरति	

(१) सम् अभि दो उपसर्ग लगाये गये हैं ।

करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
कुरु	कुरुतम्	कुरुत
करवाणि	करवाव	करवाम

अनुवाद

वह करे	तुम दो करो	तुम सब करो
स करोतु	तौ कुरुताम्	ते कुर्वन्तु
तू काम कर(१)	तुम दो काम करो	तुम सब काम करो
त्वं कार्यं कुरु	युवां कार्यं कुरुतम्	यूयं कार्यं कुरुत
मैं धर्म करूं	हम दो धर्म करें	हम सब धर्म करें
अहं धर्मं करवाणि	आवां धर्मं करवाव	वयं धर्मं करवाम
खुशी हो	वे तन्दुरुस्त हों	हम सब होवें
मोदोऽस्तु	ते स्वस्थाः सन्तु	वयं भवाम

अभ्यास ५

वे सब होवें। मैं दान करूं। तू हो। राजा कल्याण करे। तुम दो पाप मत करो। वे सब खुशी करें। मैं गुणवाला होऊं। वे दो भोजन करें। क्या मैं करूं ? क्या वह होवे ?।

१	पठतु	८	गच्छतु	१५	रोहतु
२	धावतु	६	यच्छतु	१६	रक्षतु
३	खादतु	१०	तिष्ठतु	१७	पततु
४	हरतु	११	पश्यतु	१८	त्यजतु
५	नयतु	१२	पिबतु	१६	पचतु
६	वपतु	१३	जिघ्रतु	२०	वसतु
७	स्मरतु	१४	हसतु		

१ फ़िक़रे (वाक्य) में तीन बातें होती हैं कर्त्ता, कर्म, और क्रिया। फ़ारसी में इनको फ़ायल, मफ़ूल और फ़ेल कहते हैं। इस फ़िक़रे में "तू" कर्त्ता है, "काम" कर्म है "कर" क्रिया है इसी तरह सर्वत्र समझलो।

फ़िक़रे दो तरह के होते हैं कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य कर्तृवाच्य में कर्ता प्रथमान्त और कर्म द्वितीयान्त होता है जैसे ऊपर फ़िक़रा दिखलाया गया है। कर्मवाच्य का वर्णन आगे करेंगे।

स्मृ (स्मर्)

भूलता है
विस्मरति

गम्

आता है	निकलता है	मिलता है
आगच्छति	निर्गच्छति	संगच्छते
ऊपर जाता है	पैरवी करता है	जानता है
उद्गच्छति	अनुगच्छति	अवगच्छति

स्था

रवाना होता है	इज्ज़तकरता है
प्रतिष्ठते	प्रति तिष्ठति
उठता है	बैठता है
उत्तिष्ठति	अधितिष्ठति

ह्वे [ह्वय्]	**रुह् रोह्**
बुलाता है	चढ़ता है
आह्वयति	आरोहति
	उतरता है
	अवरोहति

पत

उड़ता है	बंदगी करता है	पैरवी करता है
उत्पतति	प्रणिपतति	अनुपतति

अभ्यास १७

वह योधा हथियारों से बलवान् होता है। मैं नहीं हारता हूं। मुमकिन है कि ये खबरें सच हों। तुम सब डाक्टर हो। और दवाइयों का तजरबा करते हो। उत्तम ग्रंथों से लियाकत पैदा होती है। मूली और दूध विकार करते हैं। हम सब गुणी की नकल करते हैं। तू बदला लेता है। शागिर्द उस्ताद को बंदगी करता है। मैं इंतजाम के लिये प्रस्ताव करता हूं।

अभ्यास ६

वह पुस्तक पढ़े। गोपाल दौड़े। जगन्नाथ मिठाई खावे। हरि क्लेशों को हरे। मैं ले जाऊं। तू बोवे। भक्त ईश्वर को याद करे। तू अपने घर को जा। दाता कंगाल को देवे। क्या मैं ठैरूं॥

अभ्यास ७

वे दो गुण वालेको देखें। हम दो अमृत रसको पीवें। तुम दो शौक़ीन ख़ुशबू को सूंघो [१] दो दाता भूखे साधुओंको बुलावें। दो वृक्ष उगें। दो राजा देश की रक्षा करें। दो पापी गिरें। हम दो पापको छोड़ें। तुम दो भोजन पकाओ। दो सज्जन यहां वसें।

अभ्यास ८

सब राम दौड़ें। सब सूरज अंधेरे को हरें। सब चार किसान धोवें क्या हम सब यहां से जावें? तुम सब वहां ठैरोगे। यह दानाइ आदमी ठंडा पानी पीवें। राजा लोग गुणवालों को बुलावें। चारो तरफ़ पढ़ते हुये विद्यार्थियों की हिफ़ाज़त करो। हम सब बुरी संगत को छोड़ें। प्यारे दोस्त वसें।

पाठ ३यः

जिसके द्वारा किया जावे (करण) *Instrumental*

एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
उसने	उनदोनों ने	उन सबने
तेन	ताभ्याम्	तैः
तूने	तुम दो ने	तुम सबने
त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
मैंने	हम दो ने	हम सब ने
मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
जिसने	जिन दो ने	जिन सब ने
येन	याभ्याम्	यैः
किस ने	किनदो ने	किन सब ने
केन	काभ्याम्	कैः

(१)भूखा विशेषण [सिफ़] है साधु विशेष्य [मौज़ूफ़] है जो विभक्ति, वचन विशेष्य का होता है वही विशेषण में आता है।

अभ्यास (१८)

अगर वह ताक़तवर है तो इसको रद करे। वे मजदूर छाजों से गेहूं और चने को साफ़ करें। अगर वह सच कहता है तो उस अर्ज़ी को मंजूर करो। आप हुकम देवें तो मैं अधिकार करेलूं। तुम अपने लिये मत बुरा करो। साईसदाँ नये नये तजरबों को ज़ाहिर करे। तुमदो उस शरीर को धमकी दो। कारीगर इस मकान को खूबसूरत बनावें। एक दुष्ट भले आदमी को डंडे से चोट न लगाव। मैं उसके मुवाफ़िक करूं।

अभ्यास १९

प्यासों के लिये धर्मी ने जल निकाला*। रामने दुःखों को दूर किया। तू अवारा गर्द की§ तरह क्यूं फिरता था। मैंने कंजूस की तरह बहुत कुछ माल इकट्ठा किया था। तू कहताथा कि जंगलको न जाओ। कोचवान फ़िटन को बाहिर निकालता था। चोर धनके लिये छुरी से क़तल करताथा। हम दो फ़ालसा और नाशपाती को खाते थे। दाताओं को दान नहीं भूलता था। तुम सब अजायबघर आये।

अभ्यास २०

पतंग ऊपर जायगी। जैसे२ क़ानून निकलेगा, वैसे२ मैं पैरवी करूंगा। क्या तू इशारे को जानेगा ? देखो वह शूकर उठता है। हम तुम्हारी इज्ज़त करेंगे। तू यहां बैठेगा। हरि को सूरज बुलाता है। तुम पहाड़ को चढ़ोगे और (१) उतरोगे। तमाम चमगादर शामको उड़ेंगे। वे सब उस्तादको बंदगी करेंगे।

पाठ ५ मः

पृथक् होना–जिससे पृथक् हो

अपादान (*Ablative*)

एक वचन	द्विवचन	बहुवचन.
उस से	उन दो से	उन सब से
तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः

* उद्‌–अहरत् उदहरत् बनता है याने पहिले धातु की क्रिया लङ् में बनाओ फिर उसके पूर्व उपसर्ग लगा दो स्मरण रहे संधि अवश्य करनी होगी।

§(कीतरह) वत्

(१) संस्कृत में और के अर्थ में 'च' लगता है, 'और' जिससे पूर्व होता है 'च' उसके पीछे लगाया जाताहै।

इस ने	इन दो ने	इन सब ने
अनेन	आभ्याम्	एभिः
राम ने	दो रामों ने	सब रामों ने
रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
हरि ने	दो हरियों ने	सब हरियों ने
हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः
सूरजने	दो सूरजों ने	सब सूरजों ने
भानुना	भानुभ्याम्	भानुभिः
दाता ने	दो दाताओं ने	सब दाताओंने
दात्रा	दातृभ्याम्	दातृभिः
पढ़ते हुए ने	दो पढ़ते हुवों ने	सब पढ़ते हुवों ने
पठता	पठद्भ्याम्	पठद्भिः
एक गुणवाले ने	दो गुणवालों ने	सब गुणवालोंने
गुणिना	गुणिभ्याम्	गुणिभिः

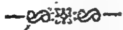
लङ् (भूत काल)

प्रत्यय

	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र.पु.	त्	ताम्	अन्
म.पु.	ः	तम्	त
उ.पु.	अम्	व	म

लङ् (first Preterite में धातु से पहिले अ लगाया जाता है

अभवत्	अभवताम्	अभवन्
अभवः	अभवतम्	अभवत
अभवम्	अभवाव	अभवाम



आसीत्	आस्ताम्	आसन्
आसीः	आस्तम्	आस्त
आसम्	आस्व	आस्म



तुमसे	तुम दो से	तुम सबसे
त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
हम से	हम दो से	हम सब से
मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
जिस से	जिन दो से	जिन सब से
यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
किस से	किन दो से	किन सब से
कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
इस से	इन दो से	इन सब से
अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
राम से	दो रामों से	सब रामों से
रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
हरि से	दो हरियों से	सब हरियों से
हरेः	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
सूरज से	दो सूरजों से	सब सूरजों से
सूर्यात्	सूर्याभ्याम्	सूर्येभ्यः
एक दाता से	दो दाताओं से	सब दाताओं से
दातुः	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
पढ़ते हुवे से	दो पढ़ते हुवों से	सब पढ़ते हुवों से
पठतः	पठद्भ्याम्	पठद्भ्यः
एक गुणी से	दो गुणियों से	सब गुणियों से
गुणिनः	गुणिभ्याम्	गुणिभ्यः

शिक्षा ७

विना, पृथक्, नाना इन अव्ययों के साथ द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी विभक्ति लगाई जाती है।

ऋते, भिन्नः, अन्यः, इतरः इनके साथ पञ्चमी आती है।

अर्थ—होवे-करे

विधि लिङ् [*Potential Mood*]

ए० व०	द्वि०व०	ब०व०
यात्	याताम्	युः
याः	यातम्	यात
याम्	याव	याम

अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

अनुवाद (३)

वह था	वह दो थे	वे सब थे
स आसीत्	तौ आस्ताम्	ते आसन्
तू था	तुम दो थे	तुम सब थे
त्वम् आसीः	युवां आस्तम्	यूयम् आस्त
मैं था	हम दो थे	हम सब थे
अहम् आसम्	आवाम् आस्व	वयम् आस्म
उसने काम किया	वह हुवा	तूने स्नान किया
स कार्यम् अकरोत्	सोऽभवत्	त्वं स्नानम् अकरोः

(१)

उसने मेरे साथ काम किया । तेरे और उसके साथ हम पंडित हुवे ।
स मया सह कार्यमकरोत् । त्वया तेन च सार्धं वयं पण्डिता अभवाम
राम हरिके साथ था रामो हरिणा साकमासीत्

अभ्यास (९)

मेरे दो भाई थे । तुम दो ने क्या किया । वह दो सौदागर होते थे । हम सब ने मेहनतकी । तुम सब वहां थे । वे सब चतुर होते थे । मैंने दान किया । तुमने क्रोध क्यूं किया । जैसा यह था वैसा वह था । तुम दो ने धर्म किया ।

१ अपठत्	८ अगच्छत्	१५ अरोहत्
२ अधावत्	९ अयच्छत्	१६ अरक्षत्
३ अखादत्	१० अतिष्ठत्	१७ अपतत्
४ अहरत्	११ अपश्यत्	१८ अत्यजत्
५ अनयत्	१२ अपिबत्	१९ अपचत्
६ अवपत्	१३ अजिघ्रत्	२० अवसत्
७ अस्मरत्	१४ अदयत्	

(१) तृतीया के योग में (सह, सार्धम्, साकम्) यह तीन अव्यय लगते हैं। तीनों का अर्थ 'साथ' है ।

भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
भवेः	भवेतम्	भवेत
भवेयम्	भवेव	भवम
स्यात्	स्याताम्	स्युः
स्याः	स्यातम्	स्यात
स्याम्	स्याव	स्याम
कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

अनुवाद [५]

वह होवें	वे दो होवें	वे सब होवें
स भवेत्	तौ भवेताम्	ते भवेयुः
तू हो	तुम दो होवो	तुम सब होवो
त्वं स्याः	युवां स्यातम्	यूयं स्यात
मैं करूं	हम दो करें	हम सब करें
अहं कुर्याम्	आवां कुर्याव	वयं कुर्याम

राम के बिना सुख कौन देता है

रामात् (रामं–रामेण) विना कः सुखं यच्छति

मैं राम से जुदा नहीं होऊंगा।

अहं रामात् [रामं–रामेण] पृथक् न भविष्यामि

दरख्त से काला सांप गिरता है

वृक्षात् कृष्णसर्पः पतति

वेद कहता है ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं

वेदो व्याहरति ऋते ज्ञानान् मुक्तिर्नास्ति

राम से दूसरा कोई बचाने वाला नहीं है

रामात् भिन्नः (अन्यः, इतरः) कश्चित् रक्षको नास्ति

तमाम विद्यार्थी पढ़ते हुवे घरों से मदरसों को जाते थे

सर्वे विद्यार्थिनः पठन्तः गृहेभ्यो विद्यालयान् अगच्छन्

अभ्यास २१

हम दो होवें।	तुम दो करो।	वे दो हों
हम सब आनन्द करें	तुम सब तन्दुरुस्त होवो	वे सुखी हों

शिक्षा ३

वर्तमान क्रिया के साथ "स्म" लगाने से भूतकाल का अर्थ होता है। जैसे–उसने किया–वह करता था। स करोति स्म॥

अभ्यास १०

वह ब्राह्मण मेहनत से वेद को पढ़ता था। मैं वहां तेजी से दौड़ता था। तू दोनों हाथों से रोटी को खाता था। वह पांव से उस रुपये को हरता था। मैं गाड़ी से तमाम बोझ को ले जाता था। तूने बीज बोया। वह कण्ठ से अपने पाठ को याद करता था। मैं रेल से हस्तिनापुर को गया। तुमने धन दिया। वह वहां ठैरा रहा।

अभ्यास (११)

वह दोनों झरोखे से देखते थे। हम दोनोंने शरबत पिया। तुम दोने फुल व सूंघा। उसने ऊंची आवाज से हरि को बुलाया। वह दो चूहे वृक्ष को चढ़ गए। दो कुमारों ने छोटे हिरनको बचाया। एक तीर से दो सेर गिरे। हम दो ने दो बैल छोड़े। तुमने दो मन चावलों को पकाया। दो योधा रहते थे।

अभ्यास (१२)

तीरसे सब राक्षस गिरे। गुणी लोग गुण से हमको बचाते थे। दश रीछ बाजुवों से पहाड़ों पर चढ़ते थे। वेगूंगे उन बहिरों को बुलाते थे। हमने चंबेली को सूंघा। तुम सब ने मीठा दूध पिया। पढते हुवे विद्यार्थियों ने बाज़ को देखा। हम सब ठैरे थे। पांच लीडर कचहरी को जाते थे। दो मुन्सिफ़ों ने दो वकीलों को याद किया।

पाठ ४ थः

जिस के लिये – सम्प्रदान (*Dative*)

एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
उस के लिये	उन दो के लिये	उन सब के लिये
तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
तेरे लिये	तुम दो के लिये	तुम सब के लिये
तुभ्यम्	युवाभ्याम्	युष्मभ्यम्

मैं पण्डित होऊं। तू राचा वचन करे। वह शीलवान् होवे हाकिम लोग न्याय करें॥

१	पठेत्	८	गच्छेत्	१५	गोहेत्
२	धावेत्	९	यच्छेत्	१६	रक्षेत्
३	खादेत्	१०	तिष्ठेत्	१७	पतेत्
४	हरेत्	११	पश्येत्	१८	त्यजेत्
५	नयेत्	१२	पिबेत्	१९	पचेत्
६	वपेत्	१३	जिघ्रेत्	२०	वसेत्
७	स्मरेत्	१४	ह्वयेत्		

अभ्यास २२

यज्ञदत्त यज्ञ करे। हरि भोजन करे। दाता यहां ठैरे। तू वेद को पढ़े। क्या मैं वेद पढ़ूं वा न्याय शास्त्र। बालक दौड़े। तोता चोग खावे। रामसे पृथक् लक्ष्मण मत होवे। कृष्ण के विना कौन बचावे। अगर दवाई पीवे तो तन्दुरुस्त होवे।

अभ्यास २३

दो गुणियों के विना कौन रक्षा करे। अपने आपको सदा बचावे। दो पुत्रों को मित्रोंकी तरह देखें। दो सूरज ऊपर चढ़ें। दो अंकुर दरख्त से गिरें। दो ज़िद्दी अपनी ज़िद को छोड़ें। दो बवर्ची अपने हाथों से पूरी पकावें। दो दल्लाल ठैरें। दो रोगी दवाई पावें। दो बूढ़े खुद दान देवें।

अभ्यास २४

आप सब क्रोध मत करें। मुमकिन है, कि हरिसे दैत्य हारजायें। उन्हें उचित है कि ज़ियादा खुराक छोड़देवें। हम सदा अपने धर्म को रखें। सब अकलमन्द दूसरे के लिये धन और जीवन देवें। देवता लोग अमृत पीवें। कीड़े खुशबु सूंघें। अयोध्यावासी राम को याद करें। खच्चर दशमन बोझ ले जावें। नारायण सब के लिये सुखको बुलावे।

पाठ ६ छः

उस का, की, के।

षष्ठी संबंधः [*Genative*]

एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
उस का	उन दो का	उन सब का
तस्य	तयोः	तेषाम्

तेरा	तुम दो का	तुम्हारा
तव (ते)	युवयोः [वां]	युष्माकम् (वः)
मेरा	हम दो का	हमारा
मम [मे]	आवयोः [नौ]	अस्माकम् [नः]
जिसका	जिन दो का	जिन सब का
यस्य	ययोः	येषाम्
किसका	किन दो का	किन सब का
कस्य	कयोः	केषाम्
इस का	इन दो का	इन सब का
अस्य	अनयोः	एषाम्

शिक्षा ८

षष्ठीके साथ—उपरि, अधस्, पुरस्, पश्चात्, तुल्यः, भद्रम् लगाये जाते हैं

आगे दो लकार (लिट्-लुङ्) आवेंगे यह दोनों कठिन हैं। इस लिये लिट् की बजाय 'स्म' से काम लिया जाता है और लुङ् का काम [क्त] प्रत्यय से लिया करते हैं क्त का वर्णन आगे आवेगा। लिट् में धातु द्वित्व (डबल) होता है लिट् प्रायः प्राचीन ऐतिहासिक वर्णन में आता है॥

लिट् [*Second preterite*]

प्रत्यय

ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
अ	अतुस्	उस्
थ	अथुस्	अ
अ	व	म
बभूव	बभूवतुः	बभूवुः
बभूविथ	बभूवथुः	बभूव
बभूव	बभूविव	बभूविम
अस् भूवत् है।		
चकार	चक्रतुः	चक्रुः
चकर्थ	चक्रथुः	चक्र
चकार	चकृव	चकृम

आशी लिङ् [*benedictive mood*]

अर्थ–ईश्वर करे–होवे–करे

ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
भूयात्	भूयास्ताम्	भूयासुः	क्रियात्	क्रियास्ताम्	क्रियासुः
भूयाः	भूयास्तम्	भूयास्त	क्रियाः	क्रियास्तम्	क्रियास्त
भूयासम्	भूयास्व	भूयास्म	क्रियासम्	क्रियास्व	क्रियास्म

लृङ् (*conditional mood*)

अर्थ–होता–हेतुहेतुमद्भाव ॥ इसके पूर्व "अ" लगता है

ए०	द्वि०	ब०
अभविष्यत्	अभविष्यताम्	अभविष्यन्
अभविष्यः	अभविष्यतम्	अभविष्यत
अभविष्यम्	अभविष्याव	अभविष्याम
अकरिष्यत्	अकरिष्यताम्	अकरिष्यन्
अकरिष्यः	अकरिष्यतम्	अकरिष्यत
अकरिष्यम्	अकरिष्याव	अकरिष्याम

अनुवाद [८]

कल मेला होगा। ईश्वर करे तू धर्म करे।
श्वः महोत्सवो भविता। त्वम् धर्मम् क्रियाः।
अगर पानी होगा तब खेती होगी॥
जलं चेद्भविष्यत् तदा कृषिरभविष्यत्
अगर मेहनत कर के पढ़ेगा तो जीतने के लिये समर्थ होवेगा।
यदि श्रमं कृत्वाऽपठिष्यत् तदा जेतुं समर्थोऽभविष्यत्

अभ्यास ३२

मैं कल दफ्तर में काम करूंगा। राजभवन में कल वानर और रीछ होवेंगे। ऐ बहादुरों! कल कौरवों के दल को बरबाद करोगे। ईश्वर करे राजा धर्मात्मा हो। ईश्वर करे हम ईश्वर की भक्ति करें। ईश्वर करे तुम संसार का उपकार करो। अगर तू काम करेगा तो अफ़सर होगा। अगर तू पढ़ेगा तो पण्डित होवेगा। कल रामका राज्यतिलक होगा। ईश्वरकरे राजाका जीवन हो।

अनुवाद ६

राजा दशरथ अयोध्या नगर का राज्य करता था
राजा दशरथोऽयोध्यानगरस्य राज्यं चकार
राम के बराबर कोई बलवान् न था
रामस्य तुल्यः कश्चित् बलवान् न बभूव
अयोध्यावासियों का कल्याण भरत लक्ष्मण करते थे
अयोध्यावासिनां भद्रं भरतलक्ष्मणौ चक्रतुः
शत्रुघ्न हज़ारों बहादुरों के साथ पहाड़ पर चढ़ता था
शत्रुघ्नः सहस्रशः भटैः सह गिरे उपरि आरोहति स्म
हमारे बज़ुर्ग क़दीम से यहां रहते थे
अस्माकं वृद्धा सनातनात् अत्र वसन्ति स्म
दो मल्लाह कुंवे के नीचे गए थे
धीवरौ कूपस्याधः गच्छतः स्म
राजमहल के पीछे कालेज के दो विद्यार्थी थे
प्रासादस्य पश्चात् महाविद्यालस्य विद्यार्थिनौ बभूवतुः
सवारों के आगे पियादे दौड़ते थे।
अश्ववाराणां पुरः पदातिगाः गच्छन्ति स्म
राजा का आदमी। कृष्ण का भक्त।
भूपस्य पुरुषः। कृष्णस्य भक्तः।

अभ्यास १५

महाराज युधिष्ठिर राज्य करता था, युधिष्ठिर के और भी चार भाई थे। अर्जुन और भीमसेन दोनों बड़े बलवान् थे। नकुल और सहदेव ऐसे सुन्दर थे कि जो देखता था, वह मोहित होजाता था। एक दफ़ा अर्जुन स्वर्ग को गया था और युद्धको सीख आया था। अर्जुन के जब तीर निकलते थे तो आकाश कांपता था। कभी २ अर्जुन तीरों का पिंजरा बनाता था। भीमसेन हाथियों को सूंड से पकड़ कर पछाड़ता था। उस वक्त बड़े २ बहादुर होते थे। बड़े २ औज़ारों से लड़ते थे।

शिक्षा १३

आत्मनेपद और परस्मैपद यह दो पदयां (फ़ार्मस्) क्रियाओं में लगाई जाती हैं अर्थ दोनों का एक है लकार भी एकही है केवल प्रत्यय भिन्न २ हैं वह दिखलाये जाते हैं ॥

वर्तमानकाल । लट्

प्रत्यय — बढ़ना—एध

	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
म०पु०	ते	आते	अन्ते	एधते	एधेते	एधन्ते
म०पु०	से	आथे	ध्वे	एधसे	एधेथे	एधध्वे
उ०पु०	इ	वहे	महे	एधे	एधावहे	एधामहे

लङ्

प्र०पु०	त	इताम्	अन्त	ऐधत	ऐधेताम्	ऐधन्त
म०पु०	थास्	इथाम्	ध्वम्	ऐधथाः	ऐधेथाम्	ऐधध्वम्
उ०पु०	इ	वहि	महि	ऐधे	ऐधावहि	ऐधामहि

लोट्

म०पु०	ताम्	इताम्	अन्ताम्	एधताम्	एधेताम्	एधन्ताम्
म०पु०	स्व	इथाम्	ध्वम्	एधस्व	एधेथाम्	एधध्वम्
उ०पु०	ऐ	आवहै	आमहै	एधै	एधावहै	एधामहै

विधिलिङ्

म०पु०	ईत	ईयाताम्	ईरन्	एधेत	एधेयाताम्	एधेरन्
म०पु०	ईथाः	ईयाथाम्	ईध्वम्	एधेथाः	एधेयाथाम्	एधेध्वम्
उ०पु०	ईय	ईवहि	ईमहि	एधेय	एधेवहि	एधेमहि

१ पपाठ	८ जगाम	१५ रुरोह
२ दधाव	९ ददौ	१६ ररक्ष
३ चखाद	१० तस्थौ	१७ पपात
४ जहार	११ ददश	१८ तत्याज
५ निनाय	१२ पपौ	१९ पपाच
६ उवाप	१३ जघ्नौ	२० उवास
७ सस्मार	१४ जुहाव	

अभ्यास २६

राजा नल अचारज के पास वेद पढ़ताथा। राम रावण को मारने के लिये दौड़ता था। महावीर आज्ञा लेकर अशोक बाग़ के फल को खाता था। चोर विदेशक के हाथ से कंगन को हरता था। बंदर सोने के हार को लेजाता था। प्रह्लाद धर्म के बीज को बोता था। कवि तुलसीदास राम को याद करता था। हिरण्यकशिपु अचारज कुलको गया था। राजा करण बहुत दान देता था। हिरण्याक्ष युद्ध के लिये कहीं २ ठैरता था।

अभ्यास २७

दो पक्षी देखते थे। दो देवता अमृत पीते थे। दो रीछ मुरदों को सूंघते थे। दो बालक एक दूसरे को बुलाते थे। तुम दो विमान से आकाश पर चढ़ते थे। हम दो उन सब बच्चों को बचाते थे। आकाश से दो तलवारें गिरती थीं। दो फ़क़ीर घर को छोड़ते थे। दो मनुष्य खुराक को पकाते थे। दो सौदागर यहां बसते थे।

अभ्यास २८

प्रह्लाद के साथ विद्यार्थी पढ़ते थे। कीड़े चावलों को खाते थे। नौकर बाज़ार से गोंद को लाते थे। नगर के लोग राम के पीछे २ जाते थे। सखी लोग कंगालों को धन देते थे। वन के जीव और समुद्र के मच्छ राम को देखते थे। विष्णु से लेकर सब देवता गन्ना के रस को पीते थे। संन्यासी लोग धन को सूंघते भी न थे। घोड़े इंद्रके रथको लेजाते थे। धर्मात्मा पापों को छोड़ते थे।

शिक्षा (१४)

लट् लङ् लोट् और विधिलिङ् यह चार सार्वधातुक कहलातेहैं कंजूगेशन (गण) का विकरण लेते हैं, समानरूपक हैं । इन के आगे ६ लकार आर्धधातुकहैं । वह इ(इट्) लेते हैं । सबके सब गुण लेते हैं यह नियम दश गणों में समानहै । अब प्रथम सार्वधातुक पीछे आर्धधातुक लिखे जावेंगे ॥

लुट्

प्र० पु०	ता	तारौ	तारः	एधिता	एधितारौ	एधितारः
म० पु०	तासे	तासाथे	ताध्वे	एधितासे	एधितासाथे	एधिताध्वे
उ० पु०	ताहे	तास्वहे	तास्महे	एधिताहे	एधितास्वहे	एधितास्महे

लृट्

प्र० पु०	स्यते	स्येते	स्यन्ते	एधिष्यते	एधिष्येते	एधिष्यन्ते
म० पु०	स्यसे	स्येथे	स्यध्वे	एधिष्यसे	एधिष्येथे	एधिष्यध्वे
उ० पु०	स्ये	स्यावहे	स्यामहे	एधिष्ये	एधिष्यावहे	एधिष्यामहे

लिट्

प्र० पु०	ए	आते	इरे ।	एधाञ्चक्रे	एधाञ्चक्राते	एधाञ्चक्रिरे
म० पु०	से	आथे	ध्वे ।	एधाञ्चकृषे	एधाञ्चक्राथे	एधाञ्चकृढ्वे
उ० पु०	ए	वहे	महे ।	एधाञ्चक्रे	एधाञ्चकृवहे	एधाञ्चकृमहे

लुङ्

प्र० पु०	त	इताम्	अन्त ।	ऐधत	ऐधेताम्	ऐधन्त
म० पु०	थास्	इथाम्	ध्वम् ।	ऐधथाः	ऐधेथाम्	ऐधध्वम्
उ० पु०	इ	वहि	महि ।	ऐधे	ऐधावहि	ऐधामहि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	सीष्ट	सीयास्ताम्	सीरन् ।	एधिषीष्ट	एधिषीयास्ताम्	एधिषीरन्
म० पु०	सीष्ठाः	सीयास्थाम्	सीध्वम् ।	एधिषीष्ठाः	एधिषीयास्थाम्	एधिषीध्वम्
उ० पु०	सीय	सीवहि	सीमहि ।	एधिषीय	एधिषीवहि	एधिषीमहि

लृङ्

प्र० पु०	स्यत	स्येताम्	स्यन्त ।	ऐधिष्यत	ऐधिष्येताम्	ऐधिष्यन्त
म० पु०	स्यथास्	स्येथाम्	स्यध्वम् ।	ऐधिष्यथाः	ऐधिष्येथाम्	ऐधिष्यध्वम्
उ० पु०	स्ये	स्यावहि	स्यामहि ।	ऐधिष्ये	ऐधिष्यावहि	ऐधिष्यामहि

पाठ ७ मः

में, पर

सप्तमी — अधिकरणम् (*Locative*)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उस में	उन दो में	उन सब में
तस्मिन्	तयोः	तेषु
तेरे में	तुम दो में	तुम्हारे में
त्वयि	युवयोः	युष्मासु
मेरे में	हम दो में	हमारे में
मयि	आवयोः	अस्मासु
जिस में	जिन दो में	जिन सब में
यस्मिन्	ययोः	येषु
किस में	किन दो में	किन सब में
कस्मिन्	कयोः	केषु
इस में	इन दो में	इन सब में
अस्मिन्	अनयोः	एषु
राम में	दो रामों में	सब रामों में
रामे	रामयोः	रामेषु
हरि में	दो हरियों में	सब हरियों में
हरौ	हर्योः	हरिषु
एक सूरज में	दो सूरजों में	सब सूरजों में
भानौ	भान्वोः	भानुषु
एक दाता में	दो दाताओं में	सब दाताओं में
दातरि	दात्रोः	दातृषु
एक पढ़ते हुवे में	दो पढ़ते हुवों में	सब पढ़ते हुवों में
पठति	पठतोः	पठत्सु
एक गुणी में	दो गुणियों में	सब गुणियों में
गुणिनि	गुणिनोः	गुणिषु

अभ्यास ३३

शुक्लपक्षमें चंद्रमा बढ़ता है। तारामण्डल आकाश पर घूमता हुवा कैसा चमकता है। नीले रंगके बादल चारों तरफ़ गर्जते थे। ऋषि कहता है, कि सूरज की रोशनी तमाम तारामण्डल और चंद्रमामें पड़तीहै। महाभाष्य लिखता है कि इन्द्र ने बृहस्पति अचारज से सौ वरस शब्दशास्त्र पढ़ा पर खतम न हुवा। इस इन्द्र के बाद राजा बलिको इन्द्रासन मिलेगा। कमाण्डर इन चीफ़ स्वामी कार्तिक कहता है कि हे देवताओं! इन्द्र को नमस्कार करो। ईश्वर करे संसार में कल्याण बढ़े। हे शिष्य! वेद का पवित्र ज्ञान तू अपनी आत्मा में बढ़ावे। त्रेता युग में बड़ा विद्वान् वसिष्ठ ऋषि अमन को बढ़ाता था।

अभ्यास ३४

हम दो माता पिता की कृपा से बढ़ें। मेरा नाना मेरे दोभाइयोंके पढ़ाने के लिये बड़ा यत्न करता था। मेरे दादा जी और चाचा जी संस्कृत में मशहूर विद्वान् थे। मेरी मासर और मामा मुझे इल्म मंतक पढ़ा कर खुशी होते हैं। एक पोता दादे के पास उछल कर जाता है। दो दुलहा सुसराल में जाने से शर्माते हैं। दो समधी आपस में नाता करके सुखको हासिल करें। मेरे भतीजे की मंगनी जिमीदार के घरमें होगी। हे पुत्र! तुम दस्ती चिट्ठी लेजाओ। दो जासूस झगड़ा बढ़ाते थे।

अभ्यास ३५

चमार लोग चमगादर को खींच कर बढ़ाते थे। लुहार आग में लोहे को फैंक कर फूंक मारता था। माली डोल से बाग़ के दरख़्तों को सींचते हैं। ठिठार कुट और पीतल को पिघला कर बरतन बनावें। बढ़ई काठ को लेकर कई तरह के खिलौने बनायेंगे। जुलाहे के कपड़े के दाम चौगुने सुन कर हमने फैंक दिया। खटीक का काम ऐसा खराब है कि देख कर नफ़रत होती है। माहीगीर उनको कहते हैं जो मछलियों को पकड़ते और खाते हैं। मदारी ने तमाशा दिखला कर पैसा मांगा। जादूगरों ने कहा हम कल आकर आप तमाशा करेंगे॥

हुवा–किया

लुङ् (*Third Preterite*)

ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
त्	ताम्	अन्
ः	त	त
अम्	व	म

शिक्षा ९

लङ् (इम्परफ़ैक्ट) की तरह इस लकार (फ़ार्म) में भी धातु (रूट्) से प्रथम 'अ' लगाया जाता है।

अभूत्	अभूताम्	अभूवन्
अभूः	अभूतम्	अभूत
अभूवम्	अभूव	अभूम

अस् भूवत् है।

अकार्षीत्	अकार्ष्टाम्	अकार्षुः
अकार्षीः	अकार्ष्टम्	अकार्ष्ट
अकार्षम्	अकार्ष्व	अकार्ष्म

अनुवादः [७]

मैंने स्नान किया । वह हुवा । तूने भोजन किया
अहं स्नानम् अकार्षम् । सोऽभूत् । त्वं भोजनम् अकार्षीः
तुम दोने स्नान किया। उन दोने दान किया
युवाम् स्नानम् अकार्ष्टम्। तौ दानम् अकार्ष्टाम्।

हम सबने राजा की इज्ज़त की।
वयम् भूपालस्य सम्मानम् अकार्ष्म।

तुम लोगों ने धर्म किया । हमदोने बड़ा झगड़ा किया
यूयम् धर्मम् अकार्ष्ट । आवां महद् द्वन्द्वम् अकार्ष्व
वे सब यहां पैदा हुवे । उसने धर्म के लिये युद्ध किया
तेऽत्र उद्भूवन् । स धर्माय युद्धम् अकार्षीत्

पाठ ९मः

स्वरान्तनपुंसकलिंग [Ending in Vowels Nuture gender.]

अकारान्त (पानी) जल

	ए०	द्वि०	ब०
१	जलम्	जले	जलानि
२	,,	,,	,,
३		शेषरामवत्	
४			
५			
६			
७			

इकारान्त (पानी) वारि

	ए०	द्वि०	ब०
१	वारि	वारिणी	वारीणि
२	,,	,,	,,
३	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
४	वारिणे	,,	वारिभ्यः
५	वारिणः	,,	,,
६	,,	वारिणोः	वारीणाम्
७	वारिणि	,,	वारिषु
	हे वारि,	वारे	

उकारान्त (शहद) मधु

१	मधु	मधुनी	मधूनि
२	,,	,,	,,
३	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
४	मधुने	,,	मधुभ्यः
५	मधुनः	,,	,,
६	,,	मधुनोः	मधूनाम्
७	मधुनि	,,	मधुषु
	हे मधु,	मधो	

ऋकारान्त (आंवला) धातृ

१	धातृ	धातृणी	धातॄणि
२	,,	,,	,,
३	धातृणा	धातृभ्याम्	धातृभिः
४	धातृणे	,,	धातृभ्यः
५	धातृणः	,,	,,
६	,,	धातृणोः	धातॄणाम्
७	धातृणि	धातृणोः	धातृषु
	हे धातः,	धातृ	

अदादिगण II Conjugation दूसरा कंजूगेशन

विकरण *Conjugational sign* कुछ नहीं लगता

मारना —— हन् सोना — शी

परस्मैपद लट् आत्मनेपद

ए०	द्वि०	ब०
हन्ति	हतः	घ्नन्ति
हंसि	हथः	हथ
हन्मि	हन्वः	हन्मः

ए०	द्वि०	ब०
शेते	शयाते	शेरते
शेषे	शयाथे	शेध्वे
शये	शेवहे	शेमहे

अभ्यास २९

हकीम ने रोगका तजरबा किया। देवदत्त से यज्ञदत्त हारा। राम से हरि बलवान् हुवा। गोपाल ने सांख्यशास्त्रका पढ़ना मंजूर किया। मेहतर ने मेरे मकान को साफ़ किया। एक फ़िलासफ़र् ने तेरी फ़िलासफ़ी का रद किया। मेरे मज़मून का रामदत्त ने नक़ल किया। उस्तादके सामने शागिर्दों ने नमस्कार की। रंगरेज़ ने अपने मकान को खूब सजाया। उन बदमाशों को पुलिस ने बेइज्ज़त किया।

१ अपाठीत्	८ अगमत्	१५ अरुवत्
२ अधावीत्	९ अदात्	१६ अरक्षीत्
३ अखादीत्	१० अस्थात्	१७ अपप्तत्
४ अहार्षीत्	११ अदर्शत् / अद्राक्षीत्	१८ अस्वाक्षीत्
५ अनैषीत्	१२ अपात्	१९ अपाक्षीत्
६ अवापीत्	१३ अघ्रात् / अघ्रासीत्	२० अवात्सीत्
७ अस्मार्षीत्	१४ अहत्	

अभ्यास ३०

उसने आश्रम पर वेद का पाठ पढ़ा। राम ने दूकान पर कचौड़ी खाई। यज्ञदत्त अपने घरमें नकारा ले गया। पढ़ते हुवे विद्यार्थी ने छतपर सांप देखा। बाग में गुणी ने गुलाब का फूल सूंघा। वह दौड़ता हुवा चट्टान पर गिरा। चकोर ने तालाब से पानी को पिया। चिड़ेने अपने बच्चे के मुख में अनाज का दाना दिया। किसान ने खेत में मटर के बीज को बोया। सिपाही ने थाने पर मुलज़िम को बुलाया।

पाठ ८

संबोधन [*Vocative*]

शिक्षा १०

संबोधन केवल प्रथमा विभक्ति में होता है एक वचन में कुछ २ कहीं २ भेद हो जाता है। शेष वैसे का वैसे रहता है संबोधन से पूर्व–हे, भोः, अये, आदि लगाये जाते हैं जो सर्वनाम यहां दिये गए हैं उन का संबोधन नहीं होता, नामों का उच्चारण यह है—

लङ्

अहन्	अहताम्	अघ्नन्	अशेत	अशयाताम्	अशेरत
अहन्	अहतम्	अहत	अशेथाः	अशयाथाम्	अशेध्वम्
अहनम्	अहन्व	अहन्म	अशयि	अशेवहि	अशेमहि

लोट्

हन्तु	हताम्	घ्नन्तु	शेताम्	शयाताम्	शेरताम्
जहि	हतम्	हत	शेष्व	शयाथाम्	शेध्वम्
हनानि	हनाव	हनाम	शयै	शयावहै	शयामहै

विधिलिङ्

हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः	शयीत	शयीयाताम्	शयीरन्
हन्याः	हन्यातम्	हन्यात	शयीथाः	शयीयाथाम्	शयीध्वम्
हन्याम्	हन्याव	हन्याम	शयीय	शयीवहि	शयीमहि

लुट्

हन्ता	हन्तारौ	हन्तारः	शयिता	शयितारौ	शयितारः
हन्तासि	हन्तास्थः	हन्तास्थ	शयितासे	शयितासाथे	शयिताध्वे
हन्तास्मि	हन्तास्वः	हन्तास्मः	शयिताहे	शयितास्वहे	शयितास्महे

लृट्

हनिष्यति	हनिष्यतः	हनिष्यन्ति	शयिष्यते	शयिष्येते	शयिष्यन्ते
हनिष्यसि	हनिष्यथः	हनिष्यथ	शयिष्यसे	शयिष्येथे	शयिष्यध्वे
हनिष्यामि	हनिष्यावः	हनिष्यामः	शयिष्ये	शयिष्यावहे	शयिष्यामहे

लिट्

जघान	जघ्नतुः	जघ्नुः	शिश्ये	शिश्याते	शिश्यिरे
जघनिथ	जघ्नथुः	जघ्न	शिश्यिषे	शिश्याथे	शिश्यिढ्वे-ध्वे
जघान	जघ्निव	जघ्निम	शिश्ये	शिश्यिवहे	शिश्यिमहे

लुङ्

अवधीत्	अवधिष्टाम्	अवधिषुः	अशयिष्ट	अशयिषाताम्	अशयिषत
अवधीः	अवधिष्टम्	अवधिष्ट	अशयिष्ठाः	अशयिषाथाम्	अशयिढ्वम्
अवधिषम्	अवधिष्व	अवधिष्म	अशयिषि	अशयिष्वहि	अशयिष्महि

हे राम	हे रामौ	हे रामाः
हे हरे	हे हरी	हे हरयः
हे भानो	हे भानू	हे भानवः
हे दातः	हे दातारौ	हे दातारः
हे पठन्	हे पठन्तौ	हे पठन्तः
हे गुणिन्	हे गुणिनौ	हे गुणिनः

अभ्यास ३१

ऐ राम ! यहां आओ । हे हरि ! मेरे दुःख को दूर करो । हे सूरज ! जगत्‌को इतना क्यूं तपाते हो । हे दाताओं ! हमको भी अपने साथ ले चलो । ऐ पढ़ते हुवे बालक ! क्या तेरा कुछ नीचे गिरा है? । हे दो गुणियों ! क्या तुम ने अंधे कुवें में गिरे हुवे लोगों को निकाला था ? हे कृष्ण ! इधर आवो इस वनमें गौवें चरावें । ऐ दोस्त ! मुझे सच कह कि लक्ष्मण ने मेघनाद को मारा था ? । हे राम ! यहां बैठो । मेरे भाइयों ! कहो धन कैसे इकट्ठा होगा ।

शिक्षा ११

दोस्त—सखि

१ सखा	सखायौ	सखायः
२ सखायम्	सखायौ	सखीन्
३ सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः
४ सख्ये	,,	सखिभ्यः
५ सख्युः	,,	,,
६ ,,	सख्योः	सखीनाम्
७ सख्यौ	सख्योः	सखिषु
हे सखे !		

खाविंद—पति

१	
२	
३ पत्या	
४ पत्ये	
५ पत्युः	
६ ,,	
७ पत्यौ	
हे पते !	

शेष विभक्तियों में हरि-
वत् होता है
इस्थान में सारा हरिवत्
चलता है।

दानाह-सुधी

१ सुधीः	सुधियौ	सुधियः
२ सुधियम्	,,	,,
३ सुधिया	सुधीभ्याम्	सुधीभिः
४ सुधिये	,,	सुधीभ्यः
५ सुधियः	,,	,,
६ ,,	सुधियोः	सुधियाम्
७ सुधियि	,,	सुधीषु

फारीश खलपू

१ खलपूः	खलप्वौ	खलप्वः
२ खलप्वम्	,,	,,
३ खलप्वा	खलपूभ्याम्	खलपूभिः
४ खलप्वे	,,	खलपूभ्यः
५ खलप्वः	,,	,,
६ ,,	खलप्वोः	खलप्वाम्
७ खलप्वि	,,	खलपूषु

आशीर्लिङ्

वध्यात्	वध्यास्ताम्	वध्यासुः		शयिषीष्ट	शयिषीयास्ताम्	शयिषीरन्
वध्याः	वध्यास्तम्	वध्यास्त		शयिषीष्ठाः	शयिषीयास्थाम्	शयिषीध्वम्
वध्यासम्	वध्यास्व	वध्यास्म		शयिषीय	शयिषीवहि	शयिषीमहि

लृङ्

अहनिष्यत्	अहनिष्यताम्	अहनिष्यन्		अशयिष्यत	अशयिष्येताम्	अशयिष्यन्त
अहनिष्यः	अहनिष्यतम्	अहनिष्यत		अशयिष्यथाः	,, याम्	अशयिष्यध्वम्
अहनिष्यम्	अहनिष्याव	अहनिष्याम		अशयिष्ये	अशयिष्यावहि	अशयिष्यामहि

९वीं पंक्ति

बोलना– ब्रू   उभयपदी

लट्

ब्रवीति	ब्रूतः	ब्रुवन्ति		आह	आहतुः	आहुः
ब्रवीषि	ब्रूथः	ब्रूथ		आत्थ	आहथुः	
ब्रवीमि	ब्रूवः	ब्रूमः				

लिट्

उवाच	ऊचतुः	ऊचुः
उवचिथ	ऊचथुः	ऊच
उवाच	ऊचिव	ऊचिम

जानना–विद्

लट्

वेद	विदतुः	विदुः
वेत्थ	विदथुः	विद
वेद	विद्व	विद्म
वेत्ति	वित्तः	विदन्ति
वेत्सि	वित्थः	वित्थ
वेद्मि	विद्वः	विद्मः

लिट्

विदाञ्चकार इत्यादि

बाप-पितृ

पिता	पितरौ	पितरः
पितरम्	पितरौ	

एवं जामातृ नृ आदि।

भाई-भ्रातृ

भ्राता	भ्रातरौ	भ्रातरः
भ्रातरम्	भ्रातरौ	

शेष दातृ शब्दवत् हैं

गाय — गौ

१	गौः	गावौ	गावः
२	गाम्	,,	गाः
३	गवा	गोभ्याम्	गोभिः
४	गवे	,,	गोभ्यः
५	गोः	,,	,,
६	,,	गवोः	गवाम्
७	गवि	,,	गोषु

चंद्रमा — ग्लौ

१	ग्लौः	ग्लावौ	ग्लावः
२	ग्लावम्	,,	,,
३	ग्लावा	ग्लौभ्याम्	ग्लौभिः
४	ग्लावे	,,	ग्लौभ्यः
५	ग्लावः	,,	,,
६	,,	ग्लावोः	ग्लावाम्
७	ग्लावि	,,	ग्लौषु

शेष प्रसिद्ध हलन्त पुलिंग के शब्द

अकलमंद— धीमत्

१ धीमान्

शेष पठत् वत्

आप— भवत्

१ भवान्

शेष पठत्वत्

एवं भगवत्, वत्सवत् इत्यादि

बड़ा—महत्

१	महान्	महान्तौ	महान्तः
२	महान्तम्	,,	

शेषपठत्वत्

भगवान्—भगवत्

१	भगवान्	भगवन्तौ	भगवन्तः
२	भगवन्तम्	,,	

शेष पठत्वत्

राजा—राजन्

१	राजा	राजानौ	राजानः
२	राजानम्	,,	राज्ञः
३	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
४	राज्ञे	,,	राजभ्यः
५	राज्ञः	,,	,,
६	,,	राज्ञोः	राज्ञाम्
७	राज्ञि, राजनि	,,	राजसु

हेराजन्

जवान—युवन्

१	युवा	युवानौ	युवानः
२	युवानं	,,	यूनः
३	यूना	युवभ्याम्	युवभिः
४	यूने	,,	युवभ्यः
५	यूनः	,,	,,
६	,,	यूनोः	यूनाम्
७	यूनि	,,	युवसु

हेयुवन्

अभ्यास ३६

माली शहद के लिये जीवों को मारता है । तू उस पापी को मार। अपने तमाम शत्रुओं को मारूंगा । भौंरा फूल को सूंघ कर फूल में सोता है। छोटा कीड़ा अनार के दाने में सोता है। पहाड़ों पर हाथी और गुफ़ाओं में शेर सोतेथे । आज कल की लड़ाई में बड़ेबड़े बहादुर मौतके बिस्तरेपर सोवेंगे। फल और फूलों को चुनकर परिंदे घोंसले भरें। चम्पा और गुलाबको तोड़कर मैंने सूंघा । पानी में देखो सुफ़ेद, लाल, और नीले कमल फूल हैं।

अभ्यास ३७

दो बहादुर दुश्मनों को मारें। दो शौकीन खुशबूदार नरम बिस्तरे पर सोवें। बादाम की गिरी दिमाग़ को ताकत देती है। पिस्ता बड़ा ताक़तवर और खुश्क होता है। चिलगोज़े का छिलका तोड़कर अंदर से फलको निकालते हैं। तुम दो बेर के छिलके को खाओ, और गुठली को फैंकदो। हमदो बनको जाकर पीलूफल चखने थे। खरबूज़े पर दस टुकड़े हैं, गिनो। खीरेके अंदर मुलायम बीजरहते हैं। वे दो कहते थे कि सेबका मुरब्बा बनायेंगे।

अभ्यास ३८

जो तुमको मारते हैं तुमभी उनको मारो। जैसे हम सोवेंगे वैसे तुमभी सोवोगे। हकीम लोग गलगल के अचार की तारीफ़ करते थे।पावभर करेलों में छटांक भर घी डालो। सेर साग में पांच तोले नमक काफ़ी होगा। एक तोलेके आठ मासे बोलते थे। वह बोला, एक मन अनाज को लेकर ढेर करो। लड़के कच्चे आंवले तोड़ेंगे। पेठे को छुरी से काटकर चबाता था। कांसी गोले को लेकर के हम अपनी खुराक में इस्तेमाल करेंगे।

पाठ १० मः

हलन्त नपुंसक लिंग–

Ending in consonants nuture gender

तकारान्त (पकता हुवा) पचत्

	ए०	द्वि०	ब०
१	पचत्	पचती	पचन्ति
२	"	"	"

शेष पठत् वत्

नकारान्त (ब्रह्म) ब्रह्मन्

	ए०	द्वि०	ब०
१	ब्रह्म	ब्रह्मणी	ब्रह्माणि
२	"	"	"

शेष आत्मन् वत्
केवल यहां 'न' के स्थान में 'ण' होगा

रूह-आत्मन्

१	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
२	आत्मानम्	,,	आत्मनः
३	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः
४	आत्मने	,,	आत्मभ्यः
५	आत्मनः	,,	,,
६	,,	आत्मनोः	आत्मनाम्
७	आत्मनि	,,	आत्मसु
	हे आत्मन् !		

कुत्ता-श्वन्

१	श्वा	श्वानौ	श्वानः
२	श्वानम्	,,	शुनः
३	शुना	श्वभ्याम्	श्वभिः
४	शुने	,,	श्वभ्यः
५	शुनः	,,	,,
६	,,	शुनोः	शुनाम्
७	शुनि	,,	श्वसु
	हे श्वन् !		

रास्ता-पथिन्

१	पन्था	पन्थानौ	पन्थानः
२	पन्थानम्	,,	पथः
३	पथा	पथिभ्याम्	पथिभिः
४	पथे	,,	पथिभ्यः
५	पथः	,,	,,
६	,,	पथोः	पथाम्
७	पथि	,,	पथिषु
	हे पन्थाः		

आदमी-पुमस्

१	पुमान्	पुमांसौ	पुमांसः
२	पुमांसम्	,,	पुंसः
३	पुंसा	पुंभ्याम्	पुंभिः
४	पुंसे	,,	पुंभ्यः
५	पुंसः	,,	,,
६	,,	पुंसोः	पुंसाम्
७	पुंसि	,,	पुंसु
	हे पुमन् !		

पंडित-विद्वस्

१	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
२	विद्वांसम्	,,	विदुषः
३	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
४	विदुषे	,,	विद्वद्भ्यः
५	विदुषः	,,	,,
६	,,	विदुषोः	विदुषाम्
७	विदुषि	,,	विद्वत्सु
	हे विद्वन् !		

चाटने वाला-लिह्

१	लिट्	लिहौ	लिहः
२	लिहम्	,,	,,
३	लिहा	लिड्भ्याम्	लिड्भिः
४	लिहे	,,	लिड्भ्यः
५	लिहः	,,	,,
६	लिहः	लिहोः	लिहाम्
७	लिहि	,,	लिट्सु
	हे लिट्		

इन्–अन्त (लाठी वाला) दण्डिन्

१	दण्डि	दण्डिनौ	दण्डीनि
२	,,	,,	,,

शेष गुणिन् वत्

सकारान्त (दिल) मनस्

१	मनः	मनसी	मनांसि
२	,,	,,	,,

शेष श्रेयस् वत्

नकारान्त (दिन) अहन्

१	अहः	अह्नी / अहनी	अहानि
२	,,	,,	,,
३	अह्ना	अहोभ्याम्	अहोभिः
४	अह्ने	,,	अहोभ्यः
५	अह्नः	,,	,,
६	,,	अह्नोः	अह्नाम्
७	अहनि / अह्नि	,,	अहःसु

षकारान्त (कमान) धनुष्

१	धनुः	धनुषी	धनूंषि
२	,,	,,	,,
३	धनुषा	धनुर्भ्याम्	धनुर्भिः
४	धनुषे	,,	धनुर्भ्यः
५	धनुषः	,,	,,
६	,,	धनुषोः	धनुषाम्
७	धनुषि	,,	धनुःषु

नकारान्त (नाम) नामन्

१	नाम	नामनी / नाम्नी	नामानि
२	,,	,,	,,
३	नाम्ना	नामभ्याम्	नामभिः
४	नाम्ने	,,	नामभ्यः
५	नाम्नः	,,	,,
६	,,	नाम्नोः	नाम्नाम्
७	नामनि / नाम्नि	,,	नामसु

तकारान्त (बड़ा) महत्

१	महत्	महती	महान्ति
२	,,	,,	,,

शेष पचत् वत्

कल्याण-श्रेयस्

१ श्रेयान्	श्रेयांसौ	श्रेयांसः
२ श्रेयांसम्	,,	श्रेयसः
३ श्रेयसा	श्रेयोभ्याम्	श्रेयोभिः
४ श्रेयसे	,,	श्रेयोभ्यः
५ श्रेयसः	,,	,,
६ ,,	श्रेयसोः	यसाम्
७ श्रेयसि	,,	यस्सु

हे श्रेयान्

* पुल्लिंग सर्वनाम *

सब-सर्व

सर्व यद्वत्

वह-यह-अदस्

१ असौ	अमू	अमी
२ अमुम्	,,	अमून्
३ अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
४ अमुष्मै	,,	अमीभ्यः
५ अमुष्मात्	,,	,,
६ अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
७ अमुष्मिन्	,,	अमीषु

शिक्षा १२

सात लकार (फार्मस) आचुके हैं तीन शेष हैं वह यहां दिखलाये जाते हैं इन तीनों में अस् धातु का उच्चारण भूवत् होगा।

लुट् (First future)

अर्थ—होवेगा (२४ घंटे के अंदर) करेगा

ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
भविता	भवितारौ	भवितारः	कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः
भवितासि	भवितास्थः	भवितास्थ	कर्तासि	कर्तास्थः	कर्तास्थ
भवितास्मि	भवितास्वः	भवितास्मः	कर्तास्मि	कर्तास्वः	कर्तास्मः

III- conjugation

जुहोत्यादि गण तीसरा कंजूगेशन

धातु द्वित्व (डबल) होता है

होम करना – हु | डरना – भी

परस्मैपद | परस्मैपद

लट्

ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि	ब०
जुहोति	जुहुतः	जुह्वति	बिभेति	बिभीतः	बिभ्यति
जुहोषि	जुहुथः	जुहुथ	बिभेषि	बिभीथः	बिभीथ
जुहोमि	जुहुवः	जुहुमः	बिभेमि	बिभीवः	बिभीमः

लङ्

अजुहोत्	अजुहुताम्	अजुहवुः	अबिभेत्	अबिभीताम्	अबिभयुः
अजुहोः	अजुहुतम्	अजुहुत	अबिभेः	अबिभीतम्	अबिभीत
अजुहवम्	अजुहुव	अजुहुम	अबिभयम्	अबिभीव	अबिभीम

लोट्

जुहोतु	जुहुताम्	जुह्वतु	बिभेतु	बिभीताम्	बिभ्यतु
जुहुधि	जुहुतम्	जुहुत	बिभीहि	बिभीतम्	बिभीत
जुहवानि	जुहवाव	जुहवाम	बिभयानि	बिभयाव	बिभयाम

विधि लिङ्

जुहुयात्	जुहुयाताम्	जुहुयुः	बिभीयात्	बिभीयाताम्	बिभीयुः
जुहुयाः	जुहुयातम्	जुहुयात	बिभीयाः	बिभीयातम्	बिभीयात
जुहुयाम्	जुहुयाव	जुहुयाम	बिभीयाम्	बिभीयाव	बिभीयाम

लुट्

होता	होतारौ	होतारः	भेता	भेतारौ	भेतारः
होतासि	होतास्थः	होतास्थ	भेतासि	भेतास्थः	भेतास्थ
होतास्मि	होतास्वः	होतास्मः	भेतास्मि	भेतास्वः	भेतास्मः

लृट्

होष्यति होष्यतः होष्यन्ति । भेष्यति भेष्यतः भेष्यन्ति
होष्यसि होष्यथः होष्यथ । भेष्यसि भेष्यथः भेष्यथ
होष्यामि होष्यावः होष्यामः । भेष्यामि भेष्यावः भेष्यामः

लिट्

जुहाव जुहुवतुः जुहुवुः । बिभाय बिभ्यतुः बिभ्युः
जुहोथ } जुहुवथुः जुहुव । बिभेथ बिभ्यथुः बिभ्य
जुहविथ }
जुहाव जुहुविव जुहुविम । बिभाय बिभ्यिव बिभ्यिम

लुङ्

अहौषीत् अहौष्टाम् अहौषुः । अभैषीत् अभैष्टाम् अभैषुः
अहौषीः अहौष्टम् अहौष्ट । अभैषीः अभैष्टम् अभैष्ट
अहौषम् अहौष्व अहौष्म । अभैषम् अभैष्व अभैष्म

आशीर्लिङ्

हूयात् हूयास्ताम् हूयासुः । भीयात् भीयास्ताम् भीयासुः
हूयाः हूयास्तम् हूयास्त । भीयाः भीयास्तम् भीयास्त
हूयासम् हूयास्व हूयास्म । भीयासम् भीयास्व भीयास्म

लृङ्

अहोष्यत् अहोष्यताम् अहोष्यन् । अभेष्यत् अभेष्यताम् अभेष्यन्
अहोष्यः अहोष्यतम् अहोष्यत । अभेष्यः अभेष्यतम् अभेष्यत
अहोष्यम् अहोष्याव अहोष्याम । अभेष्यम् अभेष्याव अभेष्याम

पकारान्त (पानी) अप्

	ए०	द्वि०	ब०
१			आपः
२			अपः
३			अद्भिः
४			अद्भ्यः
५			,,
६			अपाम्
७			अप्सु

रकारान्त (आवाज़) गिर्

१	गीः	गिरौ	गिरः
२	गिरम्	,,	,,
३	गिरा	गीर्भ्याम्	गीर्भिः
४	गिरे	,,	गीर्भ्यः
५	गिरः	,,	,,
६	,,	गिरोः	गिराम्
७	गिरि	,,	गीःषु

षकारान्त (दुआ) आशिष्

१ आशीः आशिषौ आशिषः

गिर् वत्

तुदादिगण ६ ठा (कञ्जूगेशन)

' अ , विकरण लगता है धातु को गुण नहीं होता

परस्मैपद पूछना—प्रच्छ | आत्मनेपद मरना—मृ

लट्

ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
पृच्छति	पृच्छतः	पृच्छन्ति	म्रियते	म्रियेते	म्रियन्ते
पृच्छसि	पृच्छथः	पृच्छथ	म्रियसे	म्रियेथे	म्रियध्वे
पृच्छामि	पृच्छावः	पृच्छामः	म्रिये	म्रियावहे	म्रियामहे

लङ्

अपृच्छत्	अपृच्छताम्	अपृच्छन्	अम्रियत	अम्रियेताम्	अम्रियन्त
अपृच्छः	अपृच्छतम्	अपृच्छत	अम्रियथाः	अम्रियेथाम्	अम्रियध्वम्
अपृच्छम्	अपृच्छाव	अपृच्छाम	अम्रिये	अम्रियावहि	अम्रियामहि

लोट्

पृच्छतु	पृच्छताम्	पृच्छन्तु	म्रियताम्	म्रियेताम्	म्रियन्ताम्
पृच्छ	पृच्छतम्	पृच्छत	म्रियस्व	म्रियेथाम्	म्रियध्वम्
पृच्छानि	पृच्छाव	पृच्छाम	म्रियै	म्रियावहै	म्रियामहै

अभ्यास ३९

मैं वेदमंत्रको पढ़ता हुआ दिनमें हवन करूंगा। तू मौतके नाम से क्यूं डरता है। इन्द्रके धनुष से शत्रु डरते थे। वह सचाई में अपने दिलको हवन करें। जो हवन करेंगे वह मुसीबतों से नहीं डरेंगे। मैं कभी नहीं डरता था। प्रेस में जाकर देखो कि सुफेद कागज़ों को काले, लाल, पीले अक्षरों में लिखते हैं। कई तरह के टाईप मौजूद हैं कितने छोटे, कितने मोटे, और कितने वेलबूटेदार हैं कंपोज़ीटर बड़ी होशियारी के साथ अपने हाथों से एक एक अक्षर को सजाता है। बस यह मेहनत एक बार होती है फिर जितने ज़रूरत हों उतने कागज़ होजायेंगे।

अभ्यास ४०

विष्णु और शिव ब्रह्म के लिये होम करते थे। ब्रह्म की मिहरबानी से ब्रह्मा दैत्यों से नहीं डरता था। तुम दो रहिमदिल मांस का खाना पसन्द नहीं करते हो। घोड़े चना खाकर मोटे होते हैं। तुम दो खेत में जाकर देखो कि चीणा बहुत छोटा अनाज मिलेगा। मैंने गेहूं के सिट्टों में सैंकड़ों दाने देखे। मटर और मौहरी के खेत में बैठो वहां तमाम खेत में नीले फूल गूंजेंगे। जुवार और बाजरा मारवाड़ में बहुत उगता है। सांवक को वन में ऋषि खाते थे आजकल भी एकादशीव्रत में खाते हैं। वे दोनों हिंदुस्तान में अक्सर एकबार दिन में मांह या मूंग की दाल को खावेंगे।

अभ्यास ४१

मत लेजाओ। बालक डर न जाय। गुरु के मौजूद न होने पर शिष्यों को अधिकार है कि वे हवन करें। शिव के बड़े धनुष को राम ने तोड़ डाला। तुम सब एक इञ्च भर खेत को खोदो। कपड़ा न पाकर राजकुमार उदास होता था। मेरे बंगले और मेरे कुरसी, स्टूल तथा मूढ़े की वह हिफ़ाज़त करते थे। तुम्हारे घर के चारों तर्फ़ कुत्ते क्यों भौंकते थे। बड़ी हैरानी है कि मिक़नातीस को लोहा फ़ौरन चूम लेता है। कल प्रातःकाल राजोद्यान में जाकर मीठे २ आमों को चूसेंगे। राजमहल पर बैठे हुवे राजा और मन्त्री लोग मुसक्राते थे।

विधिलिङ्

पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयुः	।	म्रियेत	म्रियेयाताम्	म्रियेरन्
पृच्छेः	पृच्छेतम्	पृच्छेत	।	म्रियेथाः	म्रियेयाथाम्	म्रियेध्वम्
पृच्छेयम्	पृच्छेव	पृच्छेम	।	म्रियेय	म्रियेवहि	म्रियेमहि

लुट्

प्रष्टा	प्रष्टारौ	प्रष्टारः	।	मर्ता	मर्तारौ	मर्तारः
प्रष्टासि	प्रष्टास्थः	प्रष्टास्थ	।	मर्तासि	मर्तास्थः	मर्तास्थ
प्रष्टास्मि	प्रष्टास्वः	प्रष्टास्मः	।	मर्तास्मि	मर्तास्वः	मर्तास्मः

लृट्

प्रक्ष्यति	प्रक्ष्यतः	प्रक्ष्यन्ति	।	मरिष्यति	मरिष्यतः	मरिष्यन्ति
प्रक्ष्यसि	प्रक्ष्यथः	प्रक्ष्यथ	।	मरिष्यसि	मरिष्यथः	मरिष्यथ
प्रक्ष्यामि	प्रक्ष्यावः	प्रक्ष्यामः	।	मरिष्यामि	मरिष्यावः	मरिष्यामः

लिट्

पप्रच्छ	पप्रच्छतुः	पप्रच्छुः	।	ममार	मम्रतुः	मम्रुः
पप्रष्ठ	पप्रच्छथुः	पप्रच्छ	।	ममर्थ	मम्रथुः	मम्र
पप्रच्छ	पप्रच्छिव	पप्रच्छिम	।	ममार	मम्रिव	मम्रिम

लुङ्

अप्राक्षीत्	अप्राष्टाम्	अप्राक्षुः	।	अमृत	अमृषाताम्	अमृषत
अप्राक्षीः	अप्राष्टम्	अप्राष्ट	।	अमृथाः	अमृषाथाम्	अमृढ्वम्
अप्राक्षम्	अप्राक्ष्व	अप्राक्ष्म	।	अमृषि	अमृष्वहि	अमृष्महि

आशीर्लिङ्

पृच्छ्यात्	पृच्छ्यास्ताम्	पृच्छ्यासुः	।	मृषीष्ट	मृषीयास्ताम्	मृषीरन्
पृच्छ्याः	पृच्छ्यास्तम्	पृच्छ्यास्त	।	मृषीष्ठाः	मृषीयास्थाम्	मृषीध्वम्
पृच्छ्यासम्	पृच्छ्यास्व	पृच्छ्यास्म	।	मृषीय	मृषीवहि	मृषीमहि

पाठ (११)

सर्वनाम (प्रोनौन) नपुंसकलिङ्ग
Pronouns neuter gender

अकारांत (सब) सर्व

	ए०	द्वि०	ब०
१	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
२	,,	,,	,,

शेष पुल्लिंगवत् वत्

दकारान्त (जो) यद्

	ए०	द्वि	ब०
१	यत्	ये	यानि
२	,,	,,	,,

शेष पुं० वत्

दकारान्त (वह) तद्

	ए०	द्वि०	ब०
१	तत्	ते	तानि
२	,,	,,	,,

शेष पु० वत्

मकारान्त (यह) इदम्

	ए०	द्वि०	ब०
१	इदम्	इमे	इमानि
२	,,	,,	,,

शेष पुल्लिंगवत्

सकारान्त (वह-वह) अदस्

१	अदः	अमू	अमूनि
२	,,	,,	,,

शेष पु० वत्

मकारान्त (कौन) किम्

१	किम्	के	कानि
२	,,	,,	,,

शेष पु०वत्

दिवादिगणः ४र्थ [कंजूगेशन]

विकरण (य) धातुसे लगता है
IV Conjugation

लट्

नाचना-नृत
परस्मैपद

प्रकट होना- जन्
आत्मनेपद

ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि	ब०
नृत्यति	नृत्यतः	नृत्यन्ति	जायते	जायेते	जायन्ते
नृत्यसि	नृत्यथः	नृत्यथ	जायसे	जायेथे	जायध्वे
नृत्यामि	नृत्यावः	नृत्यामः	जाये	जायावहे	जायामहे

लृङ्

अमद्स्यत्	अमद्स्यताम्	अमद्स्यन्	अमरिष्यत्	अमरिष्यताम्	अमरिष्यन्
अमद्स्यः	अमद्स्यतम्	अमद्स्यत	अमरिष्यः	अमरिष्यतम्	अमरिष्यत
अमद्स्यम्	अमद्स्याव	अमद्स्याम	अमरिष्यम्	अमरिष्याव	अमरिष्याम

चाहना-इष् (इच्छ्)

परस्मैपद

लट्			लङ्		
ए०	द्वि०	ब	ए०	द्वि०	ब०
इच्छति	इच्छतः	इच्छन्ति	ऐच्छत्	ऐच्छताम्	ऐच्छन्
इच्छसि	इच्छथ	इच्छथ	ऐच्छः	ऐच्छतम्	ऐच्छत
इच्छामि	इच्छावः	इच्छामः	ऐच्छम्	ऐच्छाव	ऐच्छाम

लोट्			विधिलिङ्		
इच्छतु	इच्छताम्	इच्छन्तु	इच्छेत्	इच्छेताम्	इच्छेयुः
इच्छ	इच्छतम्	इच्छत	इच्छेः	इच्छेतम्	इच्छेत
इच्छानि	इच्छाव	इच्छाम	इच्छेयम्	इच्छेव	इच्छेम

लिट्			लृट्		
इयेष	ईषतुः	ईषुः	एषिष्यति	एषिष्यतः	एषिष्यन्ति
इयेषिथ	ईषथुः	ईष	एषिष्यसि	एषिष्यथः	एषिष्यथ
इयेष	ईषिव	ईषिम	एषिष्यामि	एषिष्यावः	एषिष्यामः

अभ्यास ४८

कन्या माता को पूछती है कि चुटकी क्यूं करते हैं। कार्तूस से घायल हो कर शेरनी मरती है। आकाश वाणी की आवाज़ सुन कर सिर्फ़ माला की चोट से रानी मर गई। अचारजा ने तार समाचार पढ़ कर चिट्ठीरसां से पूछा। पद्मिनी मेरे हाथ से होल्डर लेकर ज़मीन पर खिलेड़ती थी। सुशीला पानी से दवाई की गोली निगलती है। अलमारी में जाकर देखो वहां सुराही मिलेगी। भगवती ठीकर सतरें खींच कर कापी पर लिखे। स्त्रियों का ज़ेवर लज्जा है इस लिये मैं बुज़ुर्गों को देख कर शर्म करती हूं। मेरा पेट दर्द करता है और आंख फड़कती है

लङ्

अनृत्यत्	अनृत्यताम्	अनृत्यन्	।	अजायत	अजायेताम्	अजायन्त
अनृत्यः	अनृत्यतम्	अनृत्यत	।	अजायथाः	अजायेथाम्	अजायध्वम्
अनृत्यम्	अनृत्याव	अनृत्याम	।	अजाये	अजायावहि	अजायामहि

लोट्

नृत्यतु	नृत्यताम्	नृत्यन्तु	।	जायताम्	जायेताम्	जायन्ताम्
नृत्य	नृत्यतम्	नृत्यत	।	जायस्व	जायेथाम्	जायध्वम्
नृत्यानि	नृत्याव	नृत्याम	।	जायै	जायावहै	जायामहै

विधि लिङ्

नृत्येत्	नृत्येताम्	नृत्येयुः	।	जायेत	जायेयाताम्	जायेरन्
नृत्येः	नृत्येतम्	नृत्येत	।	जायेथाः	जायेयाथाम्	जायेध्वम्
नृत्येयम्	नृत्येव	नृत्येम	।	जायेय	जायेवहि	जायेमहि

लुट्

नर्तिता	नर्तितारौ	नर्तितारः	।	जनिता	जनितारौ	जनितारः
नर्तितासि	नर्तितास्थः	नर्तितास्थ	।	जनितासे	जनितासाथे	जनिताध्वे
नर्तितास्मि	नर्तितास्वः	नर्तितास्मः	।	जनिताहे	जनितास्वहे	जनितास्महे

लृट्

नर्तिष्यति	नर्तिष्यतः	नर्तिष्यन्ति	।	जनिष्यते	जनिष्येते	जनिष्यन्ते
नर्तिष्यसि	नर्तिष्यथः	नर्तिष्यथ	।	जनिष्यसे	जनिष्येथे	जनिष्यध्वे
नर्तिष्यामि	नर्तिष्यावः	नर्तिष्यामः	।	जनिष्ये	जनिष्यावहे	जनिष्यामहे

लिट्

ननर्त्त	ननृततुः	ननृतुः	।	जज्ञे	जज्ञाते	जज्ञिरे
ननर्तिथ	ननृतथुः	ननृत	।	जज्ञिषे	जज्ञाथे	जज्ञिध्वे
ननर्त्त	ननृतिव	ननृतिम	।	जज्ञे	जज्ञिवहे	जज्ञिमहे

अभ्यास ४९

एक गंवार दो स्त्रियों से पूंछता था कि टट्टी किधर है। गीदड़ों ने कहा अगर हाथी मर जाय तो दो महीने का भोजन होगा। दो मेंढकियां पूछेंगी कि संसार को कौन पैदा करता है। एक सांप चूही को खाकर के फिर उगलता था। मैं अपनी सारी को पहिनती हूं। पाठशाला में दो कन्यायें दाखिल हुईं। दो शौकीनों की शतरंज में मोहरे मरते थे। तहसीलदार ने हुक्म दिया है कि यहां के किसान हल जोतें। जलसे पर तमाम स्त्रियां कनात के अंदर बैठें। सुरमा को खरल में देकर रगड़ो ताकि बारीक हो जावे।

अभ्यास ५०

अगर वह किसी हकीम से पूंछता तो न मरता। मुसाफ़िर चाहते हैं कि हम स्टेशन पर जावें। हम चाहते थे कि सैकन्ड क्लास का टिकट लेकर रेल पर चढ़ें। हम टमटम से उतर कर जैसे ही प्लेट फार्म पर चढ़े वैसे ही इंजन का धूंआं देखा। रेल उस वक्त लाइन पर आती है जब सिगनल को देख लेती है। जैसे इंजन तेजी से दौड़ता है वैसे मोटोकार। आज कल तेज दौड़ने के लिये बाईसिकल हैं। छोटे बच्चों को सिखलाने के लिये ट्रायसीकल अच्छी सवारी हैं। मौजूदा सदी में यूरप वालों ने हवाई जहाज़ बनाये हैं। वे हवाई जहाज़ आकाश पर घूमते हुवे सारी दुनियां की सैर करते हैं।

पाठ १४ श

स्त्रीलिङ्ग सर्वनाम Pronoun of Feminine

मकारान्त (यह स्त्री) इदम्। सकारान्त (वह यह) अदस्

	ए०	द्वि०	ब०		ए०	द्वि०	ब०
१	इयम्	इमे	इमाः	१	असौ	अमू	अमूः
२	इमाम्	,,	,,	२	अमूम्	,,	,,
३	अनया	आभ्याम्	आभिः	३	अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः
४	अस्यै	,,	आभ्यः	४	अमुष्यै	,,	अमूभ्यः
५	अस्याः	,,	,,	५	अमुष्याः	,,	,,
६	,,	अनयोः	आसाम्	६	,,	अमुयोः	अमूषाम्
७	अस्याम्	,,	आसु	७	अमुष्याम्	,,	अमूषु

लुङ्

अनर्तीत्	अनर्तिष्टाम्	अनर्तिषुः	अजनि / अजनिष्ट	अजनिषाताम्	अजनिषत
अनर्तीः	अनर्तिष्टम्	अनर्तिष्ट			
अनर्तिषम्	अनर्तिष्व	अनर्तिष्म	अजनिष्ठाः	अजनिषाथाम्	अजनिध्वम्
			अजनिषि	अजनिष्वहि	अजनिष्महि

आशीर्लिङ्

नृत्यात्	नृत्यास्ताम्	नृत्यासुः	जनिषीष्ट	जनिषीयास्ताम्	जनिषीरन्
नृत्याः	नृत्यास्तम्	नृत्यास्त	जनिषीष्ठाः	जनिषीयास्थाम्	जनिषीध्वम्
नृत्यासम्	नृत्यास्व	नृत्यास्म	जनिषीय	जनिषीवहि	जनिषीमहि

लृङ्

अनर्तिष्यत्	अनर्तिष्यताम्	अनर्तिष्यन्	अजनिष्यत	अजनिष्येताम्	अजनिष्यन्त
अनर्तिष्यः	अनर्तिष्यतम्	अनर्तिष्यत	अजनिष्यथाः	अजनिष्येथाम्	अजनिष्यध्वम्
अनर्तिष्यम्	अनर्तिष्याव	अनर्तिष्याम	अजनिष्ये	अजनिष्यावहि	अजनिष्यामहि

अभ्यास ४२

बादलों की गर्ज सुन कर मोर नाचता है। कबूतर घोंसले में बार २ नाचता था। बंदर से बंदर ही पैदा होता है। आम पेविंद करने से मीठा पैदा हुआ। बोर्डिंग में दरज़ी कपड़े सीवे। मैं इस गेंद को नीचे फेंकूंगा। हाईस्कूल ने कॉलेज को क्रिकट खेलने के लिये चैलेंज दिया। हमें पूरा यक़ीन है कि फुटबाल में कालेज जीतेगा। बालर ने आउट करने के लिये विकट पर चोट लगाई। यह गेंद और यह बल्ला बड़े मज़बूत हैं।

अभ्यास ४३

तुम दो तूती को फूंक मारो। हंसके बच्चे नाचें। हे दासो! तूत का बीज बोवो ताकि वृक्ष पैदा होवें। मोर नाचेगा तो उसका बच्चा पैदा होवेगा। भीष्म का वृत्तान्त पढ़ कर हम दोनों का मन शान्त होगया। फागुन के मास पतनेसे

आकारान्त (सब) सर्वा

सर्वा सर्वे सर्वाः

इदम् वत्

दकारान्त (जो) यद् (या)				दकारान्त (वह) तद् (सा)	
ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
१ या	ये	याः	१ सा	ते	ताः
	इदम् वत्		२ ताम्	,,	,,
				इदमवत्	

मकारान्त (कौन) किम् (का)

१ का के काः

इदमवत् 7th Congugation

रुधादिगण ७ म [कञ्जूगेशन

'न' धातु के साथ लगाया जाता है

लट्

उभयपदी			उभयपदी		
रोकना—रुध्			खाना— भुज		
ए०	द्वि	ब०	ए०	द्वि०	ब०
रुणद्धि	रुन्धः	रुन्धन्ति	भुङ्क्ते	भुञ्जाते	भुञ्जते
रुणत्सि	,,	रुन्ध	भुङ्क्ते	भुञ्जाथे	भुङ्ग्ध्वे
रुणध्मि	रुन्ध्वः	रुन्ध्मः	भुञ्जे	भुञ्ज्वहे	भुञ्ज्महे

लङ्

अरुणत्	अरुन्धाम्	अरुन्धन्	अभुङ्क्त	भुञ्जाताम्	अभुञ्जत
अरुणः	अरुन्धम्	अरुन्ध	अभुङ्क्थाः	अभुञ्जाथाम्	अभुङ्ग्ध्वम्
अरुणधम्	अरुन्ध्व	अरुन्ध्म	अभुञ्जि	अभुञ्ज्वहि	अभुञ्ज्महि

कपड़ा शुद्ध होता है। देखो, यह दोनों मित्र आपस में गले लगते हैं। राम से वैर करके रावण बरबाद होता था। मूर्ख लंगूर बगैर घरके पानी में भीगें। हम नहीं मानते कि वे दो तिलाई कपड़े को चिकना करें। दानाह मूर्खों के वचनों को सहते हैं जैसे पहाड़ पानी को।

अभ्यास ४४

वसंत की मौसिम में तमाम देहाती बाज़ारों में नाचते थे। चैत्रमें मत्ताहात के फूल और फल पैदा होते थे। वे रसोइये चौके में आग सुलगाते थे। वेसन के पकोड़े और दाल के पापड़ बनाता है। बेंगन के साग में अमचूर के साथ मसाले को भोंकता हैं। हे भाई! चटनी को ऐसा घोटो कि धनियां के साथ काली मिर्च और जीरा लीन होजावे। हींग की धुंगारी दाल के स्वाद को बढाती है। कितने लोग धंगारी में प्याज और लहसुन को भी लेते हैं। आलू को अंगारों में भून करके घी में तलो। कचालु को पानी में उबाल कर घी में तलोगे तो बहुत अच्छा साग खाओगे।

पाठ १२ श

अजन्तस्त्रीलिङ्ग Ending in vowels feminine gender

आकारान्त (गङ्गा) गङ्गा

	ए०	द्वि०	ब०
१	गङ्गा	गङ्गे	गङ्गाः
२	गङ्गाम्	,,	,,
३	गङ्गया	गङ्गाभ्याम्	गङ्गाभिः
४	गङ्गायै	,,	गङ्गाभ्यः
५	गङ्गायाः	,,	,,
६	,,	गङ्गयोः	गङ्गानाम्
७	गङ्गायाम्	,,	गङ्गासु
	हे गङ्गे !		

ईकारान्त (देवी) देवी

	ए०	द्वि०	ब०
१	देवी	देव्यौ	देव्यः
२	देवीम्	,,	देवीः
३	देव्या	देवीभ्याम्	देवीभिः
४	देव्यै	,,	देवीभ्यः
५	देव्याः	,,	,,
६	,,	देव्योः	देवीनाम्
७	देव्याम्	,,	देवीषु
	हे देवि		

लक्ष्मीः, श्रीः (१) शेष देवीवत्

१ अवी, तन्त्री, तरी, लक्ष्मी, धी, ह्री, श्री यह सातशब्द प्रथमाविभक्ति के एक वचन में विसर्ग लेते हैं। बाकी देवी की तरह होते हैं ॥

लोट्

रुणद्धु	रुन्धाम्	रुन्धन्तु	भुङ्क्ताम्	भुञ्जाताम्	भुञ्जताम्
रुन्धि	रुन्धम्	रुन्ध	भुङ्क्ष्व	भुञ्जाथाम्	भुङ्ग्ध्वम्
रुणधानि	रुणधाव	रुणधाम	भुनजै	भुनजावहै	भुनजामहै

विधि लिङ्

रुन्ध्यात्	रुन्ध्याताम्	रुन्ध्युः	भुञ्जीत	भुञ्जीयाताम्	भुञ्जीरन्
रुन्ध्याः	रुन्ध्यातम्	रुन्ध्यात	भुञ्जीथाः	भुञ्जीयाथाम्	भुञ्जीध्वम्
रुन्ध्याम्	रुन्ध्याव	रुन्ध्याम	भुञ्जीय	भुञ्जीवहि	भुञ्जीमहि

लुट्

रोद्धा	रोद्धारौ	रोद्धारः	भोक्ता	भोक्तारौ	भ क्तारः
रोद्धासि	रोद्धास्थः	रोद्धास्थ	भोक्तासि	भोक्तास्थः	भोक्तास्थ
रोद्धास्मि	रोद्धास्वः	रोद्धास्मः	भोक्तास्मि	भोक्तास्वः	भोक्तास्मः

लृट्

रोत्स्यति	रोत्स्यतः	रोत्स्यन्ति	भोक्ष्यते	भोक्ष्येते	भोक्ष्यन्ते
रोत्स्यसि	रोत्स्यथः	रोत्स्यथ	भोक्ष्यसे	भोक्ष्येथे	भोक्ष्यध्वे
रोत्स्यामि	रोत्स्याव	रोत्स्याम	भोक्ष्ये	भोक्ष्यावहे	भोक्ष्यामहे

लिट्

रुरोध	रुरुधतुः	रुरुधुः	बुभुजे	बुभुजाते	बुभुजिरे
रुरोधिथ	रुरुधथुः	रुरुध	बुभुजिषे	बुभुजाथे	बुभुजिध्वे
रुरोध	रुरुधिव	रुरुधिम	बुभुजे	बुभजिवहे	बुभुजिमहे

लुङ्

अरौत्सीत्	अरौद्धाम्	अरौत्सुः	अभुक्त	अभुक्षाताम्	अभुक्षत
अरौत्सीः	अरौद्धम्	अरौद्ध	अभुक्थाः	अभुक्षाथाम्	अभुग्ध्वम्
अरौत्सम्	अरौत्स्व	अरौत्स्म	अभुक्षि	अभुक्ष्वहि	अभुक्ष्महि

ऊकारान्त (बीबी) वधू

१	वधूः	वध्वौ	वध्वः
२	वधूम्	,,	वधूः
३	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
४	वध्वै	,,	वधूभ्यः
५	वध्वाः	,,	,,
६	,,	वध्वोः	वधूनाम्
७	वध्वाम्	,,	वधूषु
	हे वधु		

ऋकारान्त (माँ) मातृ

१	माता	मातरौ	मातरः
२	मातरम्	,,	मातॄः

शेष दातृवत्

एवं–यातृ, दुहितृ, ननान्दृ, स्वसृ,

ईकारान्त (औरत) स्त्री

१	स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः
२	स्त्रियम् (स्त्रीम्)	,,	,, स्त्रीः

शेष नदीवत्

इकारान्त (अकल) मति

१	मतिः	मती	मतयः
२	मतिम्	,,	मतीः
३	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
४	मत्यै, मतये	,,	मतिभ्यः
५	मत्याः, मतेः	,,	,,
६	,, ,,	मत्योः	मतीनाम्
७	मत्याम्, मतौ	,,	मतिषु
	हे मते !		

V. Conjugation

सुनोत्यादिगण ५ म (कंजूगेशन)

प्राप्त होना–आप् प्र उपसर्ग साथ लगाया जाता है।

चुनना—चि

परस्मैपद — आत्मने पद

लट्

ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
आप्नोति	आप्नुतः	आप्नुवन्ति	चिनुते	चिन्वाते	चिन्वते
आप्नोषि	आप्नुथः	आप्नुथ	चिनुषे	चिन्वाथे	चिनुध्वे
आप्नोमि	आप्नुवः	आप्नुमः	चिन्वे	चिनुवहे	चिनुमहे

आशीर्लिङ्

रुध्यात्	रुध्यास्ताम्	रुध्यासुः	भुक्षीष्ट	भुक्षीयास्ताम्	भुक्षीरन्
रुध्याः	रुध्यास्तम्	रुध्यास्त	भुक्षीष्ठाः	भुक्षीयास्थाम्	भुक्षीध्वम्
रुध्यासम्	रुध्यास्व	रुध्यास्म	भुक्षीय	भुक्षीवहि	भुक्षीमहि

लृङ्

अरोत्स्यत्	अरोत्स्यताम्	अरोत्स्यन्	अभोक्ष्यत	अभोक्ष्येताम्	अभोक्ष्यन्त
अरोत्स्यः	अरोत्स्यतम्	अरोत्स्यत	अभोक्ष्यथाः	अभोक्ष्येथाम्	अभोक्ष्यध्वम्
अरोत्स्यम्	अरोत्स्याव	अरोत्स्याम	अभोक्ष्ये	अभोक्ष्यावहि	अभोक्ष्यामहि

अभ्यास ५१

शहिर के बाहिर वह ग्वाला किन गौवों को रोकता है। महमान यहां आकर मिठाई खाता है। बकरियों पर भेड़िये परते हैं। उन को रोको। वे सब भेड़ें मटर का घास खावें। शेर से शेरनी में एकबार बच्चा पैदा होता है। गैंडा की सूरत ऐसी डरावनी है कि देख कर मनुष्य डर जाय। सूअरी के माथे पर कतली नहीं होती। भैंसा बड़ा बलवान् होता है। भैंसका दूध मज़ेदार और भारी है। घड़याल एक जानवर का नाम है जो पानी में रहकर जीवों को मारता है।

अभ्यास ५२

भीमसेन ने युद्ध में द्रोण अचारज के रथ को रोका। स्वामी शङ्करअचारज ने मण्डन मिश्रके घर भोजन खाया। हे पुत्रियों! तुम दोनों इस बुल्बुल को छिपा कर छोड़ो। बगुली चुपचाप होकर मच्छलियोंको देखती है। यह तोती कीलपर बैठी हुई आदमी की तरह बोलती है। देखो वह चिल्ल आकाश पर शिकार के लिये उड़ती है। उस मेंडकी को यहां लाकर मैं खेलूंगी। मोरनी कि जिसके पर आंखकी तरह सुंदर थे एक सांपनी के पीछे दौड़ती थी। चिड़ी ने अपनी सखियों से कहा मैं कभी इस तालाब पर तैरती थी। किरली कूदकर फ़ौरन टेंभूंको पकड़कर खायगी।

अभ्यास ५३

हम अपने बरामदे में बिल्ली को रोकेंगे। मोमजामे का छाता बनाकर उस के नीचे बैठ कर खाओ। नौबतखाने की आवाज़ें गुलशोर को रोकें। जितना

लङ्

आप्नोत्	आप्नुताम्	आप्नुवन्	अचिनुत	अचिन्वाताम्	अचिन्वत
आप्नोः	आप्नुतम्	आप्नुत	अचिनुथाः	अचिन्वाथाम्	अचिनुध्वम्
आप्नवम्	आप्नुव	आप्नुम	अचिन्वि	अचिनुवहि	अचिनुमहि

लोट्

आप्नोतु	आप्नुताम्	आप्नुवन्तु	चिनुताम्	चिन्वाताम्	चिन्वताम्
आप्नुहि	आप्नुतम्	आप्नुत	चिनुष्व	चिन्वाथाम्	चिनुध्वम्
आप्नवानि	आप्नवाव	आप्नवाम	चिनवै	चिनवावहै	चिनवामहै

विधिलिङ्

आप्नुयात्	आप्नुयाताम्	आप्नुयुः	चिन्वीत	चिन्वीयाताम्	चिन्वीरन्
आप्नुयाः	आप्नुयातम्	आप्नुयात	चिन्वीथाः	चिन्वीयाथाम्	चिन्वीध्वम्
आप्नुयाम्	आप्नुयाव	आप्नुयाम	चिन्वीय	चिन्वीवहि	चिन्वीमहि

लुट्

आप्ता	आप्तारौ	आप्तारः	चेता	चेतारौ	चेतारः
आप्तासि	आप्तास्थः	आप्तास्थ	चेतासे	चेतासाथे	चेताध्वे
आप्तास्मि	आप्तास्वः	आप्तास्मः	चेताहे	चेतास्वहे	चेतास्महे

लृट्

आप्स्यति	आप्स्यतः	आप्स्यन्ति	चेष्यते	चेष्येते	चेष्यन्ते
आप्स्यसि	आप्स्यथः	आप्स्यथ	चेष्यसे	चेष्येथे	चेष्यध्वे
आप्स्यामि	आप्स्यावः	आप्स्यामः	चेष्ये	चेष्यावहे	चेष्यामहे

लिट्

आप	आपतुः	आपुः	चिच्ये	चिच्याते	चिच्यिरे
आपिथ	आपथुः	आप	चिच्यिषे	चिच्याथे	चिच्यिढ्वे
आप	आपिव	आपिम	चिच्ये	चिच्यिवहे	चिच्यिमहे

यह पैमाना है इतना काटकर गन्ना खाओ। हीरे और मोती सब अक्सर सुफ़ेद रंग के होते हैं। हम ज़रूर कहेंगे कि दुनिया में सादा रंग सबसे ज्यादा है। सुफ़ेद और लाल रंग मिलकर गुलाबी होता था। तोरई के फूल बेल के पास जाकर देखो पीले होंगे। अंगूठी में पुखराज का नगीना खूब सजता है। कहते हैं कि लाल एक ऐसा रत्न है कि अंधेरे में रोशनी कर देता है।

पाठ १५ शः Numerals

❋ संख्यावाचक ❋

पुल्लिङ्ग				नपुंसकलिङ्ग				स्त्रीलिङ्ग			
	ए०	द्वि०	ब०		ए०	द्वि	ब०		ए०	द्वि०	ब०
१	एकः		एके	१	एकम्			१	एका		
केवल एकवचन में शेष यद्ववत्				२	,,			इदम्वत्			
				शेष यद्वत्							

दो—द्वि

पुल्लिङ्ग				नपुंसकलिङ्ग				स्त्रीलिङ्ग			
	ए०	द्वि०	ब०		ए०	द्वि०	ब०		ए०	द्वि०	ब०
१		द्वौ		१		द्वे		स्त्रीलिङ्ग में द्वि शब्द-नपुंसकवत् है			
२		,,		२		,,					
३		द्वाभ्याम्		३		द्वाभ्याम्					
४		,,		४		,,					
५		,,		५		,,					
६		द्वयोः		६		द्वयोः					
७		,,		७		,,					

तीन—त्रि

पुल्लिङ्ग				नपुंसकलिङ्ग				स्त्रीलिङ्ग			
	ए०	द्वि०	ब०		ए०	द्वि०	ब०		ए०	द्वि०	ब०
१			त्रयः	१			त्रीणि	१			तिस्रः
२			त्रीन्	२			,,	२			,,
३			त्रिभिः	३			शेष पुल्लिङ्गवत्	३			तिसृभिः
४			त्रिभ्यः	४				४			तिसृभ्यः
५			,,	५				५			,,
६			त्रयाणाम्	६				६			तिसृणाम्
७			त्रिषु	७				७			तिसृषु

लुङ्

आपत्	आपताम्	आपन् ।	अचेष्ट	अचेषाताम्	अचेषत
आपः	आपतम्	आपत ।	अचेष्ठाः	अचेषाथाम्	अचेढ्वम्
आपम्	आपाव	आपाम ।	अचेषि	अचेष्वहि	अचेष्महि

आशीर्लिङ्

आप्यात्	आप्यास्ताम्	आप्यासुः ।	चेषीष्ट	चेषीयास्ताम्	चेषीरन्
आप्याः	आप्यास्तम्	आप्यास्त ।	चेषीष्ठाः	चेषीयास्थाम्	चेषीध्वम्
आप्यासम्	आप्यास्व	आप्यास्म ।	चेषीय	चेषीवहि	चेषीमहि

लृङ्

आप्स्यत्	आप्स्यताम्	आप्स्यन् ।	अचेष्यत	अचेष्येताम्	अचेष्यन्त
आप्स्यः	आप्स्यतम्	आप्स्यत ।	अचेष्यथाः	अचेष्येथाम्	अचेष्यध्वम्
आप्स्यम्	आप्स्याव	आप्स्याम ।	अचेष्ये	अचेष्यावहि	अचेष्यामहि

अभ्यास ४५

गङ्गा हिमालय से गिर कर हरिद्वार को प्राप्त होती है । देवी बागमें जाकर पूजा के लिये फूलों को चुनती है । मुद्दत तक आचारजा के पास रहकर मैं इस सप्ताह में माता को प्राप्त हुई । देहात में बीबियां भी खेती में दाने चुनती थीं । हे सखियों ! आओ दुलहिन को देखें नाकमें नथ और पांव में पायज़ेब पहिनती है । इस कन्या के पांव में घुंघरीदार ज़ेवर है । मेरी नानी ने मेरी दादीको कहा तुम रुपये को वृथा मत खर्च करो । मेरी बूआ मलाई और रोटियों को स्वादसे चखती थी । दूर जाओ, शहद की मक्खी डङ्क मारेगी । कन्या की भाभी अब बूढ़ी है ।

अभ्यास ४६

वे, दो कन्यायें जल्दी आचारजा की सेवा में [illegible] । मालिनको [illegible] वृक्षोंसे फ़ालसे और पीलू चुने । हे [illegible]

चार—चतुर्

पुं०

	ए०	द्वि०	ब०
१			चत्वारः
२			चतुरः
३			चतुर्भिः
४			चतुर्भ्यः
५			"
६			चतुर्णाम्
७			चतुर्षु

नपुं०

	ए०	द्वि०	ब०
१			चत्वारि
२			"
३			
४			
५			
६			
७			

स्त्रीलिङ्ग

	ए०	द्वि०	ब०
१			चतस्रः
२			"
३			चतसृभिः
४			चतसृभ्यः
५			"
६			चतसृणाम्
७			चतसृषु

पांच—पञ्चन्

तीनों लिंगों में

	ए०	द्वि०	ब०
१			पञ्च
२			"
३			पञ्चभिः
४			पञ्चभ्यः
५			"
६			पञ्चानाम्
७			पञ्चसु

छे—षष्

तीनों लिंगों में

	ए०	द्वि०	ब०
१			षट्
२			"
३			षड्भिः
४			षड्भ्यः
५			"
६			षण्णाम्
७			षट्सु

सात—सप्तन्

तीनों लिंगों में

	ए०	द्वि०	ब०
१			सप्त
२			"
३			सप्तभिः
४			सप्तभ्यः
५			"
६			सप्तानाम्
७			सप्तसु

आठ—अष्टन्

तीनो लिंगो में

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१			अष्टौ, अष्ट
२			"
३			अष्टाभिः, अष्टभिः
४			अष्टाभ्यः, अष्टभ्यः
५			"
६			अष्टानाम्
७			अष्टासु, अष्टसु

आगे नव आदि संख्या सप्तन् की भांति हैं विंशति आदि स्त्रीलिङ्गवाची हैं

तो कल मैं भी तुम को स्लेट दूंगी। इस बक्स को खोलो, देखो क़लम, दवात और स्याहीचूस काग़ज़ प्राप्त होवेंगे। जहां मैं पढ़ती थी वहां ही मेरी बहिन पढ़ेगी। मिसरी सिटा और छोटी इलायची मुख में रक्खो; खुश्की दूर होती है। पढ़ने के लिये अगर लैम्प नहीं है तो मोमबत्तीको जलाओ। लिखने से पहले दीबाचा लिखो। धर्म की जांच के लिये पुस्तकें समाप्त करो। प्राचीन काल में औरतों का भूषण लज्जा था।

अभ्यास ४७

ईश्वर करे भारत की स्त्रियां सुमति को प्राप्त होवें। पिछले युगों में अक्सर प्रजा फल चुनती और जंगलों में रहती थी। सरोजनी मिक़राज़ से कपड़े को काटकर सीती है। हलवाइन रक़ाबी में जलेबियां भर कर कन्या के लिये देती थी। छोटी लड़की दमड़ी या कसीरा लेकर खुश होती हैं। हे भाग्यिनी दीया सलाई कहां है। यशोदा! आकाश पर बादल गर्जते हैं संभव है कि बिजली चमके। बरसात की मौसिम में नदियां बड़े वेग से बहती थीं। शाबाश! चींटियों शाबाश! तुम्हारी हिम्मत को देख स्त्रियां शर्मिन्दा होवेंगी। हमारे राजा के पास तोपें और बन्दूक़ें हैं।

पाठ १२ वां

हलन्त स्त्रीलिङ्ग (Ending in consonants Feminine Gender)

चकारान्त (आवाज़) वाच् जकारान्त (माला) स्रज्

	ए०	द्वि०	ब०
१	वाक्,ग्	वाचौ	वाचः
२	वाचम्	,,	,,
३	वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः
४	वाचे	,,	वाग्भ्यः
५	वाचः	,,	,,
६	,,	वाचोः	वाचाम्
७	वाचि	,,	वाक्षु

	ए०	द्वि०	ब०
१	स्रक्,ग्	स्रजौ	स्रजः
२	स्रजम्	,,	,,
३	स्रजा	स्रग्भ्याम्	स्रग्भिः

वाच्वत्

शकारान्त (तरफ़) दिश्

	ए०	द्वि०	ब०
१	दिक्, ग्	दिशौ	दिशः

वाच् वत्

8th Conjugation.

तनादिगण ८ म [कञ्जुगेशन]

उभयपदी | उभयपदी

फैलाना—तन् | लट् | करना—कृ

ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
तनोति	तनुतः	तन्वन्ति ।	कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते
तनोषि	तनुथः	तनुथ ।	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे
तनोमि	तन्वः	तन्मः ।	कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे

लङ्

अतनोत्	अतनुताम्	अतन्वन् ।	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत
अतनोः	अतनुतम्	अतनुत ।	अकुरुथाः	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्
अतनवम्	अतनुव	अतनुम ।	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि

लोट्

तनोतु	तनुताम्	तन्वन्तु	। कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्
तनु	तनुतम्	तनुत	। कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्
तनवानि	तनवाव	तनवाम	। करवै	करवावहै	करवामहै

विधि लिङ्

तनुयात्	तनुयाताम्	तनुयुः	। कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्
तनुयाः	तनुयातम्	तनुयात	। कुर्वीथाः	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्
तनुयाम्	तनुयाव	तनुयाम	। कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि

लुट्

तनिता	तनितारौ	तनितारः	। कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः
तनितासि	तनितास्थः	तनितास्थ	। कर्तासे	कर्तासाथे	कर्ताध्वे
तनितास्मि	तनितास्वः	तनितास्मः	। कर्ताहे	कर्तास्वहे	कर्तास्महे

लृट्

तनिष्यति	तनिष्यतः	तनिष्यन्ति	करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते
तनिष्यसि	तनिष्यथः	तनिष्यथ	करिष्यसे	करिष्येथे	करिष्यध्वे
तनिष्यामि	तनिष्यावः	तनिष्यामः	करिष्ये	करिष्यावहे	करिष्यामहे

लिट्

ततान	तेनतुः	तेनुः	चक्रे	चक्राते	चक्रिरे
तेनिथ	तेनथुः	तेन	चकृषे	चक्राथे	चकृढ्वे
ततान	तेनिव	तेनिम	चक्रे	चकृवहे	चकृमहे

लुङ्

अतानीत्	अतानिष्टाम्	अतानिषुः	अकृत	अकृषाताम्	अकृषत
अतानीः	अतानिष्टम्	अतानिष्ट	अकृथाः	अकृषाथाम्	अकृढ्वम्
अतानिषम्	अतानिष्व	अतानिष्म	अकृषि	अकृष्वहि	अकृष्महि

आशीर्लिङ्

तन्यात्	तन्यास्ताम्	तन्यासुः	कृषीष्ट	कृषीयास्ताम्	कृषीरन्
तन्याः	तन्यास्तम्	तन्यास्त	कृषीष्ठाः	कृषीयास्थाम्	कृषीढ्वम्
तन्यासम्	तन्यास्व	तन्यास्म	कृषीय	कृषीवहि	कृषीमहि

लृङ्

अतनिष्यत्	अतनिष्यताम्	अतनिष्यन्	अकरिष्यत	अकरिष्येताम्	करिष्यन्त
अतनिष्यः	अतनिष्यतम्	अतनिष्यत	अकरिष्यथाः	अकरिष्येथाम्	अकरिष्यध्वम्
अतनिष्यम्	अतनिष्याव	अतनिष्याम	अकरिष्ये	अकरिष्यावहि	अकरिष्यामहि

अभ्यास ५४

एक शिकारी एक स्त्री को बुलाकर अण्डादान करता है। कोने में मकड़ी जाला फैलाती है। दुकानदार ने दुकानको खोलकर सौदा फैलाया। मैं

५ व्रजमें गौ को रोकता है। ६ बालकसे रास्ता पूछता है
व्रजम् अवरुणद्धि गाम्। बालकं पन्थानं पृच्छति
७ वृक्षसे फल इकट्ठे करता है ८-९ बालक को धर्म सिखलाता है
वृक्षम् अवचिनोति फलानि। माणवकं धर्मशास्त्रं शास्ति (ब्रूते)
१० देवदत्त से सौ जीतता है। ११ अमृतके लिये क्षीर सागर को मथता है
शतं जयति देवदत्तम्। सुधां क्षीरनिधिं मथ्नाति
१२ देवदत्त से सौ रुपया चुराता है। १३-१४-१५-१६ बकरी को गांव
देवदत्तं शतं मुष्णाति। में लेजाता है, प्राप्त करता है,
खींचता है, पहुंचाता है।
ग्राममजां नयति, हरति,
कर्षति, वहति वा।

अभ्यास ६३

आकसे दूधको दोहता है। तूने माली से फूल मांगे। गेहूंकी रोटियां पकावेगा। राजा लोग चोरों पर सैकड़ों रुपये जुर्माना करते थे। एक ब्राह्मण दूसरे ब्राह्मण की तरक्की को रोकता है। कोई जिज्ञासु किसी महापुरुष से धर्म पूछता था। हनुमान् अशोक वन में वृक्षोंके फलोंको चुने। हे गुरु! अपने शिष्यको धर्म बताओ। कमांडर फ़ौज सेना को कवायद सिखलावेगा। दुर्योधन युधिष्ठिर से राज्य जीतता था।

अभ्यास ६४

यशोदा माखन के लिये दूध को मथती थी। चोर दौलतमंद से सौ रुपये चुराता है। लीडर रियाया को राजा की सेवा में लेजायगा। हरि भक्तों के पापों को हरे। किसान लोग पृथिवी पर हल खैंचें। चिट्ठीरसां मुझे पोस्ट-कार्ड पहुंचाता है। हम सब वेसन का बड़ा पकाते हैं। तुम लोग घरके फुज़ूल खर्चों को रोकते हो। वे गड़रिये गांव में बकरियों को लेजाते थे। देवता और दैत्यों ने मिलकर जवाहिरात के लिये समुद्र को मथा।

जुकामके लिये खस खस का हलवा करता हूं। पत्थरी मनुष्यके मसाने में दर्द करती है। बवासीर एक ऐसा बुरा रोग है कि मनुष्य हड्डियों की मुट्ठी सा होजाता है। मिर्गी वाला खड़ा खड़ा ही बेहोश होजाता है। तपेदिक़ जवानी में जवानों को लपेटता है। और तीसरे दर्जे में पहुंचते ही खतम करदेता है। खबरदार! सब बीमारियों की जड़ बदपरहेज़ी और बेअहतयाती है अगर ज़िंदगी ज्यादा चाहते हो तो इनसे बचकर रहो। ब्रह्मचर्य से, धार्मिक विद्या पढ़ने से, नियमपर चलनेसे, पुराने लोग मौतको जीतते थे।

अभ्यास ५५

दो चिड़ियां परोंको फैलावें। दो मुन्सिफ़ कचहरी में बैठकर प्रजाका इन्साफ़ करें। मच्छने कहा माहीगीर आकर तालाब में जाल फैलायेंगे। दूसरा बोला हमको उस वक्त विचार करेंगे जब देखेंगे कि दुश्मन शिरपर है। अदालत के क्लर्क ने अढाई रुपया मुझसे रिश्वत मांगी। नंबरदार के घोड़े से एक थैली रुपयों की नीचे गिरी। एकन्नी के चार पैसे लेकर चार फ़क़ीरों को बांटूंगा। चवन्नी वापिस देताहूं फिर इसकी दो दुअन्नीआं लूंगा। एक पाईकी जितनी कौड़ियें होती हैं उतनी मुझे देदो। कसीरे अधेलेका कोई हिसाब नहीं, सीधा आने पैसों का हिसाब रक्खो।

अभ्यास ५६

हितोपदेशके शिकारी ने कबूतरों के लिये जाल फैलाया था। राजा युधिष्ठिर धर्म की रक्षा के लिये बनों में तपस्या करता था। तूने दस्ताने के लिये अंगुलियां फैलाईं। मैंने जुराब के लिये पांव को आगे किया। स्वर्ग में उर्वशी आदिक अप्सरायें रेशमी लहंगे पहनती थीं। अंगरेजोंकी तीन लेडियां गवन को रंगती थीं। आठ धोतियां छः अंगोछे चार रुमाल और तीन तौलिये मेरे पास थे। दो औरतें एक बोढन, दो कमीजों, तीन घघरों, और चार वास्कटों के लिये ज़िद करती थीं। एक स्कूल का लड़का कोट, पाजामा और पतलून को चाहता था। एक कन्या सुई, धागा और बटन लेकर सीना सीखती थी॥

प्रेरणार्थक (णयन्त) प्रक्रिया Causative

शिक्षा १६

१ किसीको किसी काम में प्रेरण करना (लगाना) प्रेरणार्थक (णयन्त) का अर्थ है। जैसे–कराना, खिलाना, सुलाना, दिखाना, पिलाना, इत्यादि ॥

२ णयन्त में 'अय' धातु के साथ लगाया जाता है।

३ स्वरान्त धातु वृद्धि लेता है अकारोपधा धातु * (Penaltimate) की वृद्धि होती है इकार, उकार, ऋकार उपधा गुण लेते हैं।

४ पा धातु को छोड़ कर शेष जितने दीर्घ आकारान्त धातु हैं सब 'पय' लेते हैं।

५ णयन्त धातु उभयपदि होते हैं।

६ मकारान्त धातु वृद्धि नहीं लेते।

पाठ १९

कराना कारय ‡

लट्			लङ्		
ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
कारयति	कारयतः	कारयन्ति	अकारयत्	अकारयताम्	अकारयन्
कारयसि	कारयथः	कारयथ	अकारयः	अकारयतम्	अकारयत
कारयामि	कारयावः	कारयामः	अकारयम्	अकारयाव	अकारयाम

लोट्			विधिलिङ्		
ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
कारयतु	कारयताम्	कारयन्तु	कारयेत्	कारयेताम्	कारयेयुः
कारय	कारयतम्	कारयत	कारयेः	कारयेतम्	कारयेत
कारयाणि	कारयाव	कारयाम	कारयेयम्	कारयेव	कारयेम

* अन्तवाले अक्षर से पूर्वका अक्षर उपधा कहलाता है।

‡ कृ × अय = कार् × अय = कारय

पाठ १६ श

अन्वादेश

जिसका कुछ कार्य बोधन करने के लिये उच्चारण हो चुका हो फिर दूसरे कार्य के लिये उसको दुबारा बोधन किया जाय इसको अन्वादेश कहते हैं। अन्वादेश में इदम् शब्द के रूप द्वितीया समग्र तृतीया के एकवचन, और षष्ठी के द्विवचन में परिवर्त्तन होजाते हैं

यह (इदम्)

पुल्लिङ्ग				नपुंसकलिङ्ग				स्त्रीलिङ्ग			
	ए०	द्वि०	ब०		ए०	द्वि०	ब०		ए०	द्वि०	ब०
१				१				१			
२	एनम्	एनौ	एनान्	२	एनत्	एने	एनानि	२	एनाम्	एने	एनाः
३	एनेन			३	एनेन			३	एनया		
४				४				४			
५				५				५			
६		एनयोः		६		एनयोः		६		एनयोः	
७				७				७			

IX Congugation

क्र्यादिगण ९ वां कञ्जूगेशन

'ना, विकरण लगता है

उभयपदी लेना—ग्रह्				उभयपदी जानना—ज्ञा		

लट्

ए०	द्वि०	ब०		ए०	द्वि०	ब०
गृह्णाति	गृह्णीतः	गृह्णन्ति	।	जानाति	जानीतः	जानन्ति
गृह्णासि	गृह्णीथः	गृह्णीथः	।	जानासि	जानीथः	जानीथ
गृह्णामि	गृह्णीवः	गृह्णीमः	।	जानामि	जानीवः	जानीमः

लङ्

अगृह्णात्	अगृह्णीताम्	अगृह्णन्	।	अजानात्	अजानीताम्	अजानन्
अगृह्णाः	अगृह्णीतम्	अगृह्णीत	।	अजानाः	अजानीतम्	अजानीत
अगृह्णाम्	अगृह्णीव	अगृह्णीम	।	अजानाम्	अजानीव	अजानीम

लुट् लृट्

कारयिता कारयितारौ कारयितारः। कारयिष्यति कारयिष्यतः कारयिष्यन्ति
कारयितासि कारयितास्थः कारयितास्थ। कारयिष्यसि कारयिष्यथः कारयिष्यथ
कारयितास्मि कारयितास्वः कारयितास्मः। कारयिष्यामि कारयिष्यावः कारयिष्यामः

लिट् लुङ्

कारयांबभूव कारयांबभूवतुः कारयांबभूवुः। अचीकरत् अचीकरताम् अचीकरन्
कारयांबभूविथ कारयांबभूवथुः कारयांबभूव। अचीकरः अचीकरतम् अचीकरत
कारयांबभूव कारयांबभूविव कारयांबभूविम। अचीकरम् अचीकराव अचीकराम

आशीर्लिङ् लृङ्

कार्यात् कार्यास्ताम् कार्यासुः। अकारयिष्यत् अकारयिष्यताम् अकारयिष्यन्
कार्याः कार्यास्तम् कार्यास्त। अकारयिष्यः अकारयिष्यतम् अकारयिष्यत
कार्यासम् कार्यास्व कार्यास्म। अकारयिष्यम् अकारयिष्याव अकारयिष्याम

अभ्यास ६५

पापी से धर्म करवाता है। अचारज ने यजमान को पुत्रेष्टि यज्ञ करवाया। वेद कहता है प्रजा से शुभ कर्म करवाओ। तू अपने मालिक से दान करवावे। मैं अपने धन से कंगालों को भोजन करवाऊंगा। धौम्य अचारज वनमें युधिष्ठिर से अनेक यज्ञ करवाता था। हे राजन् मेरे दश रुपये इस के पास हैं मुझे दिलाओ। प्रजा के आराम के लिये मैं यहां एक कुवां खुदवाऊंगा। चतुर मालिन से उत्तम फूलों की माला गुंथवाकर अपने मित्र रामशर्मा को दिखलाऊंगा। एक काग़ज़को बेल बूटों से सजवाकर शागिर्द से लिखवाता था।

अभ्यास ६६

हम पत्थर पर अपना नाम उकड़वायेंगे। तुम दो वीरता से शत्रुओं को कंपाते हो। वे सब कुवें से पानी को खींचवाते हैं। राजा कंगालों को भोजन खिलाता था। तुम टूटे हुवे घरको गिरवाओ। मैंने घुमाने के लिये आपको ढुंढवाया। इस मज़बूत कुलफ़ को तुड़वाता हूं। इस बंदरी के बच्चेको नचाओ। बच्चे को पढ़ानेके लिये पाठशाला भेजो। धातु को पिघलाकर सांचेमें ढलवाते हैं।

लोट्

गृह्णातु गृह्णीताम् गृह्णन्तु । जानातु जानीताम् जानन्तु
गृहाण गृह्णीतम् गृह्णीत । जानीहि जानीतम् जानीत
गृह्णानि गृह्णाव गृह्णाम । जानानि जानाव जानाम

विधिलिङ्

गृह्णीयात् गृह्णीयाताम् गृह्णीयुः । जानीयात् जानीयाताम् जानीयुः
गृह्णीयाः गृह्णीयातम् गृह्णीयात । जानीयाः जानीयातम् जानीयात
गृह्णीयाम् गृह्णीयाव गृह्णीयाम । जानीयाम् जानीयाव जानीयाम

लुट्

ग्रहीता ग्रहीतारौ ग्रहीतारः । ज्ञाता ज्ञातारौ ज्ञातारः
ग्रहीतासि ग्रहीतास्थः ग्रहीतास्थ । ज्ञातासि ज्ञातास्थः ज्ञातास्थ
ग्रहीतास्मि ग्रहीतास्वः ग्रहीतास्मः । ज्ञातास्मि ज्ञातास्वः ज्ञातास्मः

लृट्

ग्रहीष्यति ग्रहीष्यतः ग्रहीष्यन्ति । ज्ञास्यति ज्ञास्यतः ज्ञास्यन्ति
ग्रहीष्यसि ग्रहीष्यथः ग्रहीष्यथ । ज्ञास्यसि ज्ञास्यथः ज्ञास्यथ
ग्रहीष्यामि ग्रहीष्यावः ग्रहीष्यामः । ज्ञास्यामि ज्ञास्यावः ज्ञास्यामः

लिट्

जग्राह जगृहतुः जगृहुः । जज्ञौ जज्ञतुः जज्ञुः
जग्रहिथ जगृहथुः जगृह । जज्ञिथ जज्ञथुः जज्ञ
जग्राह जगृहिव जगृहिम । जज्ञौ जज्ञिव जज्ञिम

लुङ्

अग्रहीत् अग्रहीष्टाम् अग्रहीषुः । अज्ञासीत् अज्ञासिष्टाम् अज्ञासिषुः
अग्रहीः अग्रहीष्टम् अग्रहीष्ट । अज्ञासीः अज्ञासिष्टम् अज्ञासिष्ट
अग्रहीषम् अग्रहीष्व अग्रहीष्म । अज्ञासिषम् अज्ञासिष्व अज्ञासिष्म

❀ पाठ २० ❀

शिक्षा १७

सन्नन्त प्रक्रिया (Desiderative)

१ करने की इच्छा (ख्वाहिश) अर्थ में सन् प्रत्यय लगता है।

२ सन् में धातु द्वित्व होता है और उसके कार्य लिट् लकार की तरह होते हैं।

३ धातु प्रायः परस्मैपद में होती है।

करने की इच्छा (कर्तुमिच्छति) चिकीर्ष

लट्			लङ्		
ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
चिकीर्षति	चिकीर्षतः	चिकीर्षन्ति	अचिकीर्षत्	अचिकीर्षताम्	अचिकीर्षन्
चिकीर्षसि	चिकीर्षथः	चिकीर्षथ	अचिकीर्षः	अचिकीर्षतम्	अचिकीर्षत
चिकीर्षामि	चिकीर्षावः	चिकीर्षामः	अचिकीर्षम्	अचिकीर्षाव	अचिकीर्षाम

लोट्			विधिलिङ्		
चिकीर्षतु	चिकीर्षताम्	चिकीर्षन्तु	चिकीर्षेत्	चिकीर्षेताम्	चिकीर्षेयुः
चिकीर्ष	चिकीर्षतम्	चिकीर्षत	चिकीर्षेः	चिकीर्षेतम्	चिकीर्षेत
चिकीर्षाणि	चिकीर्षाव	चिकीर्षाम	चिकीर्षेयम्	चिकीर्षेव	चिकीर्षेम

लुट्

चिकीर्षिता	चिकीर्षितारौ	चिकीर्षितारः
चिकीर्षितासि	चिकीर्षितास्थः	चिकीर्षितास्थ
चिकीर्षितास्मि	चिकीर्षितास्वः	चिकीर्षितास्मः

लृट्

चिकीर्षिष्यति	चिकीर्षिष्यतः	चिकीर्षिष्यन्ति
चिकीर्षिष्यसि	चिकीर्षिष्यथः	चिकीर्षिष्यथ
चिकीर्षिष्यामि	चिकीर्षिष्यावः	चिकीर्षिष्यामः

आशीर्लिङ्

गृह्यात्	गृह्यास्ताम्	गृह्यासुः ।	ज्ञायात्	ज्ञायास्ताम्	ज्ञायासुः
गृह्याः	गृह्यास्तम्	गृह्यास्त ।	ज्ञायाः	ज्ञायास्तम्	ज्ञायास्त
गृह्यासम्	गृह्यास्व	गृह्यास्म ।	ज्ञायासम्	ज्ञायास्व	ज्ञायास्म

लृङ्

अग्रहीष्यत्	अग्रहीष्यताम्	अग्रहीष्यन् ।	अज्ञास्यत्	अज्ञास्यताम्	अज्ञास्यन्
अग्रहीष्यः	अग्रहीष्यतम्	अग्रहीष्यत ।	अज्ञास्यः	अज्ञास्यतम्	अज्ञास्यत
अग्रहीष्यम्	अग्रहीष्याव	अग्रहीष्याम ।	अज्ञास्यम्	अज्ञास्याव	अज्ञास्याम

अभ्यास ५७

हे आर्य ! इस ने आचार्यकोप पढ़ा है ※ इसको मध्यकौमुदी पढ़ने का उपदेश करो । यह दो न्याय शास्त्र पढ़ते हैं इनका कुल बहुत पवित्र है । यह दो कन्यायें यहां आती हैं इनका बहुत धन है । ज़बरदस्तज़ माना दूरसे भी पकड़ लेता है । अकलमंद गुज़रे हुवे, आने वाले, और मौजूदा तीनो ज़मानों को जानते हैं । समुद्र के राक्षसने हनुमान की परछाई को पकड़ा । पानी में इस राक्षस को हनुमान ने जान लिया । सीता कहता था कोई कंगाल सोनेके कंगन को ग्रहण करे । द्रोण अचारज ने कहा कोई मेरे चक्रव्यूह को जाने । हे अर्जुन तुम प्रतिज्ञा करो मेरे भक्त का कभी नाश नहीं होता ।

अभ्यास ५८

हे पुत्र ! तुम प्रतिज्ञा करो कि मैं भांग को नहीं लूंगा । अफ़ीम बहुत बुरा नशा है यह तुम जवान होकर जानोगे । चर्स पीने वाला दमा और खांसी के रोग से मरेगा । तमाखू पीने वाले को छाती स्याह हो जाती है । खबरदार ! कभी चुरुट को मत छूना इस में काला सांप रहता है । हर एक मज़हब की किताबें कहती हैं कि शराब पीना महापाप है । चण्डू पीने वाला जहान में बहुत दिन नहीं जीता । पोस्त, और धतूरा यह दोनों मनुष्य के शत्रु हैं । तमाम नशे दिमाग़ को ख़राब करके मनुष्य को पागल बना देते हैं । अपने दिमाग़ और शरीर की हमेशा रक्षा करो ।

※ 'एनम्' लगाओ इसीतरह आगे समझो ।

लिट्

चिकीर्षांबभूव	चिकीर्षांबभूवतुः	चिकीर्षांबभूवुः
चिकीर्षाम्बभूविथ	चिकीर्षांबभूवथुः	चिकीर्षांबभूव
चिकीर्षाम्बभूव	चिकीर्षांबभूविव	चिकीर्षांबभूविम

लुङ्

अचिकीर्षीत्	अचिकीर्षिष्टाम्	अचिकीर्षिषुः
अचिकीर्षीः	अचिकीर्षिष्टम्	अचिकीर्षिष्ट
अचिकीर्षिषम्	अचिकीर्षिष्व	अचिकीर्षिष्म

आशीर्लिङ्

चिकीर्ष्यात्	चिकीर्ष्यास्ताम्	चिकीर्ष्यासुः
चिकीर्ष्याः	चिकीर्ष्यास्तम्	चिकीर्ष्यास्त
चिकीर्ष्यासम्	चिकीर्ष्यास्व	चिकीर्ष्यास्म

लृङ्

अचिकीर्षिष्यत्	अचिकीर्षिष्यताम्	अचिकीर्षिष्यन्
अचिकीर्षिष्यः	अचिकीर्षिष्यतम्	अचिकीर्षिष्यत
अचिकीर्षिष्यम्	अचिकीर्षिष्याव	अचिकीर्षिष्याम

अभ्यास ६७

वह दान करने की इच्छा करता है। मैंने यज्ञ करने की इच्छा की। तू तीर्थयात्रा करने की इच्छा कर। वे सब कथा करने की ख्वाहिश करें। तुम सब विवाह करने की इच्छा करोगे। दशरथ यज्ञ करने की इच्छा करता था। हमने दया करने की इच्छा की। ईश्वर करे तू धर्म करने की इच्छा करे। यदि वह विद्या प्राप्ति की इच्छा करता तो पढ़ता। वह पढ़ने की ख्वाहिश करता है। राम जाने की ख्वाहिश करता है॥

पाठ २१

शिक्षा १८

यङन्त प्रकिया (Frequentative)

१ यङन्त बार २ या भृश अर्थ में होता है॥
२ यङन्त में धातु द्वित्वहोती है और द्वित्व गुण लेता है।
३ आत्मनेपद नियत है।

अभ्यास ५९

भिखारी दशरथ से कपड़े लेते थे। राजा जनक राम को जानता था। राम ने शिव की कमान को पकड़ा। क्या तूने जाना कि नारियल में पानी होता है। खजूर को लो और खाओ फिर पहिचानो कैसा मीठा रस है। संगतरे लटकते हुवे ऐसे मालूम होते हैं जैसे लाल हों। अंगूर दो किस्म की होती है एक छोटी दूसरी बड़ी। नासपाती का फल गोल और पीले रङ्ग का था मेथी, पालक और गन्दल का साग पकावेंगे अगर तुम खेत में आते तो तन्दूला चौलाई और चूका को जानते।

❀ पाठ १७शः ❀

शिक्षा १४

लेख सङ्केत

नाम सङ्केत	चिन्ह	उदाहरण
लघु विराम	,	सुना था, कि
गुरु विराम	;	खाते तो हैं; पर थोड़ा
प्रश्न	?	क्या वह है ?
पूर्ण विराम	।	मैं खाता हूं।
संक्षेप	०	ए० पी० भण्डार बहावलपुर
त्रुटि	^	राम का पुस्त ^ है क
प्रसिद्ध	!	वाह ! क्या तुम नहीं जानते ?
संबन्ध	—	आचार्य पुस्तक भं-डार से खरीदो
कोष्ठ	( )	उस (राम) से सुनाथा .
नक्षत्र	*	यह टिप्पण के लिये लगाया जाताहै
त्याग	+ + +	वह मूर्ख उल्लू + + + कहा गया
अन्योक्ति	" "	रामायण में लिखा है, कि " विश्वामित्र ब्राह्मण होगया "

वार २ वा आतिशय होना वोभूय

लट्			लङ्		
ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
वोभूयते	वोभूयेते	वोभूयन्ते	अवोभूयत	अवोभूयेताम्	अवोभूयन्त
वोभूयसे	वोभूयेथे	वोभूयध्वे	अवोभूयथाः	अवोभूयेथाम्	अवोभूयध्वम्
वोभूये	वोभूयावहे	वोभूयामहे	अवोभूये	अवोभूयावहि	अवोभूयामहि

लोट्			विधिलिङ्		
वोभूयताम्	वोभूयेताम्	वोभूयन्ताम्	वोभयेत	वोभयेयाताम्	वोभयेरन्
वोभूयस्व	वोभूयेथाम्	वोभूयध्वम्	वोभूयेथाः	वोभूयेयाथाम्	वोभूयेध्वम्
वोभूयै	वोभूयावहै	वोभूयामहै	वोभूयेय	वोभूयेवहि	वोभूयेमहि

लुट्			लृट्		
वोभूयिता	वोभूयितारौ	वोभूयितारः	वोभूयिष्यते	वोभूयिष्येते	वोभूयिष्यन्ते
वोभूयितासि	वोभूयितास्थः	वोभूयितास्थ	वोभूयिष्यसे	वोभूयिष्येथे	वोभूयिष्यध्वे
वोभूयितास्मि	वोभूयितास्वः	वोभूयितास्मः	वोभूयिष्ये	वोभूयिष्यावहे	वोभूयिष्यामहे

लिट्

वोभूयांचक्रे	वोभूयांचक्राते	वोभूयांचक्रिरे
वोभूयांचकृषे	वोभूयांचक्राथे	वोभूयांचकृढ्वे
वोभूयांचक्रे	वोभूयांचकृवहे	वोभूयांचकृमहे

लुङ्

अवोभूयिष्ट	अवोभूयिषाताम्	अवोभूयिषत
अवोभूयिष्ठाः	अवोभूयिषाथाम्	अवोभूयिध्वम्
अवोभूयिषि	अवोभूयिष्वहि	अवोभूयिष्महि

आशीर्लिङ्

वोभूयिषीष्ट	वोभूयिषीयास्ताम्	वोभूयिषीरन्
वोभूयिषीष्ठाः	वोभूयिषीयास्थाम्	वोभूयिषीध्वम्
वोभूयिषीय	वोभूयिषीवहि	वोभूयिषीमहि

10th Conjugation

चुरादिगण १० कंजूगेशन

'अय्' विकरण लगता है

परस्मैपद चुराना—चुर् | लट् | आत्मने पद ढूंढना-मृग्

ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि	ब०
चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति ।	मृगयते	मृगयेते	मृगयन्ते
चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ ।	मृगयसे	मृगयेथे	मृगयध्वे
चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः ।	मृगये	मृगयावहे	मृगयामहे

लङ्

अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन् ।	अमृगयत	अमृगयेताम्	अमृगयन्त
अचोरयः	अचोरयतम्	अचोरयत ।	अमृगयथाः	अमृगयेथाम्	अमृगयध्वम्
अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम ।	अमृगये	अमृगयावहि	अमृगयामहि

लोट्

चोरयतु	चोरयताम्	चोरयन्तु ।	मृगयताम्	मृगयेताम्	मृगयन्ताम्
चोरय	चोरयतम्	चोरयत ।	मृगयस्व	मृगयेथाम्	मृगयध्वम्
चोरयाणि	चोरयाव	चोरयाम ।	मृगयै	मृगयावहै	मृगयामहै

विधिलिङ्

चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयुः ।	मृगयेत	मृगयेयाताम्	मृगयेरन्
चोरयेः	चोरयेतम्	चोरयेत ।	मृगयेथाः	मृगयेयाथाम्	मृगयेध्वम्
चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम ।	मृगयेय	मृगयेवहि	मृगयेमहि

लुट्

चोरयिता	चोरयितारौ	चोरयितारः ।	मृगयिता	मृगयितारौ	मृगयितारः
चोरयितासि	चोरयितास्थः	चोरयितास्थ ।	मृगयितासे	मृगयितासाथे	मृगयिताध्वे
चोरयितास्मि	चोरयितास्वः	चोरयितास्मः ।	मृगयिताहे	मृगयितास्वहे	मृगयितास्महे

लृङ्

अबोभूयिष्यत	अबोभूयिष्येताम्	अबोभूयिष्यन्त
अबोभूयिष्यथाः	अबोभूयिष्येथाम्	अबोभूयिष्यध्वम्
अबोभूयिष्ये	अबोभूयिष्यावहि	अबोभूयिष्यामहि

(टिप्पण) यङ्लुगन्त इससे भी अधिक कठिन है इस लिये उसे छोड़ दिया है।

अभ्यास ६८

वह बार २ होता है। तू अतिशय हुवा। मैं बारबार होऊं। वे सब अतिशय से होवें। तुम सब कल अतिशय से होओगे। हमदो कभी बार २ होवेंगे। अर्जुन अतिशय से होता था। विद्यार्थी अतिशय से हुवा। ईश्वर करे राजा न्याय शील अतिशयसे होवे। अगर वह अतिशयसे होता तो कामयाब होता।

पाठ २२

शिक्षा १९

नामधातु (Naminal Verbs)

१ नामधातु प्रक्रिया में नामों के साथ प्रत्यय लगा कर परस्मैपद और आत्मनेपद का उच्चारण किया जाता है।

२ चाहना, आचरण और करना इन अर्थों में अधिक प्रयोग होता है।

३ क्यच् काम्यच् णिच् क्विप् क्यङ् यह पांच प्रत्यय प्रायशः प्रयुक्त होते हैं।

४ क्यच् का य बचता है, काम्यच् का काम्य, णिच् का य, क्विप् का कुछ नहीं और क्यङ् का य रहता है।

५ क्यच्, काम्यच्, इच्छा अर्थ में होते हैं। णिच् करना अर्थ में, और क्विप् क्यङ् आचरण अर्थ में जोड़े जाते हैं।

६ क्यच्, काम्यच् क्विप् परस्मैपद हैं णिच्, क्यङ् आत्मने पद हैं।

अपना पुत्र चाहता है (आत्मनः पुत्रमिच्छति) पुत्रीय (१)

लट्				लङ्		
ए०	द्वि०	ब०		ए०	द्वि०	ब०
पुत्रीयति	पुत्रीयतः	पुत्रीयन्ति		अपुत्रीयत्	अपुत्रीयताम्	अपुत्रीयन्
पुत्रीयसि	पुत्रीयथः	पुत्रीयथ		अपुत्रीयः	अपुत्रीयतम्	अपुत्रीयत
पुत्रीयामि	पुत्रीयावः	पुत्रीयामः		अपुत्रीयम्	अपुत्रीयाव	अपुत्रीयाम

(१) यसे पूर्व अ को ई हो जाता है और दूसरे स्वर दीर्घ हो जाते हैं।

लृट्

चोरयिष्यति चोरयिष्यतः चोरयिष्यन्ति । मृगयिष्यते मृगयिष्येते मृगयिष्यन्ते
चोरयिष्यसि चोरयिष्यथः चोरयिष्यथ । मृगयिष्यसे मृगयिष्येथे मृगयिष्यध्वे
चोरयिष्यामि चोरयिष्यावः चोरयिष्यामः । मृगयिष्ये मृगयिष्यावहे मृगयिष्यामहे

लिट्

चोरयांचकार[१] चोरयांचक्रतुः चोरयांचक्रुः । मृगयाञ्चक्रे मृगयांचक्राते मृगयांचक्रिरे
चोरयांचकर्थ चोरयांचक्रथुः चोरयांचक्र । मृगयांचकृषे मृगयांचक्राथे मृगयांचकृढ्वे
चोरयांचकार चोरयांचकृव चोरयांचकृम । मृगयांचक्रे मृगयांचकृवहे मृगयांचकृमहे

लुङ्

अचूचुरत् अचूचुरताम् अचूचुरन् । अममृगत अममृगेताम् अममृगन्त
अचूचुरः अचूचुरतम् अचूचुरत । अममृगथाः अममृगेथाम् अममृगध्वम्
अचूचुरम् अचूचुराव अचूचुराम । अममृगे अममृगावहि अममृगामहि

आशीर्लिङ्

चोर्यात् चोर्यास्ताम् चोर्यासुः । मृगयिषीष्ट मृगयिषीयास्ताम् मृगयिषीरन्
चोर्याः चोर्यास्तम् चोर्यास्त । मृगयिषीष्ठाः मृगयिषीयास्थाम् मृगयिषीध्वम्
चोर्यासम् चोर्यास्व चोर्यास्म । मृगयिषीय मृगयिषीवहि मृगयिषीमहि

लृङ्

अचोरयिष्यत्	अचोरयिष्यताम्	अचोरयिष्यन्
अचोरयिष्यः	अचोरयिष्यतम्	अचोरयिष्यत
अचोरयिष्यम्	अचोरयिष्याव	अचोरयिष्याम
अमृगयिष्यत	अमृगयिष्येताम्	अमृगयिष्यन्त
अमृगयिष्यथाः	अमृगयिष्येथाम्	अमृगयिष्यध्वम्
अमृगयिष्ये	अमृगयिष्यावहि	अमृगयिष्यामहि

१ जिस धातु में एक से अधिक स्वर-हों उसके लिट् लकार में कृ, भू, अस् का प्रयोग होजाता है और धातु के आगे 'अम्' भी आता है जैसे—
चोरय + आम् + चकार ।

लोट्				विधिलिङ्		
पुत्रीयतु	पुत्रीयताम्	पुत्रीयन्तु	।	पुत्रीयेत्	पुत्रीयेताम्	पुत्रीयेयुः
पुत्रीय	पुत्रीयतम्	पुत्रीयत	।	पुत्रीयेः	पुत्रीयेतम्	पुत्रीयेत
पुत्रीयाणि	पुत्रीयाव	पुत्रीयाम	।	पुत्रीयेयम्	पुत्रीयेव	पुत्रीयेम

लुट्

पुत्रीयिता	पुत्रीयितारौ	पुत्रीयितारः।
पुत्रीयितासि	पुत्रीयितास्थः	पुत्रीयितास्थ।
पुत्रीयितास्मि	पुत्रीयितास्वः	पुत्रीयितास्मः।

लृट्

पुत्रीयिष्यति	पुत्रीयिष्यतः	पुत्रीयिष्यन्ति
पुत्रीयिष्यसि	पुत्रीयिष्यथः	पुत्रीयिष्यथ
पुत्रीयिष्यामि	पुत्रीयिष्यावः	पुत्रीयिष्यामः

लिट्

पुत्रीयांचकार	पुत्रीयांचक्रतुः	पुत्रीयांचक्रुः
पुत्रीयांचकर्थ	पुत्रीयांचक्रथुः	पुत्रीयांचक्र
पुत्रीयांचकार	पुत्रीयांचकृव	पुत्रीयांचकृम

लुङ्

अपुत्रीयीत्	अपुत्रीयिष्टाम्	अपुत्रीयिषुः
अपुत्रीयीः	अपुत्रीयिष्टम्	अपुत्रीयिष्ट
अपुत्रीयिषम्	अपुत्रीयिष्व	अपुत्रीयिष्म

आशीर्लिङ्

पत्रीय्यात्	पुत्रीय्यास्ताम्	पुत्रीय्यासुः
पुत्रीय्याः	पुत्रीय्यास्तम्	पुत्रीय्यास्त
पुत्रीय्यासम्	पुत्रीय्यास्व	पुत्रीय्यास्म

लृङ्

अपुत्रीयिष्यत्	अपुत्रीयिष्यताम्	अपुत्रीयिष्यन्
अपुत्रीयिष्यः	अपुत्रीयिष्यतम्	अपुत्रीयिष्यत
अपुत्रीयिष्यम्	अपुत्रीयिष्याव	अपुत्रीयिष्याम

अभ्यास ६०

धाड़ेमार नगर में घुसकर चोरी करता है। थोक फ़रोश बाज़ारों में घूम कर ख़रीदारों को ढूंढता है। एक कनस्टेबल ने मुजरिम को ढूंढा। शर्विलक ने चोरी की थी इस लिये उसको दश महीने की सज़ा मिली। मनादी करदी कि जो जूवा खेलेगा उससे पुलीसइंस्पेक्टर सौ रुपयेकी ज़मानत लेगा। जो दो बार कसूर करेगा उससे ज़मानत के इलावा मुचलका भी अदालत मांगेगी। इसको हवालात में रक्खो और हथकड़ी लगादो। यह बड़ा लुटेरा है इस के पांव में भारी जौलान डालो। तुम पर जज साहिब हज़ार रुपये जुर्माना करते हैं। इस पर झूठा दोष लगाया गया था ईश्वर नें इसको रिहाई दी।

अभ्यास ६१

श्री कृष्ण मेरे पापों को चुरावे। सच्चा ज्ञान गीता में ढूंढो। हे प्रभु! वह शुभ दिन कब आवेगा कि जब मैं गीता में ज्ञानको ढूंढूंगा। हिसाब की सफ़ाई के लिये देवदत्त, यज्ञदत्त को नोटिस देवेगा। डाकखाना में नोट देकर रुपये लाओ। मैं मुदालह के घरकी क़ुरक़ी के लिये दरख़्वास्त देता हूं। बाज़ार में रख कर इस माल को नीलाम करो। मुद्दई को तब डिगरी प्राप्त होवेगी जब ज़िरह में वह जीतेगा। दीवानी नालिश बहुत मुद्दत के बाद फ़ैसला होती है। ईश्वर से आशीर्वाद मांगो कि कोई भलेमानस फ़ौजदारी मुक़दमा में न फंसे।

अभ्यास ६२

भील अर्जुनके धन को चुराते थे। श्रीराम लक्ष्मण के साथ अपनी प्यारी महारानी सीता देवी को वन में ढूंढता था। छोटी अदालतों से निकल कर जब मुक़दमा चीफ़ कोर्ट में गया तो दूध दूध और पानी पानी होगया। कोई२ ऐसे भी मुक़दमे होते हैं जो प्रिवीकौंसिल तक पहुंचते हैं। वकीलों की फ़ीस प्रायः पांच रुपये सैंकड़ाके हिसाबसे लगती है। एक कर्ज़दार अपने कर्ज़दिहंदा को क़र्ज़ की बाबत तमस्सुक लिख कर देवेगा। एक हज़ार से लेकर दो हज़ार तक जिसको आमदनी है वह हरसाल सरकार को फ़ी रुपया चार पाई अदा करता है। जब गवाह मजिस्ट्रेट के सामने गवाही देने जाता है तब उससे सत्य

शिक्षा २०

[काम्यच्] अपनापुत्र चाहता है [आत्मनः पुत्रमिच्छति] पुत्रकाम्यति
[णिच्] प्रश्नकरता है [प्रश्नंकरोति] प्रश्नयते
[क्विप्] कृष्णकी तरह आचरता है [कृष्ण इव आचरति] कृष्णति
[क्यङ्] शब्दकरता है [शब्दं करोति] शब्दायते ।
,, कृष्णकी तरह आचरता है [कृष्ण इव आचरति] कृष्णायते

अभ्यास ६९

देव दत्त अपना पुत्र चाहता है। दशरथ अपने पुत्रों को चाहता था। यज्ञदत्त अपने पुत्रों को चाहेगा। सब जागीरदार प्रश्न करते थे। प्रद्युमन् कृष्ण की तरह आचरता है। हम सब शब्द करेंगे। राजा अपने पुत्रों को चाहेगी। मैं कृष्णकी तरह आचरण करूं। तू राम की तरह आचरण करे। मैं सवाल करता हूं।

शिक्षा २१

लिङ्गानुशासन *Gender*

पुल्लिंग Masculine

देव, दैत्य, इनके अनुचर, स्वर्ग, यज्ञ, पर्वत, मेघ, समुद्र, वृक्ष, काल, तलवार, तीर, शत्रु, हाथ, गंड, ओंठ, बाजू, दान्त, कण्ठ, केश, नख, स्तन, जिनके पीछे अह है, रात्र जिनके अन्त में है, विष, गोंद, इनके जितने नाम संस्कृत में हैं वह सब प्रायः पुल्लिंग में होते हैं।

अस् जिनके अन्त में हैं जैसे=वेधस्, चन्द्रमस् अन् जिनके अन्त में है जैसे वर्म्मन् इत्यादि अकारान्त प्रत्यय कि जिनके धातु को गुण वृद्धि हुई है जैसे– जयः, चयः, रामः, नादः, विनोदः, इत्यादि दिकारान्त और धिकारान्त जैसे– आदिः, प्रधिः विधिः, निधिः, इषुधिः इत्यादि

कशेरु, जतु, वस्तु को छोड़ कर शेष जितने रु, तु अन्त वाले शब्द हैं वह सब पुल्लिंग हैं।

(टिप्पण) विशेष २ परिवर्तन लिंगों का यथासम्भव कोषमें देखो।

की सौगंध कराते हैं। बीस रुपये या इससे अधिक की रसीद पर एक आने का टिकट चिपकाओ। मनीआर्डर और वेल्युपेबल का निर्ख डाकखाने में जाकर पूछो।

पाठ १८

द्विकर्मक प्रयोग Direct and indirect objects

शिक्षा १५

१ कितने एक धातु ऐसे हैं जो दो कर्म रखते हैं।
२ संस्कृत में ऐसे धातुओं की गणना १६ है उन१६ के अर्थ में जितने धातु हैं वे सब दो कर्म लेते हैं।
३ एक कर्म प्रधान, और एक गौण होता है परन्तु विभक्ति दोनों में द्वितीया (कर्म) ही रहती है।

धातवः

१	दोहना	दुह	९	सिखलाना	शास्
२	मांगना	याच्	१०	जीतना	जि
३	पकाना	पच्	११	मथना	मथ्
४	सज़ादेना	दण्ड्	१२	चुराना	मुष्
५	रोकना	रुध्	१३	लेजाना	नी
६	पूछना	प्रच्छ्	१४	हरना	हृ
७	चुनना	चि	१५	खेंचना	कृष्
८	बोलना	ब्रू	१६	बरदास्तकरना	वह्

अनुवाद ९

१ गौसे दूध दोहता है। — २ बलि से पृथिवी को मांगता है
* गां दोग्धि पयः। — बलिंयाचते वसुधाम्
३ चावलोंका भात पकाता है। — ४ बदमाशको सौ जुरमाना करता है
तण्डुलान् ओदनं पचति। — शठं शतं दण्डयति

* गौ यह गौण कर्म है और पयः मुख्य कर्म है एवं सर्वत्र जानो।

नपुंसक लिंग Neuter

आकाश, वन, पत्ते, पाताल, वर्फ़, जल' ठंडा, गर्म, मांस, रुधिर, मुख, आंख, धन, वज्र, फल, सुवर्ण, तांबा, लोहा, सुख, दुःख, शुभ, अशुभ, जल पुष्प (कमल आदि नमक, व्यंजन, कुंकुम, इन शब्दों के जितने पर्य्याय हैं वह सब प्रायः नपुंसक लिंग में होते हैं।

दो स्वर जिन शब्दों में हैं ऐसे अस् अन्त, इस् अन्त, उस् अन्त, और अन् अन्त शब्द नपुंसक हैं जैसे-पयस्, मनस्। सर्पिस्, ज्योतिस्। वपुस्, यजुस्। चर्मन्, सामन् इत्यादि।

त्वान्त, त्रान्त जैसे-ब्राह्मणत्वं पात्रम्, वस्त्रम्। संख्यापूर्व रात्र शब्द जैसे-त्रिरात्रम्, पंचरात्रम्। संख्या पूर्वक समाहार जैसे त्रिपथम् इत्यादि प्रायः नपुंसक लिंग में होते हैं।

स्त्रीलिंगम् [Feminine]

बिजली, रात्रि बेल, सितार, दिशा, जमीन, नदी, लज्जा इनके पर्यायवाची जितने शब्द हैं सब प्रायः स्त्रीलिंग में होते हैं।

योनि सम्बन्धि सब नाम स्त्रीलिंग होते हैं जैसे-स्वसृ, यातृ, मातृ इत्यादि ईदन्त ऊदन्त एकाच् तथा अनेकाच् भी स्त्री में होते हैं जैसे-धीः, श्रीः, भ्रूः तन्त्रीः, चमूः इत्यादि।

ता, ति, नि, जिन शब्दोंके अन्तमें है वह स्त्रीलिंग वाची हैं जैसे-ब्राह्मणता, भक्तिः, धमनिः इत्यादि। ति अन्त वाले शब्दों में पति को छोड़ कर सब स्त्री लिंग हैं।

अथ स्त्रीलिंग प्रत्ययः

१ अकारान्त शब्दसे आ लगता है जैसे-
बाल-बाला। राम-रामा। कृष्ण-कृष्णा।

२ तृ, और इन् प्रत्यय जिनके अन्त में हैं उनको ई लगती है जैसे—
दातृ-दात्री। कर्तृ-कर्त्री।
गुणिन्-गुणिनी। मानिन्-मानिनी

३ अक् प्रत्यय वाले शब्द को इका हो जाता है
जैसे-कारक-कारिका। पाचक-पाचिका

४ वर्तमान कालिक अत् (शतृ) प्रत्यय को ई होती है और अकार के आगे न् का आगम होजाता है जैसे–

गच्छत्–गच्छन्ती । नृत्यत्–नृत्यन्ती ।

५ मय प्रत्यय के साथ ई लगती है जैसे–

दयामय–दयामयी

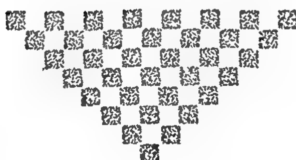
६ पुंयोग में ई लगती है जैसे—

मनुष्य–मनुषी । अश्व - अश्वी ।

मयूर – मयूरी । शृगाल - शृगाली इत्यादि ।

इति श्री प्रियदेवात्मजरामचरणाचार्योपाध्याय-
शास्त्रिकृतेऽनुवाद खण्डस्य
पूर्वार्धः समाप्तः

ओ३म्



पाठ २८
(क्रियाद्योतक प्रत्यय) अन Infinitive
शिक्षा २८

१ धातु 'अन' प्रत्यय लेता है।
२ धातुका गुण होजाता है।
३ षष्ठी विभक्ति के योग में प्रयुक्त होता है जैसे-

करना- कृ+ अन= कर+ अन= करणम्
होना - भू + अन = भव् + अन = भवनम्-

अन प्रत्यय नियत नपुंसकलिंग है

अभ्यास ८४

राम का जाना। मित्रका देखना। सुर्ज्योंका होना। दयाका करना। राज्यका छोड़ना। बचों का खेलना। बादलका वर्षना। बिजली का चमकना। संध्या का घूमना। कोयलका गाना।

* पाठ २९ *
शिक्षा २९

भाव वाच्य
(Abstract Noun)

१ इवर्णान्त धातुसे अच् (अ) प्रत्यय होता है गुण किया जाता है जैसे-

(फ़तह) जि + अ = जयः
(ढेर) चि + अ = चयः

२ उवर्णान्त और ऋवर्णान्त धातु से अप् (अ) प्रत्यय होता है गुण किया जाता है जैसे-

(जौ) यु + अ = यवः
(विष) गृ + अ = गरः

३ सम्पूर्ण हलन्त धातुओं से घञ् (अ) प्रत्यय होता है यह गुण वृद्धि दोनों लेता है। जैसे-

(बहलाव) वि-नुद + अ = विनोदः
(राम) रम् + अ = रामः

अच् अप् घञ् तीनों प्रत्यय नियत पुल्लिंग हैं।

ओम्



अनुवादखण्डोत्तरार्धः



कर्मवाच्यम् Passive Voice

शिक्षा २२

१ अब कर्मवाच्य प्रयोग का वर्णन है।

२ कर्मवाच्य में कर्त्ता तृतीयान्त और कर्म प्रथमान्त रहता है।

३ कर्मवाच्य नियत आत्मनेपद है।

४ अकर्मक धातु भाववाच्य कहलाती हैं।

५ कर्मवाच्य में य प्रत्यय धातु से आता है।

६ य प्रत्यय के आने पर आकारान्त धातु ईकारान्त होजाती है इ उ को दीर्घ और ऋ रिय् होजाता है जैसे— पा - पीयते। जि–जीयते। स्तु-स्तूयते कृ - क्रियते इत्यादि।

७ हलन्त धातु में कोई परिवर्तन नहीं होता किन्तु अन्त्य व्यञ्जन य में मिल जाता है जैसे-- पठ्यते, गम्यते, पच्यते, इत्यादि

८ जो विभक्ति, वचन, लिंग कर्मका होगा वही क्रिया में आवेगा।

९ कर्मकर्तृ वाच्य भी इसी प्रकार बनता है। यथा वृक्ष स्वयम् कटताहै-वृक्षश्छिद्यते।

पाठ २३

हुवा जाता है-भूय

लट्			लङ्		
ए०	द्वि	ब०	ए०	द्वि०	ब०
भूयते	भूयेते	भूयन्ते	अभूयत	अभूयेताम्	अभूयन्त
भूयसे	भूयेथे	भयध्वे	अभूयथाः	अभूयेथाम्	अभूयध्वम्
भूये	भूयावहे	भूयामहे	अभूये	अभूयावहि	अभूयामहि

द्विगुसमासः

३ त्रयाणाम् शृंगाणां समाहारः, त्रिशृंगम्
पञ्चानाम् फलानाम् समाहारः, पंचफली
त्रयाणाम् लोकानां समाहारः, त्रिलोकी
अष्टानामध्यायानां समाहारः, अष्टाध्यायी

द्वन्द्वसमासः

४ रामश्च कृष्णश्च रामकृष्णौ
रामश्च भरतश्च लक्ष्मणश्च शत्रुघ्नश्च, रामभरतलक्ष्मणशत्रुघ्नाः

प्रकीर्णाः

पाणी पादौ च, पाणिपादम् ।
हरिश्च हरश्च गुरुश्च एषां समाहारः, हरिहरगुरु ।
माता च पिता च, मातापितरौ-पितरौ

अव्ययीभावः

५ तटं तटं प्रति, अनुतटम् । कुम्भस्य समीपे, उपकुम्भम्
क्रममनतिक्रम्य, यथाक्रमम् । मक्षिकाणामभावो, निर्मक्षिकम् ।

तत्पुरुषसमासः

६ राज्ञः पुरुषः, राजपुरुषः । कृष्णस्य भक्तः, कृष्णभक्तः ।
नखैर्भिन्नः, नखभिन्नः । चौराद्भयम्, चौरभयम्
इसी प्रकार सातों विभक्तियों में होता है ।
'नञ्' (नफ़ी) इसका भेद है हलादि शब्द में 'अ' और अजादि में 'अन्' लगता है जैसे—

न ब्राह्मणः, अब्राह्मणः । न धर्मः, अधर्मः
न अश्वः, अनश्वः । न आर्यः, अनार्यः

(टिप्पण)

तद्धित का आवश्यक विषय कोष के टिप्पणों में दे दिया गया है ॥

प्रथमोनुवादाध्यायः

कोई एक कुत्ता मुख में मालपूवा का टुकड़ा लेकर पानी में जाता था पानी में अपनी परछाईं को देखने लगा तब उस ने सोचा ' यह कोई दूसरा

लोट्			विधिलिङ्		
ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
भूयताम्	भूयेताम्	भूयन्ताम्	भूयेत	भूयेयाताम्	भूयेरन्
भूयस्व	भूयेथाम्	भूयध्वम्	भूयेथाः	भूयेयाथाम्	भूयेध्वम्
भूयै	भूयावहै	भूयामहै	भूयेय	भूयेवहि	भूयेमहि

लुट्			लृट्		
भाविता	भावितारौ	भावितारः	भाविष्यते	भाविष्येते	भाविष्यन्ते
भावितासे	भावितासाथे	भाविताध्वे	भाविष्यसे	भाविष्येथे	भाविष्यध्वे
भाविताहे	भावितास्वहे	भावितास्महे	भाविष्ये	भाविष्यावहे	भाविष्यामहे

लिट्			लुङ्		
बभूवे	बभूवाते	बभूविरे	अभावि	अभाविषाताम्	अभाविषत
बभूविषे	बभूवाथे	बभूविढ्वे	अभाविष्ठाः	अभाविषाथाम्	अभाविढ्वम्
बभूवे	बभूविवहे	बभूविमहे	अभाविषि	अभाविष्वहि	अभाविष्महि

आशीर्लिङ्

भाविषीष्ट	भाविषीयास्ताम्	भाविषीरन्
भाविषीष्ठाः	भाविषीयास्थाम्	भाविषीढ्वम्
भाविषीय	भाविषीवहि	भाविषीमहि

लृङ्

अभाविष्यत	अभाविष्येताम्	अभाविष्यन्त
अभाविष्यथाः	अभाविष्येथाम्	अभाविष्यध्वम्
अभाविष्ये	अभाविष्यावहि	अभाविष्यामहि

अनुवाद १०

वह होता है	वह हुआ
तेन भूयते	तेनअभूयत
मुझसे पढाजाता है	तुमसे लिखा जाता है
मया पठ्यते	त्वया लिख्यते

कुत्ता मालपूना का टुकड़ा लेकर जाता है ? पस उस टुकड़े को लेने की ख़ाहिश से मुख को खोलकर जब तक उसको लेने के लिये प्रवृत्त हुवा तब तक वह टुकड़ा मुंह से गिर गया और पानी में डूब गया। और वह टुकड़ा भी आंखों से ग़ायब होगया।

द्वितीय कथा

एक भेड़िये ने किसी बकरे को मार कर खाया उसकी एक हड्डी गले में रुक गई। तब वह घबड़ाया हुआ ऊंची स्वर से वनमें फिरने और कहने लगा ऐ वनवासियो! अगर कोई मेरे गले से हड्डी निकाले तो मैं उसको बड़ा इनाम दूंगा एक बगुले ने इनाम के लालचसे स्वीकार किया और अपनी लंबी गर्दन से हड्डी निकालदी इनाम मांगने पर भेड़िये ने उत्तर दिया अरे मूर्ख! अपने मुख में आई हुई तेरी गर्दनको न चबा कर तुझे जीवदान दिया है और क्या दूं। दुष्टों का यही स्वभाव होता है।

तृतीय कथा

सतलुज के किनारे पर बहुतसे मेंडक रहते थे एक दफ़ा एक बैल घास चरने के लिये आया उस के पांव से एक मेंडक मर गया। दूसरे मेंडक दौड़ कर बुढ़िया माताके पास गये और कहने लगे हे माता! एक इतना बड़ा जीव आया है कि उसके पांव से दब कर अमुक मेंडक मर गया है। बुढ़िया ने पेट फुला कर कहा क्या इतना बड़ा है! उन्होंने कहा नहीं बहुत बड़ा है फिर उसने फुलाया इससे भी बहुत बड़ा सुन कर इतना पेट फुलाया कि पेट फट गया और वह मर गई। मूर्खों की यह हालत होती है।

चतुर्थ कथा

एक पुरुषकी दो स्त्रियां थीं। एक बूढ़ी और दूसरी जवान। और वह खुद अधेर था याने कुछ उसके शिर पर बाल सुफ़ेद थे और कुछ काले। एक दिन तैल लगाते हुवे जवान स्त्रीने विचारा मैं जवान हूं मेरा पति भी जवान होना चाहिये उसने सुफ़ेद बाल उखाड़डाले फिर कभी बूढी ने तेल लगाते हुवे सोचा मैं बूढी हूं मेरा पति भी बूढ़ा होना चाहिये उसने काले बाल उखाड़ दिये छः मास के अन्दर वह केश रहित होगया। दो स्त्रियों वालों की यह दशा होती है।

उससे यह काम किया गया। — हम दो से वह देखागया
तेन इदं कार्यम् अक्रियत। — आवाभ्यां स अदृश्यत

तुम सब से खुराक खाई जायगी।
युष्माभिः आहारः खादिष्यते।
उन लोगों से गाने की आवाज़ सुनी जायगी।
तै गायनस्य शब्दः श्रोष्यते।
तुम से मैं देखा जाता हूं।
युष्माभिः अहं दृश्ये।
हम से तू देखा जाता है।
अस्माभिः त्वं दृश्यसे।

अभ्यास ७०

मुझसे सांख्य शास्त्र पढ़ा जायगा। तेरे से वह पण्डित पूछा जायगा। यह सुन्दर गंगा जल हमसे पीया जावेगा। बिल्ली का बच्चा पाला जाता है। रवेल के फूल सूंघे जाते हैं। मातासे पुत्र बुलाया जाता है। दुकानदार से आम बेचे जाते हैं। खेतों में दाने फैंके गए। दीवारों पर फोटो लटकाये गए। मालियों से दरख़्तों के मूल सींचेगए।

अभ्यास ७१

उन दोनों से युद्ध के लिये सलाह की गई। भीमसेन की गदा से कौरव पीसे जाते थे। अर्जुनसे दो शत्रु रुलाये जाते थे। हम दो से दवाइयों की जड़ें रगड़ी जाती थीं। तुम दो से वेद का पाठ याद किया जाता है। तोपके हमले से दुश्मन मारे जावेंगे। किताबें मंगवाई जाती हैं। मूंग भूने गये। शरारती पीटे जायेंगे। आज कल बंदर भी पढ़ाये जाते हैं।

अभ्यास ७२

वह काम किये जायें जो राजा को पसंद हों। कहा जाता है कि वनके दरख़्त काटे जायेंगे। शिकारियों से दाने खिलाड़े जाते थे। हमारे धक्के से तुम सब गिराये गये। बलवानों से निर्बल चबाये जाते हैं। माता पिता से पुत्र चूमे जाते थे। राम और कृष्ण नंद जी से छुपाये जाते थे। सवेरा हो गया है बालक जगाये जायें। अगर वह बात जानी जाय तो वह जीता जायगा। जब तू इमतिहान में पास होगा तो तुम को इनाम दिया जावेगा।

पञ्चम कथा

एक समय मोरने कहा मेरी स्वर अच्छी नहीं है हे ईश्वर जैसे मुझे सुन्दर बनाया है वैसे ही मेरी स्वर भी कोयल जैसी बनादो आवाज़ आई कि हर एक जीव को एक २ चीज़ दी गई है जैसे तुम को सुन्दरता, कोयल को मीठो स्वर तोते को मनुष्य वाणी, हंस को चाल, गरुड़ को बल, इत्यादि। बस सब चीजें एक को नहीं मिल सकतीं ईश्वर के बनाये हुवे नियम अटल हैं।

षष्ठ कथा

एक भूखे फिरते हुवे गीदड़ ने अंगूर का मण्डप देखा उस में बहुत से सुन्दर और मीठे फल लगे थे मगर बहुत ऊंचे होने से वार २ कूदने पर भी न मिल सके। जब थक गया तब छोड़ कर आगे बढ़ा और मुंह फेर कर कहने लगा इस मण्डप में अंगूर खट्टे हैं और कच्चे हैं इस लिये छोड़ कर जाता हूं। चालाक अपनी चालाकी से कुछ न कुछ बनाही लेते हैं।

कथा सप्तमी

किसी एक वन में वृक्ष के नीचे शेर सोता था उसके ऊपर आकर चूहे कूदने लगे। शेर उठ बैठा और एक चूहे को पकड़ लिया जब उसे मारने को तय्यार हुवा तब चूहेने प्रार्थना की कि आप मृगराज हो मैं अत्यन्त दीन छोटा जीव हूं मुझ पर दया करो, छोड़दो। सिंहने छोड़ दिया फिर कभी शेर जाल में फंस गया चूहे ने उस को देख कर कहा आपका उपकार मेरे ऊपर है धैर्य करो मैं उसका बदला चुकाता हूं। इतना कह कर सिंह के जाल काट दिये। किसी के साथ की हुई भलाई निरर्थक नहीं जाती।

कथा अष्टमी

वह शेर चूहे पर बहुत प्रसन्न हुवा और बोला हे मूषक! तूने मेरे साथ बड़ा उपकार किया है वर मांग। यह सुन कर चूहा खुशी से फूल गया मन में कहने लगा क्यूं न मैं शेर के बराबर होजाऊं आज मैं भी कम नहीं हूं क्यू कि शेर पर अहसान किया है. यह सोच कर बोला मुझे शादी के लिये अपनी लड़की देदो. शेर ने उदास होकर लड़की को बुलाया जैसे ही वह मदसे भरी हुई वहां आई वैसे ही उसके पांव के नीचे दब कर चूहा मर गया।

पाठ २४

शिक्षा २३

तव्य, अनीय Potential Passive Participle

१ तव्य इ लेता है।

२ दोनो गुण लेते हैं।

भव् + तव्य = भवितव्य। भव् + अनीय = भवनीय

पठ् + तव्य = पठितव्य। पठ् + अनीय = पठनीय

३ इनका अर्थ है चाहिये, योग्य, लायक, उचित इत्यादि।

४ यह विशेष्यनिघ्न हैं अर्थात् जो लिंगादि विशेष्य का होता है वही इनका होता है।

५ यह प्रत्यय कर्मवाच्य हैं इस लिये कर्म में जो लिंग वचन होता है वही क्रिया में आता है।

अनुवाद ११

उसे होना चाहिये।	तुम्हें पढ़ना चाहिये।
तेन भवितव्यम्।	त्वया पठनीयम्।
यह चावल खाने लायक है।	वे दो आम चूसने लायक हैं।
इदं तण्डुलं खादनीयम्।	तौ आम्रौ चूषनीयौ।
यह गौ देखने योग्य है।	क्रोध जीतने योग्य है।
इयं गौः दर्शनीया।	क्रोधः जयनीयः।
तुम्हें कटुवचन कहना उचित नहीं।	छायावान् वृक्ष का काटना उचित नहीं
त्वया कटुवचनं न कथयितव्यम्।	छायावान् वृक्षः न छेत्तव्यः
सब तरह मैं आपका नौकर होऊंगा।	यह पुस्तक लिखवाने लायक है
सर्वथा मया तवानुचरेण भवितव्यम्।	इदं पुस्तकं लेखयितव्यम्।

अभ्यास ७३

मुझे बजुर्गोंका वचन लेना चाहिये। मुझे वेद पढ़ना चाहिये। उसे बिल्ली का बच्चा पालना चाहिये। गेहूं के दाने पीसने चाहियें। अगर यह लड़का नहीं पढ़ता तो इसे पीटना चाहिये। देवताओं में विष्णु देव पूजने योग्य है। इस

कथा नवमी

किसी एक वन में कोई लकड़हारा चारों तरफ़ देखकर रोने लगा, उस रोते हुवे से वृक्षों ने पूछा तू क्यूं रोता है वह बोला मेरी कुल्हाड़ी का गन नहीं है कैसे लकड़ियां काटूंगा। वृक्षों ने दयावश उसे एक गन देदिया। बस फिर वह उठ खड़ा हुवा, तमाम वृक्षों को काट डाला। सब वृक्ष उसको गालियां देने लगे तब शाल वृक्ष ने कहा यह क़सूर उसका नहीं किन्तु तुम्हारा है इस लिये तुम अपने आपको गालियां दो।

कथा दशमी

दो मुसाफ़िर वन में जाते थे दोनों ने प्रतिज्ञा की थी कि बड़ी मुसीबत पड़ने पर भी एक दूसरे का संग नहीं छोड़ेंगे। चलते हुये एक घने जंगल में जाकर घुसे, दूर से एक रीछ सामने आया, उन दो में से एक आदमी दौड़ कर वृक्ष पर चढ़ गया दूसरा दुर्बल होने से वहां सोगया और प्राणायाम चढ़ा लिया रीछने आकर उसका मुंह सूंघा और मुरदा समझ कर दूर चला गया, इसके बाद वृक्षसे उतर कर मुसाफ़िर ने पूछा रीछने तुम्हारे कानमें क्या कहा है, उसने उत्तर दिया रीछने कहा कि 'तेरे जैसे शरीरोंका इतबार नहीं करना चाहिये'

द्वितीयोनुवादाध्यायः

किसी एक नगर में सवार रहता था, किसी कारण से उसके बाल गिरगए। वह अपनी बद सूरती को छिपाने के लिये सोचने लगा अब क्या करूं। आख़िर नक़ली बाल लगा लिये, कभी दूसरे सवारों के साथ वनमें गया, पवन के वेग से नक़ली बाल गिर गये तब दूसरे सवार हंस पड़े। वहभी शर्मिन्दा होकर हंस पड़ा और बोला 'जब मेरे अपने केश न बचे तब यह पराये कैसे बचते'।

कथा द्वितीया

नदी के किनारे पर मिट्टी का पात्र और पीतल का पात्र दो रक्खे थे नदी का प्रभाव ऐसा उठा कि दोनों पानी में बहने लगे मिट्टीका बरतन आगे और पीतलका पीछे था, मिट्टीका बरतन घबड़ाने लगा। पीतल के बरतन ने दिलासा दे कर कहा मत घबड़ाओ मैं तुमको बचाऊंगा, मिट्टी का

फल को जमीन पर फेंकना उचित है। यह शीशा पत्थर से फोड़ने लायक नहीं। औरतों को हमेशा दुष्टों से बचाना उचित है। यह बेल बढ़ने लायक है।

अभ्यास ७४

दो बंदर बांधने चाहियें। दो घर बनाने उचित हैं। दो खेस बुनने चाहियें। दो कन्यायें बुलानी चाहियें। अगर बैंगन बेचने लायक हैं तो बेचदो। आप दोनों को यहां बैठना चाहिये। अगर कुछ कहना है तो कह डालो। उस बदमाश से नहीं बोलना चाहिये। दो पोस्टकार्ड भेजने योग्य हैं। मकई का सिटा भूनने लायक है।

अभ्यास ७५

धोबी से कपड़े मंगवाने चाहियें। दुंबे के बाल मुंडवाने चाहियें। आजके सब सबक याद करने लायक हैं। जो होना है वह होगा। मोतियों के हार गले में लटकाने लायक हैं। माखन के लिये दही मथना उचित है। ऋषियों से हम सिखाने लायक हैं। तुम माता पिता से पढ़ाने लायक हो। वे सब रात्रि के पक्ष सुलाने योग्य हैं। भीमसेन के काम हंसने लायक हैं।

पाठ २५

सामान्य भूत क्त (त) Past Passive participle

शिक्षा २४

१ क्त प्रत्यय गुण नहीं लेता

२ इ कहीं लेता है कहीं नहीं लेता प्रायः सेट् अनिट् धातुओं से भी निश्चय हो सकताहै। भू–त = भूत। पठ–त = पठित

३ विशेषण निघ्न है। प्रायः कर्मवाच्य है। गत्यर्थ धातुओंसे कर्तामें भी लगाया जाता है।

अनुवाद १२

वह हुआ	लड़का पढ़ा	कन्या कही गई।
तेन भूतम्	बालकः पठितः	कन्या कथिता

दो तरबूज़ खाये गये	दो कन्याओं ने गाया
द्वौ कालिंगौ खादितौ	द्वाभ्याम् कन्याभ्याम् गीतम्
हमसे फुटबाल खेली गई	फूलों के हार गूथे गये
अस्माभिः पादकंदुकं क्रीडितम्।	पुष्पाणां हाराः गुम्फिताः

परतन बोला भाई ! दूसरे बोलो, मैं तुमसे बहुत डरता हूं क्यूं कि आपस में टकरने से मैं ही टूट जाऊंगा, सच है बलवान् से लड़ कर कमज़ोर ही नुक़सान उठाता है ।

कथा तृतीया

कोई बेवकूफ़ गाड़ीवान गाड़ी को लेजाते हुवे कीचड़ में फंस गया बहुत काशिश करने पर भी न निकाल सका तब नाउमैद होकर बैठ गया और कहने लगा हेदेव! मेरी मदद करो. देवने उत्तर दिया अरे आलसी मूर्ख! अगर मेरी मदद चाहता है तो उठ । धुरी को ऊपर उठा पहियों को कंधे पर रख कर खैंच तब मैं मदद करूंगा । इसके बाद गाड़ीवान के वैसा करने पर गाड़ी निकल आई । बस पुरुपार्थ से कामयाबी होती है बैठ रहने से नहीं ।

कथा चतुर्थी

एक चीता किसी वन में रहता था एक दिन वह अपने रंगीन जिस्म को देखकर मग़रूरी के साथ कहने लगा जैसे रंगीनी मेरे शरीर पर है वैसे शेर की क़िस्मत में भी नहीं आई भला दूसरे पशु विचारे क्या हैं । यह कह कर सब जानवरों को गालियां देने लगा तब एक गीदड़ ने जवाब दिया हे चीता सुन यह तेरी ग़लती है क्यूंकि दानाह लोग कहते हैं कि जिसका आत्मा उन्नत है वह उत्तम है सुंदर चमड़े से कोई उत्तम नहीं बन सकता मूल्य तलवार का होता है न कि म्यान का ॥

कथा पञ्चमी

एक ख़ास क़िस्मका हिरन होता है उसकी नाफ़ में कस्तूरी पायी जाती है उसको देख कर मनुष्य उसको पकड़ने तथा मारने के लिये पीछे दौड़ पड़ते हैं कभी कहीं इस तरह के हिरन को जाते हुवे देख कर शिकारी और कुत्ते उसके पीछे दौड़े । हिरन डरा और भागा परन्तु बचाव का कोई उपाय न देखा फिर मनमें सोचता है कि यह शिकारी मुझे क्यूं मारना चाहते हैं समझ में आगया कि मेरी शत्रु कस्तूरी है यदि इसको छोड़दूं तो सुखी होऊंगा यह विचार कर उसने कस्तूरी निकाल कर फेंक दी और अपनी जान बचाली ।

कथा षष्ठी

एक वन में कोई गीदड़ी रहती है एक दिन वनमें फिरती हुई किसी चीती

घरके ताले तुड़वाये गये। रुपये दिये गये।
गृहस्य लोहपत्राणि भेदितानि। मुद्रा दत्ताः।
रुपये दिलाये गए।
मुद्रा दापिताः।

अभ्यास ७६

ॐअन्तर उकड़वाया गया। गिलो की बेल उगी। चिड़ी का बच्चा उड़ा। दरख़्त का पत्ता कांपा। देवदत्त ने स्नान किया। गगसे सीता कही गई। सौ गिना गया। दूरबीन से हमने देखा। हाथ से रस्सा गिर गया।

अभ्यास ७७

दो नाखें चबाई गई। दोनारंगियें तोड़ी गई। आकाशपर दो तारे चमके। भूखे आदमी से दोनो हाथ चाटे गए। दो मित्रों की मुलाकात हमने चाही गई। दो चोरों से दो संदूकें चुराई गई। माता से दो बालक चूमे गए। राजा से दो कैदी छोड़े गए। भाई से दो बहिनें जगाई गई। दो विद्यार्थियों से दो बार गायत्री मंत्र जपा गया।

अभ्यास ७८

अग्नि से तमाम जंगल जलाये गए। हमसे यहांके सब तालाब जाने गए। जुगराफ़िये की किताबें खूब ढुंडवाई गई। चार कबूतर मैदानमें नचवाये गए। बादशाहसे दुशमन जीते गए। एक लोभी ब्राह्मण रीछके कंगन से ठगा गया। राजा विक्रमादित्य कालीदास आदि शायरों से तारीफ़ किया गया। गर्म पानी से स्त्रियां नहाई। चक्की में मोठ और मटर दलवाये गए। फ़कीरों को कपड़े दिये गए।

द्विकर्मक—कर्मवाच्य

श्लोकः

गौणे कर्मणि दुह्यादेः प्रधाने नीहृकृष्वहाम्।
बुद्धिभक्षार्थयोः शब्दकर्मकाणां निजेच्छया॥

अर्थ—दुह् आदि १२ धातुओं की गौण कर्ममें विभक्ति बदलती है अर्थात् द्वितीया के स्थान में प्रथमा होती है। नी, हृ, कृष्, वह् इन चार धातुओं के प्रधान कर्म में परिवर्त्तन होता है। बुद्धि भक्षणार्थ और शब्दकर्मक धातुओं में

के पास गई और विचारने लगी कि मैं इससे क्या प्रश्न करूं ? सोच कर बोली हे व्याघ्रि ! मैं छोटी हूं तौभी बरसमें मेरे बहुत से पुत्र उत्पन्न होते हैं तू इतनी बड़ी है तथापि तेरे एक या दो पुत्र सारे जन्ममें होते हैं। यह सुन कर चीती ने हंसकर उत्तर दिया कि तेरे बहुत पुत्रों से मेरा एक पुत्र अच्छा है क्यूं कि सौ मूर्खों से एक गुणी पुत्र उत्तम है जैसे हजारों तारों में एक चंद्रमा।

कथा सप्तमी

दण्डक वन में कपूर तिलक नामी एक हाथी रहता था। उसको देखकर गीदड़ों ने कहा यदि यह किसी उपायसे मरजावे तो हमारा चार मास का भोजन होवेगा, उन में से एक गीदड़ ने जाकर हाथी से कहा महाराज! नमस्कार करता हूं हाथी ने पूछा तू कौन है, गीदड़ ने हाथ जोड़कर कहा मैं गीदड़ हूं क्यूं आया है? आपको बुलाने के लिये क्यूंकि हम आपको राजा बनाना चाहते हैं, हाथी लालचवस चल पड़ा आगे जाकर कीचड़ में फंस गया और बोला, मित्र! मैं कीचड़ में फंस गया हूं, गीदड़ने पूंछ दिखला कर कहा इस को पकड़ कर उठो। नीच की बात मानने से यह फल मिलता है।

कथा अष्टमी

कोई राजा गरमी के दिनों में बाग में घुस कर सैर करता था, एक डोलची जोके बागका रक्षक था हाथ में डोल लेकर वृक्षों को सींचता था, राजा को फिरता हुवा देखकर आगे २ सर्वत्र जल सींचने लगा, वह मानता था कि ऐसा करनेसे राजा मुझे बहुतसा इनाम देवेगा, इस लिये अनुचित स्थानों पर भी उसने जल सींच डाला, राजा ने उस की यह चर्या देखकर उसे बुलाया और कहा, अरे मूर्ख! यह तूने क्या किया है एकतो वक्तको ज़ाया किया है दूसरे चीज़ोंका नुकसान हुवा है। अगर तेरे दिलमें यह ख़याल हो कि इस खुशामद से राजा मुझे इनाम देगा, मगर याद रक्खो कि ऐसे बेहूदा खुशामदियों को कभी इनाम नहीं मिलता।

कथा नवमी

एक गडरिये के पास बहुतसी भेड़ें और मेंढे थे उसके पास एक कुत्ता उनकी हिफ़ाज़त के लिये था वह गडरिया कुत्ते को पूरी कचौड़ी और हलवा खिलाया करता था परन्तु वह अहसान फ़रामोश उसकी ना मौजूदगी में किसी न किसी मेंढेको खाजाता था मालूम होने पर तलवार लेकर जब गडरिया उसे

जहां चाहो विभक्तिपरिवर्तन [illegible]। [illegible] के [illegible] साथ कर्म में परिवर्त्तित करके दिखलाये जाते हैं। इसको वाच्य परिवर्तन कहते हैं। यथा–

(हाशिये में: दुह् आदि १२ धातु इसी प्रकार होते हैं)

कर्त्तरि– गौसे दूध दोहता है
गां दोग्धि पयः
गौणे– कर्मणि– गौसे दूध दुहा जाता है
गौ दुह्यते पयः

(हाशिये में: नी आदि चार धातु इसीप्रकार होतेहैं।)

कर्तरि– अजा को गांव में ले जाता है।
अजाम् ग्रामं नयति।
प्रधा.ने– कर्मणि– बकरी गांव में पहुंचाई जाती है
अजा ग्रामं नीयते

(हाशिये में: बुद्धि भक्षार्थ और शब्दकर्मकरूपऐसे होतेहैं)

कर्तरि– बालकको धर्म सिखलाता है
माणवकं धर्मं बोधयति
निजेच्छातः– कर्मणि– बालकको धर्म सिखलाया जाता है
माणवकं धर्मः बोध्यते }
माणवकः धर्मं बोध्यते }

शिक्षा २५ Past active participle

※ क्त भूतसामान्य को यदि कर्तृवाच्य बनाना होतो इसके आगे वत् लगादो भगवत् की भांति उच्चारण लेता है। संस्कृत में इस प्रत्यय को क्तवत् (तवत्) कहते हैं॥

अनुवाद १३

राम ने मीठा फल खाया । द्रौपदी ने अर्जुन को देखा।
रामः मधुरं फलं खादितवान् । द्रौपदी अर्जुनं दृष्टवती।
हरि ने पानी को फेंका । पानी से दीवार गिराई गई।
हरिः जलं क्षिप्तवान् । जलम् भित्तिम् पातितवत्।

※ क्त, क्तवत् से पूर्व धातु के अन्तिम न्, म्, का लोप हो जाता है॥

मारने लगा तब कुत्ता बोला मैंने तो थोड़े मेंढे खाये हैं पर भेड़िया रोज़ खाजाता है तू उसे क्यूं नहीं मारता गडरिये ने कहा तू मेरा नमकख़ार था तुम पर मेरा इतबार था तूने बेइमानी की है जिस काम की ख़ातिर तुम को रोटी दी जाती थी उस को तूने खुद बिगारा है इस लिये तू मारा जायगा।

कथा दशमी

एक अक़लमंद बालक तालाब पर उत्तम वस्त्र और भूषण पहिने खेलता था उसको ठगने के लिये कोई ठग वहां आ पहुंचा बालक ने उसे चोर संमझा और रोने लग गया ठगने पूछा तू रोता क्यूं है बालकने कहा कि मेरी सोने की अंगूठी तालाब में गिरगई है यह सुनते ही ठगने कपड़े उतार कर रख दिये और पानी में अंगूठी ढूंढने के लिये कूद पड़ा बालक को मौक़ा मिल गया वह उस के भी कपड़े उठाकर चल दिया। ठीक है शरीर के साथ शरारत करनाही दानाही है।

तृतीयोनुवादाध्यायः

सतलुज के किनारे पर पंजाब देश है। कभी बड़ा क़हित पड़ा कोई पुरुष, स्त्री और पुत्र को लेकर वनमें गया। रोज़गार के लिये मूंज चुन कर रस्सी बनाने लगे वृक्षपर बैठे हुवे परिन्दोंने पूछा रस्सी से क्या करोगे उन्होंने कहा तुम को बांधेंगे परिंदोंने डरकर उत्तर दिया कि हम को मत बांधो वृक्षके नीचे धन गढ़ा है निकालकर चले जाओ वैसा करने पर वह सफल मनोरथ घर पर लौट आये। उस के भाई ने जब यह वृत्तान्त सुना तो वह भी स्त्री और पुत्रको साथ लेकर वृक्ष के नीचे जा बैठा स्त्री को कहा पानी लाओ उसने इनकार कर दिया पुत्र को मूंज कही वह भी न उठा। परिंदोंने पूछा तुम क्या करना चाहते हो उसने कहा तुम को बांधना चाहता हूं वह बोले तू हमें नहीं बांध सकता क्यूंकि तेरे तो अपने घर में ही इत्तिफ़ाक़ नहीं है।

कथा २ या

कोई लड़का पाठशाला से वस्तु चुरा कर माताको देता था माता वह चीज़ें लेकर प्रसन्न होती थी एक दिन चोरी करता हुवा पकड़ा गया और सरकार ने उसे फांसी की सज़ा सुनाई यह सुनकर लोगोंकी भीड़ लग गई उसकी माता भी देखने आई उस बालक ने माता के कान में बात करने के बहाने मुंह लगा

दो गुणी डरे	दो बेलें वृक्ष पर चढ़ीं
द्वौ गुणिनौ भीतवन्तौ	द्वे लते वृक्षम् आरूढवत्यौ
सिपाही ने दो चोरों को पकड़ा	स्त्रियों ने रोटियां पकाईं
सैन्यः द्वौ चौरौ गृहीतवान्	स्त्रियः रोटिकाः पक्वत्यः
उन्हों ने पढ़ाया	फूलोंने पानी पिया
ते पाठितवन्तः	पुष्पाणि जलं पीतवन्ति

अभ्यास ७९

धातु पिघलाई गई। मेदा मनुष्यों से पीसा गया। तिल तेलियों से पीड़े गये। हम हमसायों से पूछे गए। मेरी दोनों आंखें फड़कीं। मिट्टी के बरतनों को हमने फुड़वाया। पेठा खुद बखुद फूट गया। पानी में डूबते हुए बच्चों को बचाया। अपने मेहिमानों को तुमने बुलाया। हमने जो खुर्दबीनें लीं थीं वे सब बेचदीं। मुलाज़िम कुरसियों पर बैठाये गये।

पाठ २६

अब जो प्रयोग आवेंगे वह कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य दोनों में होंगे।

तुम्

Infinitive of purpose

शिक्षा २६

१ तुम् प्रत्यय इ और गुण लेता है भू-(भव्) तुम्-भवितुम्। पठ्तुम्—पठितुम्।

अभ्यास ८०

वायु वृक्षोंको हिलाने के लिये बहता है। हंसने के लिये काव्यों में हास्यरस लिखा गया। सूददरसूद लेने के लिये उसने बेईमानी की। एक ज़ालिम मारने के लिये कुल्हाड़ी पकड़ता था। सजावट के लिये फूलों का गुलदस्ता आवेगा। सुनी हुई बातको सुनने के लिये मैं फिर बाहिर आया। तू देखे हुए तमाशे को देखने के लिये फिर गया था। वह खाये हुये मेवों को खाने के लिये फिर जायगा। भैंस सूने_को है। कन्या सोने के लिये रोती है।

अभ्यास ८१

हमने चार धोतियां सिलवाने के लिये भेजीं। पौधों को सींचने के लिये

या और कान तोड़ डाला लोगों ने उसको लानत देखकर पूछा अरे मूर्ख ! यह क्या पाप किया है उसनें कहा सब क़सूर माता का है अगर यह मुझे प्रथम दिन चोरी करने से रोक देती तो मुझे आज फांसी क्यूं मिलती ।

कथा ३ या

च्यूंटियां हमेशा गरमीके दिनोंमें खुराक इकट्ठी कर लेती हैं सरदी आने पर आनंद पूर्वक खाती हैं। एक दिन भूख से घबड़ाया हुवा परवाना आया उनको खाते हुवे देखकर बोला बहिनो ! मुझे भी कुछ खाने को दो। उनमें से एक बोली हे परवाना ! क्य तूने खुराक इकट्ठी नहीं की उसने कहा मैं नाचने खेलने में लगा रहा इस लिये कुछ नहीं करसका तब उसने कहा तुझे भूख से मरजाना चाहिये क्यूंकि जो लोग अपने भविष्यके लिये कुछ नहीं सोचते और काल को वृथा खोते हैं उनकी यही दशा होनी चाहिये।

कथा ४ थी

हिंदोस्तान में एक कुत्ता किसी नगर में रहता था एक दिन फिरता हुवा क्या देखता है कि घास का ढेर लगा हुवा है वह आनंद पूर्वक उस पर जा बैठा थोड़ी देर के बाद एक गौ आई उस घास को चरने लगी कुत्ता उठ कर भौंकने लगा गौने कहा अरे मूर्ख ! यह घास तेरे काम की तो है नहीं हमारे लिये रक्खी हुई है तुझे इतना हसद है कि तू दूसरे का पेट भर खाना नहीं सह सकता धिक्कार है तेरे इस दुष्ट स्वभाव को। क्या मैंने भी कभी तेरी रोटी में रुकावट डाली है फिर तू क्यूं भौंकता है।

कथा ५ मी

किसी शिकारी कुत्ते ने हिरनी पर नालिश की, नालिश के विचार के लिये चीता और गीध कमीशन बैठे। कुत्ते ने कहा कि हिरनी ने मुझसे उधार ली थी, अब मुझे नहीं देती हिरनी बोली मैंने कुछ नहीं लिया इस विषय में कोई तहरीर या गवाह हो तो यह पेश करे, दोनों की बातें सुनकर कमीशन ने फ़ैसला दिया कि कुत्ता ईमानदार है झूठ नहीं बोलता जयपत्र कुत्ते को दिया जाता है, यह सुनतेही कुत्ते ने हिरनी को मार डाला और तीनों ने मिलकर खाया, ज़ालिमों की करतूत अकसर ऐसे ही रहा करती है।

माशकी को भेजा। सिखलाने के लिये उस्ताद को बुलाया। दीपमाला में सजवाने के लिये कारीगर को बुलायेंगे। पुस्तकें लिखवाने के लिये काश्मीर से लेखक बुलवाओ। सुना जाता है पुराने ज़माने में बालक का शिर मुंडवानेके लिये ब्राह्मण को बुलाते थे। बैठने के लिये यह जगह काफ़ी है। पलंग बुनवाने के लिये पड़ा है। ज़ख्म बांधने के लिये पट्टी लाओ। बालों को बढ़ाने के लिये खुशबूदार तेल लगाओ।

पाठ २७

क्त्वा (त्वा)

Indeclinable past participle

शिक्षा २७

१ * क्त्वा प्रत्यय क्त की भांति कहीं कहीं इ लेता है वृद्धिगुण नहीं लेता।
२ इसका अर्थ है करके, कर। भू-त्वा-भूत्वा। पठ्-त्वा-पठित्वा।

अभ्यास ८२

सांप मेंडक को निगल करके भागता है। मैं नहाकर पाठशाला जाऊंगा। डिबिया देकर वह यहां से चला गया। मैंने डायरी को देखकर यक़ीन किया। तोड़े हुवे को तोड़ कर क्या बहादुरी की। तू तारीफ़ करके क्या लेगा। आत्मा में ईश्वर को ढूंढ कर खुशी मनाओ। जो डरकर बैठजाता है वह तरक्की नहीं करता। हे बाला! तू ठहरकर क्या देखती है। ठग लोग ठगकर चले गए। घड़े से पानी की बूंद टपक कर निकलती है।

अभ्यास ८३

राजाने मुझे रुपये दिलाकर रुखसत किया। सिपाहीने वारंट दिखलाकर पकड़ लिया। राममूर्ति अपनी छातीपर पत्थर तुड़वाकर ताक़त दिखलाता है। कुंवें को ढपवाकर सुरक्षित करो। श्री कृष्ण ने कंसके पहिलवान को घुमाकर फेंकदिया था। भीमसेन से जरासंध को गिरवाकर श्रीकृष्ण प्रसन्न हुआ। फूलोंको गुथवा कर हम लोग पहिनते हैं। दौलतमंद बावरियां खुदवाकर उपकार करेगा। पक्षियों को दाना खिला कर पकड़ता है। ढोलकी नंदी खिंचवाकर बजाता है।

---

* क्त्वा के सामने होने पर नकारान्त मकारान्त धातु के न्, म्, का लोप हो जाता है।

कथा ६ठी

कोई एक मकोड़ा नदी में पानी पीने के लिये गया नदी के प्रभाव में वह निकला, उस बहते हुवे पर कबूतर की निगाह पड़ गई, उस से वह बाहिर निकाला गया, एकदफ़ा कबूतर वन में वे खौफ़ होकर बैठा था, कोई शिकारी उधर आनिकला, कबूतर को बैठा हुवा देख कर जाल फैलानी शुरु करदी, मकोड़े ने देखा कि मेरा उपकारी फँसता है उसने तत्काल शिकारी की टांग को डस लिया उस दर्द से अचानक शिकारी ने हाथ पांव हिलावे, कबूतर उड़ गया सच कहा है भले की भलाई होती है ।

कथा ७ मी

दो हिंदुस्तानी मनुष्य शिव मंदिर में जाकर शिवजी की तपस्या करने लगे। एक दिन आकाश वाणी हुई कि मैं तुम पर प्रसन्न हूं वर मांगो । जो प्रथम वार मांगेगा उसकी वस्तुसे दुगनी वस्तु दूसरे को मिलेगी । इन तपसियों में एक लालची था और दूसरा हासिद था । लालची ने मनमें कहा मुझे चुप रहना चाहिये क्योंकि जो यह मांगेगा मुझे खुद ब खुद दुगनी मिलजायगी । हासिद ने उसे चुप देख कर वर मांगा कि हे प्रभु मेरी एक आंख कानी हो जाय । तत्काल लालची दोनों आंखोंसे अंधा हो गया । देखो हसद कैसी बुरी बला है ॥

कथा ८ मी

किसी किसान के ४ चार पुत्र थे जब वह मरने लगा तो पुत्रों ने पूछा पिताजी कुछ धन माल होतो बताईये उसने कहा यह खेत किसी को न देना इसके एक हाथ नीचे मेरा खज़ाना गड़ा हुवा है । उसके मरजाने के पीछे चारों ने मिल कर एक २ हाथ नीचा हल चलाया पर कुछ न मिला लेकिन उस साल फ़सल दस गुणा उत्पन्न हुवा तब एक बुद्धिमान् भाई ने कहा पिता का यह मतलब था कि भूमि खोदने में जितना अधिक पुरुषार्थ करोगे उतना फल भी अधिक पाओगे । पुरुषार्थ ही खज़ाना है ।

कथा ९ मी

पंजाब के किसी हिस्से में एक नाटक ऐक्टर रहता था । उसको पेट के दर्द ने सताया, घबड़ाया, बहुत दवाइयें की गई । कुछ कामयाबी न हुई आखिरकार वह एक हकीम के पास गया । हकीम ने कहा तुमने क्या खाया

था। उसने कड़ा जली हुई रोटी खाई थी हकीम ने तुर्त नौकर को हुक्म दिया गया सलाई लाओ बीमार ने पूछा सलाई से क्या करोगे हकीम ने उत्तर दिया तुम्हारी आंखें ठीक की जावेंगी क्योंकि तुम्हारी आंखों में फ़र्क़ है वरना तुम जली रोटी क्यों खाते।

कथा १० मी

पंजाब के किसी एक जंगल में एक दफ़ा बड़ी भारी बरसात हुई। बन के जानवर बहुत दुःखित हुवे उनमें कई एक बंदर भी थे शरीर के बचावके लिये एक वृक्ष के नीचे खड़े होगये शीतल वायु के वेग से थर थर कांप रहे थे उन को देख कर अपने घोंसले में बैठी हुई चिड़ियाने दयावश कहा हे वानरो! तुम्हारा जिस्म तो मनुष्य के बराबर है तुम सर्दी गर्मी के लिये अपना घर क्यूं नहीं बनाते? देखो ऐसा दुःख उठा रहे हो यह सुन कर वानरों ने कहा अरी रंडा! तू हम पर ठट्ठा करती है बरसात ठहरते ही तेरी खबर लेलेंगे। मूर्खोंको उपदेश उलटा असर करता है।

चतुर्थोध्याय

एक ग्वाला नित बन में गौवें चराता था एक दिन अचानक उसने हंसी के तौर पर शोर मचा दिया कि आओ २ शेर आगया शेर आगया गांव के लोग लाठियां लेकर दौड़ पड़े जब पास आये तो उसका मख़ौल प्रतीत हुवा वह नाराज़ होकर वापिस चले गए। कुदरत से किसी दिन सच्चा शेर वहां आ निकला उसने फिर गुलशोर मचाया मगर ठट्ठा समझ कर कोई न आया शेर ने आते ही उसे फाड़ खाया इस लिये कहते हैं कि झूंठ बोलना बड़ा पाप है अगर उसने झूंठ न बोला होता तो आज शेर के पंजों से क्यूं मारा जाता।

कथा द्वितीया

एक आलसी लड़का पाठशाला से भाग कर बन में गया वहां अवारा गर्दी की तरह फिरने लगा एक तर्फ़ क्या देखता है कि बुलबुल तिनके चुन २ कर घोंसला बना रही है। दूसरी तर्फ़ देखा तो च्यूंटियां चावलों के दाने लेजा कर अपनी बिल को भर रही हैं। आगे बढ़ कर देखता है तो शहिदकी मक्खी फलों का रस चूस २ कर अपने छत्ते में शहिद बनाती हैं। बकड़ीको देखा तो वह ऊंची चढ़ कर नरम २ पत्ते खाती है ग़र्ज़ यह है कि सबको अपने २ काममें

दुलहिन बैठे हुवे हैं। एक पुरुष वह है कि जिसका सातवां विवाह है वह चाहता है कि आठवां नवां और दसवां भी करलूं उस शौक़ीन को तीन वार बारबार, रोका परन्तु उसने दसवार अपना वही हठ ज़ाहिर किया।

कथा ३ या

कोई सौदागर बाज़ार में एक चाकू नीलाम करते हुवे कह रहा था, कि देखो यह पांच से खरीदा हुवा दोमें दिया जावेगा, यह दसका खरीदा पांच में दिया जाता है। यह लड़के लोअर में पढ़ते हैं। वे कन्यायें मायमरी तक पढ़ चुकी हैं। आज कल पुत्री पाठशालायें अक्सर मिडलतक बनरही हैं। हाई-स्कूल में से पढ़कर जो आते हैं वे अच्छे योग्य समझे जाते हैं। कालिज की पढ़ाई अशराफ़त सिखलाती है। कालिज में तीन विभाग हैं, पहली एफ़०ए० दूसरी बी० ए० और तीसरी एम० ए० क्लास हैं। आजकल कालिजों में सैकड़ों और हज़ारों पढ़ते हैं।

कथा चतुर्थी

आहा !! क्या देखता हूं ऐसा अद्भुत स्वप्न तो कभी नहीं देखे था और ऐसा कलरव पूर्ण लोकाकीर्ण स्थानभी कभी नहीं देखाथा, इस असीम भूमण्डल के मध्य में एक परम शोभायमान अपूर्व पर्वत इतना ऊंचा है कि चोटी मेघों के बीचोंबीच बहुत ऊंचेतक उठी हुई है पार्श्वदेश ऐसा, दुरारोह है कि मनुष्य के सिवा और कोई जन्तु वहांतक पहुंचही नहीं सकता। मैं बड़े आश्चर्य में आ, कभी आंख उठा पर्वतकी ओर कभी उसपर चढ़ने वालोंके यत्न और अध्यवसायकी ओर देखता और इधर उधर घूमता चिन्ता में चूर होरहा था।

कथा ५मी

पर्वत आदि के साथ पवनका रुकना और पलटना भी अनेक अन्यान्य स्थानों में वर्षा पड़ने का कारण है जिस पवन के मवाहद्वारा बाष्पराशि लाकर भारतवर्ष के पूर्वोत्तरखण्ड में मेघबनते हैं। वह पहिले पश्चिम दक्षिण से बंगाले की खाड़ियों के ऊपर २ से बहकर आती है। पीछे हिमालय और उसके आस पास के पहाड़ों के निकट पहुंच टकरखा आगे और उत्तर की ओर जाने को असमर्थ हो पश्चिमोत्तर में चली जाती है फिरवहां से बहती २ हिंदुकुश पहाड़ से टक्कर खाती है तो ठीक पश्चिमको चलने लगती है।

लगा हुवा देखकर इसने सोचा कि सारी दुनिया तो काम में लगी हुई है मैं निकम्मा क्यूं फिरता हूं। मुझे भी काम करना चाहिये इतना विचार कर पाठ शाला को चला गया ऐसे बच्चे होनहार होते हैं।

कथा तृतीया

कहते हैं कि एक दिन जब कि रामचन्द्र बालक थे माताकी गोद में बैठे हुवे थे पूर्णिमा का चन्द्र निकला आपने देखकर कहा माता जी ! मुझे चांद पकड़दो माताने बहुत समझाया आपने एक न मानी राजा दशरथ आये उन्होंने भी अनेक खिलौने दिये कुछ न हुवा सब हैरान थे कि चंद्रमा कैसे लाकर दिया जावे यह खबर अमीर वजीरों को हुई सुमन्त बड़ा बुद्धिमान् वज़ीरथा उसने कहा राम ! ज़रा ठैरो मैं अभी चंद्रमा लादेता हूं यह कहकर एक बड़ा शीशा लादिया उसमें चंद्रमा दिखला कर कहा देखो चंद्र आगया है राम हंस पड़े और बहुत खुश हुवे।

कथा चतुर्थी

कोई राजा वज़ीरों को साथ लेकर सैर करता हुवा बाग़ में पहुंचा वहां एक बूढ़ा माली नया पौधा लगा रहा था राजा ने हंसकर कहा अरे माली अस्सी वर्ष की तो तेरी उम्र है इसका फल तो तू नहीं खायगा फिर इतनी मेहनत क्यूं करता है माली ने हाथ जोड़ कर उत्तर दिये कि हज़ूर ! मेरे बड़ों ने वृत्त लगाये थे उनका फल मैंने खाया इसी तरह मेरे लगाये पौधों का फल मेरी औलाद खायेगी। राजा ने ख़ुश होकर दश रुपये इनाम दिया माली हंसकर और उछलकर बोला मालिक ! कौन कहसकता है कि मैंने पौधे के फल नहीं खाये आजही पौधा लगाया आज़ही दस फल मिलगये।

कथा पञ्चमी

एक बूढ़ी बिल्ली हाथ में लोटा गले में माला और माथे पर टीका लगा कर तपस्विनी बन गई। चूहों ने इसकी यह आकृति देखकर पूछा मासी बिल्ली ! यह तूने क्या किया है वह बोली मैंने बहुत चूहे मारकर पाप बटोरा है अब उनका प्रायश्चित करूंगी इस लिये खाना पीना छोड़ रक्खा है। चूहे निःशंक होकर कूदने लगे बिल्ली रात्रि के वक्त अंधेरे में दो चूहे पकड़कर खालेती छै मासके भीतर जहां दश झुंड थे पांच बच गए एक बुद्धिमान्

कथा षष्ठी

जब दूरवीक्षण लेकर आकाश मण्डल को देखते हैं। तो एक २ क्षुद्र तारा जो दीप सिखा वा खद्योत की भान्ति यहां से दिखाई देता है एक बड़ा भारी जीवलोक सुनपाते हैं। फिर अणुवीक्षण ले एक २ बिन्दु जलको देखने लगते हैं असंख्यात प्राणिपुञ्ज (जो हमारी भांतिहि सब प्रकार के व्यवहार करते हैं) से परिपूर्ण देख विस्मयार्णव में मग्न होते हैं। इधर एक खद्योत समान प्रकाशित नक्षत्र और तारे हमारी इस धरती से भी बड़े। इधर एक जल कणा के भीतर अगणित जीवपुञ्ज। इन सम्पूर्ण व्यापारों को देख यही कहना पड़ता है कि आहा ! धन्य तेरी अपार महिमा। और धन्य तेरी अनन्त शक्ती है।

कथा सप्तमी

यह लो वर्षाकाल आ पहुंचा। पर्वतों के समान मेघों के समूहों से आकाश मण्डल ढक गया। स्वर्गस्थली, समुद्र का जल रूपरस सूर्यकी किरणों के द्वारा पीकर कार्त्तिकादि नवमास तक गर्भ धारण करके लोकों का जीवन स्वरूप जलरूप रसायन छोड़ती है। सूर्य भगवान आकाश में आरोहण करके कुटज और अर्जुन माला की समान मेघसोपान श्रेणी से उस गगन मण्डल को अलंकृत करते हैं। सन्ध्या समय की ललाई से और अन्त भाग में श्वेत वर्ण स्निग्ध मेघरूप छिन्न वस्त्रों ने, मानों आकाश के घावस्थानों में पट्टी बांध रक्खी है।

कथा अष्टमी

मन्द पवन रूप निःश्वास युक्त सन्ध्या की ललाई मानो चन्दन लगाये हुवे हैं। श्वेत वर्ण के मेघों सेयुक्त आकाश मानो कामातुर हो गया सा जान पड़ता है। ग्रीष्म के ताप से महा कम्पित नये पानी के छिड़के जाने से शोक से सन्तापित यह पृथ्वी विरहिनी स्त्री के समान आंसू छोड़ती है। मेघके उदर से निकले हुवे कपूर लगे जल की समान, शीतल और केतकी की सुगंधी युक्त पवन अंजिली द्वारा पान करनेके योग्य होगया है। मेघरूप चीर वल्कल धारी, धारा रूप यज्ञोपवीत युक्त, गुहा के मुख में पवन शब्द युक्त सब पर्वत वेदाध्ययन करने वाले बटुक गणों की समान शोभायमान होरहे हैं।

चूहे ने पता लगा कर जाना बंद कर दिया। चूहे ने बहुत ठीक किया वरना बिल्ली सब चूहे खा जाती दुश्मन पर कभी विश्वास नहीं करना चाहिये।

कथा षष्ठी

कबूतरका जोड़ा एक वृक्ष पर बैठा था ऊपर से बाज़ आया दोनों सिकुड़ गये अचानक नीचे से एक शिकारी ने तीर कमान खैंच कर उनको निशाना बनाया नीचे ऊपर दोनों मार्ग रुके हुवे देखकर दोनों ने ईश्वर से प्रार्थना की कि हे दीनबन्धो ! दयासागर ! हम तेरी शरण हैं हमारी रक्षा करो। इस वक्त सिवाय तुम्हारे और कोई नहीं बचा सकता ईश्वर की दरगाह में प्रार्थना मंजूर होगई तुर्त एक सांप ने निकल कर शिकारीके पैर पर डसा शिकारी गिर पड़ा गिरतेही निशाना चूक गया कबूतरों की बजाय बाज़को जा लगा वह दोनों मर गये और कबूतरों का जोड़ा बच गया। जिनको ईश्वर बचावे उनको कौन मार सकता है।

कथा सप्तमी

एक लोमड़ी दरख़्तके नीचे जाकर बैठी और देखा कि कव्वेके मुख में मांस का टुकड़ा है सोचा कि मेरे हाथ कैसे लगेगा कुछ विचार कर बोली आहा ! कव्वा कैसा सुंदर पक्षी है इसके काले २ बाल कैसे दिल को भाते हैं इसका देखना कैसे मनको चुराताहै। मुझे इसकी बोली तमाम परिंदोंसे अच्छी लगती हैं कव्वे ने जब यह वचन सुने तो खुशी से फूल गया और बोल उठा बोलते ही मांस का टुकड़ा गिर पड़ा। लोमड़ी टुकड़ा लेकर भाग गई कव्वा देखता रह गया। संसार में धोखाबाज़ आदमी झूठी खुशामद करके भोले भाले लोगों को लूट लेते हैं।

कथा अष्टमी

बन में माल पूवों की गठड़ी पड़ी थी अचानक दो गेंडे वहां आ गये एक कहने लगा गठड़ी मेरी है दूसरे ने कहा मेरी है। दोनों में झगड़ा बढ़ गया, उचित तो यह था कि दोनों आधी २ बांट लेते परन्तु ऐसा न करके लड़ने को तय्यार होगये। दोनों जवान थे और बल में समान थे एक दूसरे पर झपट पड़े। ऐसे हमले किये कि दोनों ज़खमी हो कर गिर पड़े और बेहोश होगये इसी असनामें एक लोमड़ी आई दोनों के दरम्यान से वे खटके गठड़ी लेकर भाग गई सच कहते हैं कि भाइयों की लडाई में चोरों की फ़तह होती है।

कथा नवमी

इस वर्षा काल में आकाश स्थल बिजली रूप सुवर्ण के चाबुक से ताड़ित होकर हृदय में वेदना पाय घोर शब्द कर रहा है। बिजली रूप पताका लगाय और बगलों की पंक्तियुक्त माला पहिरे, शैलशिखर तुल्य भयंकर नाद करने वाले मेघगण रण में खड़े हुये मतवाले हाथियों की समान गर्जना कर रहे हैं। कदम्ब की डाली पर अनुरागी हुये भौंरों के झुण्ड जलकी धारा गिरने से आहत हो पहिले क्षण का इकट्ठा किया हुवा, गाढ पुष्परस रूपमद परित्याग किये देते हैं। जामन के वृक्ष की डालियें अंगार चूर्ण समूह तुल्य अधिक रसवाले फल के समूह से भ्रमर गणों से पी जाती हुई सी प्रकाशमान होरही है।

कथा दशमी

पर्वत वनके चलने वाले अपने मार्ग में टिके हुवे युद्ध की कामना किये गजेन्द्र गण मेघका गर्जना सुन दूसरे शत्रु हाथी के गर्जने की शंका कर युद्ध करने के लिये लौट रहे हैं। किसी २ जगह भ्रमरगण गुंजार कर रहे हैं कहीं मोर नाच रहे हैं। कहीं हाथियों के झुंड मतवाले होकर शोभा पा रहे हैं इस प्रकार से समस्तवन इन सब वस्तुओं से प्रकाशित होते हैं। मोती के समान गिरा पत्तों पर लगा इन्द्र का दिया निर्मल जल, पीले विवर्ण पंखवाले प्यासे पक्षी गण हर्षित होकर पान कर रहे हैं। भ्रमरध्वनी रूप मधुर गीत, और उस में वानरों की ध्वनि कण्ठताल, मेघ शब्द मृदंग ध्वनि, इस प्रकार से वन में मानों संगीत होना प्रारंभ हुवा है॥



कथा नवमी

वीरबर बादशाह के पास रहता था बादशाह वीरबर से ऐसे २ सवाल करता था कि उनका जवाब देना बड़े २ दानाओं की समझ में नहीं आता था एक दिन बादशाह पांच इंच की कलम लाकर बोला कि कोई वज़ीर इसको बिना काटे छोटा कर देवे तो मैं उसे बड़ा अकलमंद समझूंगा। तमाम वज़ीर सोचने लगे मगर किसी की अकल में कुछ न आया बादशाह ने वीरबर की ओर देखा वीरबर उठ खड़ा हुआ और बोला हजूर! यह अभी छोटी होजाती है यह कह कर सात इंच की कलम उसके साथ रखदी। बादशाह हंस पड़ा और सब वज़ीर शरमिंदे होगये।

कथा दशमी

बादशाह ने काठ की दो पुतलियां एक रंग की बनवाईं। वज़ीरों से कहा एककी कीमत लाख रुपये हैं दूसरी की एक टका बतलाओ क्यूं? बहुत सोचने पर भी किसी से कोई जवाब न बन सका आखिरकार वीरबीर उठा पुतलियों को खूब देखा और दो तारें मंगवाईं। एक पुतली के कान में डाली वह पेट में गुम होगई दूसरी के कान में डाली तो वह मुख से बाहर निकल पड़ी वीरबर उछल कर बोला. जनाब आली! पहिली का मूल्य लाख और दूसरी का एक टका है। बादशाह ने पूछा क्यों? वीरबर ने कहा जो आदमी कान से सुन कर बात को पेट में रखता है बाहिर नहीं निकालता वह लाख रुपये का है और जो सुनकर मुंहसे निकाल देता है वह एक टके का आदमी है।

पञ्चमोऽध्यायः

जगत् भर के आदि में एक मात्र ब्रह्मा जी ही अचारज थे फिर सात ऋषि संसार के अचारज कहलाये देवताओं का अचारज बृहस्पति हुवा जो राजा इन्द्र की सभा में मंत्री का काम करता था और सारे संसार के पण्डितों में मशहूर पंडित गिना जाता है देवताओं के भाई दैत्यों का कि जिन में राजा बलि मुख्य था शुक्र अचारज रहा यह बड़ा कवि था नीतिशास्त्र का पूरा जानकार था इसके पास संजीविनी विद्या थी उसके बल से लड़ाई में जो दैत्य मरते थे उनको जीवित कर देता था।

द्वितीया कथा

संसार में परम उज्वल मख्यातवंश सूर्य कुलका अचारज ब्रह्मपुत्र वसिष्ठ

ओम्

अष्टमोऽध्याय

एक शिष्यने अपने अचारज से जाकर पूछा हे गुरु! विद्या के लाभ कृपा करके सुनाओ। अचारज ने फ़रमाया, विद्या वह वस्तु है कि जो वगैर ज़ेवरों के मनुष्य को सुन्दर बनादेती है। विद्या से हीन चाहे सुन्दर हो या ऊंचे कुल में पैदा हुवा हो वह सभा में शोभा नहीं पाता जैसे हंसोंके दरम्यान बगुला। अथवा जैसे फेसूफल। विद्याराज्य से भी बड़ी वस्तु है क्यूंकि राज्य वाले की इज़्ज़त राज्य में होती है परन्तु विद्वान् सब जगह पूजा जाता है यहां तक कि राजा भी उसको ऊंचा आसन देता है। विद्यारूपी धन को चोर नहीं चुरा सकता राजा उस पर टैक्स नहीं लगा सकता, और बड़ी खूबी यह है कि देने से बढ़ता जाता है।

द्वितीया कथा

शिष्यने फिर अचारज की सेवा में प्रार्थना की हे भगवन्! प्रारब्ध और पुरुषार्थ इन दो में कौन बलवान् है। अचारज ने कहा प्रारब्ध और पुरुषार्थ दोनों समान बलवान् हैं तथापि मैं पुरुषार्थ को तरजीह देता हूं क्यूंकि प्रारब्ध की उत्पत्ति पुरुषार्थ से होती है और यह भी देखा जाता है कि प्रारब्ध का भरोसा रखने वाले नीचे गिराये जाते हैं और पुरुषार्थी संसार के लीडर बन जाते हैं। देखो प्रारब्ध ने शेर में बड़ी भारी शक्ति देरक्खी है परन्च वह जब तक पुरुषार्थ नहीं करता तब तक उसे भोजन नहीं मिलता दूरंदेशी की निगाह से देखो साफ़ २ ज्ञात होजावेगा कि प्रारब्ध बनाना अपने पुरुषार्थ के हाथ में है। हां अलबत्ता किसी जगह पुरुषार्थ से भी कामयाबी नहीं होती मगर वहां भी पूर्वजन्म का पुरुषार्थ प्रतिबन्धक समझना चाहिये।

तृतिया कथा

शागिर्द ने अर्ज़ किया हे महाराज! दुर्जन का संग क्यूं नहीं करना चाहिये श्रीमान् अचारज ने उत्तर दिया हे पुत्र सुनो दुर्जन से प्रीति और वैर दोनो नहीं करने चाहियें क्यूंकि गर्म अंगार हाथ जलाता है और ठंडा काला करता है। दुष्ट का स्वभाव है, कि वह निनावें की तरह स्वयं भी नष्ट होता है और खेती को भी ले मरता है। उस के मीठे वचन पर कभी विश्वास नहीं करना चाहिये उस की ज़बान पर शहिद और छाती में ज़हिर मौजूद है। दुष्ट आदमी

था यह सोलह संस्कार करवाते थे दशरथ कौशल्या आदि का मृतक संस्कार इन्हीं ने कराया था और यज्ञादि में ब्रह्म ऋत्विग् आदि के आसन को शोभा देते थे निमिवंश के अचारज शतानन्द थे सीताजी का विवाह उन्होंने कराया था पुरुवंश का माननीय अचारज द्रोणाचार्य का साला कृप अचारज था गर्ग जी यदुवंश के अचारज थे श्री कृष्णजी महाराज का नामकरण संस्कार इन्हीं ने किया था इसी प्रकार युधिष्ठिर ने वन में जाकर धौम्य महर्षि को अचारज बनाया था ।

तृतीया कथा

वेदों और शास्त्रों में ब्राह्मणों को तीनों वर्णों से उत्तम माना है ब्राह्मण की तारीफ़ यूं लिखी गई है शांति रखने वाला, इन्द्रियोंको रोकने वाला, चोरी न करने वाला, सीधा स्वभाव, और सच्चे दिलसे सबकी भलाई चाहने वाला हो, वरना ब्राह्मण नहीं कहला सकता, ब्राह्मणके कर्म इस प्रकार लिखे हैं कि दान लेना और करना, विद्या पढ़ना और पढ़ाना, यज्ञ करना और कराना। संसार में जितने फ़िरके ब्राह्मण कहलाते हैं उन सबका अधिकार है कि वह ऊपर कहे छः कर्म करावें। कह देना आसान है पर ब्राह्मण बन कर दिखलाना बहुत कठिन है।

चतुर्थी कथा

दूसरा वर्ण क्षत्रिय है क्षत्रियका लक्षण इस प्रकार लिखा है बहादुर होना तेजस्वी, धीरज वाला, चतुर, युद्ध में न भागने वाला इत्यादि। कर्म यह हैं कि प्रजा की सब तरह से रक्षा करना दुष्टों को दंड और सज्जनों को सम्मान देना वग़ैरः २ राजा का काम अति कठिन है राजा को कहीं तो बेर की तरह ऊपर से खूब सूरत और अंदर से कठोर होना पड़ता है किसी जगह बादाम या अखरोट की भांति ऊपर से सख़्त और भीतर से नरम रहना होता है। राजा की नीति कंजरी की तरह हर वक्त बदलती रहती है जो राजा न्याय प्रिय है वह उत्तम कहलाता है।

पञ्चमी कथा

तीसरा वर्ण वैश्य नाम से पुकारा जाता है यह वर्ण वह है कि जिस को चारों वर्णों का ख़ज़ाना कहना चाहिये इसके कर्म यह हैं। जैसे खेती करना, गौवें तथा अन्यान्य पशु पालना, व्यापार करना, जहाज़ों पर चढ़ कर दूर २

मानिंद मच्छर के है पांऊ में गिरते हुवे पीठ के मांस को खाता है कानों में आहिस्ता २ कुछ अजीव कहा करता है सुराख़ को देखते ही फ़ौरन बिलाशक उसमें दाख़िल होजाता है। तत्काल इस को इहसान और शर्म भूल जाती है इस लिये इस नामाकूल इहसान फ़रामोश की संगत नहीं करनी चाहिये।

चतुर्थी कथा

शिष्य ने अचारज से फिर विनय किया हे महाप्रभो ! सज्जन लोगोंका लक्षण आज्ञा कीजिये धर्म मूर्त्ति अचारज ने कहा भले पुरुष सेवा के योग्य हैं उनका स्वभाव चंदन के वृक्ष के भांति है जैसे चंदन पर कुल्हारी लगाई जावे तो भी वह उसको सुगंधि देता है। जैसे फलवान् वृक्ष जलपूर्ण मेघ झुक जाते हैं वैसे उत्तम पुरुष भी गुणों के बोझ से झुके रहते हैं। सुजन की संगति से मनुष्य सुधर जाता है जैसा कि सीप में पानी की बूंद पड़ने से मोती बनता है। महा पुरुषों का लक्षण यह है। भलाई करके चुप रहना, इहसान को सदा याद रखना, धन में मग़रूरी न करना, दूसरे को न निंदना, मुसीबत में न घबड़ाना, खुद-गरज़ी को कभी आंख उठाकर न देखना, सच बोलना, दुःखीपर दया करना कभी भूल कर भी आपकी तर्फ़ न जाना इत्यादि।

पञ्चमी कथा

फिर शिष्य ने अचारज से प्रार्थना की कि हे दयासागर! शत्रु से मेल हो जावे तो फिर उसके साथ कैसा व्यवहार रखनाचाहिये। माननीय अचारज महोदय ने उत्तरदिया हे साम्य ! समय को देख कर शत्रु से संधि कर लेनी चाहिये परन्तु उसकाविश्वास कभी मत करो क्यूंकि चाहे पानी कितना भी गरम होजाय तोभी आगको बुझा ही देता है शत्रु का विश्वास करना ऐसे है कि जैसे खच्चर गर्भ को धारण करे अर्थात् शत्रु पर इतबार मौत का दरवाज़ा है। वैसे तो इतबार किसी पर न करे परन्तु आगे कहे लोगों पर सदा सावधानी से रहे। संधि किया हुवा शत्रु, राजा और राज परिवार। नदियों के वेग, अग्निकी ज्वालायें जंगली शिकारी जानवर, सींगों वाले पशु, हथियार रखने वालों का विश्वास मत करो।

षष्ठी कथा

शागिर्द ने हाथ जोड़ कर पूछा है हे भवसागर तारक ! कृपा करके फ़रमाइये कि विनाश के हेतु कौन हैं। अचारज महाराज बोले प्रमाद बरबादी का

ओम्

पाठ ३२

अथ हिंदी भाषा क्रिया प्रकरणम्

वर्तमान काल में जो हिंदी भाषा में क्रियायें प्रयुक्त होती हैं वह लिखी जाती हैं।

❋ कर्तृ वाच्य ❋

वर्तमान काल तीन प्रकार का है जैसे-

१ सामान्य वर्तमान- लिखता है लिखति (लट्)
२ तात्कालिक वर्तमान- लिखरहा है लिखन्नस्ति (आस्ते)
३ संदिग्ध वर्तमान- लिखताहो (गा) लिखरहाहो (गा) } कदाचित् लिखन् स्यात्

भूत काल के छः भेद हैं जैसे-

१ सामान्य भूत- लिखा। अलेखीत् (लुङ्) लिखितवान्
२ पूर्णभूत- लिखाथा। लिलेख (लिट्) लिखितवानभूत् वा
३ आसन्नभूत- लिखा है। लिखितवानस्ति
४ संदिग्धभूत- लिखा हो (गा) कदाचित् लिखितवान् स्यात्
५ अपूर्ण भूत- लिखता था अलिखत् (लङ्) लिखन्नभूत् वा
६ हेतुहेतुमद्भूत- वहलिखता तो वे लिखते। सचेदलिखिष्यत् तदाते अलिखिष्यन्।

भविष्यत् काल के तीन भेद हैं.

१ सामान्य भविष्यत् वह लिखेगा लिखिष्यति (लृट्)
२ संभाव्य भविष्यत् लिखे लिखेत् (विधिलिङ्)
३ आसन्नभविष्यत् लिखनेवाला है लिखितुमस्ति लिखिष्यन्नस्ति वा

पाठ ३३

कर्मवाच्य

वर्तमान काल

१ सामान्य वर्तमान--देखाजाता है। दृश्यते (लट्)
२ तात्कालिकव० देखाजारहा है। दृश्यमानोऽस्ति
३ संदिग्धव० देखाजाता हो (गा) देखाजारहा हो (गा) } कदाचित् दृश्यमानः स्यात्

मूल कारण है उसको और २ कई शाखायें प्रतिशाखायें हो जाती हैं। प्रमाद के आजाने पर उसके भाई बंधु आलस्य, भीरुता, निर्बलता, शुष्कविग्रह, अकारण द्रोह, गर्व, ईर्षा, मतसरता भी आहाज़िर होतेहैं। इनसे धीरे२ तन्दुरुस्ती इत्तफ़ाक़, शौक़, दूरंदेशी, अक्ल वग़ैरह भागजाते हैं। दुःख, चिन्ता, क्लेश, विपत् आदिक आकर इस तरह मनुष्य को घेरते हैं कि वह उन्हीं में पड़ा २ सदा के लिये नाम शेप रह जाता है अतएव प्रमाद से प्रतिक्षण सावधान रहा करो। यह हमारी शिक्षा है।

सप्तमी कथा

शागिर्द बड़ा खुश होकर बोला देव! पतितपावन! कृपा करके आज्ञा कीजिये कि तरक्क़ी के कारण कौन से हैं। जगत् उद्धारक अचारज ने कहा तरक्क़ी का सबसे पहिला लक्षण शौक़ है शौक़ होते ही मनुष्य काममें लगजाता है और उसे पूर्ण करने का यत्न करता है। उत्साह के भाई बंधु धैर्य, साहस, निर्मानता, निंदा न करना, झूठ न बोलना, परिश्रम करना, इत्यादि हैं जितना दूसरे को तुम अच्छा कहोगे और दिल से प्यार करोगे उतनी तुम्हारी तरक्क़ी होगी मनुष्य का बीज मानसिक भाव है जिसका मानसिक भाव शुद्ध होगा वह बढ़ेगा भाव में ज़राभी मलीनता आतेही मनुष्य सदा के लिये गिर जाता है इस लिये जहांतक होसके भाव को शुद्ध करो।

अष्टमी कथा

शिष्य चरणों पर गिर पड़ा और बड़ी नम्रता से बोला स्वामिन्! सर्व प्रकार की नीति का मुख़्तसर उपदेश कीजिये। मान्यवर अचारज ने कहा। ग़ुलामी बुरी बला है इससे सदा दूर रहना। दूसरे के काम में कभी दख़ल मत दो। किसी अधिकार को पाकर अवश्य भाइयों का भला करो। किसी ग़रीबको कभी मत सताओ। जो काम शांति से होसकता हो उसमें क्रोध को मत आने दो। अधिक लोभ मत करो यह गुणों के काटने की तलवार है। कुछ न कुछ धन का संग्रह अवश्य रक्खो मुसीबत के वक्त काम आयगा संसार में कर्म प्रधान है कर्म वाले उत्तम पुरुष की इज्ज़त करो। जातिके ऊंच कर्म के नीच को त्याग दो।

भूतकाल

१ सामान्यभू०	देखागया।	अदर्शि (लुङ्) दृष्टं वा
२ पूर्णभू०	देखागया था।	ददृशे (लिट्) दृष्टोऽभूत्।
३ आसन्न भू०	देखागया है।	दृष्टोऽस्ति
४ संदिग्धभू०	देखागया हो (गा)	कदाचित् दृष्टःस्यात्
५ अपूर्णभू०	देखा जाता था / देखा जारहा था	दृश्यमानोऽभूत्, अदृश्यत (लङ्)

६ हेतुहेतुमद्भूत वह देखा जाता तो वे देखे जाते।
सोऽद्रक्ष्यत चेत्तदातेऽद्रक्ष्यन्त (लृङ्)

भविष्यत्

१ सामान्यभ०	देखाजावेगा	द्रक्ष्यते (लृट्)
२ संभाव्यभ०	देखाजाय	दृश्येन (विधिलिङ्)
३ आसन्नभविष्यत्	देखाजानेवाला है	द्रक्ष्यमाणोऽस्ति।

लोट् एकवचन

जावे / जानेदो	गच्छतु	हो / होनेदो	भवतु
पढ़े / पढ़नेदो	पठतु	खावे / खानेदो	भक्षयतु।

अर्ह् १ परस्मैपद

मेहर बानी करके बतलाओ	वक्तु मर्हसि
मेहर बानी करके मुआफ़ करो	क्षन्तुमर्हसि
उसका फ़िकर मतकरो	न तं शोचितुमर्हसि

षष्ठो ध्यायः

अयोध्यामें श्री रामचन्द्र खेलरहा है। कौशल्या दशरथ देख २ कर हंसरहे हैं। दशरथके पूछने पर कौशल्या ने कहा भरत लक्ष्मण शत्रुघ्न भी दौड़ते होंगें। अहा! देखो चारो राजकुमारों को यज्ञोपवीत कराकर वसिष्ठ आचारज पढ़ारहा हैं। राम लिख रहा है भरत देखरहा है लक्ष्मण सुनारहा है कैकेयी कहती है कि मेरा पुत्र शत्रुघ्न पढ़ रहा होगा राजकुमारोंको देखने के लिये कई आरहे हैं कई जारहे हैं खासा मेला डट रहा है। कुमार कहीं कुश्ती लड़ रहे हैं कहीं तीर चला रहे हैं चारों तर्फ़ फूल ही फूल बरस रहे हैं।

नवमी कथा

शिष्य ने प्रार्थना की हे प्रभो ! कृपा सिन्धु ! अचारज का कर्म क्या है अचारज महाशय बोले हे शिष्य ! सावधान हो कर सुनो संक्षेप से बतलाता हूं। अचारज कुल में पढ़ाना, उत्तम आचार सिखलाना, धर्म की शिक्षा देना वेदों पर व्याख्यान करना, शास्त्रोंको आविष्कृत करना गर्भाधानसे लेकर मृत्यु पर्यन्त १६ संस्कार कराना, सोलह संस्कारों में दान लेना निःस्पृह हो कर जगत् का कल्याण करना इत्यादि उत्तमोत्तम कर्तव्य अचारज के हैं।

दशमी कथा

अचारज महोदय बोले हे शिष्य ! अचारज कुलसे विदा होकर हमारी यह शिक्षा स्मरण रखना। जैसा हम कहते हैं वैसे करो। सत्य बोलो, धर्म करो, स्वाध्याय या प्रमाद न करो, अचारज को गुरु दक्षिणा देकर गृहस्थ करके सन्तान उत्पन्न करो, सत्यसे प्रमाद न करना, धर्म से प्रमाद न करना, कुशल से प्रमाद न करना, धनके लिये प्रमाद न करना, स्वाध्याय और प्रवचनसेप्रमाद न करना, देव पितृ कार्यों में प्रमाद न करना, मातृदेव हो अर्थात् माता को देवता मान, पितृदेव बन, आचार्य देव बन, अतिथि देव बन, जो उत्तम कर्म हैं वह करने, दूसरे नहीं, जो हमारे सुचरित हैं वह तूने करने दूसरे नहीं, उत्तम ब्राह्मणों को आसन देना, श्रद्धा से देना, धन से देना, लज्जासे देना, भय से देना, मित्र के लिये देना, यदि कभी तुझको कर्म व आचरण में सन्देह पड़े तो जो सम दर्शी, पक्षपात रहित, धर्मशील ब्राह्मण करते हों वैसा करो यह हमारी आज्ञाहै २

नवमोऽध्यायः

[दरख़्वास्त हैडमास्टर की सेवा में]

जनाब आली हैडमास्टर साहिब !

बंदा कीगुज़ारिश यह है कि आज एक ज़रूरी काम के लिये बंदा बाहिर जावेगा इस लिये अर्ज़ है कि एक दिन की छुट्टी अता फ़रमाई जावे ज़ियादा नियाज़॥

आरज़—
फ़िदवी ईश्वर चन्द्र
पांचवी जमायत
लाहौर
२४–१०–१४ ई०

कथा २ या

विश्वामित्र आगया चारों कुमार भी आगए। यह वह विश्वामित्र है जिसने वसिष्ठ के पुत्र मारे थे। जब वसिष्ठने ब्रह्मर्षि कहा था तब चुप की थी। राजाने फिर आज इसको देखा है। राजा मन में कहता है हे दैव! आज तूने मेरी प्रारब्ध में क्या लिखा है। विश्वामित्र ने राम लक्ष्मण को मांगा। राजा कांप गया। दशरथ को डरसे सब कुछ भूल गया जो आज तक उसने देखा सुना था। राजा ने वसिष्ठ अचारज को बुलाया है। ऋषिके वचनसे राम लक्ष्मणको विश्वामित्र के सपुर्द कर दिया है।

कथा ३ या

राजा कहता है कि मेरे राम लक्ष्मण ने तीर चलाया होगा ताड़का समेत सुबाहु मरीचि आदि राक्षसों को मारा होगा। विश्वामित्र यज्ञ करता था राम लक्ष्मण चारों तरफ़ घूमते थे अगर राम न होता तो कभी यज्ञ पूरा न होता। अगर राम बलवान् न होता तो राक्षसोंको कैसे मारता। मिथिला में जनक ने विचारा कि अब विश्वामित्र ने यज्ञ समाप्त किया होगा। सम्भव है कि मेरा दूत भी पहुंचा हो। राम खेल रहा था। जनक दूत दौड़ता था। अगर दूत राम को वहां देखता तो फ़ौरन ठैर जाता।

कथा चतुर्थी

राम मिथिला में आकर धनुष् को देखेगा नगरके लोग भी रामकी सुंदरता को देखेंगे। लोग चाहते थे कि जनक राम को देखें और सीता का विवाह इन से करें। आहा सभा में चलकर देखो राम धनुष् उठाने वाला है। कहते हैं कि धनुष् टूटने का शब्द सुनकर परशुराम वहां आनेवाला है राजा दशरथ आयगा। अब सीता का विवाह होगा आओ हमभी चलें और देखें। दशरथ जनक के घर में बरात लाने को है शतानन्द अचारज सीता का विवाह पढ़ने वाला है।

कथा ५मी

बरात धूमधाम के साथ अयोध्या को जारही है। लोग कहते हैं जनक सीता के लिये घबड़ाता होगा। बरात पहुंच गई। माताओं ने पुत्रों के कल्याण के लिये मंगल मनाये थे। कौशल्या कहती है हे सखियों! मुझे बधाई दो कि मेरा राम घर आया है। मेरे कोमल रामने भयंकर राक्ष

[अर्ज़ी किसी हाकिम को नौकरी के लिये]

जनाब आली !

बंदा ने सुना है कि जनाब के महकमे में एक क्लर्क की जगह ख़ाली है। और हजूर इन्ट्रेंस पास आदमी चाहते हैं। इस लिये आरज़ हूं कि बंदा इन्ट्रेंस पास है। और तामीरात में मुलाज़िम भी रह चुका है। हिसाब के काम से बखूबी वाक़िफ़ है। कमतरीन की दरख़ास्त पर ग़ौर फ़रमाई जा कर इस ओहदा क़र्की पर फ़िदवी की परवरिश की जावे। कमतरीन—

नारायण दत्त

(चिट्ठी पिता जी के पास)

श्रीयुत परम पूजनीय पितृदेव !

पाद वन्दन करता हूं। अनन्तर प्रार्थना यह है कि मेरे विद्यार्थियों की परीक्षा समीप है इस लिये पत्र नहीं लिखसका आशा है आप क्षमा करेंगे। परीक्षा समाप्त होतेही चरणों में पहुंचजाऊंगा आज्ञाकारी

२०–४–१४ ई० रामचरणाचार्य-बहावलपुर

[चिट्ठी माताजी के पास]

श्रीमती परम पूजनीया जननी !

पाद वन्दन करता हूं। अनन्तर निवेदन यह है कि मैंने बहुतसा माल खरीद लिया है और कुछ थोड़ा सा खरीदना बाकी है आशा है कि चार दिन तक फ़ारिग़ हो जाऊंगा मेरी सहोदरा को प्यार देवें। और सब भाई बंधुवों को यथायोग्य कहें। मेरा पता यह है— चरण सेवक—

मदन मोहन शर्मा

कूचा हिम्मत राय फुलेली

२६–११–१४ ई० बहावल पुर (पंजाब)

[चिट्ठी गुरुजी के पास]

श्रीयुत परम पूजनीय गुरु देव !

चरण वंदना करता हूं। अनन्तर सविनय प्रार्थना यह है कि— महाराज का कृपा पत्र मिला बड़ा हर्ष हुआ दास पर बड़ी कृपा की है। ईश्वर ने चाहा तो श्री चरणों में शीघ्र उपस्थित हो जाऊंगा अनुचर के योग्य सेवा अवश्य लिखियेगा। अनुगृहीत—

हृषीकेशाचार्य

२७–११–१४ ई० फतापुर, तासील मैलसी, ज़िला मुलतान

को कैसे मारा होगा। दशरथ रथ पर बैठकर फ़क़ीरों को कपड़े, रुपये, और जवाहिरात देता था। विश्वामित्र ने कहा अगर मैं रामको न लेजाता तो तू पुत्रवधु को कैसे देखता राजा ने कहा आगे भी आपकी कृपा होगी राम जीवे। मैं अब रामको राज्य देने वाला हूं।

कथा षष्ठी

अयोध्या नगरी सजाई जाती है। केकयी मन्थरा से ठगी जारही है। दशरथ से दो वर मांगे जाते हैं। सुमंत से राम लाया जारहा है। राजा कहता है हे केकयी! संसार क्या कहता होगा कि राम को राज्य सुनाकर १४ वर्ष का वनवास दिया जारहा है। रानियां कहरहीं होंगी कि राजा केकयी के फंदे में फंसकर पागल होरहा है। आज राम तपस्वी का वेष बनाकर सीता और लक्ष्मण के साथ देखा जारहा है। लोग भी राम के पीछे २ चलरहे हैं।

कथा ७मी

भरत बुलाया गया। वसिष्ठ से सब समझायेगए। राजा का शरीर तेल में रखवायागया था। जिससे भरत पालागया था आज उसकी लाश देखीगई है। विमान में रखकर राजा का अन्त्येष्टि संस्कार कियागया। अन्त्येष्टिसंबंधि सबदान वसिष्ठ अचारज को दियागया। वसिष्ठ अचारज से जो कुछ भरत के विषय में कहागया था प्रायः वही सब देखागया। भरत ने कहा सुनागया है कि मेरे लिये राम वन में भेजेगए हैं

कथा ८मी

भरत बोला अब चित्रकूट के बाशंदों से राम देखागया होगा आख़िरकार राम के बजाय रामकी दी हुई खड़ावां भरत से पूजीजातीं थीं। अगर राम को वनवास न दिया जाता तो वनकी भूमियां कैसे पवित्र की जातीं। अगर राम और लक्ष्मण हिरन के पीछे न भेजे जाते तो रावण से सीता कैसे हरीजाती। रामने कहा सीता किसी राक्षस से मारी या हरीगई होगी। जिसवक्त राम और लक्ष्मण से सीता ढूंढी जारही थी उस वक्त हनुमान से सुग्रीव समझाया जाता था।

चिट्ठी बड़े भाई के पास

खानेवाल जंक्शन

श्रीयुत माननीय भ्रातृ महोदय ! मि० १० कार्त्तिक सं० १९७१ वि०

प्रणाम । मुझे कई दिनों से ज्वर आरहा है । खाना पीना बंद है । यहां कोई डाक्टर हकीम भी नहीं मिलता । मेरा विचार यहां से दुनयापुर जाने का है क्यूंकि वहां की आब हवा अच्छी है । अथवा आप जैसे लिखें वैसा करूं । पत्र का उत्तर शीघ्र देवें । सबको यथोचित कहें । कृपाकांक्षी–

गोवर्धनदत्त

[चिट्ठी छोटे भाई के पास]

नौशहिरा

श्रीयुत चिरंजीविन् मेष्ट रामकृष्ण ! ११-७-७१ विक्रम

आशीर्वाद के पश्चात् विदित हो कि मैं (आनन्द आश्रम) में प्रविष्ट होकर लोहकार का काम सीख रहा हूं । इस समय में कला कौशल की अधिक उन्नति है बड़े २ अमीरों के लड़के यहां काम सीख रहे हैं । मैं तुमको भी दरज़ी का काम सिखलाऊंगा । ईश्वर ने चाहा तो हम अपने ही नगर में एक अच्छा कारख़ाना खोलेंगे । अपने कुशलका पत्र शीघ्र लिखना ।

शुभचिन्तक–

दुःखभञ्जन वर्मा

[चिट्ठी बड़ी बहन के पास]

श्रीमती माननीया ज्येष्ठ सहोदरा !

प्रणाम । आपकी छोटी भगनी सीने का काम अच्छा सीख गई है । अब पाठशाला में जाकर भोजन पकाना सीखती रहती है । आप को बहुत स्मरण करती है । यदि हो सके तो दो दिन के लिये आकर सबको मिलजावें यहां सब तरह से कुशल है ईश्वर की कृपा से वहां भी कुशल होगा । छोटे बच्चों को प्यार, बड़ों को प्रणाम कहें । कृपाभिलाषी–

१२–७–७१ वि० चन्द्रभान वैद्य, कहिरोर पक्का

(चिट्ठी स्त्री के पास)

श्रीमती प्रिया पद्मादेवी ।

स्वस्ति* । मैं जब से यहां से गया हूं सरकारी काम में लगा हुआ हूं ।

* प्रत्येक छोटे बड़े के पास 'स्वस्ति' लिखने में भी कोई हर्ज नहीं ।

कथा ९मी

रामने हनुमान के द्वारा सुग्रीव से मिलकर कहा मुझसे वाली मारा जायगा। सुग्रीव ने कहा मुझ से लंकागढ़ तोड़ा जावेगा। सेना सजाईजावे तमाम समुद्र पर पुल बांधाजावे। लंका जलाई जावे। हे सेनापतियो! तय्यार होजावो तुमसे रावण के नौकर लंकावासी राक्षस पछाड़े जावेंगे। मारूवाजे बजायजावें। कमानों पर चिल्ले चढ़ायेजावें। वह दिन बहुत नज़दीक है कि हमसे लंका लूटी जावेगी।

कथा दशमी

राम के बाणों से कुंभकर्ण का शिर गिराया जाता है। लक्ष्मण के तेज़ तीरों से मेघनाद माराजारहा है। उधर रावण भी मारा जाता होगा बानरों से लंका जीती गई। जो सीता हरीगई थी वह फिर राम को मिलगई राम पुष्पक विमान से अपनी राजधानी अयोध्या में लायागया है। ऐसा आगे किसी से न देखागया होगा, जो आज राजतिलक का आनंद मनाया जारहा है। माताओं से राम लक्ष्मण और सीता बड़े प्रेम से देखे जा रहे थे। यदि उस समय राम चरण होता तो इस से वह आनंद देखा जाता। राम से सुख दियेजांयगे। रामकी कृपा से प्रजा सुखी देखी जाय।

सप्तमोऽध्यायः

अगर हरि जाता है तो जाने दो। भौंरेको फूलों का रस चूसने दो। जो भला वचन नहीं मानता वह यदि मरता है तो मरने दो। कुत्ते को आनेदो रोटी दी जायगी। मिहरबानी करके इसे खुश कीजिये। मेहरबानी करके दो चार दिन बरदाश्त करो। अगर कोई राज़ नहीं तो मेहरबानी करके बतलाओ। हे अर्जुन! तुम सबका फ़िकर मतकरो। यह बालक बहुत ज़िद्दी है इसे रोने दो। मेहरबानी करके मुझे आज्ञा दीजिये।

द्वितीया कथा

हिंदोस्तान की कैफ़ीयत सुनो। पांच दिनकी लड़की चार दिन के लड़के से बिवाही जाती है। एक तरफ़ तीन माहका लड़का और दो महाकी ...की बिवाही जारही है। दूसरी तरफ़ साठ वर्ष का दूल्हा और दस वर्ष की

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६३	८	स्र	स्त्री
६६	७	लघ्	लङ्
६९	१३	इच्छनम्ः	इच्छतम्
७१	१६	रु स	रुणत्सि
७३	७	अभोत्यथाम्	अभोत्स्येथाम्
७५	१६	पूणाम्	पण्णाम्
७६	६	०	ए०
८६	२४	चामलों का	चावलों का
८७	४	शास्त्रि	शास्ति
६१	८	अचिकीप्वित्र	अचिकीर्ष्वित्र
,,	१०	चिकीष्पासुः	चिकीर्ष्यासुः
६२	८	वोभयेत	वोभूयेत
,,	,,	वोभयेया०	वोभूयेया
,,	,,	वोभयेरन्	वोभूयेरन्
६६	१६	श्रूः	भ्रूः
१०१	१७	तोंश्रागम्री	तोंश्राम्री
१०३	२	पत्राणि	यंत्राणि
१०८	२६	अथ	अर्थ
१११	७	फिने	फिरने
११२	२७	चहा	चूहा
११३	२५	प्रभाव	प्रवाह
११४	५	काशिशा	कोशिश
११६	२७	फलों	फूलों
१२२	१३	वीरवीर	नीरवर
१२७	१७	तुठप	पठतु
१३३	१४	गंजार	गुंजार
,,	१६	न्टदंग	मृदंग
१३५	१५	आप	पाप
,,	१६	सोम्य	सौम्य
१३६	३	छन्दुरुस्ती	तन्दुरुस्ती

ओम्

आचार्य कोषः

उपनाम

हिंदी संस्कृतानुवाद कोषः

(शब्द भाग)

रचित-

पण्डित रामचरणाचार्य शास्त्री संस्कृत प्रोफ़ेसर
सादक अजर्टन कालेज
बहावल पुर

ACHARYA KOSHA

Wards' Part

OR

a

Hindi-Sanskrit Dictionary

DESIGNED

To help Students of Schools, Colleges and Pathshalas

IN

Translation from Hindi into Sanskrit

BY

Pandit Ramcharana Acharya Shastri
Professor of Sanskrit
S. E. College Bahawal Pur.

माघ सं० १९७१ विक्रम

प्रथम बार २०००

अंधेर — अन्यायः, अपद्रवः
अंधेर करना — अन्यायकरणम्-
अन्याय कृ = उ०
अंधेरा — अन्धकारः, तमस् [न]तिमिर
अंधेरा करना — अन्धकारकरणम्
अंधकारं-कृ = उ०
अंधेरा पख — कृष्णपक्षः असितपक्ष
अंधेरी — झंझावातः, चण्डवातः
अंधेरीकोठरी — अन्धगृहम्, तमोगृहं
अंधेरी रात — तामिस्रा
अधेला — काकिनी द्वयम्
अधेली — अर्धरूप्यकम्, अर्धमुद्रा
अनलहक़ — अहंब्रह्मास्मि (क्रि)
अन होना — असंभवः
अन होनी — असंभवता
अनाज — अन्नम्, शस्यं, धान्यम्
अनाज (भूना] होला, ऊमा
अनार — दाडिमम्, सत्फलम्
अनारफूल — रोहितम्, दाडिमी
अनाड़ी — अनार्यः अपरिचितः
अनाड़ीपन — अपरिचितता अनार्यता
अनूठाविचित्रम्, अपूर्वम्, अद्भुतम्
अनोखा — अद्भुतम्
अपजस — अपयशसं (न०)

अपना — आत्मीयः स्वः निजः —
अपनाअपना — स्वीयम्स्वीयम्
अपनाकरना { आत्मीय करणम्
अपनाना { [आत्मीय कृ=उ०]
अपनायत — आत्मीयता, स्वता
अपनी — आत्मीया
अपने — निजः,स्वीयम्,आत्मीयः
अपील — पुनरभ्यर्थना,पुनर्विचार प्रार्थना
अपीलकरना — पुनरभ्यर्थनम् (पुनर् अभि--अर्थ १० आ०)
अपीलांट -- पुनः प्रार्थकः
अफरा — शोथः
अफ़वाह — किंवदन्ती, जनवादः
अफ़सोस — शोकः विलापः
अफ़्रीका — रथक्रान्तः,सूर्यारिका
अफ़ीम — अहिफेनम्,आफू [स्त्री०
अफ़ीमची — अहिफेनादः
अब — अधुना (अ०,साम्प्रतम् (अ०) इदानीम [अ०]
अबका — अधुनातनम् [क्रि]
अबकी — अधुनातनी
अबके — अधुना (अ)इदानीम्, (अ) साम्प्रतम् (अ)
अबखरा — रुग्वातः

ओम्

कोष संकेताः

—∞:※:∞—

१ स्वरान्तों में अकारान्त शब्दों को छोड़ कर सब के पीछे प्रथमा विभक्ति का एक वचन रहेगा। जिसके पीछे विसर्ग हो वह पुल्लिंग, अम् पीछे हो तो नपुंसक और आ, ई, ऊ, दीर्घ स्वर पीछे हों तो स्त्रीलिङ्ग होगा। विशेष स्थान में विशेष चिन्ह दिया जावेगा।

२ हलन्त शब्द बिना विभक्ति के छोड़ दिये जावेंगे।

३ हलन्त अथवा विशेष शब्द के लिये (   ) कोष्ठ में चिन्ह रक्खा जावेगा। चिन्ह इस प्रकार होंगे।

(पु०) पुंल्लिङ्ग। (न) नपुंसक लिङ्ग। (स्त्री) स्त्रीलिङ्ग।

(अ०) अव्यय। (त्रि०) त्रिलिङ्ग। (क्रि०) क्रिया द्विलिङ्ग शब्दों के द्विलिंग चिन्ह लिखे जावेंगे।

४ धातु निर्देश में प्रथम धातु फिर गण (कंजूगेशन) का नम्बर उसके आगे पदीका अक्षर दिया जावेगा पदी के चिन्ह इस प्रकार हैं---

(आ०) आत्मनेपद (प०) परस्मैपद (उ०) उभयपद।

५ णिजन्त (काज़ेटिव) धातुका रूप बना कर कोष्ठ में रख दिया जावेगा. उसके साथ और कोई चिन्ह नहीं होगा।

६ त्वा. तुम्, तस्, यह अव्यय अति प्रसिद्ध हैं इस लिये इनके साथ सर्वत्र (अ०) अव्ययका चिन्ह नहीं लगाया जावेगा।

७ स्मरण रहे कि विशेषण (Adjective) त्रिलिंगी होते हैं।

अबतक – अधुनावधिः, अधुनापर्यं
न्तम्
अबतर – शोकजनः, दुश्चरितः
अबतर होना – दुश्चरणम्, दुस्चर
१ प०
अबतरी – दुश्चरितता, दुश्चर्य्या
अबरक – अभ्रकम्, पटलावरः
अबरी(काग़ज़) – चित्रपत्रम् ,विचि
त्रपत्रम्
अबलक[रंग] – चित्रविचित्रः
अबसे – अतस्
अंबार – राशिः, कूटम्
अंबारी – सज्जाना, कल्पना
अबूझ – मूर्खः, अज्ञानिन् त्रि०
अबे – अरे अ० रे अ०
अबेर – विलम्बः
अबेरकरना – विलम्बनम् विलम्बृ
आ०
अभी – इदानीम् अ० साम्प्रतम् अ०
अमचूर – चुक्रम्
अमन – शान्तिः
अमर बेल – जीवन्तिका, वृक्षरुहा
अमरसा – मिठाई अमृतरसम् अमृतम्
अमरूत – पेरुकः, जाँबफलम्
अमल – अनुष्ठानम्, प्रयोगः,व्यवहारः

अमलतास – सुवर्णकः, व्याधिघातः
अमानत – न्यासः, उपनिधिः
अमानत रखना – न्यसनम् निक्ष-
स् ४ प०
अमावस – अमावास्या, अमावास्या
अमीरप्रधानः, मुख्यः, विशिष्टः
अमीरी – प्रधानता, मुख्यता,
अमेरिका – कुमारद्वीपः, माहेयः,स्व-
र्णभूमिः
अयंज़न – (,,) तथा पूर्वोक्तम्
अयाना – अबोधः, अज्ञानः
अयार – छलिन् 'त्रि'
अयारी – छलम्
अयाल – कुटुम्बः
अयालदार – कुटुम्बिन् 'त्रि'
अयालदारी – कुटुम्बता
अयाश – विलासिन् 'त्रि'
अयाशी – विलासः
अरक 'जानवर' अबोढकः
अरक 'दवाई' अर्कम्
अर्क निकालना – अर्काकर्षणम् अ
र्क-कृष् ६ प०
अरघ – अर्घ्यम्
अरघा – अर्घपात्रः दीर्घचमसम्
अरज़ – प्रार्थना
अरज़मंद – प्रार्थकः

जाये। तथा इसके साथ ऋजुपाठ, पञ्चतन्त्र जैसे गद्य ग्रन्थ भी रहें। इस प्रकार पाठ्य प्रणालिका रखने से विद्यार्थियों को बड़ा लाभ पहुंचेगा। दो वर्ष के भीतर उनको व्याकरण के रहस्यों के साथ हज़ारों शब्द कण्ठस्थ हो जायेंगे। अनुवाद में पूर्ण निपुणता और शब्दार्थ का अच्छा बोध हो जायगा फिर कौमुदि अथवा अष्टाध्यायी दोनों के प्रौढ़ अधिकारी बन जावेंगे। सरकारी स्कूलों में इंगलिश आदि सिखलाने के लिये सरकार ने भी प्रायः ऐसी ही शैली स्वीकृत की हुई है॥

हमारी कई एक पाठशालाओं ने व्याकरण भाग को पाठ्य पुस्तक नियत भी कर दिया है ईश्वर की कृपा से अब संस्कृत सीखने का द्वार खुल गया परमात्मा करे संस्कृत विद्या दिन दुगुनी रात चौगनी उन्नति करे।

अन्त में मैं पं० दौलत राय जी आचार्य क्लर्क दरबार बहावलपुर स्टेट का धन्यवाद करता हूं कि जिन्हों ने मुझे इस कार्य के लिये उत्साहित किया। और दौलत राय विद्यार्थी निवासी अहमद पुर शरकिया रियासत बहावलपुर जो इस समय डी० ए० वी० कालेज लाहौर में एफ़० ए० सी० क्लास में पढ़ता है उसने मुझे बहुत सहायता दी उसको शुभाशीर्वाद देता हूं।

समर्पण

दोहा—पतित पावन भगवान के, चरणकमल शिर नाय।
करों समर्पण ग्रंथयह, लीजे हाथ बढ़ाय॥
दीनन के बन्धु प्रभु, दीन वचन सुन कान।
विरद आपना सुमिरि कर, बूजे कृपानिधान॥

विनीत
रामचरणाचार्य शास्त्री
बहावल पुर
माघ शुक्ल पूर्णिमा सं १९७१ विक्रम

अरज़ी – आवेदन पत्रम्
अरज़ीदावा – भाषा, आवेदनभाषा
अरजंट – आवश्यकम्
अरथ – अर्थ
अरथकरना – अर्थनम्(अर्थ् १०प०)
अरथवताना – अर्थवर्णनम् [अर्थ-वर्ण १०प०]
अरदली – अग्रेसरः, पुरोगःपुरोगामिन् (त्रि०)
अरदावा – भोजनम्, भक्ष्यम्
अरदास – प्रार्थना
अरनी – (लकड़ी)अग्निमन्थः, श्रीपर्णी
अरब–(देश)वनायुः, काम्बोजः, आवर्त्त
अरब – (गिन्ती) अब्जम् १०००००००००
अरमान – शोकः
अरवी–[कचालु] काष्ठालुः, आलुकी
अरसा–कालः, समयःवेला–अनेहस् [पु०]
अरसा–[बहाना] व्याजः मिषः-छद्मन [न०]
अरहन– अयोघनः मूर्मी, स्थूणा
अरहर— [दाल] तुवरी
अरी–अरे ! [अ०]
अरूज – अभ्युदयः
अरूड़ी --अवस्करस्थानम्
अरे – रे [अ०]
अलकाव - उपाधिः
अलक़िस्सा – अन्ततस् (अ०)
अलग – व्यतिरिक्तं भिन्नम्
अलग अलग – भिन्नम्भिन्नम्
अलग करना – विभेदनम्(विभेदय)
अलग रहना – विविक्त सेवनम् विविक्त सिव् १० प०
अलगाई – विविक्तता, एकान्तता
अलजिब्रा – बीजगणितम्
अलता – पिष्टातः
अलबत्ता – नूनम्, असंशयम्, नियतम्
अलबेला – निश्चिन्तः
अलबेलापन – निश्चिन्तता
अलमस्त – मदवत् (त्रि०)मदिन् त्रि०
अलविदा – स्वस्तीभूयात्(क्रि०)भद्रम् भूयात् (क्रि०)
अलमारी – गुप्तिः, गोपा
अलसी – अतसी, उमा
अल्लमगल्लम असारः
अल्हड़ – नवीनः
अलाप – आलापः
अलापना – आलापनम् (आ-लप् १ प०)
अलिटरेशन – यमक, अनुप्रासः
अव्वल – प्रथमः आदिमः
अवारा – विलासकः वृथा (अ०)
अवारागर्द – स्वेच्छाचारिन् (त्रि० व्यवसायशून्यः
अवारागर्दी – स्वेच्छाचारिता व्यवसायशून्यता

जावे। तथा इसके साथ ऋजुपाठ, पञ्चतन्त्र जैसे गद्य ग्रन्थ भी रहें। इस प्रकार पाठ्य प्रणालिका रखने से विद्यार्थियों को बड़ा लाभ पहुंचेगा। दो वर्ष के भीतर उनको व्याकरण के रहस्यों के साथ हजारों शब्द कण्ठस्थ हो जायेंगे। अनुवाद में पूर्ण निपुणता और शब्दार्थ का अच्छा बोध हो जायगा फिर कौमुदि अथवा अष्टाध्यायी दोनों के प्रौढ़ अधिकारी बन जावेंगे। सरकारी स्कूलों में इंगलिश आदि सिखलाने के लिये सरकार ने भी प्रायः ऐसी ही शैली स्वीकृत की हुई है॥

हमारी कई एक पाठशालाओं ने व्याकरण भाग को पाठ्य पुस्तक नियत भी कर दिया है ईश्वर की कृपा से अब संस्कृत सीखने का द्वार खुल गया परमात्मा करे संस्कृत विद्या दिन दुगुनी रात चौगनी उन्नति करे।

अन्त में मैं पं० दौलत राय जो आचार्य क्लर्क दरबार बहावलपुर स्टेट का धन्यवाद करता हूं कि जिन्हों ने मुझे इस कार्य के लिये उत्साहित किया। और दौलत राय विद्यार्थी निवासी अहमद पुर शरकिया रियासत बहावलपुर जो इस समय डी० ए० वी० कालेज लाहौर में एफ़० ए० सी० क्लास में पढ़ता है उसने मुझे बहुत सहायता दी उसको शुभाशीर्वाद देता हूं।

समर्पण

दोहा—पतित पावन भगवान के, चरणकमल शिर नाय।
करों समर्पण ग्रंथयह, लीजे हाथ बढ़ाय॥
दीनन के बन्धु प्रभु, दीन वचन सुन कान।
विरद आपना सुमिरि कर, हूजे कृपानिधान॥

विनीत

रामचरणाचार्य शास्त्री

बहावल पुर

माघ शुक्ल पूर्णिमा सं १९७१ विक्रम

अशरफ़ी - दीनारं, सुवर्णमुद्रा
अशराफ़ - विनीतः, प्रश्रितः
अशराफ़त - विनीतता
अशाह - (वक्ष)तिष्ठद्गुः (स्त्री०)
अशोक - (वृक्ष) अशोकः, हेमपुष्पः
अस्तबल - मन्दुरः, अश्वशाला
अस्तर - (कपड़ा) वेष्टनम्
अस्तर - (खच्चर) अश्वतरः
अस्बाब - सामग्री
असर - प्रभावः
असर होना - प्रभवनम् [प्र-भू १प०
अस्ल - परमार्थः, मूलम्
अस्ल - [चेहरा] बिंबः
अस्ल - [पूंजी] मूलधनम्
अस्लमें - वास्तवतस् (अ०)
अस्लीयत -- परमार्थतस्, वास्तवतस् तत्त्वम्
असीस - आशीर्वादः
अस्सी - अशीतिः
अस्सीवां अशीतितमः
अस्सीवीं - अशीति
अस्ल - सिद्धान्तः, राद्धान्तः निर्णयः
अस्से - (जवाब मज़मून) प्रस्तावः, रचना, प्रबंधः लेखः
असोज - आश्विनम्
अहट - पादशब्दः
अहमक़ - मूर्खः मूढः
अहह - अहह (अ०)
अहलकार - राजपुरुषः, नियोगिन् त्रि०
अहा - हन्त, (अ.) आः, (अ०) हा, अ अहो अ
अहाता - परिधिः (पु)
अहीर - गोपालः, गोपः
अहीरी - गोपी
अहो - अहो (अ०)
आ-दया, अङ्गीकारः, सीमन् (न०)
आऊट - बहिस् (अ०)
आऊंस-अर्धपलम्
आंयबांए -प्रलापः
आक-[वृक्ष]अर्कः, मन्दारः
आकबत-परलोकः अमुत्र (अ०) परत्र [अ]
आकबत अंदेश-परलोक चिन्तकः
आकबत अंदेशी-परलोकचिन्ता
आकबत अंदेशीकरना-परलोक चिन्तनम् (परलोक-चिन्त् १० प०)
आकिल-बुद्धिमत् (त्रि०)प्राज्ञः
आकिलाना-प्रज्ञासम्मत बुद्धियुक्तः
आंख-नेत्र, नयनम्, लोचनम्, चक्षुस् [न०]
आंखकातारा-कनीनिका

ओम्

कोष संकेताः

—ॐ—

१ स्वरान्तों में अकारान्त शब्दों को छोड़ कर सब के पीछे प्रथमा विभक्ति का एक वचन रहेगा। जिसके पीछे विसर्ग हो वह पुल्लिंग, अम् पीच्छे हो तो नपुंसक और आ, ई, ऊ, दीर्घ स्वर पीछे हों तो स्त्रीलिङ्ग होगा। विशेष स्थान में विशेष चिन्ह दिया जावेगा।

२ हलन्त शब्द विना विभक्ति के छोड़ दिये जावेंगे।

३ हलन्त अथवा विशेष शब्द के लिये (   ) कोष्ठ में चिन्ह रक्खा जावेगा। चिन्ह इस प्रकार होंगे।
(पु०) पुंल्लिङ्ग। (न) नपुंसक लिङ्ग। (स्त्री) स्त्रीलिङ्ग।
(अ०) अव्यय। (त्रि०) त्रिलिङ्ग। (क्रि०) क्रिया द्विलिङ्ग शब्दों के द्विलिंग चिन्ह लिखे जावेंगे।

४. धातु निर्देश में प्रथम धातु फिर गण (कंजूगेशन) का नम्बर उसके आगे पदीका अक्षर दिया जावेगा पदी के चिन्ह इस प्रकार हैं---
(आ०) आत्मनेपद (प०) परस्मैपद (उ०) उभयपद।

५ णिजन्त (काज़ेटिव) धातुका रूप बना कर कोष में रख दिया जावेगा. उसके साथ और कोई चिन्ह नहीं होगा।

६ त्वा. तुम्, तस्, यह अव्यय अति प्रसिद्ध हैं इस लिये इनके साथ सर्वत्र (अ०) अव्ययका चिन्ह नहीं लगाया जावेगा।

७ स्मरण रहे कि विशेषण (Adjective) त्रिलिंगी होते हैं।

आंखखोलना – उन्मेषणम् [उद्-मिष् ६ प०

आंखफड़कना – नेत्रस्फुरणम् [नेत्र-स्फुर् १ प०]

आंखमीचना – निमेषणम् (नि-मिष् ६प०)

आंखमीचोनी – [खेल]नेत्रनिमीलिका

आंखमैल – दूषिका

आखिर } अन्ते, अन्ति स्[अः
आखिरकार }

आखिरी – अन्तिमम्, चरमम्, अन्त्यम्

आग – अग्निः, वह्निः, कृशानुः, पावकः, हव्यवाहनः

आग – (बिजली की) अविन्धनम्

आगफूंकना अग्निधानम् (अग्नि-ध्मा १ प०)

आगबबूलाहोना – (प्रज्वलनम् प्र-ज्वल् १प०)

आगबरसना – अग्निवर्षणम् [अग्नि-वर्ष १ प०)

आगभड़कना – उद्दीपनम् (उद्दीप् ४ आ०)

आगलगना – दहनम् (दह् १ प०)

आगलगाना – अग्निना दहनम् [अग्निना-दह् १ प०]

आगसुलगाना – उत्तेजनम् (उद्-तेज् १० प०)

आगा – अग्रभागः

आग़ाज़ – उत्पत्तिः, प्रारंभः

आग़ाज़करना – प्रारंभणम् (प्र-रम्भ् १ आ०)

आगापीछा – पूर्वापरम्

आगाही – प्रत्यादेशः

आगे – पुरस् [अ०) पुरतस्, (अ०) अग्रतस् (अ०]

आगेडालना – अग्रेक्षेपणम् [अग्रे-क्षिप् १ प०)

आगेदेखना – अग्रेदर्शनम् अग्रे दर्श १ प०

आगेकीतर्फ़ – अग्रतस (अ)

आगे बढ़कर – अग्रेभूय (अः]

आचमन – आचमनम्

आचमनकरना – आचमनम् (आ-चम् १ प०

आज – अद्य (अ०)

आजकल – अधुना [अ०] सम्प्रति अद्यप्रातस अ०

आजका – अद्यतनं

आजतक – अद्यावधि

आज़माना – परीक्षणं, विमर्शनं, परि- ईक्ष् १ प

आज़मायश – परीक्षा

आज़ूमदा – अनुभूतम्,

आज़ाद – स्वतन्त्रः, स्वच्छन्दः

आज़ादी – स्वतन्त्रता, स्वच्छन्दता

आजाना – आगमनम् आ- गम् गच्छ १प०

आजिज़ – नम्रः, दीनः

आजिज़ी – नम्रता, विनयः

ओम्

आचार्य कोषः

अर्थात्

हिंदी संस्कृतानुवाद कोषः



अ- विष्णुः
अक्टिववाईस कर्तृवाच्यम्
अकड़ना-स्तब्धीभवनम्(स्तब्धीभू १प)
अकड़बाज़-स्तब्धः
अक्ल-बुद्धिः, प्रज्ञा, मनीषा
अक्लमंद-बुद्धिमत् (त्रि०) मनीषिन् (त्रि०)
अक्लमंदी-बुद्धिमत्ता
अक्स-प्रतिच्छाया, प्रतिबिम्बः
अक्सर-प्रायस्, (अ०) बहुधा (अ०)
अक्सरसाईज़-अभ्यासः, आवृत्तिः
अक्सी-(तसवीर) छायाचित्रम्, प्रतिबिम्ब चित्रम्
अक्सीर-अमोघः सफलम्
अकारथ-व्यर्थम्
अकास-आकाशम्,गगनम्,अम्बरम्, व्योमन्, (न०) अभ्रम्
अंकुस-अंकुश, सृणिः
अक्केज़्यूटिव-द्वितीया, कर्मन् (न०)
अकेल-रहस् (न०) विविक्तम् विजनम्
अकेला-एककः, एकाकिन् (त्रि०)
अखनी-तक्रमांसम्
अख़बार-समाचार पत्रम्
अखबार नवीस-पत्रसम्पादकः
अखबार नवीसी-पत्रसम्पादकता,
अखरोट-अक्षोटम्, कर्परालम्
अख़लाक-शीलम्
अखाड़ा-सज्जन भूः [स्त्री] सभा
अखाड़ा-[कुश्ती] मल्लभू [स्त्री]
अखाड़ा-[इन्द्रका] सुधर्मा, देवसभा।
अख़ीर-अवसानम्, विरामः
अखीर में-अन्ततस् [अ०]
अंग-अवयवम्, गात्रम्, अङ्गम्
अंगड़ाई-जृम्भा,ग्लानिः सुखव्यादानम्
अंगड़ाईभरना-जृम्भणम्,ग्लानम् (जृम्भ् १ अ०। ग्लै १ प०]
अगर- यदि [अ०]

आजिज़ी करना – विनयनम्(वि- नी १ उ)
आसरी – गडरिया अजापाल:
आटा – चूर्णम्
आटा पीसना – चूर्णम् चूर्ण १०प०
आठ – अष्ट, अष्टौ
अठगुना – अष्टपाद:, अष्टगुण:
आठतरह – अष्टधा (अ)
आठ दिनका – बालक अष्टाहीन
आठ दिनकी [कन्या] अष्टा हीना
आठ वरसका – अष्टवर्ष:
आठ वरसकी अष्टवर्षा
आठ महीने का – अष्टमास्य:
आठ महीने की – अष्टमास्या
आठ रात का – अष्टरात्रीण:
आठ रात की – अष्टरात्रीणा
आठ वार – अष्टकृत्वस् [अ०]
आठवां – अष्टम:
आठवांहिस्सा – अष्टम',अष्टमांश:
आठवीं – अष्टमी
आड़ – आश्रय:
आड़-करना – आश्रयणम् (आ श्रि १ उ०)
आडीटर – गणित शोधक:
आड़त – (एजंसी) नियोज्यता, कर्तृता
आड़तिया – प्रति निधि:

आतशक (बाद फिरंग) उपदंश
आतिश – अग्नि:, वन्हि:, अनल
आतिशफ़िशां – ज्वाला मुखी
आतिशवाज़ी – अग्नि क्रीड़ा
आतिशी शीशा – सूर्यकान्त:, अग्निगभ:
आद अंत – आद्यन्तम्
आदत – अभ्यास स्वभाव:
आदतन – स्वभावतस् (अ०)
आदत पड़ना – अभ्यसनम् [अभि अस् ४ प०
आदम – मनुष्य:, मानव:
आदम खोर – मनुष्याद:
आदमी – मनुष्य:, जन:, पुरुष:, मानव:
आदमीयत – मनुष्यता
आदमीभर – (पानी) पौरुषं पुरुष द्वयसम्
आद्रख – आद्रकम् ,शृंगवेरम्
आदर – अभ्युत्थानम्
आदव – विनय जातम्
आदित्यवार – रविवार
आदिल – न्यायकारिन् [त्रि०]
आदि – अभ्यासिन् (त्रि०)
आधमण – कलश:
आधसेर – मानिका
आधसेरभर – मानिका मात्रम्

अगर-[दवाई] अगरुः, वंशिकः
अंगरखा-कञ्चुकम्
अगरचे-यद्यपि [अ०]
अंगरेज़-आंगलः,पाश्चात्यः,गौरमुखः
अंगरेज़ी-आंगलभाषाः
अगलबगल-इतस्ततस् [अ०]
अगला-आगामिन् [त्रि०]
अगलादिन-उत्तरेद्युस् [अ०]
अगवानी-प्रत्युद्गमः
अगवानी करना-प्रत्युद्गमनम्(प्रति-उद्-गम् १ प०)
अगवारा-अग्रभागः
अगहन-मृगशिरस् [न० पु०]
अगस्त-[वृक्ष] अगस्त्यः, मुनिद्रुमः
अगाऊ-अग्रिमम्
अगाड़ी-अग्रे [अ०]
अंगियां-[चोली] चोलिका
अगवा-नेतृ [त्रि०] नायकः
अगवी-नेत्री, नायिका
अगवापन-नेतृता, नेतृत्वम्
अंगारा-अंगाराः, आलातम्
अंगीठी-हसिनी,अंगारधानिका
अंगुल } अंगुलिः
अंगुली }

अंगुल (पहिली) तर्जनी
अंगुल (दूसरी) मध्यमा
अंगुल (तीसरी) अनामिका
अंगुल (चौथी) कनिष्ठिका
अंगुली काटना-अंगुलि कर्त्तनम् (अङ्गुलि-कृत् ६ प०)
अंगूठा-अंगुष्ठम्
अंगूठा चूमना - अंगुष्ठ चुम्बनम्
अंगूठा दिखाना- अंगुष्ठ दर्शनम् (अंगुष्ठं-दर्शय)
अंगूठी (कुशाकी) पवित्री
अंगूठी- (धातुकी) मुद्रिका,अंगुलीयकम्
अंगूठी- (मुहर) अंगुली मुद्रा
अंगूर-द्राक्षा, मधुफलम्
अंगोछा-स्नानवस्त्रम्
अचंभा-कुतूहलम्
अचरज-आश्चर्यम्
अचानक-अकस्मात्, (अ०) सहसा (अ०)
अचार[खटाई] आसुतम्, अम्लसंधानम्, राजिकम्
अचारडालना आसवनम्,सन्धानम् आ-सु ५ प० । सम्-धा ३ प०

आधा - अर्धम्
आधाआधा - अर्धार्धम्
आधाकरना - अर्धाकरणम् [अर्धा कृ ८ उ०]
आंधी - झंझावातः महावातः
आधीरात - निशिथम्
आधेमहीनेका - आर्धमासिकः
आधेमहीनेकी - आर्धमासिका
आधोआध - अर्धार्धम्
आनेररी - आजुः[स्त्री०] अवैतनिकः
आना - [रकम] आणकम्
आना-आगमनम् [आ-गम् [गच्छ१प०
आनाकानी—वाक्छलम् अपदेश
आनाकानीकरना—अपदेशनम् (अप-दिश् ६ प०)
आनाजाना-गमनागमनम्
आनेलगना-आगमनम्
आपका-भवदीयः, भावत्कः
आपकी-भवदीया,भावत्का,
आपजैसा-भवादृशः
आपजैसी-भवादृशी
आपसमेंमिथस्अ०परस्परम्,अन्योन्यम्
आफ़त-आपद् स्त्री० विपद्० स्त्री०
आफ़तज़दह-आपद्ग्रस्तः

आफ़िस - आस्पदम् कार्यस्थानम्
आव - जलं,वारि न० अम्भस् न० पानीयम्
आवकार - जलप्रबंधकः
आवकारी - जलप्रबंधः
आवदाना - अन्नजलम्
आंवली - अम्लिका, चुक्रिका
आवहयात - अमृत, सुधा, पीयूषम्
आवाद - आवासः
आवाद करना - आवासनम् [आ वास१)
आवादी - आश्रितः, आवासता, लोकः, जनसंख्या
आवी - जलीयम्
आभू - (भुने हुवे ऊंबी
आम - (फल) आम्रम्, चूतम्, रसालम्, सहकारम्
आम - (कच्चा) शलाटुः
आम - सर्वसाधारणम्
आमचूर - चुक्रम्
आमफ़हम - सुस्पष्टम्
आमतमाशा - प्रेक्षणम्
आमद / आमदनी - आयः, आगमः
आमद २ - आजंगमः
आमदओ खर्च - आयव्ययम्

(१) अचारज
अचारजी } आचार्यः, गुरुः
चारज

अचारजन-आचार्यानीआचार्यकीपत्नी

अचारजकुल-आचार्यकुलम्, गुरुकुलम्

अचारजा — आचार्या (स्वयं पढ़ाने वाली

अचूक-अमोघः

अचेत-मूर्छितः

अचेत होना-मूर्च्छनम्, मूर्च्छ् १प०

अछा- (क्रिया) अस्तु (क्रि०) भवतु [क्रि०]

अछा-भद्रः, स्वच्छः, उत्तमः, प्रच्छः, [अ०]

अछा आदमी-आर्यः, महाकुलः, सज्जनः, सभ्यः

अछा बोलना—सुवचस् [त्रि०]

अछा बोल यार— सुवक्तृ (त्रि०)

अछी तरह — सम्यक् (अ०)

अछूत — अस्पृश्यः

अच्छे से अच्छा — शुभतरः[त्रि०] श्रेयस् [त्रि०]

अजगर
अज़दह } अजगरः

अजनवी — नवीनः, आगन्तुकः

अजब — अद्भुतम्

अजल — मृत्युः, मरणम्, निधनम्, पञ्चत्वम्

(१) उपनीयतु यः शिष्यं वेदमध्यापये द्द्विजः। सकल्पं सरहस्यं च तमाचार्यं प्रचक्षते अर्थ — जो ब्राह्मण शिष्य को यज्ञोपवीत देकर कल्प और रहस्योंके साथ वेद पढ़ाता है उसको आचार्य कहते हैं। अन्यच्च--आचारं ग्राहयतिआचिनोत्यर्थान् आचिनोति बुद्धिमिति वा आचार्यः। जो आचार और अर्थों को सिखलाता या बुद्धिदेता है उसको अचारज कहते हैं॥ अपरम् — गर्भाधानात्समारभ्य यावत्प्राणपलायनम्। तावत्षोडश संस्कारान् यः सम्पादयति द्विजः। स-आचार्य इति प्रोक्तः पूजनीयो द्विजोत्तमः॥ अर्थ — गर्भाधान संस्कार से लेकर जब तक अन्त्येष्टिश्राद्ध है तब तक जो १६ संस्कार कराता है वह पूजने लायक द्विजोत्तम अचारज है। अयमपिसन्ति चिरन्तनान् माचार्या भुवि विश्रुताः। कर्मकाण्डस्य कर्त्तारो वेदविद्या प्रवर्त्तकाः॥ कारयन्ति द्विजाग्र्यास्ते संस्कानखिलांस्तथा। अतः पूज्यतमाएते साधुगतिकराः सदा॥

अर्थ—कर्मकाण्ड के कर्त्ता, वेद विद्याके प्रचारक, भूमिपर प्रसिद्ध प्राचीन आचार्य हैं। वे द्विजश्रेष्ठ गर्भाधानसे लेकर अन्त्येष्टिपर्यन्त सोलह संस्कार कराते और सदा शुभगति करने वाले हैं इस लिये सब के पूजनीय हैं॥

आमनासामना – मुखामुखि (अ०)
आम निगरान – सर्वाधिकारिन् त्रि०, अधिष्ठातृ [त्रि)
आम निगरानी – सर्वाधिकारः
आमने सामने – सम्मुखम्
आम व ख़ास – सर्वसाधारणम्
आमिल – अनुष्ठान [त्रि०] आदर्शः
आमीन – एवमस्तु क्रि०, तथास्तु क्रि०
आमोख़्तह–आवृत्तिः, पुनरभ्यासः
आमोख़्तह करना–आवर्तनं [आ-वृत् १ आ०]
आयद स्थिरः, लागः
आयद होना – लगनम् (लग् १० प०)
आयंदा – भाविकालः, भविष्यः, आयतिः, उदर्कः
आया – किम् (अ०)
अयाकरना – आगमनम् [आ-गम् १ प०)
आया चाहना – आजिगमिषा आजिगमिष्
आर– [चमार की] चर्मभेदिका
आरज़–पार्थिन् [त्रि०]
आरज़ू–इच्छा, कामना
आरज़ू करना–एषणम् (इष् [इच्छ्] ६ प०)
आरज़ू मंद–उत्सुकः, इच्छुकः-अभिलाषुकः–
आरज़ू मंदी–उत्सुकता, इच्छुकता
आर्डर–आज्ञा, आदेशः निदेशः
आरती–आर्त्तिः
आरपार–अवारपारम्
आरयावरत–आर्यावर्त्तः
आरा औज़ार आरा, करपत्रम्,क्रकचः
आराइश—भूषा
आराकश–तक्षकः, वर्द्धकः
आराम—विश्रामः सुखम् निर्वृत्तिः
आराम करना–विश्रमणम् विश्रम् ४ प०
आरामगाह–विश्रामगृहम्
आराम तलब-विश्रामिन् त्रि०
आरास्ता–विभूषितः
आरिज़- पार्थिन् (त्रि०)
आरिज़ी-कल्पितम्,क्षणिकम्, अल्पकालिकम्
आरिफ़—साधुः
आलम–लोकः,-देशः, अवस्था
आलमगीर–बहुव्यापकः
आलवाल–आलवालम्
आलस-आलस्यम्
आलसी – मंदः, अलसः
आलह– यंत्रम्, शस्त्रम्, साधनम्
आला-प्रधानम्, महत् त्रि०
आलातनासुल – लिङ्गम्, शिश्नम्, शेपम्
आलिम-व्युत्पन्न, विशारदः

अजवायण — यवानिका, उग्रगन्धः
अजां — अतस्
अज़ाब — पीड़ा, दुःखम्
अंजाम — परिणामः, निष्पादनम्
अजायब — विचित्रम्, अद्भुतम्
अजायबघर — विचित्र शाला
अज़ार — तोदः, व्यथा, पीड़ा
अजी — देव ! श्रीमन् !
अज़ीज़ — प्रियः, मेष्ठः, चिरंजीविन् [पु० स्त्री०]
अजीब — अपूर्वम्, विलक्षणम्
अजीबपन — वैचित्र्यम्
अंजीर — गञ्जलम्, अंजीरम्
अटक — रोधः, विघ्नः
अटकना — रोधनम् [रुध् ७ प०]
अटकल — अनुमानम्, युक्तिः
अटकलपच्चू — आकस्मिकम् अनियतम्
अटकलबाज़ — यौक्तिकः, अनुमातृ (त्रि०)
अटकाना — रोधनम् (रोधय)
अटकाव — प्रतिबन्धः, रोधः
अटल — दृढ़ः, अचलः, पूर्णम्
अटारी — अट्टः
अट्टी — (सूतकी) पञ्जी, तालिका
अटूट — पूर्वम्
अटेरना — पुञ्जीकरणम् [पुञ्जीकृ ८ उ०

अठत्तर — अष्टासप्ततिः
अठत्तरवां — अष्टासप्ततितमः
अठत्तरवीं — अष्टासप्तती, अष्टासप्ततितमी
अठतालीस — अष्ट [ष्टा] चात्वारिंशत् (स्त्री०)
अठतालीसवां — अष्टचत्वारिंशः
अठतालीसवीं — अष्ट चत्वारिंशी
अठतीस — अष्ट (ष्टा) चत्वारिंशत् (स्त्री)
अठतीसवां — अष्ट चत्वारिंशः
अठतीसवीं — अष्ट चत्वारिंशी
अठसठ — अष्ट [ष्टा] षष्टिः (स्त्री०)
अठसठवां — अष्टषष्टितमः
अठसठवीं — अष्टषष्टी
अठाईस — अष्टाविंशतिः
अठाईसवां — अष्टाविंशः
अठाईसवीं — अष्टाविंशी
अठानवे — अष्टानवति
अठानवां — अष्टानवतितमः
अठानवीं — अष्टनवती
अठावन — अष्ट पञ्चाशत् [स्त्री०]
अठावनवां — अष्ट पञ्चाशः
अठावनवीं — अष्ट पञ्चाशी
अठासी — अष्टाशीतिः
अठासीवां — अशीतितमः
अठासीवीं — अशीती

आलिमानह–विद्वत्ता पूर्णम्
आली – महत् [त्रि०]
आली जनाव – श्रीयुत महोदयः
आलीशान – अत्युत्कृष्टम्
आलू – इर्वारुः, वल्लूकः
आलरेस – खेल इर्वारुक्रीड़ा
आलूबुखारा – आरुकः वीरसेन.
आवा- आपाकः
आवला – अमृता, तिष्यफला
आवाज़ – शब्दः, रवः, ध्वनिः
आवाज़उठना – शब्दोत्थानम्
(उद्-स्था-[तिष्ठ] १ प०
आवाजबुलंद – दीर्घरवः
आवाज़ – (परिंदोंकी) वाशितं,रुतम्
कूजनं कूज् १ प०
आवाज़ – (ज़ेवरोंकी) शिंजितम्
आवाज़ – [शरों व बादलोंकी]गर्जन,
गर्जितम् (गर्ज १ प०)
आवाज़ – (कोयलकी) कलरवः
आवाज़ – [बरतनोंकी] झंकृतिः,
झंकारः
आवाज़ – (सितारकी)क्वाणःक्वणनम्
(क्वण १ प०)
आवाज़ – 'हाथियोंकी' चीत्कारः,
बृंहणम्
आवाज़ – (घोड़ोंकी) हेषा
आवाज़ – (पंखी) सुनिभृतम्
आवाज़– (पत्तोंकी) मर्मरः
आवाज़-(वस्त्रोंकी) मर्मरः
आश-पथ्यम्
आशास्ता-'फ़ौज' व्यूः

आशिक – अनुरक्तः प्रियतमः
आष्ट्रिया – अस्वकः, ऋस्वीया
आष्ट्रेलेशिया – रमणकः
आशना – मित्रम् प्रियः
आशनाई – मित्रता, प्रियता
आसगंध – अश्वगंधा,वलदा
आसन – आसनम्. पीठम्
आसमान – आकाशम्,अन्तरिक्षम्
आसमानी – (रंग) नीलवर्णम्
आसमानी – किताब' ईश्वरीयम्
आसपास – समन्तात्
आसरा–आश्रयः
आसान–सुगमम्, सुकरम्
आसानी–सुगमता
आसाम–(देश) प्राग्ज्योतिषः,
कामरूपम्
आंसू–बाष्पम्
आसूदगी – तृप्तिः, संतोषः
आसूदा – तृप्तः, संतुष्टः
आसूदाहोना – तर्पणम् (तृप ४०प)
आंसूपोछना – बाष्पप्रोञ्छनम्
(बाष्प प्र उच्छ६प०)
आह – निःश्वासः
आहट – शब्दः
आहभरना – निःश्वसनम् 'निस्
श्वस् २ प०'
आहा – अः (अ०) अहह (अ०) अहो
(अ०)
आहिस्तगी – मान्द्यम्,मन्दता
आहिस्ता – मंदम्

अंड-[ख़रबूज़ा] मध कर्कटी, चिर्भिटा
अड़ंगा—सन्निरोधः
अड़ंगा लगाना—सन्निरोधनं
[सम् नि रुध् १० प]
अडजक्टिव-विशेषणम्
अड़ना-हठकरणम् [हठ-कृ-८उ०]
अंडा - अण्डः
अढ़ाई - सार्धम्
अढ़ाईमण—खारी (स्त्री)
अणि—(नोक) प्रान्तलवः
अंतड़ी-अन्त्रम्
अतलस—अतसीयम्
अताफ़रमाना-प्रदानम्
अतार-गांधिकः
अतिसार—अतिसारः
अथर्वण—अथर्ववेदः
अथाह — अतलस्पर्शः
अदद — संख्या, अङ्कम्
अदना — लघु (त्रि०) क्षुद्रम्
अदब-विनयः, शालीनता
अदबकरना-विनयनम्(वि-नी१उ०)
अदरक — आर्द्रकः, मृगवेराः
अंदर — अन्तस् (अ०)
अंदरूनी — आन्तरिकम्
अदलबदल — परिवर्तनम् विकारः
अदा — पूर्णम्, शोध
अदाई — पूर्त्तिः, शुध
अदाकरना—पारणम् पार१०प०तीर
१० प,
अदालत — न्यायसभाः
अंदाज़ — अनुमानम्
अंदाज़न — आनुमानतस[अ]
अंदज़ा — अनुमितिः
अंदाज़ाकरना — अनुपातनम्[अनु
मी ४ आ०]
अंदेशा — चिन्तता
अंदेशाकरना — चिन्तनम्(चिन्त१०
प०)
अधन्न(स्त्री)अर्द्धाणकम्
अधमरा — मृतप्रायस (अ०)
अधरंग(रोग)-पक्षा घातः
अधवाड़ — अर्धांशः, अर्धभाग
अधसेर — अर्द्धप्रस्थम्
अधसेरा — अर्धप्रस्थकम्
अंधा — अन्धः
अंधा होना--अन्धनम् अन्ध्१०प०
अंधाकुवां-अन्धकूपः
अंधाधुंध — अविचारः
अंधापन — अन्धता
अधिकाई — अधिकता
अंधी — अंधा
अधूर — ऊनता, न्यूनता
अधूरा — न्यूनम्, ऊनम्
अधूरी बात — अस्तम्
अधेर — वृद्धकल्पः

इ

इ - दया, कामदेवः
इक - एकः
इकचित - एकाग्रः
इकछत्र - चक्रवर्तिन् (त्रि)
इकटक अनिमेषम्
इकट्ठा-संग्रहः, आचनः
इकट्ठाकरना-अर्जनम् (अर्ज १ प०)
इकठौर - एकत्र
इकत्तर - एकसप्तति
इकत्तरवां-एक सप्ततितमः
इकत्तरवीं-एकसप्ततितमी
इकतालीस - एकचत्वारिंशत् (स्त्री)
इकतालीसवां एक चत्वारिंशत्तमः, एकचत्वारिंशः
इकतालीसवीं - एकचत्वारिंशी
इकतीस - एकत्रिंशत् (स्त्री)
इकतीसवां - एकत्रिंशः
इकतीसवीं - एकत्रिंशी
इक़बाल - स्वीकृतिः
इक़बालमंद - समृद्धः,श्रीलः ईश्वरः प्रभुः
इक़बालमंदी - समृद्धिः, सम्पत्तिः श्रीः, विभूतिः, ऐश्वर्यम्
इक़रार - स्वीकारः, उपश्रुतिः, उपगमः, प्रतिज्ञा
इक़रारनामा - प्रतिज्ञापत्रम्
इकला - एकाकिन् (त्रि)

इकलौता-एकमात्रम्
इकसार--समानम्
इक्का--अश्वशकटिका
इकाई - समता, एकता
इकाई - (हिसाब) एकम् १
इक्यानवां - एकनवतितमः
इक्यानवीं - एक नवतितमी
इक्यानवे - एकनवतिः
इक्यावन - एकपञ्चाशत् (स्त्री०)
इक्यावनवां - एकपञ्चाशः
इक्यावनवीं - एकपञ्चाशी
इक्यासी - एकाशीतिः
इक्यासीवां - एकाशीतितमः
इक्यासीवीं - एकाशीतिः
इक्कीस - एकविंशतिः
इक्कीसवां - एकविंशः
इक्कीसवीं - एकविंशी
इख़तियार - अधिकारः, स्वीकारः
इख़तियारकरना - अधिकरणम् स्वीकरणम् अधि-कृ८ उ० स्वीकृ८ उ०
इख़तियारी - यथेच्छम् (अ०)
इख़तिलाफ़ - भेदः, विरोधः
इख़तिसार - अपवर्तनम्, संक्षेपः
इख़राज - व्ययः
इख़राजात - व्ययजातम्

इख़लाक़्–सभ्यता शीलम्

इख़लाक़्मंद्–सुशीलः, सभ्यः

इख़लाक़्मंदी – सुशीलता, सभ्यता

इख़लाक़रखना – शीलनम् (शील् १० प०)

इंगलैंड – इन्द्रद्वीपः इन्दुद्वीपः

इंच – पणम्

इंची – पणिकम्

इज्ज़त – प्रतिष्ठा, गौरवम्, सपर्या पूजा

इज्ज़त करना – पूजनम्,अर्चनम् (अर्च १ प० (पूज १ प०)

इज्ज़तदार – प्रतिष्ठितः गौरवान्वितः

इंज़न – वाष्पयन्त्रम्

इजलास – 'सभा' समितिः

इज़हार – विकाशः–

इजाज़त – आज्ञा, आदेशः

इजाज़त नामा – आज्ञापत्रम्

इजारबँद – कटिसूत्रम् ,कटिदामन् [न०] नीवी

इंत्रा–परिणामः, निर्यानम्

इन्ट्रेन्स–[प्रथमवर्ष] आंगलप्रवेशिका

इन्ट्रेन्स–[द्वितीयवर्ष] आंगलप्राज्ञः

इन्टरमिडियट–माध्यमिकम् , मध्य कक्षा

इकट्रेनसीटिव – पैसिव – वाइस भाववाच्यम्

इटलिस – मानचित्रव्रातम्, चित्र जातम्

इटसिट – (बूटी) पुनर्नवा

इटाली – रोमान्तः, पातिदेशः

इटीमालोजि – शब्दसाधनम्

इन्डीक्लैनेबिल – अव्ययः

इंडीपेन्डेन्ट – स्वाधीनं, स्वायत्तम्

इत्र – गन्धतैलम्

इंतज़ार – प्रतीक्षा ।

इंन्तज़ार करना – प्रतीक्षणम् प्रतिपालनम् (प्रति-ईक्ष १ आ०(प्रति–पाल् १०प०)

इतना–इयत् , (त्रि०) एतावत् (त्रि०)

इतनाही – एतावन्मात्रम्

इतनी–एतावती

इतनी– (मिक़दार) एतावतिकः

इतने में–अत्रान्तरे

इतबार–विश्वासः

इन्तकाल–परिवर्तनम्, स्वत्वसमर्पणम्

इन्तिख़ाब–निर्वाचनम्

इन्तिख़ाबी–निर्वाचितः (त्रि०)

इत्तिफ़ाक़–दैवं, दैवयोगः, दैवगतिः, अनुकूलता, एकता, हेतुः

इत्तिफ़ाक़न–दैवात् , दैववशम्

ओल्ड-वृद्धः, पुरातनः, प्राचीनः, सनातनः
ओला-करकचर्पोत्पलः
ओवर-उपरि, [अ०] ऊर्ध्वम्
ओस-खबाष्पं, नीहारजलं, अवश्यायः
ओहदा-पदं, अधिकारः
ओहदेदार-पदाधिकृतः
ओहो-अहो, (अ०) हंत [अ०]

औ

औ-विस्मयः
औगुण-अवगुणः
औघट-अगम्यं अप्राप्यम्
औचट-(अचानक)प्रकरणात् (अ०)
औज़ार-यंत्रं, अस्त्रं, उपकरणं साधनं
औझड़-(धक्का)आघातः, प्रहारः,
औटना-क्वथनं (क्वथ् १ प०)
औटाना-क्वथनं (क्वथय्)
औवाश-व्यभिचारिन् (त्रि०)
औवाशी-व्यभिचारः दुराचारः
और-च, अन्यः (त्रि०)अपरम्(त्रि०)
औरत-स्त्री, नारी, योषित्, मानवी
औरत-(अधेर) प्रौढा
औरत-(खुदमुख़्तयार) इत्वरी, स्वैरिणी
औरत-(कमउमर) बाला
औरत-(जवान) युवतिः,तरुणी
औरत-(बदचलन) पुंश्चली, बंधकी असती, व्यभिचारिणी
औरत-(बेऔलाद) अशिश्वी
औरत-[विनापतिपुत्र] अवीरा
औरत-[पतिवाली] सभर्तृका
औरत-[औलादवाली] संतानवती
औरत-(मूर्छावाली) पोटा
औरत-(बेहैज़) निष्फला
औरत-(राखवीं) उपपत्नी
औरतमर्द-(जोड़ा) दम्पती, जायापती
औलाद-अपत्यम्, संतानः, तोकम्
औसत-मध्यभागः
औसर-अवसरः
औहर-(राई) राजी,क्षवः,क्षुधिका
औहर-[सुफ़ेद]चिचिंडा, श्वेतराजी

इति श्री प्रियदेवात्मज रामचरणाचार्योपध्यायशास्त्रि कृते
आचार्यकोशे स्वरप्रकरणं सम्पूर्णम्

इत्तिफ़ाकिया- (छुटी) हैतुकाव काशः, हैतुकम्
इत्तिला-सूचना
इन्द्रजाल-इन्द्रजालम्
इंदाज-अनुमानम्
इंदाज़ करना-अनुमानम् (अनु-मा २-५ प० ४ आ०)
इंदाज़न-अनुमानतस् [अ०]
इंद्रिय जुलाब—मूत्ररेचनम्
इंद्रजौ-कलविंकः
इधर-इतस् [अं०]
इधर उधर-इतस्ततस् (अ०)
इनकमटैक्स-आयकरम्
इनकार-अपह्नवः, प्रत्यादेशः,निषेधः
इनकार करना-निषेधनम् [नि षिध् १ प०]
इनचार्ज-कार्याधिकारिन् [त्रि०]
इन्सट्रूमेंटल-करणम्, तृतीया
इन्साफ़-न्यायः
इनाम-परितोषिकम् पुरस्कारः उपहारः
इनायत-कृपा
इब्तिदा-प्रारंभः
इब्तिदाई-सनातनम्, प्राचीनम्
इबारत-लेखः, शब्दरचना
इमकान-संभवः, शक्तिः

इमकानी-संभाव्यम्
इमतिहान-परीक्षा
इमतिहानदेना-परीक्षणम् (परि-ईक्ष १ आ०)
इमदाद—सहायता
इम्परफ़ैक्ट-लङ्
इमपरस्नल-भाववाच्यम्
इमपेरेटिव-(मूड) लोट्
इमला-लेखः
इमलाक-भूमिलब्धः
इमली-अम्लिका, चिंचा, चुक्रिका
इमसाक-स्तम्भनम्, वाजीकरणम्
इमामदस्ता-उलूखलभालः
इमारत-[मकान] निर्मितिः, भवनं, गृहम्
इमारत-(बंदगोजा) मण्डपम्
इरक-कोहनी कर्पूरः, कफोणिः
इर्दगिर्द-समन्तात् (अ०)
इरशाद-आज्ञा आदेशः
इरशाद करना—आदेशनम् (आ-दिश् ६प०)
इरादा—विचारः, संकल्पः
इलज़ाम-दोषः, कलङ्कः
इलजाम लगाना दोषारोपणम् [दोष-आ-रोपय]
इल्तजा-प्रार्थना, निवेदनम्

[क]

क – विष्णुः, आत्मन् (पु०) जलम्
कई – के
कईकई – के के
कईएक – केचित् (अ०)
कई दफ़ा
कईवार } अनेकशः (अ०)
ककड़ी – [खरबूज़ा] एर्वारुः, कर्कटी
कंकर – शिलाखंडम्, शर्करा
क़क्कु – (री) इक्षुरसः
ककोड़ा – (खेखल) कर्कोटकी, महानाली
कंगन – (कड़ा) कटकः, कंकणम्
कंगना – करसूत्रम्
कंगनी – [अनाज) कंगुः, प्रियंगुः
कंगाल – दरिद्रः, दुर्गतः, दीनः
कंगाली – दरिद्रता
कंघी – कंकतिका
कंचट – (साग) तंदुलीयं, कचटम्
कच्च – काचः
कचकौड़ी – वराटः
कचड़ा - अवस्करः
कचनार – कांचनारः, गंडारिः
कचरा – (भान) मुद्गाचूर्णम्
कचहरी – धर्माधिकरणं, राजसभा
कच्चा – अपक्वम्
कचाई – अपक्वता
कचालू – (अरुई] आलुकी, कोष्ठालुः
कचूर – कर्चूरकः, द्राविडकः
कचोड़ी – पूरिका
कछू – कच्छपः, कमठः, कूर्मः गूढपादः, दृढपृष्ठकः
कछू – (मादा) कच्छपी, कमठी
कज्जल – कज्जलम्
कंजंक्शन – सन्धिः संबन्धः
कंजगी – कंचुकिन्, (पु) सौविदल्लः
कंजर – नारीजीवनः
कंजरी – वेश्या, पण्यांगना
क़ज़ा – मारब्धः दैवम्
कंजूगेशन – गणः
कंजूस – कृपणः क्षुद्रः
कंजूसी – कृपणता
कंटंजट – व्ययमात्रम्
कट्टर – दृढः, परिपक्वः
कटरा – चत्वरम्, वीथिका
कटहर – पनसः, कंटकिफलम्
कटाई – कृत्तिः
कटार – कृपाणः कर्त्तरी, असिपुत्रिका
कटोरा – उदपात्रं, कंसः
कटोरी – उदपात्री
कठ्या – [जाति] कठः कातीयः

इल्तजा करना=निवेदनम् (नि-
विद् १०प०)
इल्तमास-अभ्यर्थना
इल्तमास करना-अभ्यर्थनम् (अभि
अथ १०प०
इल्म-विद्या, ज्ञानम् मतिः,
इल्मनजूम-ज्योतिश्शास्त्रम्
इल्म मंतक़-तर्कविद्या, न्यायशास्त्रम्
इल्मरूहानी-आध्यात्मिकविद्या
इल्म हिक्मत—वधकविद्या
इल्मी—शास्त्रीयम्
इल्मीयत विद्वत्ता
इल़ल-अवगुणः, दोषः
इल़ती-अवगुणकः, दोषिन् (त्रि)
इलहदा-भिन्नम्
इलहदार-प्रातिस्विकम्
इलहाम-आकाशवाणी, उपदेशः
इलाक़ह-अवधि प्रदेशः
इलाकहबंदी-अवधि विभागः
इलाज-प्रतीकारः, चिकित्सा
इलाजकरना-प्रति करणम् (प्रति
कृ ८ उ०)
इलायची-(छोटी) चंद्रवाला,इला
इलायची-(वड़ी) भद्रेला, कोरंगी
इलायची दाना-(मिठाई)
एलाकणम्

इलाम-त्रासः, भयम्
इलामक़ाक-त्रासघटिका,रवघटिका
इलावा-अतिरिक्तं, विना (अ०)
इलौस-उपवेतनम्
इवज-प्रतिफलम्
इवज़ी-प्रतिनिधिः
इश्क़-प्रेमः, स्नेहः
इश्कपेचा-(दवाई) कृष्णधत्तूरम्
इश्तिहार-विज्ञापनम्
इश्तिहारी-विज्ञापितः (त्रि०)
इशरत-सुखम्
इशारह-संकेतः, इङ्गितम्, चिन्हम्
इशारह-(आंखसे) नेत्रसंकेतः
इशारह-(शिरसे) मस्तकसंकेतः
इशारा करना-संकेतनम् (सम्-
केत १० प०)
इस क़दर-एतावत् [त्रि०]
इस्टीमेट-आकारमानम् अर्घगणना,
परिसंख्यानम्
इसतरह-इत्थम् (अ०)
इसतरी-[मैशीन] लोहयन्त्रम्
इस्तिअमाल-उपयोगः, व्यवहारः,
अनुष्ठानम्
इस्तिक़वाल-स्वागतम्
इस्तकलाल-दृढ़ता
इस्तिकलाली-धृतिः
इस्तिग़ासा-अभियोगः

कटपुतली – शालभंजिका
कठफोरा – दार्वाघाटः, शतपत्रकः
कठफोरी – दार्वाघाटी, शतपत्रकी
कठरा – काष्ठपात्रम्
कंठा – कण्ठभूषा
कंठी – कण्ठमाला
कड़कना – गर्जनम् गर्ज १प०]
कड़ा – (कंगन) कटकः कंकणम्
कड़ा – [सख्त कर्कशःनिष्ठुरः
कड़ाका–ध्वनिः
कड़ाहा–महाभ्राष्ट्ः
कड़ाही–भ्राष्ट्रा, अंबरीषः
कंडीशनल–लृङ् हेतुमत् [त्रि०]
कड़वा–तिक्तं, कटु
कड़वाबोल—कटूक्तिः
कंडेरी–बृहती, कंटकारिका
कढ़ी–क्वथिता, तेमनं, निष्ठानम्
कणक– (गेहूं) गोधूमम्
कतई–सर्वतस् (अ० सर्वथा (अ०)
कत्रण– घास कत्तृणं, सौगंधिकम्
कतरना–कर्त्तनम् (कृत् ६प०)
कतरह—अणु, परमाणु
कतरागया – कर्तितम्
कतराना – कर्त्तनम् (कर्तय्)
कतल – वधः, घातः, मारणम्
कतल करना – हननं, संहरणम्
(हन् २ प० । सम्-हृ १ प०)

कतली – कर्तरी
कतार – पंक्तिः, श्रेणी
कत्था–रक्तसारः, बहुशल्यम्
कथक–[गवैया] चारणः, कुशीलवः
कद–आकारः
कदआवर—आकारवत् [त्रि०] बृह
दाकारः
कदम–(वृक्ष) कदम्बः, नीपः
कदम– पादन्यासः, चरणनिक्षेपः
कदर–मान, प्रतिष्ठा,आदरः
कदर करना–आदरणम्[आ-दृ६आ]
कदरदान—गुणज्ञः
कदरदानी–गुणज्ञता
कंदरा–दरी, गुहा
कदरे–किञ्चत्[अ०]
कदीम
कदीमी } प्राचीनम्, सनातनम्
कद्दू – अलाबूः, (स्त्री०) तुंबी
कदूकस – तुंबीरोपिणी
कदूरत – द्वेषः, द्रोहबुद्धिः, असूया
कंदूरी – (गुलकांख-साग) तुंडी विंबि
का, चिंची
कंधा – स्कन्धः, अंसः
कंधार – गांधारः
कंधी – भित्तिः, कुड्यम्
कंधे का जोड़ – जत्रु (न०)

इस्तिग़ासादायर करना-अभियोजनम् [अभि-युज् १० प०]
इस्तिदुआ-प्रार्थना
इस्तिहकाक-स्वत्वम्
इसरार-वादः
इसलिये-अतएव [अ०] एतदर्थम्
इसी असना में-अत्रान्तरे, (अ०)
इसी तरह-एवम्
इहतियात-सावधानता
इहतिलाम-वीर्यपातः
इहसान-उपकारः, आभारः, अनुग्रहः
इहसानमंद-कृतज्ञः
इहसान मंदी-कृतज्ञता
इहसान फ़रामोश-कृतघ्नः
इहसान फ़रामोशी-कृतघ्नता
इहाता-मण्डलम्, परिक्रमा

ई

ई-लक्ष्मी
ईख-इक्षुः
ईखरस-इक्षुसारः
ईजाद-आविष्कारः
ईजादकरना-आविष्करणम् [आ-विष्-कृ ८ उ०]
ईंट-इष्टका
ईंटकच्ची-आमेष्टका
ईमान-धर्मः, विश्वासः, श्रद्धा
ईमानदार-धार्मिकः
ईमानदारी-धार्मिकता
ईरान-खशः
ईशान-(कौन) ईशानम्
ईसपगोल-[दवाई] शैशिरीकम्, अनुबीजम्

उ

उँ-शिवः
उकड़ करके-टङ्कित्वा
उकड़ता हुवा-टङ्कमानः
उकड़ना-टङ्कनम् (टङ्क १ प०)
उकड़ने के लिये-टङ्कितुम्
उकड़ने लायक-टङ्कनीयं, (त्रि०) टङ्कितव्यम् (त्रि०)
उकड़ने वाला-टङ्ककः, टङ्कितृ, (त्रि०)
उकड़वा करके-टङ्कयित्वा, उट्टङ्क्य (अ०)
उकड़वाता हुवा-टङ्कयत्, (त्रि०) टङ्कयमानः [त्रि०]
उकड़वाना-टङ्कनम् (टङ्क यु)
उकड़वाने के लिये-टङ्कयितुम्
उकड़वाने वाला-टङ्कयितृ [त्रि०]
उकड़वाया-टङ्कितः (त्रि०)
उकड़ा-टङ्कितः [त्रि०] टङ्कितवत् (त्रि०)
उकड़ा हुवा-उत्कीर्णः, उट्टङ्कितः
उकताना-क्लमनम् (क्लम् ४ प० । अव सद् १ प०]

कनस्टेवल – दंडधरः, रक्षकः राज पुरुषः
कनाअत – संतोषः, अल्पव्ययिता
कनात – जवनिका, तिरस्करिणी
कनी – (कपड़े की) दशा, वस्तिः
कनी (रत्नकी) रत्नकणं, रत्नखण्डम्
कनेर – (गुलजंगी) कर्णिकारः परिव्याधः
कपड़ा – वस्त्रम्
कपड़ा – 'नया' नवाम्बरम्
कपड़ा 'पुराना' जीर्णं, पटच्चरम्
कपड़ा – 'पहिना हुवा' निवीतम्, प्रावृतम्
कपड़ा – [टुकड़ा] कर्पटः
कपड़ा — [उमदा] सुचेलकः, पटः
कप्तान – अध्यक्षः
कंपनी – [व्यापार] समवायः, संभूयसमुत्थानम्
कंपनी – (फ़ौज) दलं, सैन्यगुल्मं, सैन्यदलम्
कंपा करके – कम्पयित्वा
कंपा हुवा – कम्पयत् (त्रि०)
कंपाना – कम्पनम् (कम्पय्)
कंपाने के लिये – कम्पयितुम्
कंपाने लायक – कम्पयितव्यम् (त्रि०)
कंपाने वाला – कम्पितृ (त्रि०)
कंपाया – कम्पितः (त्रि०)
कपास – कार्पासः, तुण्डकेरी
कपित्थ — कपित्थं, दधित्थम्
कपूर कचरी – कचूर, शटी
कपूरे – मुष्कः वृषणः, अण्डकोषः, अंडः
कंपोज – अक्षरयोजना
कंपोजीटर – अक्षरसंयोजकः
कंपौंड – समासः
कंपौंडर औषधयोगविद् (पु०)
कफ़ – (बलग़म) कफम्
कफ़ – [हाथका] करतलम्
कफ़नी – कौपीनम्
कब – कदा [अ०]
कब कब – कदा कदा (अ०)
कबका – कदातनः
कब्ज – निबंधः आनाहः
कब्जा – स्वत्वं भुक्तिः, परिभोगः, अधिकारः
कब्जा – (लोहेका) निर्बन्धः
कब्जीयत – गुदग्रहः
कबड्डी – क्रंदनिका
कबड़ा [रंग) कर्बुरः, कल्माषः
कबतक कदावधि,
कब्र – समाधिः, शवगर्तः
कब्रस्तान – समाधिश्मशानम्, समाधिवनम्
कंबल – ऊर्णायुः, कंबलं, रल्लकम्
कबाब – भटित्रं, शूल्यम्
कबाब चीनी – सुराप्रियं, हृत्फलम्
कबीला — कांपिल्यः, चन्द्रः

उकलना – पत्क्‌थनम् । (उद्‌-क्थ् १ प०)
उकसना उद्दीपनं [उद्‌-दीप् ।४आ०]
उकसा – उद्दीपितः [त्रि०]
उकसाना – उद्दीपनम् [उद्‌-दीपय्]
उकालना – उत्क्थनम् [उद्‌-क्थ् १प०
उखड़ना – निर्मूलनम् [निर्‌मूल् १उ०]
उखड़ाना – निर्मूलनम् उत्पाटनम् [निर्‌मूलय । उत्पाटय]
उखली – उलूखलम्
उखाड़ना – उत्पाटनम् [उद्‌-पट्‌१प०
उखालपुखाल – अपूतम्, अपवित्रम्
उगकरके रूढ्वा, प्ररुह्य [अ०]
उगता हुवा – प्ररोहत् (त्रि०)
उगना – प्ररोहणम् (प्र रुह् १प०)
उगने के लिये – रोढुम्
उगने लायक – रोढव्यम्
उगने वाला – रोढृ, रोहिन् (त्रि०)
उंगल – अंगुलिः
उगलना – उद्‌गिरनम् [उद्‌-गृ६ प०)
उगलाना – उद्गारनम् (उद्‌-गारय्)
उगा – गरुढः प्ररूढवत् (त्रि०)
उगाना – प्ररोहणम् [प्र-रोहय्]
उगाहना – (वसूलकरना) उपार्जनम् (उप अर्ज् १प०)
उघड़ना – उच्छदनम् अपाविवरणम् (उद्‌छद १०प०) [अपा-वि-वृ५ प०]
उघाड़ना – उच्छादनम् अपाविवारणम् (उद्‌ छादय् । अपा-वि-वारय्)
उघाड़ा – उच्छादितः [त्रि०] नग्नः त्रि०
उघाड़ू – उच्छादकः
उचका – धूर्त्तः, चोरः
उचकी – धूर्त्ता, चौरी
उंचाई – दीर्घता विशालता
उछलकरजाना – प्लवनम् [प्लु १आ०)
उछलना – [पानीका] उच्छलनम् (उद्‌-छल् १ प०)
उछलना – (आदमीका) प्लवनं (प्लु १ आ०
उछलने वाला – प्लावकः
उछलवाना – (पानीका) उद्धारणं (उद-धारण्)
उछलवाया – उद्धारितम् (त्रि०)
उछला – (पानी) उच्छलितम् (त्रि०)
उछला – (जानदार) उत्प्लुतः (त्रि०)
उछालना – (पानीका) उद्धरणं (उद्‌-धारय)
उछलने योग्य – (पानी) उद्धरणीयम्
उछालनेवाला – उद्धारकः
उजड़ना – रेचनम् (रिच १ प०)
उजर – आक्षेपः, बाधाः, आपत्तिः, विरुद्धहेतुः
उंजर करना – बाधनं (बाध्‌१आ० (खंड् १० प०)
उजला – स्वच्छः, विशदः
उजागर – प्रकाशकः
उजाड़ – शून्यम्
उजाड़ना – श्वयनम् [श्वि १ प०]

कबूतर–कपोतः, कलरवः
कबूतरखाना-विटंकं, कपोतपालिका
कबूतरी — कपोती, पारावती
कबूल– स्वीकारः, आश्रुतः
कबूलियत–स्वीकृतिः
कभी – कदाचित्, (अ०) जातु (अ०)
कदा (अ०)
कभी कभी – कदाकदा (अ०)
कभीकभीहोनेवाला – कादाचित्कः
कभी नहीं – नकदापि (अ०)
कम – न्यूनं, हीनम्, ऊनम्
कमंगर – चित्रकारः
कमंगरी – चित्रकारता
कमंडल – कमण्डलुः
कमजोर – निर्बलः, क्षामः, दुर्बलः
कमतरीन – सेवकः, दासः, अनन्यः
कमंद – (रस्सा) कामंदम्
कमबख्त – अभागः, दुर्भाग्यः
कमर – कटिः
कमरख – [साग] कमरंगः, हिमम्
कमरबंद – कटिबन्धः
कमर बांधे – बद्धपरिकरः
कमर भर – कटिघ्नं कटिमात्रम्
कमरा – आस्पदं, कोष्ठम्
कमाई – उपार्जितम्, लभ्यांशः प्राप्तिः
कमाऊ – उपार्जकः,
कमांडर – (फ़ौज) सेनानीः पु०

कमांडरइनचीफ़ – सेनापतिः
कमान – चापः, कार्मुकं धनुष् (न०)
इषुः (पु०) कोदंडः
कमानदार – चापकारः, धनुराकारः
कमाना – उपार्जनम् [उप-√अर्ज १प०]
कमाल – पूर्णः
कमाल करना – पूरणम् [पूर ३प°]
कमालियत – पूर्णता निर्वृत्तिः
कमिशन – व्यापारियोंका समर्पणम्
कमी – न्यूनता क्षतिः, ह्रासः
कमीज – सुचोलं, कमनीय कंचुकम्
कमीना – नीचः, क्षुद्रः, अधमः, खलः
कमीनापन – खलत्व, अधमता,
नीचता
कमीशन – सभा, श्रेणी, समितिः
समित् (स्त्री०)
कमेटी – सभा, समाजः
कमेटीघर – इन्द्रकम्
कमेस्ट्री – रसविद्या
कयाम – स्थितिः विश्रामः
करके – कृत्वा
कर्ज – ऋणम्
कर्जदार – अधमर्णः
कर्जदिहंदा – उत्तमर्णः
करछी – दर्वि कंबी
करंजुवा – करंजम् नक्तमालम्
करंडी – करण्डी –
कर्णफल – कर्णिका

उजाड़-अतिव्ययकः
उजाला } प्रकाशः
उजियाला }
उठकर-उत्थाय [अ०]
उठना-उत्थानम् उद्-स्था 'तिष्ठ'१प०)
उठाकर-उत्थाप्य [अ]
उठाना-उत्थापनम् [उद्-स्थापय]
उठा वैठी-उत्थानोपवेशः
उड़करके-डयित्वा
उड़ताहुवा-डयमानः 'त्रि०'
उड़द-माषः
उड़ना-उड् डयनम् उत्पतनम् 'डी१ आ० उद्-पत् १ प०'
उड़ने के लिये—डयितुम्
उड़ने के लायक–डयितव्यम् 'त्रि०'
उड़ने वाला–डायकः
उड़ा–उड्डीनः
उड़ाना–उड्डयनम् 'डायय। उद्-पातय'
उड़ी-उड्डीना
उतना–तावत् 'अ०'
उतनाही–तावन्मात्रं, तावद्द्वयसम्
उतनी–तावती
उतनी'मिक़दार'तावतिथः
उत्तर–'दिशा'उत्तरं
उत्तरका–उदीच्यः
उतरना–अवतरणम् 'अव- तृ १प०'
उतरवाना–अवतारणं [अव-तारय्
उतरा–अवतीर्णः
उतराई–शुल्कम्
उतावल–शीघ्रता, क्षिपता
उतावला–सहकारिन् (त्रि०)
उथलपुथल–विपर्यस्तम्,अधरोत्तरम्
उथला–(पानी] गाधः
उद्र–'जानवर' उद्रः
उदास–ग्लानः, उदासः
उदास होना–ग्लायनम् ग्लै१०प
उदासी–'मनकी' ग्लानिः
उदासी–'साधु' उदासीनः
उदूल–प्रतिकूलम् विरुद्धम्
उधड़ना–स्फोटनं, उद्भेदनं [भिद १ आ० स्फुट् ६ प०)
उधर–ततस्
उधार–ऋण
उधेड़ना–उन्मोचनम् 'उद–मुच्६प०
उनचास—एकोनपञ्चाशत [स्त्री)
उनचासवां–एकोनपंचाशः
उनचासवीं–एकोनपंचाशी
उनत्तर–एकोनसप्ततिः
उनत्तरवां–एकोनसप्ततितमः
उनत्तरवीं–एकोनसप्ततितमी
उनतालीस–एकोनचत्वारिंशत्(स्त्री
उनतालीसवां–नवत्रिंशः, एकोन चत्वारिंशः
उनतालीसवीं–नवत्रिंशी, एकोन चत्वारिंशी

करतब–कौशल्यम्, कला
करतब दिखाना–कलनम्, (कल् १०.प०)
करताल–करतालम्, पाणिघः
करता हुवा – कुर्वत् (त्रि०)
करतूत – कार्यम्, कर्म्मन् [न०)गतिः
करधनी – मेखला
करना 'फूल' जंबीरपुष्पम्, मांबीरम्
करना – करणम् (कृ ८ उ०)
करने के लिये – कर्त्तुम्
करने लायक – कर्तव्यम्, करणीयम् (त्रि०)
करने वाला – कारकः, कर्तृ (त्रि०)
कर्बुरा – (रंग) चित्रितः
करलाना–सम्पादनम्[सम्पद१०प०]
करवट – पार्श्वम्
करवट बदलना – पार्श्वपरिवर्तनम् (पार्श्व-परि-वृत्-१ आ०)
करवीर – करवीरः, शतमासः
करा – लोहे आदिका' वलयम्
कराना – कारणम् (कारय)
करामात – चमत्कारः
कराहित – घृणा
कराही – कटाही
करी – छतकी' वलभी, गोपीनसी
करीना – रीतिः प्रथा
करीब-समीपं समया(अ० निकषा(अ०)
करीबन् – प्रायस् अ०
करीर } करील } करीरः क्रकरः
करीर फूल – ग्रंथिलम्, क्रकचम्
करेरुआ – सागर डोडिका,पुमुष्टिका
करेला – कारवेल्ल सुषवीः
करोड़ – कोटिः स्त्री
करोड़ २ – कोटिश अ०
करोड़ वार – कोटिकृत्वस् अ०
करोड़ से जियादा – पर कोटिः
करोड़ों – कोटिशः [अ०)
कल– [पिछला) ह्यस् (अ०]
कल– (अगला] श्वस् 'अ०'
कलई करना–रंगीकरणम्'रंगीकृ ८
कलई कराना–रंगीकारणं रंगीकारय्
कलइकातस्मा–गोधा
कलईगर–रङ्गदः
कलईगरी–रङ्गदता
कलकल–कोलाहलम्
कलका– गुज़रा ह्यस्तनः
कलका – आनेवाला श्वस्तनं,
कलगी – चूढ़ा
कलजुग – कलियुगः
कलंडर – पंजिका, पंजी
कलब – सभा

उनतीस — एकोनत्रिंशत् 'स्त्री'
उनतीसवां — नवविंशः, एकोनत्रिंशः
उनतीसवीं — नवविंशी, एकोनत्रिंशी
उनसठ — एकोनषष्ठिः नवपञ्चाशत् स्त्री
उनसठवां — नवपञ्चाशः
उनसठवीं — नवपंचाशी
उनानवे — नवाशीतिः
उनानवां — नवाशीतितमः
उनानवीं — नवाशीति तमी
उनासी — एकोनाशीतिः, नवसप्ततिः
उनासीवां — नवसप्ततितमः, एकोनाशीतितमः
उनासीवीं — नवसप्ततितमी एकोनाशीतितमी
उन्नीस — एकोनविंशतिः
उन्नीसवां — एकोनविंशः
उन्नीसवीं — एकोनविंशी
उपज — उत्पत्तिः, प्ररूढिः
उपजना — प्ररोहणम् (प्र-रुह १ प०)
उपरना — उपरसं, करवस्त्रम्
उपरांत — ततस् । अ० ।
उपला — करीषम्
उपली — करीषिका
उफरना — संप्रक्षोभनं, [सं — प्रक्षुभ् ४ प०)
उफान — संप्रक्षुब्धः, संप्रक्षोभः
उबटना — अंगरागः उद्वर्तनम्
उबलना — क्वथनं (क्वथ् १ प०]
उबलवाना — क्वथनम् (क्वथय्)
उबलवाया } क्वथितम् (त्रि०)
उबला
उबालना — उद्क्वथनं[उद्-क्वथ् १प०]
उभरना — स्फायनं । स्फाय् १ आ० (उत्सृप् १ प०) प्र — उप — चि ५ उ०)
उभरवाया — स्फायितम् [त्रि०
उभरा — स्फीतः (त्रि०]
उभराना — स्फारणम् स्फारय्
उभारना — उद्दीपनं [उद् — दीपय]
उमंग — आनंदः, उत्साहः प्रमोदः
उमदह — उपादेयं, प्रकृष्टः, उत्तमम्
उमदगी — श्रेष्ठता, उत्तमता
उम्र — आयुष् (न०) अवस्था
उमरदराज — जैवातृकः, आयुष्मत् [त्रि०]
उमेद — (उम्मीद) आशा, प्रतीक्षा
उमेदवार — प्रतीक्षकः, आशावत् (त्रि) अपेक्षकः
उमेदवारी — प्रतीक्षकता
उर्फ — उपनामन् (न०)
उरार — अवारम्
उरार का — अवारीणः
उरारपार — वारापारं
उरार पारका — अवारपारीणः
उरूज — उन्नतिः, अभ्युदयः
उरेदना — विकरणं (वि — कृ ६ प०)
उलका — उल्का

कलवी-(साग) कलंबी, शतपर्वा
कलम-लेखनी, वर्णिका
कलम तराश-(चाकू) छुरिका कर्त्तरिका
कलम दान-लेखनीमञ्जूषा
कलमबंद-लेखबद्धः
कलर-(शोर) ऊपाम्
कलसा-घटिका
कलाई-मणिबंधः
कलाकंद—श्रीखंडम्
कलावत्तू--हेमतन्तुः रजततन्तुः [पु०]
कलाम-वाणी
कलाम करना-भाषणम्(भाष्१प०)
कलाल—शौंडिकः मद्यहारकः
कलाल खाना—गंजा
कलालिन—शौण्डिकी
कलास—कक्षा, श्रेणी
कलिंग—कलिंगः, भृंगः
कली—कलिका, कोरकःकुड्मलं,शुंगम्
कली—(नई) चारकः, जालकः
कली—[फूलीहुई] पुष्पकेतुः पुष्पां-जनम्
कली—(धातु) रंगं, वंगम्
कलील—अल्पः
कलेजा—यकृत्, (न०) कालखंडम्

कलोरो फार्म—मोहकम्
कलोल—क्रीड़ा
कलोल करना—क्रीडनम् [क्रीड् १ प०]
कवर—आवरकः
कंवल—कमलं,पद्मम् उत्पलम् जलजम्
कंवल—[नीला] इंदीवरं, नीलोत्पलम्
कंवल—[लाल] कोकनदं रक्तोत्पलम्
कंवलनी—नलिनी, कुमुदिनी
कंवलदंडी—नालम्
कंवलटिकी—बीजकोषः, वराटकः
कंवल डोडा—पद्मबीजं, करहाटा
कंवल केसर—किंजल्कः, केशरः
कवायद—नियमावली
कवायद-[ड्रिल] वेधनिका, आस्फोटनी व्यायामः
कशिश-आकर्षणम्
कस्टायल-एरंडतैलम्
कस्तूरी-मृगमदः, मृगनाभिः
कसना—बन्धनम् (बन्ध् ९०उ०)
कसब—शिल्पं, कला
कस्बा—नगरम्
कसबी—शिल्पिन् (त्रि०) कलाकुशलः
कसम—शपथम् दिव्यम्
कसमसाना—श्रमः
कसमसाहट—व्याकुलता, अस्वा-स्थ्यम्

उलटना) परिवर्त्तनं
उलटपुलट करना) [परिवृत्१आ०]
उलटा — प्रत्युत [अ०] व्यतिक्रमः, विलोमः विपरीतम्
उलटाना — परिवर्तनम् [परिवर्तय]
उलटी — [कै] वमथुः प्रच्छर्दिका
उलटी करना — वमनम्[वम्१ प०]
उलटा पुलटा — व्यत्ययः
उलाहना — उपालंभः
उल्लूनी — उलूकी, घूकी
उल्लू उलूक, घूकः
उशवा — शणपुष्पिका
उस ... ॥
उसकदर — तावत् [अ०]
उसकेबाद — ततस्
उस जैसा — तादृशः
उस जैसी — तादृशी
उस्तरा — क्षुरः
उसतरह — तथा (अ०)
उसताद — आचार्यः, अध्यापकः
उसतादी — आचार्यता, अध्यापकता,
उसमें — तत्र (अ०)
उस लिये — तदर्थम्
उसवक्त — तद, अ०)
उस सबब से — तत्कारणतस्
उसी तरह — तथा (अ०)

ऊ

ऊ — रक्षा
ऊंगा — अपामार्गः
ऊंघ — प्रमीला तंद्रा
ऊंघना — प्रमीलनम् (प्र मील १ प०)
ऊंच — उत्तमः, उच्चःमान्यः
ऊंचनीच — उत्तमाधमम्
ऊंचा — प्रांशुः, तुंगं, विशालः, उच्छ्रितम्
ऊंचाई — विशालता, उच्छ्रायः उत्सेधः
ऊंचा नीचा — बन्धरम्
ऊंचीसुर — तारः
ऊंचे — उच्चैस्
ऊंट — उष्ट्रः, क्रमेलकः मयः महाङ्गः
ऊंटकाबच्चा — करभः
ऊंटकटेरा — 'दवाई' उष्ट्रकंट, कंटालु
ऊंटनी — उष्ट्री
ऊटपटांग — निर्नियमः,
ऊदबिलाव — जलमार्जारः
ऊदा — (रंग) रक्त पाटलम्
ऊधम — कोलाहलः, उत्पातः
ऊधमी — उत्पातिन् (त्रि०)
ऊपर — उपरि, (अ०) उपरिष्टात् (अ०)
ऊपरका — औपरिष्टः
ऊपर की तरफ — उपरिष्टात् (अ०)
ऊपरी — औपरिष्टः
ऊसर — ऊषरम्

कसर (हिसाव) भागः अंशः
कसर – न्यूनता
कसरत–व्यायामः, परिश्रमः
कसरती–व्यायामिन् (त्रि०) परिश्रम-शीलः
कसाई – वधिकः, हिंसकः
कसाई खाना – आघातं, शूना
कसावल – मण्डूर, मलम्, किट्टम्
कसीरा – (छदाम) काकिणी, पणपादः
कसुंभ – कुसुंभः, वन्हिशिखः
कसूर – अपराधः, मंतुः, आगस्(न०)
कसूरवार – सापराधः
कसेरु (साग] कसेरुः, चिचेंडः
कसेला – अम्लः तिक्तम्
कसोटी – निकषः, शाणः
कसोंदी(साग] कासमर्दः, कासारिः
कहकशां – आंकाशगंगा
कहकरके कथयित्वा
कहकामारना – व्यावहासी (स्त्री०)
कहत – दुर्भिक्षम्, दुःकालम्
कहताहुवा – कथयत् (त्रि०)
करना – कथनम् (कथ् १०प०)
कहनेके लिये – कथयितुम्
कहनेलायक – कथनीयम् (त्रि०]
कहनेवाला – कथकः
कहलाना – व्याहरणम् [वि-आ-हारय]

कहाकरना – कथनम्
कहागया – कथितम् (त्रि०)
कहां – कुत्र (अ०)
कहांका – कुत्रत्यः, कृत्यः
कहांतक – क्वावधिः
कहांसे – कुतस्
कहानी – आख्यायिका, कथा, उपाख्यानम्
कहार – कहारः, – जलहारः
कहारुवा – तृणमणिः
कहावत – अख्यायिका,
कहिर – अत्याचारः
कही (खुदाली) – खनित्रं, अवदारणम्
कहीं – क्वचित् (अ०)
कहीं और – कुत्रान्यत्र [अ०]
का – कः
काई – शैवलः, शेवालः
काक – [बोतलका] कल्कम्
काका – भ्रातृ [पु०] सहोदरः
काकड़ा – कर्कटः
काकड़ा सिंगी – शृंगी, ऋषभः
काकी – भगिनी, सहोदरा
कांख – कक्षः
कागज – कर्गलं, पत्रम्
कागज़ी – पत्रीयं, अदृढम्

ऋ

ऋ-गमनम्
ऋग्वेद-ऋग्वेदः
ऋचा-ऋक् [स्त्री] ऋचा
ऋषि-ऋषिः

ए

ए-दया, आह्वान, घृणा, विष्णुः
एक-एकः
एक- [स्त्री] एका
एक- [नपुंसक] एकम्
एकएक- एकैकं,एकशः [अ०] एकैकशः [अ०]
एक ओर-एकतस् (अ०)
एकजगह-एकत्र [अ०]
एकतरफ़-एकतस् (अ०]
एक तरह- एकधा [अ०]
एकतरह का-ऐकविध्यं, एकविधः
एकतान-एकचित्तं, एकस्वरः
एकदफ़ा – सकृत्[अ०]
एक दिन – एकाहः
एकदिनका – एकान्हिकः
एक दिनकी – एकाह्निका
एकन्नी – एकाणकं
एक वर्ष – एक वर्षम्, एकसँवत्सरः
एकवर्ष का – एकवार्षिकः, एकहायनः
एक वर्षकी – एकवार्षिका
एकवार – एकदा (अ०)
एक महीना-एक मासः
एक महीनेका-एकमासिकः,मास्यः मासीनः
एक महीने की-एक मासिका
एकमुश्ती-एकमुष्टिः
एकरात-एकरात्रिः
एक रात का – एकरात्रिकः
एक रात की – एकरात्रिका
एक राय – ऐकमत्यम्
एकला – एकाकिन् (त्रि०)
एकलाई – एकाकिता
एकलौता – एकमात्रं
एकवार – सकृत् (अ०)
एकवारगी – युगपत् (अ०) तत्क्षणं, एकपदे (अ०)
एकसठ – एकषष्ठिः
एकसठवां – एकषष्ठितमः
एकसठवीं – एकषष्ठितमी
एकसाथ – युगपत् (अ०)
एकाई-एकता
एकाई – (गिन्ती) एकं १
एकाएकी-सहसा (अ०]
एजंट – (गुमाश्ता) प्रतिनिधिः
एजेंसी-[आढ़त] नियोज्यता, कर्तृता
एड़ी – [गिटा] पार्ष्णिः
एडीटर – सम्पादकः
एतवार-विश्वासः

कांग्रस – जनपदसभा
कांच – काचः
काछ – कक्षः
काछा – जांघिकम्
काज – कार्यं
काजल – कज्जलम्
कांजी – कांजिकं, आरनालकं
कांजीहौस – (कैंचिंगहौस) पशुकारागृहम्
काजेटिव – णिजन्तम्
काट – छेदः, भागः
काट करके – छित्वा
काटताहुवा – छिन्दत् [त्रि०]
काटना – छेदनम् [छिद् ७ उ०] (कृन्त् ६प०]
काटना (गांद्का) – उत्कर्त्तनम् [उद्.कृत् ६प०]
काटना (कुत्ता वगैराका) दशनं (दंश १प०)
काटने के लिये – छेत्तुम्
काटने लायक – छेदनीयम्
काटने वाला – छेदकः
कांटा – (कंडा) कंटकः, शल्यम्
कांटा–[तराज] नाराची एषणिका
कांटा–(जौआदिका) शूकः
काटा गया–छिन्नः
काठ–दारु, (न०) काष्ठं
काठ का–[वरतन] काष्ठपात्रम्
काढ़ना–क्वाथनम् (क्वथ्)
काढ़ा–क्वाथम्
कांणा–काणः
कांणी–काणा
कातना–कर्त्तनम् [कृत् ६प०]
कात्र–कृपाणी
कातिक–कार्त्तिकः
कातिल–प्राणान्तिकः, हत्यारः
कान–(हवास) कर्णम्, श्रोत्रम्, श्रवणम्
कानमैल–किट्टम्
कान–(खान) आकरः, निधिः
कान–[सोनेकी] कृतस्वरः
कानफ्रेंस–जातीयसभा, सभा, अधिवेशनम् उत्सवः
कानवोकेशन–सम्मेलनम्
कान्शंस–बुद्धिः, अंतःकरणम्
कान्सोनेंट–व्यञ्जनम्
काना[सरकंडा] धमनः, पोटगलः
कानाफूस–पिशुनः
कानाफूसी–पैशुन्यम्
कानाफूसी करना–पिंशनम् [पिंश् ६प०]
कानून–नियमः, व्यवस्था, प्रक्रिया अधिकारः
कानूनदां–नियमज्ञः
कानूनी–नियमानुसारम्
कांप करके–कम्पित्वा
कांपता हुवा–कम्पमानः (त्रि०)

एतबारी-विश्वासपात्रः
एतराज़-दूषणम्
एतकाद-विश्वासः
एफ़०ए०-आंगल विशारदः
एबलेटिव-अपादानं, पंचमी
एम०ए०-आंगल सागरः
एरंड-[हरनोली] एरंडः, चित्रः
एरफेर-परिवर्तनम्
एरफेरी-परिवृत्तिः
एलची-राजदूतः
एलसी-अतसी, उमा
एलान-घोषणा
एवज़-स्थाने [सप्तमी]
एवज़ी-प्रतिनिधिः, प्रतिभूः
एशिया- (देश) विष्णुक्रान्तः, अरोचनकः

ऐ

ऐ - स्पतणम् , शिवः
ऐ — अये (अ०)भोस् (अ०) हे (अ०)
ऐक्ट — [नाटक] अभिनयः
ऐक्ट — (कानून) विधिः [पु०]
ऐंचना — अनुकर्षणम् (अनुकृप्६प०)
ऐंठना - आकंचनं आ [कुंच६प०]
ऐनक — उपनेत्रम्
ऐब - अवगुणः
ऐबदार - अवगुणिन् (त्रि०]
ऐबी - सदोषः,अवगुणिन् (त्रि०]
ऐयार - चपलः, छलिन्) त्रि०
ऐयारी - चपलता, छलम्
ऐयाश - विषयिन् [त्रि०]
ऐयाशी - विषयः भोगः
ऐश - भोगः,उपभोगः, भोगविलासः
ऐसा - ईदृशः
ऐसी - ईदृशी
ऐसे - इत्थम्

ओ

ओ - स्मरणं,संबोधनम्
ओंगा - (पुटकंडा) अपामार्गः, अधः शल्यः
ओछा - अधीरः अनवस्थितः
ओट - शरणम् आश्रयः
ओंठ - ओष्ठः
ओंठकी नोक - सृक्कणिः
ओढ़ना - आवेष्टनं, आच्छादनं (आ छद् १०उ० । आवेष्ट १आ०]
ओप - दीप्तिः
ओम् - परब्रह्मन् [नं०]
ओर-प्रति (१)

(१) द्वितीया विभक्तिके साथ लगाया जाता है। जैसे रामकेलिये रामं प्रति।

कांपना-कम्पनम् (कम्प् १ आ०)
कांपने के लिये-कम्पितुम्
कांपने लायक-कम्पनीयम् (त्रि०)
कांपने वाला - कम्पकः
कांपा - कम्पितः [त्रि०]
काफ़िर - नास्तिकः विधर्मन्[त्रि०)
काफ़िला - सार्थः, पथिकगणः
काफ़ी - पर्याप्तं, प्रकामं, पुष्कलम्, अ - लम् (अ०)
काफ़ी (फल) अतंद्री, म्लेच्छफलम्
कापूर - कर्पूरः घनसारः
काबिज़ - कृताधिकारः, अधिकृतः
काबिल.- योग्यं
काबिल इज्जत - पूज्यः, तत्रभवत् (त्रि०)
काबिल ऐतबार - श्रद्धेयम्
काबिल तारीफ़ - प्रशंसनीयः, प्रशंसनार्हः
काबुल-कम्बोजः, पह्लवः
काबू-वशं
काबू- [मज़बूत]दृढम्
काबू करना - दर्हणम् [दृह् १प०]
कावेरी [नदीः कावेरी
काम-कार्य,कर्मन् (न०] प्रवृत्तिः
काम खतमकरना-पारणम् ,तीरणं [पार्१०प०। तीर् १० प०]
कामदार - कार्याधिकारिन् (त्रि०) कार्मिकः

कामयाब - कृतार्थः, सफलमनोरथः
कामयाब होना—साधनम् (साध् १० प०]
कामयाबी-कृतार्थता,सिद्धिःसफलता
कामिल - पूर्णः, सिद्धः
कायदा - नियमः, विधानम्
कायम - स्थिरः
कायम [ज़ियादा) - स्थेयस् (त्रि०)
कायम (सब से ज़ियादा). स्थेष्ठः (त्रि०)
कायममुकाम-स्थानापन्नं उपसर्जनम्
कायर - भीरुः.
कारकुन - कार्यपटुः
कारखाना - कार्यालयः,शिल्पशाला
कारगर - सफलं
कार गुजारी - कृतिः, कर्मन् [न०]
कारतूस - सीसकगुलिका
कारवाई - कार्यवाही
कारबार - कार्यजातम्
कारसरकार - राजकार्यम्
कारसाज़ - कार्यसाधकः
कारसाज़ी - कपटमंत्रः, कार्यसिद्धिः
कारामद-उपयोगिन् त्रि० हितकरः
कारीगर - शिल्पिन्(त्रि० कारुः कारुकः
कारीगरी - शिल्पकला

काल – समयः, कालः, वेला
कालकोटरी – क्रूरकारा, तामिस्रम्
कालर – गलपटिका, कण्ठा
काला – कृष्णः श्यामः
कालाकलौटा – अतिश्यामः
काला करना – कृष्णी करणं (१) [कृष्णी कृ ८ उ०]
काला कौवा – द्रोणकाकः
कालाछर – जटामांसी, लोमशा
कालापन – कालिमन् (त्रि०)
कालिगी – इक्ष्वाकुः, कालशाकः
कालिब – देहः, शरीरम्
कालिब बदलना – कायकल्पः
कालीन – कुथा (पु०) (आस्तरणं)
काली मिर्च – वल्लिजं
काली मेंहदी – धुंद्रा, कारंभा
कालेज – विश्वविद्यालयः
काश – ईशकृपया (३ या विभक्ति) इच्छागियत् (अ०) ईश्वरः क्रि पात् [क्रि०]
काशी – काशी, वाराणसी
काशी गोला – [वागपीतकूष्माण्डम्
काश्त – वप्तिः
काश्तकार – वापकः, कृषकः
काश्तकारी – वापकता, कृषकता
कांसा – [कुट] कांस्य, निजघोषः
कासिद – वार्तावहः, वैवधिकः, सन्देशहरः
काही – (किल्क) इक्ष्वालिका
कान्हू – अर्जुनः
काहेको – किमर्थम्
कि – यत् (अ०)
किक – (धुटा) पादप्रहरणं
किंग्री – प्रान्तपट्टी
किचन – महानसं, पाकशाला
कितआ – भागः
कितना – कियत्, कति [२]
कितनाही – कियन्मात्रम्
कितनी – कति (त्रि०)
कितनी – [मिकदार] कतिथः, कतिपयथः
कितने – कति (त्रि०)
कित्ता – भूखंडः
कित्ता [कागजी] – भूमापत्रम्, आदर्शवाक्यम्

१ च्वि – लगाने से इस प्रकार के रूप बनते हैं। कृ, भू, अस्, इन तीन धातुवों से च्वि लगता है च्वि उड़ जाता है पूर्व अकार ईकार बन जाता है और इ, उ, ऋ स्वर दीर्घ हो जाते हैं।

२ बहुवचनान्त है और तीनो लिंगों में इसी तरह रूप रखता है।

खालिस-तत्वम्, सारः
खाली-रिक्तं, शून्यं, रहितम्
खाविंद-पतिः [पु०)
खास-असाधारणं, विशेषः, मुख्यं
खासोआम – सर्वसाधारणम्
खासकर–विशेषतम्
खांसना–कासनं, क्षवनं (कास् १ आ० । क्षु २ प०)
खासा- [कपड़ा] सूक्ष्मवस्त्रं
खासा-पूर्णः, सम्यक्
खासियत विशेषता
खांसी-कासः, क्षवथुः
खिचड़ी–कृशरा
खिंचवा करके-कर्षयित्वा
खिंचवाता हुवा-कर्षयत् (त्रि०)
खिंचवाना-कर्षणम् (कृष् ६ उ०)
खिंचवाने के लिये-कर्षयितुम्
खिंचवानलायक-कर्षयितव्यम्[त्रि०]
खिंचवाने वाला – कर्षकः,कर्षयितृ [त्रि०]
खिंचवायागया – कर्षितः,कर्षितवत् [त्रि०]
खिजाना बाधनं संतापनं [बाध् १ प० । संतापय्]
खिजायाहुवा-उद्विग्नः,सन्तापितः[त्रि०]
खिजाब – कल्पः
खिड़की – प्रच्छन्नं, अन्तर्द्वारं,पक्षकम्
खिताब – उपाधिः
खिदमत-सेवा, शुश्रूषा, परिचर्या
खिदमतगार सेवकः, परिचारकः
खिदमतगारी – परिचारकता
खियानत – छलम्
खिरनी – क्षीरिका, फलाध्यक्षः
खिलअत – मानवस्त्रं, प्रतिष्ठावस्त्रम्
खिल्त – दोषः
खिलना-विकसनम् [वि-कस् १ प०]
खिलना – (भूननेसे) स्फुटितम्, स्फुटनम् (स्फुट् १ प०)
खिलवतगाह – गुप्तस्थानम्
खिला – प्रफुल्लः, विकचः
खिला करके – भोजयित्वा
खिलाड़ी – विहारिन् [त्रि०) क्रीड़कः (त्रि०)
खिलाता हुवा – भोजयत् (त्रि०)
खिलाना – भोजनम् [त्रि०]
खिलाने के लिये-भोजयितुम्
खिलाने लायक – भोजनीयं, भोजयितव्यम् (त्रि०)
खिलाने वाला – भोजकः,भोजयितृ (त्रि०)

किताब पुस्तकं, ग्रंथः
किताब आसमानी – वेदः, निगमः
किधर – कुत्र, (अ०) क्व (अ०)
किन – किम् क. उच्चारणदेखो
किनारा - प्रांतं, तीरं, तटं
किनारा – (इधरका] आवारं
किनारा – (उधरका] पारं
किनारी – तंतुजालम्
किनारीदार – तंतुजालवत् (त्रि०)
किफ़ायत – मितव्ययः, स्वल्पव्ययः
किफ़ायती – मितव्ययिन्, स्वल्पव्ययकः
किमखाब - तंतुवलं, कामिकम्
कियागया - कृतम् [त्रि०]
कियामत - प्रलयः
कियास - अनुमानम्
किरकिट - (खेल) भृंगारी, झिल्लिका
किरच - कृपाणः
किरन - मयूखः, रश्मिः, दीधितिः अंशुः
किरला - कृकलासः
किरली - गृहगोधिका, मुसली
किराना - विविधभाण्डम्
किराया - देयपण्यं, देयमूल्यं, अवक्रयः
किरायेदार – करादत्तः, पणाक्रीतः
किराया देना – अवक्रयणम् [अव. क्री ६ उ०)
किल किला – किलकिलम्
किलआ – दुर्गः प्राकारः
किल्क – (काही) काश्रा, पोटगलः इक्षालिका
किलत – न्यूनता, अभावः, विरहः
किला – (कील) कीलकः, शिवकः
किला (हाथी बांधने का) आलानम्
किवार – कपाटं, अररम्
किश्त – खण्डम्
किश्तवार – खण्डशः (अ०)
किश्ती – स्रवः, उडुपम्
किशमिश – अबीजा, लघुद्राक्षा
किस कदर - कियत् (त्रि०) कति (त्रि
किस तरह - कथम् (अ०)
किस्म – जातिः
किस्म और – विजातिः
किस्मत – भाग्यं, दैवं, अदृष्टम्
किस्म वार - विविधं, यथाजाति (न
किस लिये – किमर्थम्
किस सबब से – कुतस्, कस्मात् कारणात्
किस्सा – कथा
किसान - कृषीवलः, कृषकः
किसी तरह - कथंचन (अ०)

खिलाफ़ – प्रतिकूलम्, असंगतम् विपरीतम्
खिलाया गया – भोजितम् त्रि०)
खिलाड़ करके – विकीर्य, करित्वा
खिलाड़ता हुवा–विकरत् [त्रि०]
खिलाड़ना–विकरणम् कृ किर् ६प०
खिलाड़ने के लिये – विकरितुम् विकरीतुम्
खिलाड़ने लायक–विकरणीयम्
खिलाड़ने वाला–विकारकः, विकरितृ त्रि०
खिलाड़ा गया–विकीर्णः, विकीर्णवत्
खिलौना–क्रीडनकं.क्रीडाद्रव्यम्
खिसकना–सर्पणं, सरणं (सृप् १ प० सृ १ प०
खिसकाना / खिसलाना – सर्पणम्,सर्पय् सारय्
खिसारा–हानिः, क्षतिः
खिसारी – [अनाज] त्रिपुटः,खण्डकः
खींच करके–कृष्ट्वा, संकृष्य अ०
खिंचता हुवा–कर्षत् (त्रि०
खिंचना–कर्षणम् [कृष् ६ प०]
खिंचने के लिये–क्रष्टुम् कर्ष्टुम्
खींचने लायक–कर्षणीयम्, कर्ष्यम् [त्रि०]
खींचने वाला – कर्षकः, कर्षिन्त्रि०
खींचा गया – कृष्टः,कृष्टवत् [त्रि०]
खीर – क्षीरं, पयस् [न०]दुग्धम्
खीरपेरा – क्षीरवटिका, पायसवटी
खीरविदारी–क्षीरविदारी, महाश्वेता
खीरा – त्रपुसं, सुधावासः
खील–लाजः
खीसा – भस्त्रा कोशः
खुजली – कंडूतिः, कण्डुः
खुजलाना – कण्डूयनम् (कण्डूय्)
खुद – स्वयं
खुदकुश – आत्मघातिन् (त्रि०]
खुदकुशी – आत्मघातिता
खुदकुशी करना – आत्महननम् (आत्म् हन् २ प०]
खुदगर्ज – स्वार्थिन् (त्रि०)
खुदगर्जी – स्वार्थपरता
खुदमुख्तार – स्वतन्त्रः
खुदमुख्तारी – स्वतंत्रता
खुदबखुद – स्वयमेव
खुदवा करके – खानयित्वा

किसी कदर-कथञ्चित् [अ०]
किसी कदर नहीं-न कथंचन (अ०]
कीकड़- (बबूल] बब्बूलः, किंकराटः
कीचड़-पंकः, जम्बालः, कर्दमः
कीड़ा-कीटः, कृमिः, जन्तुः
कीडी-कीटिका
कीतरह-वत्
कीना-द्वेषः, द्रोहबुद्धिः, स्पर्धा
कीपर-रक्षकः
कीमत-मूल्यं, वस्नम्, पणम्
कीमत चुकाना- मूल्यनिर्णयनम्
[मूल्य-निर्-नी १ उ०]
कीमती-बहुमूल्यं, महाघनं
कीमया—रसायनम्
कीमयागर-रासायनिकः
कीमा- (मांस का) पिष्टमांसं
कील-कीलकः, शिवक
कुआं—कूपः, प्रहिः, उदपानं
कुआं कच्चा-कूपकः, विदारकः
कुआरा-अविवाहितः
कुआरी- अविवाहिता
कुंगु- कुंकुमः
कुचलना-विमर्दनम् [वि-मृद् १०प०)
कुचला- (दवाई) कुलकः, काकेन्दुः
कुछ– ईषत् [अ०)
कुछइक—किञ्चित् (अ०)ईषत् [अ०]
मनाक् [अ०]
कुछ एक – केचित् (अ०)
कुछ कुछ–किचित् किञ्चित् (अ०)
कुंज- लतागृहम्
कुंजगली-गुप्तवीथिका
कुंजी- ताली, कुञ्चिका
कुंजी लगाना-यन्त्रणम् (यन्त्र् १० प०)
कुट –(धातु) कांस्यम्
कुटुंभ – कुटुम्बम्, परिवारः
कुटल कर [दवाइ) कुष्ठम्
कुटिया
कुटी } – पर्णशाला, उटजः
कुठाली – मूषा
कुंड – कुण्डम्
कुंडल-कुण्डलम्
कुंडी–.दर्वी। कुण्डिका
कुंडी – (कुंडा) शृंखला
कुढ़ना–दुःखनम् (दुःख् १० प०)
कुत्ता-सारमेयः, कुक्कुटः श्वन् पु०
कुत्ता– (शिकारी) विश्वकद्रुः
कुत्ता–(सीखाहुवा) अलर्कः योगितः
कुत्ती – सारमेया, शुनी
कुतुव – पुस्तकम्
कुतुव खाना – पुस्तकालयः
कुतुवनुमा – ध्रुवमत्स्यः
कुतुव फरोश – पुस्तकविक्रयिन्
(त्रि०)
कुंद–[फूल]कुन्दम्सदापुष्पम

खुदवाताहुवा – खानयत् [त्रि०]
खुदवाना – खाननम् (खानय)
खुदवानेके लिये – खानयितुम्
खुदवाने लायक – खाननीयम्(त्रि०)
खुदवानेवाला – खानकः, खानयितृ (त्रि०)
खुदवायागया – खानितः,खानितवत् [त्रि०]
खुदसना – आत्मश्लाघः, विकत्थनम्
खुदाली – (कहीं,खनित्रम् ,अवदारणम्
खुनकी – शीतता, शिशिरता
खुफ़िया – गुप्तं
खुंबी – [साग] शिलीन्ध्रम्
खुमानी – गंभारी, मधुरसा
खुमार } क्षीवता, मत्तता, शौण्डता
खुमारी }
खुर्ज – कण्डूः (स्त्री०) खर्जूः (स्त्री०)
खुर्दबीन – अणुवीक्षणं, सूक्ष्मदर्शिन् न०
खुर्दरा – (कागज वगैर) दन्तुरम्
खुर्दा – अल्पशः अ०
खुर्दाफ़रोश – अल्पशोविक्रयिन् त्रि०
खुर – खुरं, शफं
खुरखुरा – अचिक्कणं
खुरिंदा – भक्षकः, अशरः
खुरपा – क्षुरप्रम्
खुरमा – खर्जूरफलम्
खुराक – आहारः
खुराक – (सुबहकी] कल्यं, जग्धिः [स्त्री०]
खुराक – (सफरी) पाथेयम्
खुराक – [दवाई] मात्रा
खुरी – पार्ष्णिः
खुलना – उद्घाटनं, अपावरणम् (उद्घटय् । अपा-वृ ५ उ०)
खुलवाना – उद्घाटनं, अपावारणम् उद्घाटय । अप-आ-वारय)
खुला – विवृतः
खुला – [साफ] सुबोधः
खुलासा – संक्षेपसारः, सारः संक्षेपः
खुलासा – (बयान) उपवर्णनम्
खुश्क – रूक्षम्
खुश्की – रूक्षता
खुश्की – (पानीकी) अवर्षा
खुश – प्रसन्नः, परितुष्टः
खुशकिस्मत – भाग्यशीलः
खुशकिस्मती – अहोभाग्यम्
खुशखत – सुलेखः

कुंद जेहिन-कुण्ठः
कुदरत-प्रकृतिः, स्वभावः
कुदरतन – स्वाभाविकं
कुनबा – कुटुम्बः
कुनबी कुटुंबिन् [पु० स्त्री०]
कुनाल – कपालः
कुनाली – कपालिका
कुप्पा – कुतूः [स्त्री]
कुप्पी – कुतुपः
कुबड़ा – कुब्जः, गडुलः, न्युब्जः, भुग्नः
कुबड़ी – कुब्जा, भुग्ना
कुम्हार – कुंभकारः, कुलालः
कुम्हारी – कुंभकारी कुलाली
कुर्ता – कंचुकः
कुर्ती – कंचुकी [स्त्री]
कुर्बान – बलिहारः
कुर्बान करना – बलिदानम् [बलि दा (यच्छ्)१प०
कुर्बानी – बलि : बलिदानम्
कुर्की—सर्वस्वहृतिः, द्रव्यहृतिः
कुरकीकरना-सर्वस्वहरणं,द्रव्यहरणं (द्रव्य हृ १ प०)
कुरकी नामा-हरणपत्रम्
कुवारगंदल- कुमारी, तरणिः
कुरसी – वेत्रासनम्
कुरसी नशीन – आसनार्हः
कुरसी नामा – वंशावली,वंशवृत्तः
कुल – [खानदान] कुलम् ,वंशः
कुल – (तमाम) सर्वम्, निखिलम्
कुलत्थी – यावकः, कल्माषः
कुलफ – यंत्र
कुलफी – हिमनाली,नाली, नालिका
कुल्हा – गंडूपः
कुलहा – [टोप] शिरस्त्राणं
कुलाहरा – कुठारः, पर्शुः
कुलहारी – कुठारिका, पर्शुका
कुलांच – (फांद) उत्सर्पः उत्प्लुतिः
कुली – [नौकर] भारवाहः, प्रतिहारः
कुव्वत-शक्तिः
कुशा-कुशा, दर्भः,
कुशादा-विशाला, विस्तीर्णः, पृथुः, विपुलः
कुशादगी-विपुलता, पृथुता
कुश्ती– मल्लयुद्धम्
कुश्तीबाज़—मल्लः
कुसुंभ– [रंग] कुसुंभं, वन्हिशिखम्
कुहराम-प्ररोदः
कुहुक– [कोकिलाकी आवाज़) कोकिलरवः, कलरवः

खुशखती—सुलेखकता
खुशखबरी—शुभसमाचारः
खुशगवार—सुसहः
खुशनवीस—सुलेखकः
खुशनीयत—शुद्धहृदयः
खुशहाल—आनन्दिन् [त्रि०]
खुशहाली—आनन्दता
खुशदिल—हसमुखः, प्रफुल्लः, आनंदिन्, [त्रि०)
खुशनुमा—चारुः, सुन्दरं, मनोहरं, मञ्जुलम्
खुशबू—सुगंधः
खुशबूदार—सुगंधितः (त्रि०)
खुशामद—चाटुकारिता,
खुशामदी—चाटुकारः, संस्तावकः
खुशी—हर्षः, मोदः, सुखं, प्रमोदः, उल्लासः, परितोषः
खुशीहोना—मोदनम् (मुद् १ आ०)
खूटी—नागदंतिका, विहंगिका, भरयष्टिः
खून—रक्तं, रुधिरं
खूनकरना—हननम् (हन् २ प०)
खूनखार—हिंस्रः, घातकः
खूनी—घातकः
खूब—सुष्टुः प्रियं, उत्तमं, सुंदरं, कामम्, गाढं

खूबसूरत—सुदरं, रुचिरं, शोभनं, प्रियदर्शनः
खूबसूरती—सुंन्दरता, रुचिरता,
खूबी—उत्तमता, उत्कर्षः, श्रीः, चारुता,
खेई—(रोग) अतिरोगः क्षयः
खेखस—(ककोड़ा) कर्कोटकी, महाजाली, पीतपुष्पा
खेत—क्षेत्रम्, प्राङ्गणम्
खेती—कृषिः
खेतीहर—कृषकः
खेमा—दूष्यम्
खेलकरके—क्रीडित्वा,
खेलताहुवा—क्रीडत् (त्रि०)
खेलना—क्रीडनम्, लीला, विहारः (क्रीड् १ प०)
खेलनेकेलिये—क्रीडितुम्
खेलनेलायक—क्रीडनीयम् (त्रि०)
खेलनेवाला — क्रीडकः
खेलागया — क्रीडितः (त्रि०) क्रीडितवत् [त्रि०]
खेस (दोहर) क्षौमं, चित्रितक्षौमम्, कर्बुरक्षौमं
खैंचना — संकर्षणम् [सम् कृष् १प०
खैंचवाना — कर्षणम् [कर्षय]
खैंचाखैंची / खैंचातानी — कर्षाकर्षि (अ०)

कूच-प्रस्थितिः
कूंचकरना-प्रस्थानम् (प्र-स्था१आ०)
कूंचा-रथ्या, वीथिः (स्त्री)
कूंची-[सुची] कूचिका
कूंज-(पक्षी)क्रौंचः,कुञ्चः,(कुञ्च पु०)
कूजा-(फूल) कुब्जका, भद्रतरणी,
कूजा-[बरतन] भाजनं
कूटना- कुट्टनं, शकलीकरणं, सवनम् (शकली-कृ ८ उ०)
कूड़ा-संकरः, अवकरा,
कूंडी-वडिशं, मत्स्यवेधनम्
कूदना-[उच्छलना] प्लवनं, झम्पः (उत्सृप् १ प० अभिलंघ् १० उ०)
कृष्ण-कृष्णः वासुदेवः
केउआं-(केमुक साग) केमुकम्
केंकड़ा—कर्कटः, कुलीरः
केंचुवा—गंडपदः, किंचुलकः
केंचुली-निर्मोकः, कंचुकः
केराव-[मटर]कलायः, हरेणुकः,वर्तुलः
केला-कदली, रंभा
केवटी-(दाल) मिश्रितसूपः
केवड़ा-केतकी, सूचिकापुष्पः
केस-(वारदात) घटना
केस-(ग्रामरमें) विभक्तिः
केस-(वाल) केशः, वालः
केसर-काश्मीरः, कुंकुमः केशरः

केसरया } कुंकुमाक्तः
केसरी }
कै—उलटी वमनम्, छर्दिः
कैएक – केचित् १ [अ०] केऽपि २ (अ०) केचन ३ (अ०)
कैंची—कर्त्तरी
कैद - प्रग्रहः उपग्रहः संप्रतिरोधः
कैदफा – अनेकशः (अ०)
कैदी – उपग्रहिन् [त्रि०]
कैफीयत – व्यवस्था, प्रकृत्यन्तरम्
कैलास – कैलाशः
कैसर – सम्राज् (पु०) राजाधिराजः
कैसा – कीदृशः
कैसी – कीदृशी
कैसे—कथम् [अ०]
कैसेही-कथमपि (अ०)
कैसे हो- कथमस्तु [क्रि०]
कोई-कोपि (अ०)
कोई कोई-कोपिकोपि [अ०]
कोई एक-कश्चित् [अ०]
कोका- (पिन) शल्यं,कीलं, कीलकं
कोख—कुक्षिः
कोचवान-सारथिः, सूतः

१—२—३ चित् अपि चन सब विभक्तियों के साथ लगाया जाता है। यह विधान केवल किम् शब्द के लिये है।

खैर—कुशलम्
खैर-(दवाई) खदिरः, कंटकिन् [पु०]
खैरआफीयत - क्षेमकुशलम्
खैरख्वाह-हितैषिन् (त्रि०)
खैरसाल-[लाल] कंटकी, बालपत्रम्
खैरसाल-(सुफ़ेद) खदिरः, श्वेतसारः
खैरात-प्रदानम्
खैरातकरना-प्रदानम् (प्रदा यच्छ् १ प०)
खैरातखाना-दानालयम्
खैराती-भैक्षं, दानीयम्
खैरियत-कुशलं, क्षेमम्
खोआ—(मावा) पायसं, किलाटकं
खोखला / खोखा }निष्कुटं, कोटरम्
खोज—अन्वेषा
खोजना-अन्वेषणम् (अनु-इष् ६प०)
खोट-दोषः, ऊनता
खोंटा-कूटः
खोंटी-नागदंतिका, विहंगिका, भारयष्टिः
खोदकरके-खात्वा, संखाय (अ०) संखन्य (अ०)
खोदताहुवा-खनत् [त्रि०]
खोदना-खननं, उल्लेखनं, उत्कीर्णं [खन् १ प०)
खोदनेकेलिये-खनितुम्
खोदनेलायक-खननीयम्
खोदनेवाला-खानकः, खनकःखनितृ (त्रि०)
खोदागया-खातः,उत्कीर्णः,उल्लिखितः
खोना-अपहरणम्, भ्रंशनं [अप-हारय। भ्रंश् १ आ०)
खोपड़ी-[शिर] कपालः
खोपड़ी-(नारियल) करकः
खोर-(बंदर पशुवोंका) जलपात्रं,द्रोणिः
खोरि-धिक्कारः
खोल-कञ्चुः
खोलना-(दरवाज़ाका) उद्घाटनं (उद्-घट् १० प०)
खोलना [गांठका] विस्रंसनं[वि-स्रंस १ आ०]
खोह-गर्तम्
खौंचा-द्रव्यपात्रम्
खौफ़-भयम्
खौफ़ज़दा-भयार्त्तः
खौफ़नाक-भीषणं,दारुणं, डामरं
खौलना — विक्षुभनम् [वि-क्षुभ्४प०]
ख्याल — संकल्पः,विचारः, मनोरथः

कोट- [किला] दुर्गः, कोटः
कोट- (दखा] वपः
कोट- (वस्त्र) निचोलः, गात्रपं
कोट वंदी-वपोढः
कोठा-कोष्ठः
कोठी—वाणिज्यस्थानं
कोठी- शाक्तिमकी आस्पदं,सद्मन्[न०]
कोड़ा- (चाबुक] कशा
कोढ़—कुष्ठं, श्वित्रम्
कोढ़ी—श्वित्रिन् (त्रि०]
कोतवाल-कोटपालः
कोतवाली-कोटपालिका
कोता – लघुः, अल्पः, अदूरम्
कोता अंदेश-अदूरदर्शिन् (त्रि०)
कोता अंदेशी-अदूरदर्शिता
कोदों- (अनाज) कोद्रवः, उद्दालः
कोन, कोना – कोणः
कोंपल – पल्लवं, किशलयः कली
कोपीन-कन्था
कोयल-कोकिलः, पिकः, परभृतः
कोयला-अतिकृष्णं, शीताङ्गारम्
कोर्स-अभ्यासक्रमः
कोरकी-[जाल]कूटयंत्र,उन्माथः

कोर तुम्मा-उदुंबरः, निर्गुण्डी
कोर तुम्माजड़-इन्द्रवारुणी
कोरा – (नया) नूतनं, अभिनवं
कोरी – (बीसअदद) विंशकं
कोल्हू – तैलपेषणी
कोशिश – यत्नः
कोशिश करना – यतनम् (यत्१ आ०)
कोस – क्रोशः (४ हज़ार हाथका)
कोसना – शपनम् (शप्१प०)
कोहनी – (हरक) कर्पूरः, कफोणिः
कोहनूर – (हीरा) महाहीरकम्
कोहरा – नीहारः, अवश्यायः
कोहिस्तान – पार्वतीयः
कौंचबीज – मर्कटी कपिकच्छुः
कौड – शंखनखः,क्षुद्रशंखः
कौड़ी – कपर्दिका, वराटिका
कौदन – मूर्खः, मूढः
कौन – कः (किम्‌का गर्दान देखो)
कौनसा – कतरः, कतमः
कौम – जातिः ज्ञातिः
कौमी – जातीयः ज्ञातीयः
कौमीयत – जातीयता, ज्ञातीयता
कौर – [दवाई] कृष्णभेदी, चक्राङ्गी

ख्वाजा-नपुंसक कञ्चुकिन् (पु०]
ख्वाब-स्वप्नः
ख्वार-मंदभाग्यः, हताशः, अतिदीनः
ख्वारी-अतिदीनता, मंदभाग्यता
ख्वाहिश-वाञ्छा, कांक्षा, इच्छा, स्पृहा, कामः
ख्वाहिशकरना-वाञ्छनम् [वाञ्छ् १ प०)
ख्वाहिशमंद-इच्छुकः, आकाङ्क्षिन् (त्रि०)
ख्वाहिशमंदी-इच्छुकता

ग

ग-गंधर्वः,
गगरी-कलशी
गंगा-गंगा, भागीरथी, सुरनदी
गंगाजमनी-सिताचितम्, सम्मिलितम्
गङ्गार [जाति] गंगारः,
गच-चूर्णलेपः
गज-(माप) गजः,
गजक-[मिठाई] लावणिकसर्पः
गजट-वार्तापत्रं, वार्ताहरः
गजपिप्पली—करिपिप्पलः
गजब—पीड़ा, उत्पातः, भारः
गजबनाक-उत्पातमयम्, पीड़ामयम्
गजरा-पुष्पमाला,
गजल-छंदस् [न०]
गंजा-अकेशः, विकेशः
गंजीफा-(खेल) गांजिफम्
गटरल कण्ठ्यः(कवर्ग०अ०ह०विसर्ग)
गठकटा — ग्रन्थिभेदकः
गट्ठर-ग्रन्थिलः
गट्ठा-काष्ठभारः
गठरी-ग्रन्थिका
गठवाकरके-ग्रंथयित्वा
गठवाताहुवा-ग्रंथयत् (त्रि०)
गठवाना-ग्रंथनम् (ग्रंथ १ उ०)
गठवानेकेलिये-ग्रंथयितुम्
गठवानेलायक-ग्रंथनीयम् [त्रि०]
गठवानेवाला-ग्रंथकः ग्रंथयितृ[त्रि०]
गठवायागया-ग्रंथितः, ग्रंथितवत् [त्रि०]
गठिया — (रोग)-वातरक्तम्
गड़पना — आत्मसात्करणम् (आत्मसात् कृ ८ उ०)
गड़बड़ — अस्तव्यस्तं अस्पष्टं, अस्फुटं
गड़बड़ी-अस्तव्यस्तता
गडरिया — आभीरी अजापालः
गड़वा — कमण्डलुः, जलपात्रम्
गड़वा — (दूदनीवाला) गलंतिका, कर्कयालुः
गड़ा — (निनावां करकः वरोत्पलः
गंडासा — पर्शुका
गंडेरी — इक्षुखण्ड

कौरी तुंबी – कटुतुंबी, इक्ष्वाकुः
कौल – वचनं, प्रतिज्ञा
कौवा – काकः, वायसः, ध्वांक्षःकरटः अरिष्टः आत्मघोषः
कौवाडोडर – द्रोणकाकः काकोलः
कौवी – काकी वायसी
कौवीडोडर – द्रोणकाकी काकोली
कौसकज्जा – इन्द्रधनुष् (न०)
कौंसल – सभा, समितिः सदस् [स्त्री०]
कौह – (दरख्त) अर्जुनः, ककुभः
क्या – किम् (अ०) कच्चित् (अ०) किमु (अ०) किंसु (अ०) उत (अ)
क्या खूब – साधु२ (अ०)
क्या फिर – किमुत (अ०)
क्यारा – केदारः वप्रः
क्यारी – केदारिका
क्यूं कर – कथम् (अ०)
क्यों – किम् कुतस्(अ०)किमर्थम्,कस्मात्
क्यों कि – यतस् (अ०)
क्लाक – [घड़ी] घटिका, यामनाली
क्लाक – [घंटा] घंटा
क्वाटर – अर्धार्धम् तुर्यभागः

ख

ख – आकाशः विन्दुः सूर्यःसुखम् इन्द्रियं, पुरं शरीरम्
खक्खरी – कर्कटी,चिर्भटी, उर्वारुः
खंगर – विपकशिला
खच्चर – अश्वतरः
खंजरी – डिंडिमः
खजांची – कोषाध्यक्षः
खजाना – कोषः निधिः
खजूर – खर्जूरः
खटकना – आशङ्कनम् [आ-शङ्क१ आ०]
खटपट – रवः कलहः
खटमल – मत्कुणः उष्मजः
खटधुना – वापकः
खट्टा – अम्लः
खट्टादारु – अम्लदाडिमं
खटाई – अम्लं, संधानं
खटिया – मंचकः खट्वा
खटीक – वैतंसिका कौटिकः
खड़खड़ाहट – मर्मरः
खड़ताल – करताली
खंडर – वस्तिनाशः उच्छेदः अवसादनं निर्जनत्वम्
खड़ा – स्थिरः
खड़ा – उत्तमः उत्कृष्टः अकूटः
खड़ाऊं – पादुका
खंडित – खण्डितम् भग्नम्

गढ़ — पुरम्, नगरम्,
गढ़ा — गर्तः, अवटः
गणेश — गणेशः, गणपतिः
गदका — दण्डः
गंद्रफ — गंधरसः, बोलः
गदर — उपद्रवः, सैन्यद्रोहः, अपरागः
गदरमचाना — उपद्रवणम्
(उप-द्रु १ प०)
गंदल — (गांदल) सुशाखम् नालं
सर्षपशाकं, नाडी
गदला — मलिनम् कलुषितम्
गंदा — मलिनं, अशुद्धम्
गंदापिरोजा — श्रीवासः, वृकधपः
गद्दी — सिंहासनम्
गद्दीनशीन — सिंहासनारूढः
गदोरा — आमखर्जुरम्
गंधक — गंधिकं, कौलेली
गंधर्व — गंधर्वः
गधा — गर्दभः, रासभः
गधावान — गर्दभवत् (पु०) रास-
भपालः
गधी — गर्दभी, रासभी
गन — कुल्हारीका) नालम्
गन्ना — इक्षुः रसाला
गन्ना — छड़ी — इक्षुकाण्डः
गन्नामोटा — पुण्ड्रेक्षुः, कांतारकः
गन्नारस — आसवः
ग़नीम — शत्रुः, रिपुः, अरिः,
ग़नीमत — (लूटकाधन) लोत्रं,
लुंठनधनं
गनीमत — (बरकत) अनुग्रहः, वरः,
गप — गल्पः
गपन — आत्मसात्कारः
गपनकरना — आत्मसात्करणम्
(आत्मसात्-कृ ८ उ०)
गपशप — वृथावादः, विचित्रालापः,
विविधकथा
गप्पी — मिथ्यावादिन् (त्रि०)
गफ़लत — असावधानता, प्रमादः
गफ़लती - असावधानः, प्रमादिन् (त्रि०)
ग़बनकरना - आत्मसात्करणम् (आ-
आत्मसात् — कृ — ८ उ०)
गंभीरी — जंभीरः, जंभलम्
ग़म — शोकः, संतापः
ग़मगीन — संतप्तः, शोकाकुलः
ग़मगीनी — शोकाकुलता
गमक — रवः, शब्दः
गम्मत — लाभः
गयागुजरा — अपुनर्लभ्यम्, विगतः
गर्क — निमज्जा

खोडया – [चाकू] कठिनी सितोपलः
खड्डी – सूत्रयंत्रम्
खत – पत्रम्
खतकितावत – पत्रव्यवहारः
खतम—समाप्तम्, पूर्णम्
खतम करना-समापनम्,(सम्-आप् ५ प०)
खत्री-क्षत्रियः
खत्राणी-क्षत्रिया
ख़तरनाक – भयानकम्, भयावहम्
खतरा-भयं, भीतिः
खता – अपराधः
खतावार – दोषिन् (त्रि०)
ख़ंदक – गर्तम्
खपत – व्ययः
खपना—व्ययनं (व्यय् १ प०)
खपना (गुस्से होना) कोपनम् (कुप् ४ प०)
खप्पर-कपालिका, कपालम्
ख़फ़गी – आमर्पः
ख़फ़ा – क्रुद्धः, अप्रसन्नः
ख़फ़ीफ़ – तुच्छम्
खबर – संवादः, समाचारः
खबरदार – सावधानम्
खबरदारी – सावधानता
खंबा – स्तंभः, यूपः
खंबूर – छत्राकम्, भूमिच्छत्रम्

खंभरी-परोष्णी, तैलपायिका
ख़म-वक्रः
खम ठोकना – आस्फोटनम् (आ-स्फुट् १० उ०)
ख़मदार – (टेढ़ा) वक्रिन् [त्रि०]
ख़मीर=मण्डः, किण्वः
खयाल – विचारः, मनोरथः, ध्यानम्
खयालात – विचारजातम्
खयाली – मनोगतम्
खयालीपुलाओ – मनोरथसृष्टिः
खरकार – शब्दः रवः
खरखरा – संघर्षणी
खरगोश – शशः, लंबकर्णः, शूलिन् [त्रि०] बिलेशयः
खर्च – व्ययः
खर्च करना – व्ययनं [व्यय् १प०]
खर्ची – व्ययमात्रा
खरंजा – श्रेणी
खर्व – निखर्वः १००००००००,००
खरबूज़ा=खर्बूजं, दशांगुलम्
खरबूजा – [अंड]मधुकर्कटी, चिर्भटा
खरल—खल्वः, पेषणी
खराई-दीर्घता, मांसुना
खर्रा-सूची, तालिका
खर्राटा-घोषः
खरा-उत्तमं, उज्ज्वलम्

गर्कहोना – निमज्जनम् (नि – मस्ज् ६ प०)

गर्काब / गर्की – निमग्नता

गरगरा – गण्डूषः,

गरगराना – नादनं. गर्जनम् (नर्द १ प० । गर्ज् १ प०)

गर्ज – प्रयोजनम्, अभिप्रायः

गर्ज – नादः, गर्जः

गर्जकरके – गर्जित्वा

गर्जताहुवा – गर्जत् (त्रि०)

गर्जना – गर्जनम् (गर्ज् १ प०)

गर्जनेकेलिये – गर्जितुम्

गर्जनेलायक – गर्जनीयम् (त्रि०)

गर्जनेवाला – गर्जकः

गर्जमंद – सप्रयोजनः

गर्जमंदी – सप्रयोजनता

गर्जा – गर्जितः (त्रि०)

गर्द – धूलिः

गर्दन – ग्रीवा

गर्दनभर – कण्ठघ्नम्, कण्ठमात्रम्

गर्दान – रूपाख्यानम्, उच्चारणम्

गर्दिश – धूलिप्रपातः, व्याकुलता

गर्म – उष्णम्, तप्तम्

गर्मागर्म – तप्तोष्णम्

गर्मी – उष्णता, ग्रीष्मः

गर्मी – (दोष) पित्तम्

गरमाला – मलेपः

गरमानेवाल – मलेपकः

गरारा – (गलूली) आचमनम् (आ – चम् १ प०)

गरारा – (तंबा) जांघम्

गरारी – (फिरनी) चक्रिका

गरीब – अकिञ्चनः, दीनः, दरिद्रः, निधनः

गरीबनिवाज – दीनदयालुः

गरीबनिवाजी – दीनदयालुता

गरीबी – दीनता, निर्धनता

गरुड़ – गरुडः, हरिवाहनः, सुपर्णः, पक्षिराजः

गरूर – गर्वः, अभिमानम्

गरूब – अस्तम्

गलखप्पा – अर्धचन्द्रम्

गलगल – [फल] जम्भःबीजपूरः

गलत – अशुद्धं संदिग्धं

गलतफहमी – भ्रमज्ञानम्

गलती–भ्रमः, भ्रांतिः

गला–वृंदः व्रातं

गला–[अनाज] अन्नम्

गला – [illegible]

खराद–भूमियंत्रम्
खराब–अपकृष्टः, दुर्गतः, दूषितः
खराबी–विगतिः, दुर्गतिः
खरीद–क्रीतिः क्रयः
खरीद करके–क्रीत्वा, परिक्रीय
खरीदता हुवा–क्रीणत्, क्रीणानः (त्रि०)
खरीदना–क्रयणम् (क्री ६ उ०)
खरीदने के लिये–क्रेतुम्
खरीदने लायक–क्रयणीयम्
खरीदनेवाला–क्रायकः, क्रेतृ [त्रि०] क्रयिन् [त्रि०]
ख़रीद फ़रोख्त–क्रयविक्रयम्
ख़रीदा गया–क्रीतः
खरीदार–क्रेतृ (त्रि०)
खरीदारी–क्रायकत्व, क्रेतृत्वम्
खल–(तिलोंकी) खलं, तिलखली, पिण्याकं
खलक–मंजा
खलड़ी–त्वचा
खलबली–अमवंध
खलल–संक्षोभः, विप्लवः, प्रत्यूहः, विघ्नः, भंगः
खललडालना–संक्षोभनम् (सम्-क्षुभ् ४ प०)
खलास–मुक्तः, स्वाधीनः
खलासी–मुक्तिः, स्वाधीनता
खलासी–(नौकर) दूष्ययोजिन् (त्रि०)
खलियान–आयतनम्, निवेशनम्
खलीक–सभ्यः, सन्मानिन् (त्रि०)
खलीज–खातं, उपसागरम्
खलेल–रिक्तता
खस–उशीरं, समगंधिकं
खसखस–(खसखस) खसबीजं, खाखसतिलः
खस्ताहाल–आहतदशा
खस्ता–(मिठाई) स्निग्धम्
खसम–पतिः(पु०) स्वामिन् (त्रि०)
खसलत–स्वभावः, प्रकृतिः
खस्सी–(जानवर) छिन्नमुष्कः, निर्बृषणः
खस्सी (परनाला) श्वेतः, श्वेतमणालः
खसूसन्–विशेषतः
खाई–खेयं, परिखा
खाऊ–औदरिकः
खाक–भस्मन् [न०]
खाकरके–खादित्वा, भक्षित्वा, भुक्त्वा
खाकसार–दासः

गलादबाना-अर्धचन्द्रदानम्
(अर्धचन्द्रदा (पच्छ- १प०)
गली-वीथिका, रथ्या, प्रतोली
गलीचा-कुथः, आस्तरणम्
गलीज़ – मलिनं, कचरं,अपरिष्कारः
गलेलगाना-श्लेषणम् (श्लेष४प०)
गवन-[गौन] शाटी कटिवस्त्र शाटिका
गवन-[जनाना]अर्धोरुकं,चंडातकं
गवर्नमेंट-राज्यं,राजशक्तिःराजसत्ता
गवर्नर अधिपः
गंवाना-भ्रंशनम् अपहारणम्
(अप हारय । भ्रंश १ आ०]
गवार-असभ्यः
गवारपन-असभ्यता
गवारा-सहनम्
गवारा करना-सहनम् सह१प०
गवाला-[छेरू) गोपः
गवाह—साक्षिन् (पु०)
गवाहझूठा— कूटसाक्षिन्
गवाही—साक्षिता
गश-मूर्छा
गश्त-भ्रमः
गश्त लगाना-भ्रमणम् (भ्रम् १ प०)
गश्तीवान= विश्वद्र्यञ्च् (पु०)सर्वगः
गश्तीवान-(स्त्री] विश्वद्रीची,सर्वगा
गहरा-घनं,सान्द्रं, गंभीरम्
गहरा- [पानी] अगाधः,अतलस्पर्श
गाकरके-गात्वा
गागर-कलशः
गांगेरन गांगेरुकी, नागबला,
गाजनी- [मट्टी] धवलमृत्तिका
गाजर-गार्जरं, पिंगमूलं, गृञ्जनं,
गांजा- [घास] गांजं, संविदामंजरी
गांठ- ग्रंथि, पर्वन्, [न०] पः
गांठकट – ग्रंथिभिद् (पु०]
गांठका- ग्रंथीयम्
गांठना-ग्रन्थनम् ग्रंथ् १ उ०]
गाडना-निखननं [नि-खन् १ प०)
गांडल- (गंदल] सुशाकम्, नाडी
सर्षपशाकम्, नालम्
गाड़ा गया- निखातम् (त्रि०
गाड़ी-शकटं
गाड़ी- (बंद) कर्णीरथः, प्रवहणं
गाड़ी- (बैलोंकी गंत्री
गाड़ी जोतना- उपश्लेषणम् (उप्
श्लिष् १० उ०)
गाड़ीवान- वाहकः, शकटवाहकः
गाढ़ा- गाढं,घनं, सान्द्रं,
गाढ़ापन- गाढता
गाता हुवा- गायत् (त्रि०)
गान – गीतं [त्रि०]
गाना- गायनम् (गै १ प०]
गाने के लिये – गातुम्

खाका - पाण्डुलेख्यं, वाह्यरेखा
खाकी - [रंग] धूसरम्
खाज - [खरसी] खर्जूः [स्त्री] कण्डूतिः
खाजा - [मेवा] खाद्यफलम्, खाद्यम्
खाट - खट्वा
खांड - शर्करा, सिता
खांडकच्ची - फाणितं
खाड़ी (खलीज) उपसागरं, खातं
खाडी - (ठोड़ी) चिबुकं
खाता - (वही) गणनापुस्तकं, लेखापुस्तकम्
खातमा - समाप्तिः अन्तः
ख़ातमा - (गीत, कथाका)आभोगः
खाताहुवा - खादत्,भक्षयत् (त्रि०)
खातिर } सत्कारः, पूजा,
ख़ातिरदारी } आतिथ्यम्,सत्कारता, उपचारः
खातिरख्वाह - मनोनीतम्
खाद - (खेतों का] सारः, भूलेपः
खानगी - कुलीना, कुलवती
खानदान - कुलं अभिजनम्
ख़ानदानी - कुलीनः
ख़ानसामा - बल्लवः, सूदः
ख़ान्ना - (संदूक) कोषः
ख़ाना - गृहम्, गृहस्थं

खाना - खादनं, भक्षणं, भोजनं, अदनम् [खाद् १ प०)
खाना खराबी - गृहदोषः
खानातलाशी - गृहान्वेषा,गृहगवेषणा
खाना बदोश - अगृहः, निर्निकेतः
खाना बरबादी - गृहविनाशः
खाना शुमारी - गृहकलना
खाने के लिये - खादितुम्
खाने लायक - खादनीयम्, खादितव्यम् (त्रि०)
खानेवाला - खादकः, भक्षकः
खाम - आमः,अपक्वः
खाम खयाल - अपक्वविचारः,
ख़ामख़याली - मनोराज्यम्
ख़ामोश - शांतः,तूष्णीकः
खामोशी - तूष्णीं,शांतिः
खायागया - खादितम् (त्रि०)
खार - क्षारं, क्षारमृत्तिका
खारा - लवणं
ख़ारिज - निष्कासितः, उत्सन्नः,उत्सादितः (त्रि०)
ख़ारिज़ करना - निष्कासनम्[निस् कास् १० प०]
ख़ालसा - तत्वम्, विशिष्टः
ख़ालिक - पालकः, सर्जकः

ने लायक...गेयम्, गातव्यम् त्रि०
ने वाला-गायकः
ाफ़िल—प्रमत्तः, असावधानः
ाफ़िल होना-प्रमादनम् [प्रमद् ४प०
ाय-गौः, सुरभिः धेनुः [स्त्री]
ाय[पुच्छेन] समांसमीना
ायत्री-गायत्री
गायब-लुप्तं, अलक्षः, अन्तर्हितः
गायागया—गीतम् [त्रि०]
गार—गुहा, कंदरा, गह्वरं, बिवरम्
गारंटी-बंधकम्, प्रतिभाव्यम्
गार्ड(चौकी) परिचरः, रक्षिवर्गः
गार्ड-रक्षकः, पार्ष्णिग्रः
गारत-विनाशः, ध्वंसः, निषूदनं
गारत होना – ध्वंसनं (ध्वंस् १आ०
गारद – परिचरः, रक्षिवर्गः
गारा – गारः, घारः
गाल – कपोलः, गण्डः
गालबजाना – प्रजल्पनम् [प्रजल्प् १ प०
गालबन – कदाचित्, स्यात्, संभवतस्
गालिब-बलवत् [त्रि०]
गाली – गारी, शापः परीवादः
गालीगलौज – अश्लीलं परीवादः
गाली देना – परिवदनम्, अवगोर। णम्(परिवद् १ प०

गांव – ग्रामः संवसथः
गांव – [भीलोंका] पक्कणःशवरालयः
गावतकिया – सशिरोधानम्
गावदम गोपुच्छाकारः,
गाह – अनाजका खलम्
गाहकीलठ – खलेदारुः मेधि
गाहना – निष्तुषीकरणं, पवनम्
(निस्तुषीकृ ८उ० १ आ०
गाहया हुवा – स्त्रदम् आवसितम्
गिजा – आहारः
गिट्टा – गुल्फः घुटिकः
गिड़गिड़ाना – गद्गदः प्रार्थना
गिन्ती – गणना
गिन करके – गणित्वा गणयित्वा अ०
गिनता हुवा – गणयत् त्रि०,
गिनना – गणनं गण १०प०
गिननेके लिये – गणयितुम् अ०
गिननेलायक – गणनीयम् गणयितव्यम् त्रि०
गिनने वाला – गणकः
गिनागया – गणितः त्रि०
गिरकरके – पतित्वा
गिरगिट – कृकलासः सरटः
गिरगिटी – कृकलासी सरटी

गिरता हुवा- पतत् (त्रि०)
गिर्द-समंतात् (अ०)
गिर्दनली - राजवृक्षः, शम्याकः
गिर्दनिवाह - परिवेषणम्
गिरना - पतनम् (पत् १ प०)
गिरने के लिये - पतितुम्
गिरनेलायक-पतनीयम्, पतितव्यम् (त्रि०)
गिरने वाला - पातकः, पतितृ(त्रि०)
गिरवाना - पातनम् (पातय्)
गिरवी - आधिः, बन्धकं, आधमनं
गिरवी - (मियादी) कृतकालाधिः
गिरवी - (बेमियाद अकृतकालाधिः
गिरवी-(ज़ेवर आदि) गोप्याधिः
गिरवी - [मकानआदि] भोग्याधिः
गिरह - ग्रन्थिः
गिरा - पतितः, पतितवत् [त्रि०]
गिरा करके - पातयित्वा
गिराता हुवा - पातयत् [त्रि०]
गिराना - पातनम् (पातय्)
गिराने के लिये—पातयितुम्
गिराने लायक - पातनीयम्, पातयितव्यम् [त्रि०]
गिराने वाला - पातकः, पातयितृ [त्रि०]

गिराया गया - पातितः, पातितवत् [त्रि०]
गिरास - ग्रासः, कवलः
गिरिफ़्तार - निरुद्धः, धृतः
गिरिफ्तार करना - निरोधनं (नि रुध् ७ प० । धृ १ प०]
गिरिफ़्तारी - निरोधः
गिरी - बीजम्
गिरोह - गणः, निकरः, वृन्दः, सङ्घः समूहः
गिल गिला - पिच्छिलः
गिल्ट - सुवर्णमण्डितं, स्वर्णरंजनम् स्वर्णच्छदः, सच्छदः
गिल्ट करना-छदनम् (छद् १० उ०)
गिल्टी - सुवर्णरंजितम्, सच्छदम्
गिलम् - अवस्तारः
गिलहरी—चमरपुच्छः
गिलाफ़ - आवरकः
गिलाफ़करना-आवरणम्(आ-वृ५प०)
गिलास - कंसः, पानभाजनम्
गिलोय - गुडूची, सोमवल्ली
गिसनी - [कलई] मणिबन्धः
गीदड़ - शृगालः, जम्बुकः, फेरुः
गीदड़ी—शृगाली- जम्बुकी
गीध - गृध्रः, दाक्षाय्यः

चूर-(खाटकी) चूतम्
चूर } चूर्णम्
चूरन }
चूरमा-पिष्टचूर्णम्
चूरी-शंखवलयः, वलयः
चूरीगर-शांखिकः, कांचिकः
चूरीदार-वलयाकारः
चूल्हा-चुल्लिः, अंतिका
चूसना-चूषनम् (चूष् १ प०)
चूसा-चूषितम्
चूसने लायक-चोष्यं
चूहड़ा-मलापहारिन् (पु०)
चूहड़ी-मलापहारिणी
चूहा-मूषिकः, आखुः, उंदरुः
चूहादान-मूषिकोन्माथः
चूही-मूषिकी
चेचक-मसूरिका
चेतर-चैत्रः
चेन-(ज़ंजीर) शृंखला
चेलकी-रशना, मेखला
चेहरा-बिम्बः
चैन-सुखं
चैलेंज-प्रचारणम्
चोग-खगभोज्यम्

चोंच-चञ्चुः, त्रोटिः
चोट-प्रहारः
चोट लगाना-प्रहरणम् (प्र-हृ१प०)
चोटका दाग़-अष्ठीला
चोटी-शिखा, चूड़ा
चोटीदार-शिखावत्
चोबदार-यष्टिधरः
चोर-चौरः, तस्करः, स्तेनः
चोरी-स्तेन्यं, चौरिका
चोलमोगरा-कुष्टवेरी, महागदः
चोला-चोलः
चोली-(औरतों की) कूर्पासः, चोलः, कुचआवरणम्
चोली(साज़की) निचोलः
चौक-शृंगाटकं, चतुष्पथः
चौंकना स्फुरणं (स्फुर् १ प०)
चौकस-सावधानम्
चौका-पाकशाला, महानसम्
चौंकाना-स्फोरणं (स्फोरय्):
चौकी-काष्ठपीठिका
चौकीदार-यामिकः, रक्षकः,स्थानपालः
चौकीदारी-यामिकता, रक्षकता
चौखट-देहली

गीधनी-गृध्री
गीला - आर्द्रः
गीला होना - क्लेदनं [क्लिद् ४प० । तिम् ४ प०]
गुगुल - गुग्गुलः, कौशिकः
गुच्छा - स्तवकम्, गुच्छकम्
गुच्छी - (रछाणी) क्षुरधानम्
गुच्छी-(मोतियों की] मुक्तापङ्क्ति
गुच्छे दार - स्तबकितम्
गुजरना - अतिक्रमणम्, अवस्कंदनम् गाहनम् । क्रम् १ प० । गाह् १आ०
गुज़रा - व्यतीतः,, अतिक्रान्तः
गुज़रात - गुर्जरः
गुंजा - गुंजा
गुंजायश - स्थानं, योग्यता
गुंजायशी - मितव्ययिन् [त्रि०) अल्पव्ययिन् [त्रि०]
गुज़ारिश - विनयः, अभ्यर्थना
गुज़ारिश करना - अभ्यर्थनम् अभि अर्थ् १० प०
गुटका - पुस्तिका
गुठली - बीजम्
गुड़ - गुडम्
गुड़का हलवा - फाणिः
गुड़गुणी - (हुक्के की) धूम्राधिः (पु०)
गुडल - द्रव्यं, सामग्री
गुंडा - दुष्टः, शठः, पामरः
गुडाखु - गुडफलजः
गुडिया - आतापी
गुद्डी - [कपड़े की) पञ्चाली
गत - वेणी
गुंथना-गुम्फनम्
गुथवा करके - गुम्फयित्वा
गुथवाता हुवा - गुम्फयत्
गुंथवाना - गुम्फनम् (गुम्फय्]
गुथवाने के लिये - गुम्फयितुम्
गुथवाने लायक-गुम्फनीयम् त्रि०
गुंथवाने वाला - गुम्फकः
गुंथवाया गया }
गुथा गया } गुम्फितम्, संदितं दव्यं ग्रंथितम् (त्रि०]
गुदड़ी-कन्था
गुनगुना-शीतोष्णम्
गुना-गुणः
गुनाह-पापम्, अघम्, एनस् (न०) किल्बिषम्
गुनाहगार-पापः, पापिन् [पु०]
गुपचुप-मौनम्
गुफ्तगु-संलापः, कथनोपकथनं
गुफ़ा-कंदरा, दरी, निकुंजः
गुफ़ा- (कुदरती) गुहा

चौखटा-देहली।
चौखूंटा-चतुष्कोणः
चौगान-क्रीड़ा, खेला।
चौगिर्द-समन्तात् (अ०)
चौगुना-चतुर्गुणः
चौड़ा-विशालः, पृथुः
चौड़ाई-परिणाहः, पृथुता
चौड़ा ज़ियादा-प्रथीयस् (वि०)
चौड़ा सबसे-प्रथिष्ठः (वि०)
चौड़ीसड़क-प्रतोली।
चौतह-चतुस्तकम्
चौतही-चतुस्तला।
चौतीस-३४ चतुस्त्रिंशत् (स्त्री०)
चौतीसवां-चतुस्त्रिंशः
चौतीसवीं-चतुस्त्रिंशी
चौथा-चतुर्थः
चौथाई-चतुर्थांशः
चौथा हिस्सा-चतुर्थः, चतुर्थांशः
चौथी-चतुर्थी
चौदां-१४ चतुर्दश
चौदवां-चतुर्दशः
चौदवीं-चतुर्दशी
चौधराई-मुख्यता, प्रधानता
चौधरी-मुख्यः, प्रधानः

चौपट-विनाशः, विनष्टः, नष्टः
चौपट करना-नाशनम् [चु १०]
चौपड़-अक्षक्रीड़ा, चतुरंगः
चौपतिया-[साग] चाङ्गेरिकः, शिति-वरः, वर्णकः
चौपाई-खट्वा, मञ्चः
चौपाई-(छन्द) चतुष्पदी
चौपाया-पशुः
चौमुखा-चतुर्मुखः
चौबारा-(माड़ी) चन्द्रशाला
चौबीस-२४ चतुर्विंशतिः
चौबीसवां-चतुर्विंशः
चौबीसवीं-चतुर्विंशी
चौरचपट-गलितः, दुर्गलितः
चौरस-चतुर्भुजः
चौरा-पृथुः, विपुलः, परिणाहः
चौराई-पृथुता, परिणाहता
चौराह-संस्थानम् चतुष्पथम्
चौलड़ा-चतुर्यष्टिकः
चौलाई-(मरीची साग) तण्डुली, का-दिना, तंडुलांगः
चौसठ-६४ चतुःषष्टिः
चौसठवां-चतुःषष्टितमः
चौसठवीं-चतुःषष्टितमी

गुब्बारा-विमानम्
गुम-गुप्तः
गुमटी-गोमती वस्त्रं
गुमराह-भ्रांतः
गुमराही-भ्रांतिः
गुमहोना-गोपनम् [गुप् १ प०]
गुमान-संदेहः,
गुमाश्ता- प्रतिनिधिः
गुर्णवी-सुवादिका
गुर्ज—तोमरः, गदा
गुरदा-वृक्कः
गुरधानी- (मिठाई मिष्टलाजम्
गुरु-आचार्यः, गुरुः
गुल- (अग्निका अंगारः
गुल- (फल) पुष्पं, कुसुमं, प्रसूनं
गुल अब्बासी-सुपुष्पम्
गुलकंद- पुष्पधानं
गुलकांख-(कंदूरी: बिली, तुण्डिकेरी, रक्तफला
गुलखैरा—खदिरपुष्पम्
गुलगुला- (भोज्य) वेशनम्, घृत वटिका तैलवटिका
गुलजंगी— (कनेर) कर्णिकारः, परिव्याधः
गुलदस्ता—गुच्छकं
गुलदुपहिरी-[फूल]बंधूकः,बंधुजीवः
गुललाला- रक्तपुष्पं
गुलशोर-कोलाहलः कलकलः
गुलसोसन-नीलपुष्पं
गुलाब- (फूल) प्रपौंडरीकं, पौंडर्यम् कर्णिका,
गुलाब-(सुफेद] सेवती शतपत्री,लाक्षा चारुकेशरा
गुलाबी-पाटलं
गुलाम-दासः
गुलामी-दासत्वं, दासता ।
गुलाल-पटवासकं भक्ततारुणी
गुल्लाह-गुलिका
गुलिह- विप्रुषः, प्रवालः
गुलू- कण्ठं, गलः
गुलूबंद-गलबंधः
गुलेल-चापः,धनुष् (न०) गुलीचापः
गुलेला—मृत्तिका, गुली
गुसल-स्नानं
गुस्ताख-धृष्टः
गुस्ताखी—धृष्टता,अपलज्जा
गुस्सा-क्रोधः,अमर्षः कोपः
गुस्सैला—क्रोधिन् (पु०)
गुह्य-गुह्यम्
गूंगा-मूकः

छ

छ-निर्गमम्, छिद्रं, चञ्चलम् शुद्धम्
छकड़ा-शकटिका
छकना-भक्षणं (भक्ष् १प०)
छका-षष्ठाङ्कः
छछूंदर-गंधमुखः
छछूंदरी-गंधमुखी
छजे-शूर्पम्
छजलगाना-उत्करणम्, निष्करणम् (उद्-कृ(किर्)६प०)
छज्जा-वलीकः, नीध्रम्
छटवाना-अवच्छेदनं (अव-छिद् ७उ० (लू ९ उ०)
छटाई-अवच्छित्तिः
छटांक-पलम्
छटांक छटांक-पलशः (अ०)
छटांकभर-पलमात्रम्
छटी-षष्ठी
छटेछमाहे-कदा कदा (अ०)
छठ षष्ठी
छठा-षष्ठः
छठा हिस्सा-षाष्ठः, षष्ठांशः
छड़ना-अभिषवणम् (अभि-सु षु)५उ०
छड़ा-(दारु) गुलिका, अस्त्रं, नूपुरं
छड़ी-यष्टिः, वेत्रम्
छड़ीदार-याष्टिकः, वैत्रिकः

छत-छदिः, पटलं, अन्तरिक्षम्
छत बनाना—छदनम् (छद् १० उ०)
छतरी-छत्रिका
छत्ता-(मक्खि का) मधुकोषः
छत्तीस-३६ षट्त्रिंशत् (स्त्री०)
छत्तीसवां-षट्त्रिंशः
छत्तीसवीं-षट्त्रिंशी
छत्री-क्षत्रियः
छदाम(पसीना) पणपादः
छन्ना-पात्रं, भाजनम्
छप्पन-५६ षट्पंचाशत् (स्त्री०)
छप्पनवां-षट्पंचाशत्तमः
छप्पनवीं-षट्पंचाशी
छपना-मुद्रणम् (मुद्र् १० प०)
छप्पर-शरच्छदिः
छप्परखट-वितानखट्वा
छपवाना-मुद्रापणं (मुद्रापय्)
छपा-मुद्रितम् (त्रि०)
छपाई-मुद्रितिः, मुद्रापणम्
छब-सौन्दर्यम्
छबील-प्रपा, पानीयशाला
छबीस-षड्विंशतिः
छबीसवां-षड्विंशः
छबीसवीं-षड्विंशी

गूंगाबहिरा-एडमूकः
गूंज-प्रतिध्वनिः प्रतिश्रवः प्रतिरवः प्रतिशब्दः
गूंजना-प्रतिरवणं गुञ्जनं (प्रति-ध्वन १० प० गुञ्ज् १प०)
गूजर-गोपालः
गूजरी-गोपाली
गूथकरके-गुम्फित्वा
गूथताहुवा-गुम्फत् (त्रि०)
गूथना-गुम्फनम् (गुम्फ् ६प०)
गूथनेकेलिये-गुम्फितुम्
गूथने लायक-गुम्फनीयम् (त्रि०)
गूथने वाला-गुम्फकः
गूथागया-गुम्फितम् (त्रि०)
गूदा-मज्जा सारः
गूंधना -(आटाका) मर्दनं म्रदनं, (म्रद् १ प०.)
गूलर - उदुंबरः, जतुफलं
गूंह - विष्टा, शमलं, पुरीषं
गेंडा - गंडकः, खड्गिन् (पु०)
गेंडा - (मादा) गंडकी, खड्गिनी
गेंद - कंदुकम्
गेंदा - (फूल) शारदा, पद्मा
गेरु - गवेरुकः, गैरिकं
गेंहू -(कणक) गोधूमं
गैब - गुप्तं,नष्टं,तिरोहितं
गैबत - गुप्तिः, रहस्यपालनं
गैर - भिन्नः, अन्यः, इतरः
गैरआबाद - शून्यम्
गैरआबादखेत - खिलं, अप्रतिहतं
गैरत - लज्जा, व्रीड़ा,
गैरमनकूला - अचरसंपत्ति
गैरमोतबर - अमान्यः
गैरहाजिर - अनुपस्थितः
गैरहाजिरी - अनुपस्थितता
गैलरी - अलिन्दः, मथसनाथः
गैस - विद्युत् (स्त्री०)
गोकि— (बावजूदे) किंतु, यद्यपि तथापि
गोखरू—[भरट] गोक्षुरः,त्रिकंटका
गोट-[गोल] गुणवटिका,सूत्रवटिका
गोटा-सूत्रधानं
गोटी-सूत्रधानिका
गोटी-[चौपड़ की] शारः
गोता- अवगाहः, निमज्जा
गोताखोर- अवगाहकः, निमज्जकः
गोता खोरी- अवगाहकता
गोता लगाना- अवगाहनम्
गोद-अंकः
गोंद-निर्यासः
गोंददानी-- निर्यास पात्रम्
गोदड़ी-कन्था

छमछम–शिंजितम्
छयालीस–षट्चत्वारिंशत् (स्त्री०)
छयालीसवां–षट्चत्वारिंशः
छयालीसवीं=षट्चत्वारिंशी
छयासठ—षट्षष्ठिः
छयासठवां—षट्षष्ठितमः
छयासठवीं—षट्षष्ठी
छरना-(फटकना) कराडनम् [कराड १उ०
छर्रा–लघुगुलिका
छल-कपटं, छलम्, छद्मन् कूटम्
छलक-उद्द्रवः
छलकना-उद्द्रवणम् (उद्द्रु १ प०]
छलकाना-उद्द्रावणम् (उद्द्रावय्)
छलछिद्र-विविधोपायः
छलना-छलनं [छलय् १०उ०]
छलबल – छलम्, कपटम्
छलांग-उच्चालः
छल्ला – अंगुलिवलयम्
छली – कूटकृत् [पुं०]
छांई – [रोग) विवरणम् मालिन्यं
छांट – विवेकः
छांटना - विवेचनम् [वि-विच् ७उ०]
छांटा – [चाबुक] तोदनम्, मार्जनम्
छाछ – तक्रम्
छाज – शूर्पम्

छाता – आतपत्रं, वारित्रं, छत्रम्
छाती – हृदयम् हृद् (स्त्री०) उरस् (न०)
छातीपीटना–हृत्ताड़नम् (हृद् ताड् १० प०)
छाती भर–स्तनदघ्नं, स्तनमात्रं
छाती भर आना–अश्रुपतनम् (अश्रु पत् १ प०)
छाती भरना–अश्रुपातनम् (अश्रु पातय्)
छतोना–(सांग) संस्वेदजम्, भूमिछत्रं शिलीध्रकं
छनना – शोधनं, गालनं, स्रावणं (गाल् १० प०)
छान बीन – अन्वेषा
छानबीन करना – अन्वेषणम् (अनु-इष् ४—१ प०)
छाप – मुद्रा
छाप लगाना – मुद्रणम् (मुद्रय् १० प०
छापा – यन्त्रं, मुद्रा
छापा खाना – मुद्रणालयं
छाया – छाया
छार – भस्मन् (न०) भूतिः
छाल – त्वचा, वल्कलं
छलनी – चालनी, तितउः (पुं०)
छाला–त्वक्स्फोटकः, क्षुद्रव्रणः
छावनी – निवेशः, शिविरं

गोदाम – भण्डारः,
गोदावरी – गोदावरी
गोंदी – (फल – वृक्ष] इंगुदी, तापसद्रुमः
गोना – स्यूतः प्रसेवः क्षौमम्
गोबर – [सूखा] करीषं
गोबर – गोमयं
गोबरी – मार्जनम् गोमयलेपः
गोभी – गोजिव्हा, दार्विका
गोमट – [बैलका] ककुद्
गोमा – (साग) द्रोणपुष्पी
गोमुखी – गोमुखा
गोया – इव, प्रायः
गोरस – गोरसः कालशेयः
गोरा – श्वेतःसुन्दरः
गोरी – श्वेता
गोरोचन – गोरोचना,वंद्या
गोल – वर्तुलं,वृत्तं, निस्तलं, चक्राकार
गोल – (गिरोह समूहः,यूथः
गोलक – गोलकं
गोलंदाज – आग्निकः
गोलमाल – संदिग्धः
गोला – [लोहेका] लोहगोलकम्
गोला – (रोग) गुल्मं
गोला – (वारूद आग्नेयास्त्रम्
गोलाई – वर्तुलता
गोलाकार – मंडलं
गोलाफेंकना – गोलकप्रक्षेपणम्
गोली – गुलिका
गोली – (दवाईकी घटिका,
गोली – वारूद सीसकगुलिका
गोली मार – खेल गुलिकाक्रीड़ा
गोश्त – मांसं पललं, आमिषम्
गोशवारा – सूची, विवर्णसूची, तालिका
गोशाला – गोशाला
गोसाई – गोस्वामिन्, साधुः,देवलकः, भिक्षुकः
गोह – (जानवर) गोधा, निहाका
गोहर – (माणा) व्रजम् , गोष्ठम् , गोस्थानकम्
गौं – आवश्यकता
गौग़ा – प्रवादः, महास्वरः, कोलाहलः
गौना – द्विरागमनं
गौर – विचारः
ग्रह – ग्रहः
ग्रहन – ग्रहणं
ग्राउण्ड – स्थलं, भूतलं
ग्रामर – व्याकरणं
ग्रामोफ़ोन – स्थालीवाद्यम्
ग्यारह – एकादश (त्रि०)

छाह – छाया
छिछला – विरलं, अघनं, पेलवं
छिड़कना – सेचनं (सिञ्च् ६ प०)
छिड़कवाना – सेचनं (सेचय्)
छिड़काव – सेकः
छिन – क्षणं
छिनकना – क्रीड़नकम्
छिनाल } स्वैरिणी, इत्वरी
छिनाला }
छिपकली – मयूरारिः
छिपना–अन्तर्धानं(अन्तर्-धा ३ उ०)
छिपा – गुप्तः, गूढ़ः
छिपाकरके – गोपायित्वा
छिपाताहुवा – गोपायत् (त्रि०)
छिपाना – गोपनम् (गुप् १ प०)
छिपानेकेलिये – गोपायितुम्
छिपानेलायक – गोपनीयम् (त्रि०)
छिपानेवाला – गोपकः, गोपायितृ (त्रि०)
छिपाया – गुप्तः
छिपाव – गुप्तिः, गोपः
छिलका – त्वचा
छींक – क्षुत् (स्त्री०) क्षवः,
छींकना – क्षवनम् (क्षु २ प०)
छींका – शिक्यं, काचः
छीछी – धिक् (अ०)
छीजना – क्षयनम् (क्षि १ प०)
छींट – चित्रकं, चित्रितवस्त्रं
छींटना – आस्फालनम् (आ-स्फल् ३ प० । सिञ्च ६ प०)
छींटा – आस्फालः, सेकः
छीनना – आच्छेदनं, अपहरणम् (आ-छिद् ७ उ० अप-हृ १ प०)
छीफ़श–धिक् [अ०]
छीलना—विलेखनं तक्षणं (वि-लिख् १ प० । तक्ष १ प०)
छुटकारा—निष्कृतिः, विमोक्षः
छुटकारापाना– विमोचनम् (वि-मुञ्च् ६ प०)
छुटाई—लघुता,
छुट्टी—अवकाशः
छुड़वाना–विमोचनं (वि-मोचय्)
छुपा–छादितः (त्रि०)
छुपाहुवा—प्रच्छन्नं (त्रि०)
छुरा –छुरिकं
छुरी—छुरिका, इत्री, असिधेनुका
छुहारा-पिण्डखर्जूरः
छू-फूत्कारः,हुंकारः
छूटना-मुक्तीभवनं (मुक्ती-भू १ प०)

घुंघची-किंकणी, रत्तिका
घुंघुट-अवगुण्ठा
घुंघुट करना अवगुण्ठनम् अव-गुण्ठ् १ उ०]
घुंघट वाली-गुंठिता, ऊर्पिता
घुंघणी किंकणी
घुंघनी-कुल्माषः
घुंघर वाले बाल-चूर्णकुन्तलं, कुरलः अलकः
घुंघरी } क्षुद्रघंटिका
घुंघरू }
घुंघरी दार-घंटिकावत् [त्रि०]
घुटना-जानुः
घुटने भर — (जल) जानुदघ्नं
घुड़कना- निर्भर्त्सनम् [निर् भर्त्स १० आ०]
घुड़की-अधिक्षेपः 'आ अधिक्षिप् १ प०'
घुन — कीटः कृमिः, नीलं
घुनघुनाहट — मन्दरवः, कलकलः
घुमड़घेर — भ्रमः, आवर्त्तः
घुमाकरके — परिभ्रम्य, भ्रमयित्वा
घुमाता हुवा — परिभ्रमयत्(त्रि०]
घुमाना — परिभ्रमणम् (परिभ्रमय्]
घुमाने के लिये — परिभ्रमयितुम्
घुमाने लायक — परिभ्रमयितव्यम् (त्रि०)
घुमाने वाला — परिभ्रामयत् [त्रि०]
घुमाया गया — परिभ्रान्तः (त्रि०)
घुमाव — प्रदक्षिणा
घुसना — प्रवेशनम् [प्र-विश् ६ प०]
घूंट-गण्डूषमात्रं, पानम्
घूमकरके — अटित्वा
घूमता हुवा-अटत् (त्रि०)
घूमना-भ्रमणं, पर्यटनम् [भ्रम् १ प० अट् १ प०)
घूमने के लिये-पर्यटितुम्
घूमने लायक — अटनीयम् (त्रि०)
घूमने वाला — आटकः
घूमा — अटितम् (त्रि०]
घूरना — उन्मीलनम्(उद्-मील् १०प०)
घूंस — उत्कोचः
घूसमघूसा — मुष्टामुष्टि (अ०)
घूंसा — मुष्टिका
घेरना — वेष्टनम् 'वेष्ट १ आ०'
घेरनी — 'तेलकी' चमसिका
घेरा — परिणाहः, परिवेशः, परिधिः,
घेरा — फौजका आसारः प्रसारणः
घेरेदार — चक्रजम्
घेवर — 'मिठाई' ...

छूणी-पिधानिका
छूत- आशौचः,
छूना-स्पर्शः, स्पर्शनम्
छे-षट् (त्रि०)
छेक-विवरम्, बिलम्, छिद्रम्
छेड़छाड़-विरोधः
छेड़ना-विरोधनं (वि-रुध् ७ उ०)
छेतरह-षड्धा (अ०)
छेद-छिद्रम्, विवरम्
छेदना-छेदनम् (छिद् ७ उ०)
छेदिनका - षडहीनः
छेदिनकी-षड़हीना।
छेनी-शातनी, व्रश्चनी
छेबरसका-षड् वर्षः
छेबरसकी-षड् वर्षा
छेमासका षाण्मासिकः, षाण्मास्यः
छेमासकी - षाण्मासिका, षाण्मास्या
छेयानवां-षण्णवतितमः
छेयानवी-षण्णवतितमी
छेयानवे-षण्णवतिः
छेयासी-८६ षडशीतिः
छेयासीवां-षडशीतितमः
छेयासीवीं-षडशीतितमी
छेरना-विरोधनम् (वि-रुध् ७ उ०)
छेरात का-षड्रात्रीणः
छेरातकी-षड्रात्रीणा
छेस्त-(ग्वाला) गोपः
छेवार - षट्कृत्वस् (अ०)
छेहत्तर - ७६ षट्सप्ततिः
छेहत्तरवां - षट्सप्ततितमः
छेहत्तरवीं - षट् सप्ततितमी
छोकड़ी - शिश्वी, कन्यका
छोंकना - साधनं, अभिचारः (अभि घृ १०प०)
छोकरा - (जंडी) शमी, शिवा
छोटाकद - वामनः, खर्वः ह्रस्वः
छोटाकोट - चण्डातकः
छोटापानी - वस्तानम्
छोटा - ह्रस्वः, लघुः क्षुद्रः
छोटाई - लघुता
छोटा ज़ियादा-कनीयस्, लघीयस्, अल्पीयस् ह्रसीयस् क्षोदीयस्)[त्रि०]
छोटा सबसे - क्षोदिष्ठः, कनिष्ठः, ह्रसिष्ठः, अल्पिष्ठः [त्रि०)
छोटेबड़े - उच्चावचम्
छोड़ करके - त्यक्त्वा
छोड़ता हुआ - त्यजत् [त्रि०]

घोखना-स्मरणम् (स्मृ १ प०)
घोघा-अर्धचंद्रं, गलहस्तः
घोंटना-आकुञ्चनम् [आ-कुञ्च् १ प०]
घोटना-पेषणं, अवमर्दनम् (पिष ७प० अव मृद्द ९ प० घुट १ आ०)
घोड़ दौर-अश्वचर्या
घोड़ा-अश्वः, वाजिः, तुरंगमः, घोटकः हयः, वाहः,
घोडा- (अरबी)पारसीकः,वनायुजः
घोड़ी-अश्वा, वडवा, वामी
घोर-भयंकरम्
घोलघुमाव-वाक्छलं, छद्मन्, (न०) अपदेशः
घोलना-घोलनं (घोल् १० प०]
घोंसला-नीडः, निलयः

च

च-निश्चयः
चकदार-सामन्तः
चकनाचूर-छिन्नभिन्नम्
चकमक-सूर्यकान्तः, अग्निप्रस्तरः
चक्कर-भ्रमः, चक्रम्, मण्डलम्
चक्कर खाना-भ्रमणम् (भ्रम्१ प०)
चकराना-आकुलनम् (सम्-भ्रमय् आ-कुल् १० प०)
चकला- (रोटी का) चकलं
चकला-(रंडियों का) वेश्यावासः
चकली-चक्रिका
चकवा-सारसः? कोकः चक्रवाकः
चकवी-कोकी, लक्ष्मणा
चकाचौंध-प्रदीप्तिः
चकित-विस्मितः, आश्चर्यान्वितः
चक्की-पेषणी, चूर्णयन्त्रम्
चकोर-सुलोचनः, जीवजीवः
चखना-चखनम्, चपनं (चख्१प० । चप् १ प०)
चंगा } स्वस्थः
चंगाभला } स्वस्थः
चंगुल-मसलं
चंगेर-भाजनं, आधारः
चंचु- (साग) चिंचा, चंचुकी
चचेरा भाई-पितृव्यसुतः
चट-शीघ्रं, सपदि (अ०)
चटक मटक-उज्ज्वलता,
चटकना-संघट्टनं (संघट्ट १ उ०)
चटका-संघट्टितः (त्रि०)
चटकाना-संघट्टनम् (सम्-घट्य्)
चटकीला-तेजोमयः,उज्ज्वलः,समृद्धः
चटनी-उपव्यञ्जनं, चर्वणं
चटपट-तत्कालं, सत्वरम्
चटशाला=पाठशाला
चटाई-कटः

छोड़ना – त्यजनम् [त्यज् १प० मुञ्च् ६प०]
छोड़ने के लिये – त्यक्तुम्
छोड़ने लायक – त्यक्तव्यम्, त्यजनीयम् [त्रि०]
छोड़ने वाला – त्याजकः
छोड़ा गया – त्यक्तः, उत्सृष्टः, मोक्षादितः (त्रि०)
छोड़ाव – मोचः, मुक्तिः
छोर-सीमा, प्रांतः
छोलदारी – लघुदूष्यम्
छोला – चणकः, हरिमंथः
छौंचढ़ाना – स्वचनम् [स्वच् ६प०]

ज

ज- जनकः, शिवः
ज़ईफ़-वृद्धः, जरठः, पलितः
ज़ईफ़ी-वार्धक्य, जरा
जडो – (लाख) लाक्षा, आलक्तकम्
जकड़ना – संयोजनं, बंधनं (बंध् १० प०। सम् युज् ७ प०]
जंक्शन-संगमालयः, संयोगः
ज़खम – ईर्मम्
ज़खमी – क्षतः, विद्धः, अर्जितः
ख़ज़ीरा-राशिः, कोशः, निधिः
जंग – युद्धम्, संग्रामः
जंगकरना – योधनम् [युध् ४आ०)
जंगरूह – योधः, भटः, वीरः, शूरः
जगमगाना – संप्रदीपनम् (सम् प्र दीप् ४ आ०]
जंगल-वन, अरण्यं, विपिनं, काननं अटवी,
जंगला-वृत्तिः,
जंगली – जांगलिकः
जगह – स्थान, सद्मन् [न०]
जगाकरके – जागरयित्वा
जगाता हुवा – जागरयत् (त्रि०]
जगाना – जागरणम् [जागरय्]
जगानेके लिये – जागरयितुम्
जगाने लायक – जागरणीयम् [त्रि०]
जगाने वाला – जागरकः
जगाया – जागरितः (त्रि०)
जगारा – जागरः
जंगाल –[दसावल] किट्टं मंडूरं, मलम्
जंगी – यौधिकं, सामरिकम्
जज – अक्षदर्शकः
जंजाल – कृच्छ्रम्
जंजाली-कार्पासकं, अर्धदारालकः
जंजीर-शृंखलं, निगडं

चट्टान- शिला, उपलं
चटाना- लेहनम् (लेहय्)
चट्टी-पथिकगृहम्
चंडाल-चाण्डालः, मातंगः
चंडालकंद-चंडालकंदः, पंचपत्रः
चंडालिन-चाण्डाली,
चड्डी-(दूधवाले पशुकी) आपीनं, ऊधस् (न०)
चंडु-फेनपानम्
चंडू खाना-फेनागारम् (न०)
चंडु बाज़-फेनपायिन् [त्रि०]
चंडोल-क्रीडनकम्
चढ़ना-आरोहणम् (आ-रुह १ प०)
चढ़वाना-आरोपणम् (आ-रोपय्)
चढ़ाई - आक्रमः, यानम्
चढ़ाईकरना - अभिषेणनम् (अभि सेन् १० प०)
चढ़ाव - आरूढिः, आरोहः, निम्नोन्नतम्
चढ़ावउतराव - आरोहावरोहः,
चढ़ावा - भेंटः, बलिः
चतुर - निपुणः, पेशलः
चतुराई - निपुणता, पेशलता
चंद - कतिपयः, अल्पं
चंदन - चंदनं
चंदरोज - कतिपयदिनं
चंदरोजा - कतिपयदिनीयम्
चंदवा - वितानं, उल्लोचः
चंदा - प्रदानं, आर्थिकसहायता
चना - चणकः, हरिमन्थकः
चनाव - (नदी) चंद्रभागा
चप्टर - अध्यायः, काण्डः
चपरास - मध्यबन्धः, रसना
चपरासी - पदातिकः
चप्पा - (हाथका) करतलं
चप्पी - द्रोणी
चप्पू - नौकाणी, अरित्रम्
चपेट - चपेटः, तलप्रहारः
चपेटमारना - तलप्रहारः
चबवाना-चर्वणम् (चर्वय्)
चंपा-चम्पकं, कुंदं, चांपेयम्
चंपा-(पीला) जायकम्
चंपा-(वृक्ष) अतिगंधः
चंपा-(कली) कुंद्म्
चबाकरके-चर्वयित्वा
चबाता हुवा-चर्वन्, चर्वयत् (त्रि
चबाना-चर्वणम् (चर्व् १ प०)
चबानेकेलिये-चर्वितुम्, चर्वयि
चबानेलायक-चर्वणीयम्
चबानेवाला-चर्वकः

जज़ीरा-द्वीपम्, उपद्वीपम्
जटल – (झूठ) प्रलापः, जल्पितम्,
जटल्ली- [झूठा) प्रलापिन् [त्रि०]
जटा - जटा, सटा
जटिल – जटाधारिन् (त्रि०)
जड़ – मूलं, पादं, बुध्नः
जड़ – [गन्नाकी] मोरट
जड़ाऊ – जटितम्
जंड़ी – (छोकरा] शमी, शिवा
जड़ी – औषधिः
जंत्र – यंत्रम्
जत – [शुतरबान] उष्ट्रपालः
जताना – ज्ञपनम् विज्ञापनं [ज्ञप् १० प० । आ.ख्या १ प०)
जंत्री – पंचांगम्,पंजिका
जती – यतिः,संन्यासिन् (पु) परिव्राजकः
जन्नत – स्वर्गः
जन्म – जन्मन् (न०) जनिः, प्रादुर्भावः, उत्पत्तिः
जन्ममास – वैजननम्
जनरल – सार्वलौकिकः, सार्वत्रिकः
जनवासा – जन्यागृहम्
जनाजा – शवविमानम्
जनाना – स्त्रीवर्गीयः, स्त्रैणम्
जनानी – स्त्री, नारी योषित्

जनाव – श्रीयुतः, श्रीलः, आर्यः
जानावआली – श्रीयुतमहोदयः
जनाह – व्यभिचारः
जनाही – व्यभिचारिन् [पु०]
जनूब-दक्षिणम्
जनेऊ-यज्ञोपवीतम्
जंद्रा-लोहयंत्रम्
जंद्री – यंत्रिका
जप-जपः, जापः
जपकरके-जपित्वा
जपताहुवा-जपत् (त्रि०)
जपना-जपनम् [जप् १ प०]
जपनेकेलिये-जपितुम्
जपनेलायक-जपनीयम् [त्रि०]
जपनेवाला-जापकः
जपा-जपितम् (त्रि०)
जपा – [फूल] जपा, औण्ड्रपुष्पा
जव – यदा [अ०]
जवकभी – यदाकदाचित् [अ०]
जवकि – यदाच (अ०)
जव्त – राजाधीनं दंडाहृतं
जव्ती – राजाधीनता
जवतक – यदावधि
जव तव – यदातदा अ०]
जवसे – यस्मात् यतस् [अ०]

चबाया–चर्वितः (त्रि०)
चबूतरा–उच्चासनं, चैत्यम्.
चबेना–चर्वणा, चर्वा
चमक–दीप्तिः, प्रभा
चमककरके–प्रकाशित्वा
चमकताहुवा–प्रकाशमानः (त्रि०)
(काश १ आ०। भ्राज् १ आ०)
चमकदमक–प्रदीप्तिः
चमकदार–दीप्तिमत् (त्रि०)
चमकना–प्रकाशनम्
चमकनेकेलिये–प्रकाशितुम्
चमकनेलायक–प्रकाशितव्यम्, प्रकाशनीयम् (त्रि०)
चमकनेवाला–प्रकाशकः
चमकदार–दीप्यमानः, प्रकाशमानः
चमका–दीप्तम् (त्रि०)
चमकाना–प्रकाशनम् (प्रकाशय्)
चमकीला–प्रदीप्तिमत् [त्रि०]
चमगादर–अजिनपत्रा, जतुका
चमचा–चमसम्
चमचाभर–चमसमात्रम्
चमड़ा–चर्मन् [न०]
चमड़ा[हिरनका]अजिनं, मृगचर्मन् (न०)
चमड़ा–चीतेका व्याघ्राम्बरं
चम्पत–लुप्तः, गुप्तः, सायितः [त्रि०]
चमार–चर्मकारः, पादकृत् [पु०]
चमारी–चर्मकारी
चमेली–मालती, जाती, सुमना
चमेली–[पीली] सुवर्णजाती
चमोटा–चर्मरज्जुः [स्त्री] चर्मपट्टः
चरखा–तर्कुः [स्त्री०]
चरखी–नेमिः
चरन–चरणः, पादः, अंघ्रिः
चरपटा | चरपरा } तीक्ष्णं, कटुः, तिक्त (
चरबी–वपा, वसा
चरवाई–चारणम्, चारः
चरस–संविदासारः
चरसी–संविदापायिन् [त्रि०]
चराद–आरादः, प्रचारणं
चराना–चारणम् [चारय्]
चलना–चलनम् [चल् १ प०]
चवन– ५४ चतुःपंचाशद् [स्त्री०]
चवनवां–चतुःपञ्चाशः
चवनवीं–चतुःपञ्चाशी
चवन्नी–चतुराणिका, पुराणम्
चंवर–चामरम्
चवालीस ४४ चतुश्चत्वारिंशत् (स्त्री०)
चवालीसवां–चत्वारिंशः
चवालीसवीं–चत्वारिंशी
चवेरी(लुगदी) गेंदकः, जगलः
चसका–स्वादः
चहुं ओर–समन्तात् (अ०)

ज़ब्र – अन्यायः
ज़ब्रन – अन्यायतस्
ज़बरदस्त – बलवत् (पु०)
ज़बरदस्ती – प्रसभं, बलात्कारः
ज़बान – जिह्वा, रसना
ज़बान – (बोली) भाषा
ज़बान – (जंगली) ग्रामीणभाषा
ज़बान – (बिगड़ी हुई) अपभ्रंशः
ज़बानी – मौखिकं, वाचनिकं
ज़बानी – जमाखर्च निःसारः
जम्बूर – सदंशः
जभी – यदा (अ०)
जमघट – संकुलम्, जनसंबाधः
जमजम – सर्वदा (अ०)
जमना – (नदी)यमुना, कालिन्दीः
जमना – (जमजाना) घनीभवनं, घनीभावः [घनी भू १प०)
जमनाष्टक – [वर्जिस] बाष्टक्रीड़ा
जम्प – (फलांग) प्लवः स्कन्दः प्लुतिः
जमला – संकलः
जमला करना – संकलनम् (सम् फल १० प०)
जमला किया – संकलितः
जमहाई – जृंभः, जृंभणं

जमा – साकल्यम्
जमाकरना – संकलनम्, परिसंख्यान (परिसंख्या २ प०)
जमा खर्च – गणना, मात्रा (सम् कल १० उ०)
जमादार – समावेशकः
जमानत – प्रातिभाव्यम्
जमाना – (पानी आदिका) घनीकरणम् (घनी कृ ८ उ०)
जमाना – समयः कालः वेला
जमानासाज़ – कालदर्शिन् (त्रि०)
जमानासाज़ी – कालदर्शिता
जमानाहाल – वर्तमानम्
जमानामाजी – भूतकालः
जमानामुस्तकबिल – भविष्यकाल
जमायत – श्रेणी, कक्षा
जमायती – सतीर्थ्यःसाधर्म्यादिन् (त्रि०)
जमालगोटा – जयपालः, दंतिबीजः
जमीकंद – (सूरण)सूरणः, कंदलः, अर्शोघ्नः
जमीन – भूमिः धरणिः रसा, क्षितिः
जमीन – (ऊसर) ऊषरः, ऊषवत् (पु०)
जमीन आस्मान – द्यावाभूमी
जमीन – (ज़रखेज) उर्वरा
जमीन – (लाहू) हरितनखं

चुना.चितः, चितवत् (त्रि०)
चुनाचे.यथा, इव, अनुरूपेण (तृतीया)
चुनाना – (इकट्ठा करना) चायनम् आहारणम् (चायय् आहारय्)
चुनाना – (दीवार का) निर्मापनं (निर्मापय्)
चुनाना (कपड़े का) वस्त्र कुञ्चनम् [कुञ्चय्]
चुनाना [बालों का] केशोत्पाटनम्
चुनाना (दाना आदि का) उञ्छनम् (उञ्छय्)
चुनाव – निर्वाचनम्
चुप – मौनम्
चुपका – शांतः
चुपचुप – मौनम् मौनम्
चुपचाप – [जगह] निभृतम् स्तब्धं, निःशब्दम्
चुपचाप – [आदमी] वाचंयमः, मुनिः तूष्णीकः
चुप चुपाते-जोषम् तूष्णीम्
चुपड़ना – लेपनम् [लिप्] लिम्प् ६ उ०]
चुभना – तुदनम् [तुद् ६प०]
चुभार – तोदः
चुम्मा – चुम्बा
चुराकरके – चोरयित्वा
चुराताहुवा – चोरयत् [त्रि०]
चुरानवे – ९४ चतुर्नवतिः
चुरानवां – चतुर्नवतितमः
चुरानवीं – चतुर्नवतमी
चुराना – चोरणम् (चुर १० प०)
चुरानेके लिये – चोरयितुम्
चुराने लायक – चोरणीयम्
चुराने वाला – चोरकः चोरयितृ (त्रि०)
चुराया – चोरितः [त्रि०]
चुरासी – ८४ चतुरशीतिः
चुरासीवां – चतुरशीतितमः
चुरासीवीं – चतुरशीतमी
चुरुट – धूम्रवर्तिः धूम्रवर्त्तिका
चुल्ह – लघुचुल्लिः
चुली
चुल्लू – चुलुकम्
चुस्त – शीघ्रकारिन् [त्रि०]
चुस्ती – क्षिप्रता द्रुतता
चुहत्तर – ७४ चतुः सप्ततिः
चुहत्तरवां – चतुःसप्ततितमः
चुहत्तरवीं – चतुःसप्ततितमी
चूक – अपराधः
चूका – [साग] चुक्रिका चांगेरी
चूंकि – अतः[अ०]यथा[अ०] यथाच (अ०) कदाच (अ०)

ज़मीमा-क्रोड़पत्रम्
ज़मीर-बुद्धिः, हृदयं, अन्तःकरणं
ज़ंबीर-जंभीरी
ज़र-द्रव्यम् धनम्, वित्तम्, वसु(न०) द्रविणं,
ज़रखेज-(ज़मीन) उर्वरा
ज़रखेजी-उर्वरात्वम्
ज़रब-(चोट) प्रहारः
ज़रबुलमिसाल-आभाणकः, जनप्रवादः
ज़रा-किञ्चित्
ज़रात-कृषिविद्या, अर्थशास्त्रं
ज़रासा-किञ्चिन्मात्रं
ज़रासी-किञ्चिन्मात्रा
ज़री-(वस्त्र) सौवर्णवस्त्रं
ज़रीब-शृंखला
ज़रीबकश-शृंखलाकर्षः
ज़रीबकशी-शृंखलाकर्षता
ज़रीया-साधनम्, द्वारा उपकरणम्
ज़रूर-अवश्यं
ज़रूर बिल ज़रूर-अत्यन्तावश्यकम्
ज़रूरत-आवश्यकता
ज़रूरी-आवश्यकम्
ज़र्जर-जीर्णम्
ज़र्द-पीतवर्णम्
ज़र्दा-[पुलाओ] ओदनं
ज़र्दी-पीतता
ज़र्ब-गुणाकारः, गुणः
ज़र्ब किया-गुणितम्
ज़र्मनी-क्रमथः, क्रौञ्चकामला
ज़र्रा-अणुः, परमाणुः
जर्राह-[सर्जन] शस्त्रवैद्यः, अस्त्रचिकित्सकः
जर्राही-शस्त्रवैद्यता
जल्द-शीघ्रं, क्षिप्रं, लघु [न०] त्वरितम् द्रुतम्
जल्दी-शीघ्रता, द्रुतत्वं, सपदि (अ०) झटिति (अ०)
जल्दी ज़ियादा-क्षेपीयस् [त्रि०]
जल्दी सबसे-क्षेपिष्ठः (त्रि०)
जल्दी बोलना-निरस्तम्
जल-जलम्, वारि [न०) अम्भस् (न०)
जलजीव-जलजन्तुः, यादस् (न०) जलचरः
जलन-दाहः
जलना-ज्वलनं (ज्वल् १प०)
जलम-(क्रीड़ा) दुर्नामा, दीर्घकोशिका
जलबंब-जलप्रलयः, जलविप्लवः
जलसा-उत्सवः, महोत्सवः
जल्लाद-घातकः, वधकः चांडालः
जला करके-दग्ध्वा
जलाता हुवा-दहत् [त्रि०]

जलाना – दहनम् [दह १ प०]
जलाने के लिये – दग्धुम्
जलाने लायक – दहनीयम् [त्रि०]
जलानेवाला – दाहकः, दाहिन् [त्रि०]
जला – दग्धः (त्रि०)
जला बला – दग्धमानस् [अ०]
ज़लील – नीचः, अधमः, गर्हितः
जलेबी – कुण्डलिनी
जवान – युवन् (पुं) तरुणः, प्रौढः
जवान जियादा – यवीयस् (त्रि०)
जवान सबसे – यविष्ठः [त्रि०]
जवानी – युवता, तरुणता
जवाब – उत्तरम्
जवाब का जवाब – प्रत्युत्तरम्
जवाब दावा - उत्तरपत्रम्, उत्तरभाषा
जवाब दही – उत्तरदायित्वम्
जवाबदिह – उत्तरदायिन् [त्रि०]
जवाब मज़मून – प्रस्तावः, रचना, लेखः
जवाब सवाल – प्रश्नोत्तरम्
जवाबी – उत्तरवत् [पुं० न०] उत्तरासंगः
जवायन – यवानिका, उग्रगंधा
जवांमर्द – पुरुषार्थिन् [त्रि०) वीरः
जवांमर्दी – वीरता
ज्वार - [अनाज] शिखरी, यावनालः
ज्वार भाटा – वेला, प्रवाहः

जवासा – यासः, यवासः
जवाहिर – मणिः रत्नम्
जस्त } रीतिपुष्पं, पुष्पकेतुः
जस्ता }
जहन्नम .... नरकः, निरयम्
ज़हमत – दुःखम्
ज़हर – विषं, गरलं
ज़हरदार – विषमयम्, विषाक्तम्
जहरमुहरा – विषनाशकः
ज़हरीला – विषधरः, विषालुः.
जहां – यत्र [अ०]
जहां कहीं – यत्रकुत्रापि (अ०) कुत्रचित् [अ०]
जहां जहां – यत्रयत्र [अ०]
जहां तक – यावत् [अ०]
जहां तहां – यत्रतत्र [अ०]
जहांका – यत्रत्यः
जहांसे - यतस्, यस्मात्
जहांका तहां – सर्वत्र (अ०) यत्रतत्र (अ०)
जहाज़ – पोतः
जहाज़ी – पौतिकः
जहान – जगत् (न०) संसारः
जहालत - अविद्या
ज़हिन - मेधा, प्रतिभा, बुद्धिः
ज़हिननशीन - अवगमः

डिक्लेंशन - उच्चारणम्
डिक्शनरी - कोषः (शः)
डिगना - भ्रंशनं [भ्रंश् १ प०]
डिगरी - औपयिकं, लभ्यम्
डिगा - भ्रष्टः [त्रि०]
डिपटी - प्रतिनिधिः
डिपलोमा - पदवीपत्रम्
डिबिया - संपुटकी
डिबेट - हेतुवादः, वादानुवादः
डिस्ट्रिक्ट [ज़िला] मंडलं, चक्रम्
डिसमिस - निराकरणम्
डिसेंडेरेटिव - सन्नन्तम्
डींग - आत्मश्लाघः, विकत्था
डींग मारना - विकत्थनं [वि-कत्थ् १ आ० । आत्म-श्लाघ् १ आ०)
डींगया - विकत्थकः, आत्मश्लाघिन् [पु०]
डीलडौल - आकारः
डुअल - द्विवचनम्
डुगडुगी - डमरुः
डुंघा - निम्नं, गभीरम्
डुबकी - निप्लवनम् (नि-प्लु १ आ०)
डुलना - विचलनम् (वि-चल् १प०)
डूबना - निमज्जनम् (नि मज्ज् ६प०)
डूबा - निमग्नः

डेंटल - दन्त्यः (तवर्ग. लृ. ल. स.)
डेटिव - चतुर्थी, संप्रदानम्
डेढ़ - सार्धम्
डेढ़सौ - द्विपादशतम्
डेढ़हज़ार - द्विपादसहस्रम्
डेढ़ी - (मढ़ी) शवसमाधिः
डेनमार्क - मारकः
डेंभू - दंशः, वनमक्षिका
डेरा - आवासः
डेलीगेट - प्रतिनिधिः
डेवढ़ी - आंगनं, अजिरं, चत्वरम्
डेस्क - लिखनफलकः, लेखफलकम्
डेसीमल - दशगुणः
डोडी - (साग) जीवंती, जीवनी
ढोडी - डोडिका, मुष्टिः
डोम (भंगी) खलपूः, अवस्करकः
डोमनी - अवस्करकी
डोर - दृढतन्तुः
डोरया(वस्त्र) रेखावस्त्रं, धारावस्त्रम्
डोरी - रज्जुः (स्त्री०)
डोल - सेकपात्रं, करण्डोलः
डोलची (छोटाडोल) सेकपात्रिका, करण्डोलिका

जहां-यत्रैव (अ०)
जहीन-मेधाविन् (पु०)
जा-स्थानम्
जाकट-कूर्पासकः, अंगिका
जाकरके-गत्वा
जाग करके-जागरित्वा, प्रजागर्य्य
जागता हुवा-जाग्रत् (त्रि०)
जागना-जागरणम् (जागृ २ प०)
जागने के लिये-जागरितुम्
जागने लायक-जागरणीयम् त्रि०)
जागने वाला-जागरकः
जागा-जागरितः (त्रि०)
जागीर-भूधनं, वर्गः
जागीरदार-भूधनः, वर्गाधीशः
जागीरदारी-भूधनता, वर्गाधीशता
जांघ-जंघा
जांघिया-जांघिकम्
जांच-परीक्षा, निरूपा
जांचना-निरूपणम्, परीक्षणं (निरूपय् । परि-ईक्ष्-१-प०)
जाड़ा-हिमम्
जात-जातिः, स्वभावः, ज्ञातिः
जात भाई-सनाभिः, सपिण्डः
जातपात-वंशः, जातिः, कुलम्
जाता हुवा-गच्छत् (त्रि०)
जाती-स्वाभाविकः
जात्रा-यात्रा
जात्री-यात्रिन् (पु०)
जादू-इन्द्रजालं, माया
जादूगर-मायाविन् (त्रि०)
जादूगरी-कुहकम्
जान करके-बुद्ध्वा
जानकार-ज्ञातृ (त्रि०)
जानकारी-ज्ञातृता
जानताहुवा-बोधत्, बोधमानः(त्रि०)
जानदार-जंगमः, चरिष्णु, प्राणिन् (त्रि०)
जानना-बोधनम् वेदनं, (बुध् १ प० । विद २ प०)
जानने के लिये-बोद्धुम्
जानने लायक-बोधनीयम् (त्रि०)
जानने वाला-बोधकः, बोधिन्(त्रि०)
जान पहिचान-परिचयः
जानवर-पशुः
जानवर-[जापान] कीरः
जाना-गमनम्
जाना गया-बुद्धः (त्रि०)
जानने के लिये-गन्तुम्
जाने देना-क्षमणम् [क्षम् ४ प०]
जाने लायक-गन्तव्यम् [त्रि०]
जाने वाला-गन्तृ, गमकः [त्रि०]
जापान-जयपानः, मणिद्वीपः

तबलची – मार्दंगिकः, मौरजिकः
तबला – मृदंगः, मुरजः
तबा [गरारा] जाग्रम्
तबाशीर – वंशशर्करा, यवजा
तबाह – उच्छेदः, उच्छित्तिः
तबाही – विध्वंसना, अपायता, विनाशता
तबीयत – प्रकृतिः, स्वभावः
तंबु-दूष्यम्
तंबूरा – सारंगी, तन्तम्
तंबेला – वाजिशाला, मंदुरा
तंबोली – ताम्बूलिकः
तभी – तदा [अ०)
तमक-दर्पः
तमगा-पदकं
तमंचा-गुलिका प्रक्षेपणी
तमन्ना-अभ्यर्थना
तमसील-उपमानम्
तमस्सुक-प्रतिज्ञालेखः
तमहीद-उपोद्घातं प्रस्तावः
तमा-लोभः
तमाकरना-लोभनम् (लुभ्४प०)
तमाखू-कलंजः
तमाचा-चपटः, आस्फोटः
तमाम-सर्वःविश्वं,अखिलं,निखिलम्
तमाम-(खतम) अन्तः समाप्तिः
तमाल-तमालः
तमाशबीन-दर्शकः
तमाशबीनी-दर्शकता
तमाशा-दृश्यं कौतुकं कृतूहलं खेला,
तमाशाकरना-खेलनम् (खिल् १प०)
तमाशागाह-आश्चर्यम्
तमीज़-विवेकः योग्यता
तयार-प्रस्तुतं उद्यतं सज्जितं
तर्कला-(तकुवा) लोहशलाका
तर-स्निग्धम्
तर करना-स्नेहनम् (स्निह् ४प०)
तरक्की-वृद्धिः पदोन्नतिः
तरकारी-शाकः
तरख-तरक्षुःमृगादनः
तरखान-तक्षकः तष्टृ [त्रि०]
तरगीब-प्रेरणा
तरगीबदेना-प्रेरणम् [प्रे.र् १०प०]
तरजीह-विशेषता
तरतीब-अनुक्रम.परम्परा व्यवस्था
तरतीबदेना-अनुक्रमणम् (अनुःक्र १०प०)
तरफ़-[फेवर] पक्षः
तरफ़-[साइड] दिशा, आशा
तरफ़दार-पक्षपातिन् [पुं०]
तरफ़दारी-पक्षपातः

ज़ाफ़र-[सेंदूरिया] सिंदूरी, रक्तबीजा
जाबजा-प्रतिस्थानम्
ज़ाब्ता-नियमः
ज़ाब्ता दीवानी-अर्थनियमः, अर्थविधिः
ज़ाब्ता फ़ौजदारी-दंडनियमः, अर्थविधिः
जाब्तु-अश्वपालः
जाबेजा-अस्थानम्
जामन[फल] जम्बु [न०]
जामन[वृक्ष] जम्बु [पु०]
जामा-दीर्घकञ्चुकं
ज़ामिन-प्रतिभूः, लग्नकः
ज़ामिनी-प्रातिभाव्यम्
ज़ायका-स्वादः, रसः
ज़ायकादार-रसवत् [त्रि०)
जायज-नियतं, योग्यं, उचितं
जायदाद-सम्पत्तिः
जायफल-जातिफलं, जातिकोषः
ज़ाया-नष्टं
ज़ाया करना-नाशनम् (नाशय्]
ज़ाया चाहना-जिगमिषा(जिगमिष]
ज़ाया होना-नशनम् [नश् ४ प०]
जाल-जालं, आनायः, कूटयन्त्रम्
जाल[मिथ्या की] शपथसूत्रं, पवित्रकं
जालदार-जालवत् [त्रि०)
जालसाज़-कूटकृत् पु०, कपटकृत् [पु०
ज़ालसाज़ी-कूटकृतिः

जाला(मकड़ीका] अष्टपाद (स्त्री०]
ज़ालिम-क्रूरः, नृशंसः, पापः, अन्यायिन् (पु०)
जाली(जाली) जालम्
जाली-कृत्रिमम्
जाली दस्तावेज़-कृत्रिमहस्तपत्र म्
जासूस-गूढचरः, प्रणिधिः, चार, गूढपुरुषः
जासूसी-गूढचर्या, चारता
जासूसी करना-चारणम् चारय्) गूढ चर् १ प)
ज़ाहिर-प्रकटं, स्पष्टं, दृश्यं, व्यक्तं, प्रकाशं, लक्षित
ज़ाहिर करना-आविष्करणम् (आविष्कृ ८ उ०)
ज़ाहिरदार-स्फुटम्
ज़ाहिरदारी-प्रकटता, स्पष्टत्वम्, स्फुटता
ज़ाहिरा | ज़ाहिरी | प्रकटं, स्फुटम्
जाहिल-मूर्खः, मूढः,
जिओग्रफ़ी-(जुगराफ़िया) भूगोलविद्या-शास्त्रं
जिओमैटरी-भूमानं
जिओमेस्टो-रेखागणितं, ज्यामितिः
जिओलोजी-भूतत्त्वं, भूगर्भशास्त्रं
ज़िक्र-चर्चा

तरफैन-उभयपक्षकः
तरबूज--[हिंदवाना)
कालिंगःबीजपूरकं
तरली=अलाबू(स्त्री) तुंबी
तरस-दया,अनुकम्पा
तरस करना-दयनम्(दय्१आ०)
तरसना-तर्पणम् (तृप्४प०)
तरसाना--तर्पणम् (तर्पय)
तरह--प्रकारः, वत्, इव
तरहबतरह-विविधप्रकारः, उच्चाव चः
तरा (तरावास) दूर्वाङ्कुरम्
तराई (पहाड़की) उपत्यका
तराजू-घटः, तुला
तरावट-शीतलता
तराश-कृन्ततिः
तराशना-कृन्तनम् [कृन्त् ६ प०]
तरी-आर्द्रता, क्लिन्नता
तरीका-मार्गः, रीतिः,पद्धतिः
तर्कश-तूणीरम्
तरकीब-उपायः
तर्ज-रीतिः, पद्धतिः, मार्गः
तर्जुमा--अनुवादः
तर्जुमाकरना-अनुवदनम् (अनु-वद् १ प०)
तरतीब-क्रमः, विधिः
तरतीबवार-यथाक्रमम्, यथाविधि (न०)
तरदीद-खंडनं, प्रत्याख्यानम्
तरमीम-न्यूनाधिकं, न्यूनीकृतम्
तर्स-करुणा
तलख-कटुः, तीक्ष्णम्
तलना-तलनम् (तल् १० प०)
तलफ्फुज-उच्चारणम्
तलब-वेतनम्
तलबाना-व्ययमुद्रा
तलवार-कृपाणः, असिः, तरवारः
तलवारकीमूठ-त्सरुः
तलाक-त्यागः
तलाकनामा-त्यागपत्रम्
तलाश-गवेषणा, अनुसंधानं, अन्वेषणा
तलाशी-अनुयायिन् (त्रि०)जिज्ञासुः
तलाशीकरना-गवेषणम् (गवेष् १० प०)
तवज्जुह-अवधानं, एकाग्रता
तवा-अजीर्ण
तवारीख-इतिहासः
तवी-पिष्टपचनम्
तशरीफ-पादाग्रम्
तशरीह-व्याख्या, विवरणम्

जीराकाला-सुपवी, कारवी
जीरो- शून्यम्
जीवंती—जीवंती जीरा
जीहां—अथ किम् (अ०)
जुआ-द्यूतं, कैतवं
जुआ खेलना-दीवनम् (दीव् ४प०)
जुआरी—धूर्तः कितवः
जुकाम—पीनसः
जुग=युगः
जुगनी—नायकमणिः
जुगनू—इन्द्रगोपः मणाकीटः
जुगराफिया—भूगोलं, भूवृत्तम्
जुज्र-योगः
जुज-(दवाई की) अनुपानं योगः
जुझाऊ बाजा-युद्धवाद्यम्
जुड़ना-योजनं
जुड़वाना-योजनम् (योजय्)
जुदा-भिन्नम्, पृथक् (अ०) व्यतिरिक्तः विरहितः, विभक्तः
जुदाई-पृथक्त्वम्, विभक्तता
जुदा करना-पृथक्करणं (पृथक् कृ८उ०)
जुदा जुदा-भिन्नभिन्नम्
जुफ्त-(गिनती) समम्
जुमला-(फ़िक़रा) वाक्यम्
जुराब-अनुपदीनः पदायत्ता
जुर्म-दोषः अपराधः
जुर्माना-धनदंडः दमम्
जुल्फ-अलकः चूर्ण कुन्तलः
जुल्म-अत्याचारः अन्यायः
जुलाब-रेचनम्
जुलाब करना-रेचनम् (रिच् १०प०)
जुलाहा-तंतुवायः कुविंदः
जुलाही-तंतुवायी
जुलूस-महोत्सवः
जुवार-(मक्का) इक्षुपत्र यावनालः शिखरी
जुवार-[पुफंद]नालतंदुलः जनलः वृत्तः
जुवेकीसभा वाला-सभिकः द्यूतकारकः
जुसांदा-क्वाथं
जुही-(फूल) यूथिका अंबष्ठा
जुही-[पीली] हेमयूथिका
जूं-यूका
जूठा-उच्छिष्ट
झूठा-[आदमी]असत्यवादिन् [त्रि०
जूता }
जूती } -उपानद् (स्त्री०)
जूनीयर-अवरः अवरपदभाक् (पु०
जूरी-(जज) सभ्येयः

तसदीक़ – समर्थना
तसदीक़करना – समर्थनम् (सम्-अर्थ १० प०)
तसनीफ – कृतम् रचितम् (त्रि०)
तसनीफकरना – रचनम् (रच् १० प०)
तसफीया – निश्चयः, निर्णयः
तसफीयाकरना – निर्णयनम् [निर् नी १ उ]
तसलीम – नमस्कारः, स्वीकारः
तसलीमकरना – स्वीकरणम् [स्वी कृ ८ उ०]
तसल्ली – धैर्य, आप्यायः, सान्त्वना
तसल्लीदेना-सान्त्वनम्(सान्त्व् १०प०)
तस्सु – अंगुलिः, पणम्
तस्मा – वरत्रा
तस्मै (दूधकी) पायसम्, क्षीरोदनम्
तसवीर – चित्रम्
तह – तलम्
तहकीकात – संप्रधारणा, प्रेक्षा, अनुसन्धानम्
तहकीकात करना– सम्प्रधारणम् [सम् प्र-धार् १० प०]
तहख़ाना – भूतलगृहं
तहसील – करसंग्रहम्
तहसीलदार – गोपः, प्रान्तशासकः करग्राहिन् (पु०)
तहसीलदारी – करग्राहिता
तहां–तत्र
ताई-पितृव्यपत्नी
ताऊ - पितृव्यः
ताक- (देखना) घातः
ताक- [दानाई आदमी) निपुणः
ताक- (किवाड़) कपाट, अररं
ताक- (गिन्ती) विषमम्
ताकि – यतस् [अ०]
ताकत-बलं, शक्तिः
ताकत भर- शक्त्या [तृ०वि०]शक्तितस् (अ०)
ताकतवर- बलवत् [त्रि०]
ताकतवर होना- प्रभवनम् (प्र भू १ प०)
ताकीद – अनुरोधः, अनुवर्तनं, निर्बंधः
ताकीद करना – अनुसन्धनम् (अनु – बंध् १प०)
ताकीदी – अनुरोधतस्
तागा – सूत्रं, गुणः
ताज – मुकुटम्
ताज़ा – सद्यः, नवं, प्रत्यग्रम्
ताज़ा नतीजा – सांदृष्टिकम्

जेठ-ज्येष्ठमासः
जेठा-ज्येष्ठः
जेब-[खीसा] कोषः, आधारः
जेब खर्च-निमव्ययः
जेब घड़ी-कोषघटिका
जेबा-शोभा
जेबाइश-मण्डनं, प्रसाधना, शोभा
जेबाइशी - विभूषकः, प्रसाधकः
जेबी - कौषिकं, नैजिकं
जेर-(रेहम) उल्वं, जरायुः
जेल } कारागारः, बन्धगृहं
जेलखाना
जेली - कूटम्, मिथ्या
जेवरी-रज्जुः, (स्त्री०) कूपरज्जुः स्त्री०
जेवर - भूषणं, अलंकारः
जेहन - बुद्धिः, प्रतिभा
जेनरलनालेज - भूगोलेतिहासः
जेनेटिव - संबंधः, षष्ठी
जेलदार - स्थायुकः
जेलदारी - स्थायुकता
जैसा-यादृशः
जैसा तैसा - तथा [अ०] एवम्
जैसाकि - तथाच [अ०] तथाहि [अ०]
जैसी - यादृशी
जैसे - यथा, अतम्
जौ - यव
जोआलजि - प्राणिविद्या
जोंक-रक्तपा, जलौका
जोकि - यच्च (अ०)
जोकुछ - यत्किञ्चित् (अ०)
जोकोई-यः कश्चित्
जोखिम-भयहेतुः
जोग-योगः
जोगी-योगिन् [त्रि०]
जोचीज-यद्वस्तु (न०)
जोजन-योजनं (४ कोस)
जोजो-यद्यद् (त्रि०]
जोटा-युगलं, द्वन्द्वं, मिथुनम्
जोड़-(हिसाब) संकलनम्
जोड़-बन्धनः, संधिः (पु०) योगः
जोड़ करके-युक्त्वा
जोड़ता हुवा-युञ्जत्,युञ्जानः(त्रि०)
जोड़ना-योजनं, संधानं, आयोजनम् (युज् १० उ०)
जोड़ने के लिये—योक्तुम्
जोड़ने लायक-योजनीयं, योज्यम् (त्रि०)
जोड़ने वाला-योजकः

ताजिया-रथी
ताज़ीम-सम्मानं आदरः
ताज़ीम करना-आदरणम् (आद्दृ६ आ०)
ताड़-(वृक्ष) तालः
ताड़ना-दंडम् ताड़नम् (दण्ड् १०प० (ताड् १०प०)
ताड़पीन-(तेल) श्रीरसः
तातार-(देश) पार्वतः शैलराज्यम्
तांती-वध्री,नध्री
तातील-अवकाशः
तादाद-संख्या संकलः
ताना-आक्षेपः खल्लोपः
ताना मारना-आक्षेपणम् (आक्षिप् ६ प०)
ताप-ज्वरः
तावड़तोड़-वेगतस् (अ०)
तांबा-ताम्रः,शुल्बम्
तावे-वशः
तावे करना-वशनम् (वश २प०)
तावेदार-वशंवदः वश्यः
तावेदारी-वशंवदता
ताया-तातः
तामीर-रचना, निर्मितिः
तामीर करना-निर्माणम् रचनं (रचू १०प० निर्मा४ आ०)
तामीरात-निर्मितिसद्मन् (न०) निर्माणालयः
तामील-पूर्त्तिः
तामीलकरना-आज्ञापालनम् (आज्ञा-पाल् १०प०)
तार-तन्त्री तन्तुः
तारकश-तान्त्रिकः
तारघर=तन्त्रीगृहं
तार बरकी-तन्त्रीसमाचारः
तारा-तारा उडुपः नक्षत्रम्
तारीख़-मितिः तिथिः
तारीखी-ऐतिह्यम् ऐतिहासिकम्
तारीफ़- (नाम) नामन्,प्रख्यातिः
तारीफ़- (लक्षन) लक्षणं, परिभाषा
तारीफ़- (बडाई) प्रशंसा, स्तुतिः
तारीफ़ करके-स्तुत्वा
तारीफ़ करताहुवा-स्तुवत् [त्रि०)
तारीफ़ करना-स्तवनम्, कत्थनं, (कत्थ् १ आ० । स्तु२प० श्लाघ् १ आ०)
तारीफ़ करनें लिये-स्तोतुम्
तारीफ़ करने लायक-स्तोतव्यम् स्तवनीयम् (त्रि०)
तारीफ़ किया गया-स्तुतः

जोड़ा—युग्मम्, मिथुनम्, युगलम् यमलम्
जोड़ा गया=युक्तः (त्रि०)
जोतना-योजनम्, उपश्लेषणम् (युज् १० उ०)
जोतिषी-दैवज्ञः, गणकः
जोनि-योनिः
जोर-बलम्
जोरावर-बलवत् (त्रि०)
जोरावरी-बलवत्ता
जोरू-पत्नी, भार्या
जोश-उत्तापः
जोशी-उत्तापता
जोशीला-उद्धतः
जौ-यवः शितशूकः
जौ-(सब्ज) तोक्मः
जौ-(भुने) धानाः
जौखार-यवक्षारः, यावशूकः
जौलान-सेतम्
ज्यादती अधिकता
ज्यादा-अधिकम्
ज्यों-यथा (अ०)
ज्यों की त्यों-तदवस्थम्
ज्यों त्यों-यथा तथा (अ०)
ज्वालामुखी-अग्निगिरिः

झ

झ-ध्वनिः, झञ्झावातः, इंद्रः, बृहस्पतिः
झक-गप्पम्, प्रलापः
झकना-प्रलपनम् (प्र-लप् १ प०)
झकर-महावातः, झंझावातः
झंकार-शिंजितम्
झगणा-मंथानः, मन्थः
झगड़ना-विवदनं
झगड़ा-विवादः, वितण्डा, द्वन्द्वः
झगडालु-विरोधिन् (त्रि०)
झगा-बालकञ्चुकम्
झंझट – विवादः
झंझटी – विवादिन्
झट झटिति (अ०)
झटका – प्रहारः, विघातः
झटपट – शीघ्रं, तत्क्षणम्
झटही-तत्क्षणं
झड़-घनघटा
झड़ना(पत्तोंका) पतनम् (पत् १ प०)
झंडा-पताका, वैजयन्ती
झड़ी – मेघमाला
झंडेवाला – पताकिन् (पु०) वैजयंतिन् (पु०)
झपटना – आक्रमणं
झपटा – आक्रान्तः

तारीफ़ वाला–स्तावकः
तारुकुल दुनया–विरक्तः, वैरागिन् (पुं०)
ताल–(बाजा) कांस्यं
तालधारी–पाणिघः, पाणिवादः
तालमखना–इक्षुगंधः, काटेक्षुः
ताला–लोहयंत्रम्, यन्त्रम्
तालाब– तडागः, सरस् (न०) जलाशयम्
तालाब–(कुदरती) देवखातम्
तालाब–[फूलदार] पद्माकरः, सरोवरः
तालाब-(छोटा) पल्वलम्
तालब का फाटक- कोट्टारः
तालाबी–पुष्करिणी
ताली–कुञ्चिका
तालीम–शिक्षा
तालीम देना–शिक्षणम् (शिक्ष्)
तालीम पाना–शिक्षणम् (शिक्ष् १ आ०)
तालीसपत्र–तालपर्णी, मुसः
तालु–तालुः
तावना–प्रमिसारकरणं (अभिसारत्–कृ ८ उ०)
तावान–क्षतिः, हानिः, दंडः
तावीज़–यंत्रम्
ताश–पत्रक्रीड़ा
तासला–(बरतन) तासलम्
तासीर–प्रभावः
तासुब–पक्षपातः
ताहम–[तो भी] तथापि [अ०]
ताहिरी–तापहरी
तिकोना–त्रिकोणः
तिगुना–त्रिगुणं, त्रिपार्श्वं
तिजारत–व्यापारः, व्यवसायः
तिजारत करना–व्यापारणम् (वि आ–पार् १० प०]
तिजारती – व्यवसायिन् (पु०) वाणिजः, सार्थवाहः
तिजारती –(जहाज) सांयात्रिकः, पोतवणिक् (पु०)
तिजारी – त्रैहिकज्वरः
तितरबितर – विकीर्णं, व्यस्तम्
तितली–चित्रपतंगः
तिनका – तृणम्
तिपत्ता – त्रिदलम्
तिब्ब – वैद्यकशास्त्रम्
तिब्बत – तालतोपकः, तीर्थतः

झप्पान – नरयानम्
झरना[पानीका] झरः, निर्झरः, स्रोतस् (न०]
झर्झरी[हलवाई का पोना] झर्झरन्
झरोखा – वातायनं
झलक–लावण्यं, आभासः
झलकना–भ्राजनम् (भ्राज् १ आ०]
झलझल–मुहुस् [अ०]
झलणी–चामरम्
झांकी–प्रदर्शिनी
झांझ–झर्झरः
झांपना–आच्छादनं [आ-छादय]
झाग–अम्पयः, फेनम्
झाड़–संमृजः
झाड़ना–संमार्जनम् [सम्-मृज् १०प०)
झाड़ा–विष्ठा, मलम्
झाड़ी [दरख़्तों की] गुल्मः, स्तंबः
झाड़ू–सम्मार्जनी
झाड़ूबरदार – सम्मार्जकः
झार[लैंप] दीपस्तंभः
झारी(पानीकी) भृंगारः, पानपात्रम्
झालड़–तन्तुजालः
झालड़दार–मांनजालिकम्
झांसा–कपटम्, कपटविश्वासः
झिझकना–अभिशङ्कनम् अभि-शङ्क १ आ०(व-लङ्ग १ आ)
झिझण– (वृत्त) डिंडिणिका,शिरीपिका,

झिट–झिटी, नीली
झिड़क
झिड़की } तिरस्कारः धिक्कारः
झिड़कना –निर्भर्त्सनम् (निर्—भर्त्स १० प०)
झिलमिल - प्रभोन्मेषः
झिल्ली –कला
झील – कासारः
झुक करके - नत्वा, प्रणम्य [अ०]
झुकता हुवा - नमत् ,प्रणमत् (त्रि]
झुकना - नमनं, [नम् १ प०)
झुकनेके लिये - नंतुम् (अ०]
झुकनेके लायक - नमनीयम् नन्तव्यम् [त्रि०)
झुकनेवाला- नामकः, नामिन् (त्रि)
झुका - नतः, नतवत् (त्रि०)
झुकाव - नतिः, नामः
झुंड - यूथं, गणः
झुंड - (गौवों का) गोधनम्
झूमका - कर्णिका
झूल - आस्तरणं कुथः
झूठ - मिथ्या
झूठा - मिथ्यावादिन् [त्रि)
झूठा इलजाम–मिथ्याभियोगः
झूठा दावा–अभ्याकांक्षितं-
झूठी तारीफ़–अत्युक्तिः

तियालीस – त्रिचत्वारिंशत् (स्त्री०)
तियालीसवां – त्रयश्चत्वारिंशः
तियालीसवीं – त्रयश्चत्वारिंशी
तिरछा – वक्रम्
तिरछाहोना – ध्वरणम् ध्व१ प०)
तिरछीनजर – कटाक्षः
तिराहा – त्रिपथम्
तिल – तिलं, तिलपिंडम्
तिलक – तिलकम्
तिलशकरी – तिलशर्करा
तिला – सुवर्णम्
तिलाई – कार्मिकवस्त्रं, कार्मिकम्
तिलिस्म – इन्द्रजालम्
तिलिस्मी – ऐन्द्रजालिकम्
तिल्ली – (रोग) गुल्मम्
तिवालत – विस्तारः
तिसाला – त्रिवार्षिकम्
तिहत्तर – त्रिसप्ततिः
तिहत्तरवां – त्रिसप्ततितमः
तिहत्तरवीं – त्रिसप्ततितमी
तिहाई – तृतीयांशः
तीखा – तिक्तम्
तीखी – तिग्मम्
तीज – तृतीया
तीतर – तित्तिरिः, चित्रपक्षः
तीन – (औरतें) तिस्रः
तीन – (पुरुष) त्रयः
तीन – (नपुंसक) त्रीणि
तीनतीन – त्रिशः (अ०)
तीनतरह – त्रेधा (अ०)
तीनतरहका – त्रैविध्यम्
तीनदफा – त्रिस् (अ०)
तीनदिनका – त्र्यहीनः
तीनदिनकी – त्र्यहीना
तीनबरसका – त्रिहायनः, त्रिवर्षः
तीनबरसकी – त्रिहायना, त्रिवर्षा
तीनमण – खारी
तीनमासका – त्रिमास्यः
तीनमासकी – त्रिमास्या
तीन रात का – त्रिरात्रीणः
तीन रात की – त्रिरात्रीणा
तीनवार – त्रिस् (त्रि०)
तीनी – (अनाज) तृणान्नं, (अ०) नीवारः, मुसाधिका
तीर – (किनारा) तटम्
तीर – बाणः, नाराचः, इषुः, शरः
तीरंदाज – कृतहस्तः, धनुर्धरः
तीरथ – तीर्थम्

झूलना – दोलनं (दुल् १० प०)
झूला – दोला, प्रेंखा
झोकना-प्रक्षेपणम् (प्रक्षिप्–६ प०)
झोंपड़ी-उटजः, कुटीरः, पर्णशाला
झोली – कंथिका

ट

ट-टङ्कारः चायनः पादः गौनम्
टक्कर-अभिसम्पातः प्रतिघातः
टक्कर लगाना-अभिसम्पातनम् (अभि सम् पत् १प०)
टंक-[४ मासा] शाणः
टकटकी-अनिमेषम्
टकरना-संघट्टनम् [सम् घट्ट १आ० मृद् १ प०]
टकराना-संमर्दनम् (सम् मर्दय्) सम् घातय)
टकसाल-टंकशाला, मुद्रांकन शाला
टकसालिया-टंकशालिकः
टका (दोपैसे]पणद्वयम् द्विपणम्
टका-मुद्रा धनम्
टंकार-विस्फारः
टकोर-(दवाई की) स्वेदः
टटवानी-क्षुद्रघोटिका
टटिहरी-टिट्टिभः क्रौंचः
टंटा-युद्धं
टट्टी-कुम्बा पुरीषालयम्
टट्टू-क्षुद्रघोटकः
टटोलना-परीक्षणम् (परि ईक्ष १आ०
टपक करके-स्रुत्वा
टपकता हुआ स्रवत् [त्रि०]
टपकना-स्रवणम् (स्रु १प०)
टपकनेके लिये-स्रोतुम्
टपकने लायक-स्रवणीयम् (त्रि०)
टपकने वाला-स्रावकः (त्रि०)
टपका-स्रुतः [त्रि०]
टब्बर-कुटुम्बः
टमटम – अश्वरथः, अश्वशकटिका
टरकी शकः तुरुष्कः
टरमीनेशन-प्रत्ययः
टहनी-शाखा
टहनीकी तुंदली-वृतम्
टहलना-विहरणं चरणं वि हृ१प० चर१प०)
टाइटल-उपाधिः आवरकम्
टाइप - आदर्शः नागाक्षरम्
टाइम पीस-घटिकायंत्रं
टांकना } उपसीवनं (उप सीव् ४प०)
टांका
टांग – जंघा
टांगा – अश्वयानम्
टाट – शालं, पटी
टाप – पढ़ने या गाने में पाठसंकेतः,

तीलि-ईषिका
तीस-त्रिंशत् (स्त्री०)
तीसरा-तृतीयः
तीसराहिस्सा-तार्तीयीकः
तीसरी-तृतीया
तीसवां-त्रिंशत्तमः
तीसवीं-त्रिंशत्तमी
तीससे खरीदा—त्रिंशत्कः (१)
तुक-अनुप्रासः
तुड़वा करके-भेदयित्वा
तुड़वाता हुवा-भेदयत् (त्रि०)
तुड़वाना—भेदनम् (भेदय)
तुड़वाने के लिये-भेदयितुम्
तुड़वानेके लायक-भेदनीयम् (त्रि०
तुड़वाने वाला-भेदकः
तुड़वाया गया-भेदितः
तुम्मन-स्कंधः
तुम्बा-तुम्बः
तुम्बी-[मीठी] तुम्बिका, तुंबरिका
तुम्बी-[कड़वी] कटुतुंबी, पिण्डफला
तुम्हारा-युष्मदीयः, यौष्माकीणः, यौष्माकः
तुम्हारी-युष्मदीया, यौष्माकीणा, यौष्माका
तुम्हारे जैसा-युष्मादृशः
तुम्हारे जैसी-युष्मादृशी
तुरई...कोशातकी
तुरई बड़ी-महाकोशातकी
तुरईघी—राजकोशातकी
तुरई भिंढी-घोषकः, धामार्गवः
तुर्त-सपदि (अ०] लघु (नि०]
तुर्तफुर्त-द्रुतं, शीघ्रं, क्षिप्रम् त्वरितम्
तुर्रा पटपुच्छम्
तुरुम-सिंहनादः
तुलना-तोलनम् (तोल् १० प०)
तुलवाना-तोलनम् (तोलय)
तुलसी—तुलसी, हरिप्रिया
तुस-तुषः, धान्यत्वक् (पु०)
तुहफा-उपहारः, उपायनम्
तुहमत-दोषः, कलंकः, अपवादः, मिथ्यावादः
तुहमत लगाना-अपवदनम् (अप-वद् १ प०)
तुहमती—निंदकः
तूत—(फल) तूतं, क्रमुकं, ब्रह्मदारुः
तूती—तूर्यम्
तूतीया—तौर्यिकः
तूफान—निर्घातः, प्लवनं, वन्यम्
तूफ़ानी—नैर्घातिकम्
तूल—विशालता, दीर्घता, विस्तरः
तेईस-त्रयोविंशतिः

(१) इसी प्रकार 'क' लगाकर खरीदने का अर्थ सर्वत्र लिया जा सकता है

टाप – (पांव की) पदशब्दः
टापू – द्वीपम्
टालमटोल – वाक्छलं, अपदेशः
टाहल – [लकड़ी की] काष्ठापणम्
टाहली – शिंशपा,
टिकी – वटी, वटिका
टिकट – प्रयाणपत्रम् टिकटम्
टिकया – चक्रिका, वटिका
टिंडा } [साग डिण्डिशः रोमशफलम्
टिंडे
टिड्डा – भ्रागाङ्कः
टिमटिमाना – विस्फूर्जनं, शनैः प्रकाशः,
टीका – तिलकम्
टीकालगाना – विस्फोटनम्, (वि-स्फुट् १० उ०)
टीन – त्रपुस् [न०]
टीप – रेखालेपः
टीपटाप – आडम्बरः
टीम – गणः, संघः
टीला – (मिट्टीका) वल्मीकं, नाकुः
टुकड़ा – खण्डः
टुक – किञ्चित्कालं, किञ्च, (अ०) ईषत् (अ०) मनाक् (अ०)
टुंड – अहस्तः
टुंडा – छिन्नहस्तः, कुणिः
टूटा – भग्नम्
टूटना – भंजनं, त्रुटनं (त्रुट् १ प०)
टूटाफूटा – जीर्णम्, पुरातनम्
टेक – आधारः
टेक – (कुरसी वगैरः) पृष्ठिका
टेकनीकल – पारिभाषिकम्
टेढ़ – (दरिया का) नदीवङ्कः
टेढ़ा – वक्रः, तिर्यक् (अ०) साचि-तिरो (अ०)
टेढ़ापन – वक्रता
टेबल – मंचः, आधारः
टेरना – आह्वानं (आ–ह्वे १ प०)
टेरा – पटावरणम्
टेलीग्राफ – विद्युत्संदेशः
टेवा – जन्मपत्री
टेसु – पलाशः, किंशुकः
टैक्स – करः, भारः
टैंस – काखः
टैनिस – जालक्रीड़ा, लघुकन्दुकः
टोक – अन्तरायः
टोकरी – पेटकम्, करण्डकः, करण्डकः
टोकरी – (मच्छलियों की) कुवेणी मत्स्यधानी

तेईसवां – त्रयोविंशः
तेईसवीं – त्रयोविंशी
तेग – असिः, करवालम्
तेज़ – तीव्रं, वेगवत् (त्रि०) सवेगम्
तेज़ – (हथयार) निशितं, शातं, तेजितं, तीक्ष्णम्, अकुण्ठम्
तेज़अक़ल – प्रतिभा
तेज़करना – तेजनम् (तिज्-१ प०। शान् १ प०)
तेज़ाब – अम्लः, द्रावकः
तेज़ी – वेगः, तीव्रता, अधिकता
तेतीस – त्रयस्त्रिंशत् (स्त्री०)
तेतीसवां – त्रयस्त्रिंशः
तेतीसवीं – त्रयस्त्रिंशी
तेंदुवा – ग्राहः
तेरह – त्रयोदश
तेरहवां – त्रयोदशः
तेरहवीं – त्रयोदशी
तेरा – त्वदीयः, तावकः, तावकीनः
तेरेजैसा – त्वादृशः
तेरेजैसी – त्वादृशी
तेल – तैलं, अभ्यंजनम्
तेलमिट्टीका – प्रस्मरतैलम्
तेलिन – तैलकारी

तेली – तैलकारः
तै – इयत्ता
तैदाद – संख्या
तैंदु – तिंदुकः स्फूर्जकः
तैयार – उद्यतः, उद्गूर्णः, प्रस्तुतम्
तैयारकरना – उद्यमनम् (उद्-यम् ४ प०)
तैयारी – परिकल्पनं आयोजनं योगः
तैरना – सन्तरणम् (तृ१प०)
तैराक – तारकः
तैलकंद – तैलकंदकः द्रावककंदकः
तो – तु
तोड़ – भेदः
तोड़ करके – भक्त्वा
तोड़ताहुवा – भञ्जत् (त्रि०)
तोड़ना – भञ्जनम्, त्रोटनम् (त्रुट् १प०) तुण्ड १आ०)
तोड़नेके लिये – भङ्क्तुम्
तोड़ने लायक – भञ्जनीयम् (त्रि०)
तोड़ने वाला – भञ्जकः
तोड़ा गया – भग्नः (त्रि०)
तोतला – अस्पष्टम्
तोता – कीरः शुकः
तोती – कीरी शुकी

डफ़-खञ्जनी
डबल-द्विगुणम्
डबलरोट-द्विगुण रोटिका
डंबल-अयो दण्डः
डब्बा-संपुटकः
डमरु-डमरुः
डर-भयं, भीतिः, त्रासः
डर करके-त्रासित्वा
डरता हुआ-त्रसत् (त्रि०)
डरना-त्रसनम्, भेपणं (त्रस् १ प० भेप् १ उ० भी ३ उ०)
डरने के लिये-त्रासितुम्
डरने लायक-त्रसनीयम् (त्रि०)
डरने वाला-त्रासकः (त्रि०)
डरपोक-भीरुः
डरा-त्रासितः (त्रि०)
डराई-विभीषिका
डराना-भीषणम् (भीषय्)
डरावना- भयानकः, रौद्रः, करालः
डली-शकलिका
डला-डल्लकः
डसना-दंशनम् (दंश् १ प०)
डहक-गर्जः
डहकाना-विकसनं, समर्धनं (विकस् १ प० । सम्-ऋध् ५ प०)
डाक-प्रेषा.
डाकखाना-प्रेषणालयं, प्रेषागारः
डाक गाड़ी-विद्युद्यानम्, प्रेषायानम्
डाका-दस्युगणः
डाकाज़न-प्रसह्य चौरः
डाकाज़नी-प्रसह्य चौरता
डाका मारना- अभ्यवस्कंदनं, अभ्यासादनम् (अभि-अव-स्कन्द् १० उ०)
डाकिनी-डाकिनी
डाकू-कपर्दनृ (पु०)
डाक्टर-शल्यचिकित्सकः, भिषक् (पु०)
डाट-तोरणम्
डाटना-भर्त्सनम् [भर्त्स् १० उ०)
डाढ़-दंष्ट्रः
डाढ़ी-श्मश्रुः
डायन-पिशाची
डायरी-पंजिका, चर्य्यापुस्तकः
डार } (टहनी) शाखा
डाल }
डालना-न्यसनं, धारणं धा३उ० निअस् ४ प०
डाला-न्यस्तम् धृतम् (त्रि०)
डाली-भेंट उपहारः उपायनम्
डाली-(वृक्षकी) शाखा
डावणा-[जेवर] मालभूषणम्
डावणी-(जेवरी) दामनी
डावांडोल-अस्थिरः
डाह-मत्सरः

तोंदी-(दुनी) नाभिः
तोप-शतघ्नी
तोबड़ा-मसेनः पुटः
तोभी-(ताहम) तथापि (अ०)
तोरी- [अनाज] तुवरी
तोल-परिमाणं
तोलड़ा-द्रोणी
तोलना-तोलनं, (तोल् १० प०)
तोला—कर्षः, अक्षः
तोला तोला—कर्षशः [अ०]
तोलाभर-कर्षकः
तोशा- [मिठाई] होलकः
तोशाखाना-भाण्डागारम्
तौजीह-विज्ञप्तिः
तौर- रूपम्
तौलया- अङ्गपालः, मोञ्छकः, अङ्गमोञ्छः
त्यों- तादृशः
त्योहार-पर्वन्, (न०) उत्सवः
त्योंही-तदैव [अ०]
त्रगरी-गोऽङ्गमालम्
त्रिमार-त्रिखण्डम्
त्रियानवे-त्रिनवतिः
त्रियानवां -त्रयोनवतितमः
त्रियानवीं-त्रयोनवतितमी
त्रियासवां-त्र्यशीतितमः
त्रियासवीं- त्र्यशीतितमी
त्रियासी-त्र्यशीतिः
त्रिवी-त्रिवृता, त्रिभंडी
त्रिवीकाली-काला, कालमेषिका
त्रेपन-त्रिपञ्चाशत् (स्त्री०)
त्रेपनवां- त्रयःपञ्चाशत्तमः, त्रयःपञ्चाशः
त्रेपनवीं- त्रयःपञ्चाशी
त्रेसठ- त्रिषष्ठिः
त्रेसठवां- त्रिषष्ठितमः
त्रेसठवीं- त्रिषष्ठितमी

थ

थ-पर्वतः, रक्षकः, भक्षणम्
थई-राशिः, कूटम्
थकना क्लमनम् (क्लम् [क्लाम्] ४प०)
थका-क्लान्तः, श्रांतः, श्रमार्त्तः
थकावट—श्रांतिः, क्लान्तिः
थन-स्तनम्, कुचम्
थप्पड़-चपेटा, तालिकम्
थंभ-स्तंभः, कीलम्
थमना-रोधनम् [रुध् ७.प०]
थर्ड क्लास – तृतीयश्रेणी
थर्डपरसन – प्रथमपुरुषः

थर्ड मास्टर – तृतीयाध्यापकः
थरथराना – प्रकम्पनं, [प्र-कम्प् १उ०]
थरमामेटर-पारदयंत्रम्
थल – स्थलम्
थली – वितर्दिः, वेदिका, चत्वरम्
था – आसीत् (क्रि०)
थाना – ठाना, गुल्मम्
थानादार – स्थानिकः, गुल्माधिपः
थापा – हस्तन्यासः
थामना – निवारणम् (नि-वारय्)
थाल – स्थालम्
थाला – आलवालम्
थाली – आवपनम्, स्थाली
थिआलोजी – ईश्वरज्ञानम्, वेदान्तं ब्रह्मविद्या
थिएटर – रंगः, नृत्यशाला
थिंदाकरना-भेदनम् [भिद् ४ प०]
थिमी – किलासम्, सिध्मम्
थिर-स्थिरः
थुकमथुका – कफाकफि [अ०]
थुड़ा(फि०) पादप्रहरणम्
थूक – कफकूर्चिका, थुत्कारः
थूकना – थुत्करणम् निष्ठीवनं (थुत्-कृ ८ उ०]
थूणा – स्तंभः
थूनी – स्तंभकाष्ठम्
थूहर – गुडा, समंतदुग्धा, सेहुंडा
थूहरदंडा – भूरिफेना, शातला

थेवा – रत्नं, पङ्क्तिः
थैला – प्रसेवः, स्यूतः
थैली प्रसेवः, पुटः, स्यूतः
थोक – स्तूपम्
थोकदार – स्तूपिन् (त्रि०)
थोक फ़रोश – स्तूपविक्रयिन् [पु०]
थोक फ़रोशी – स्तूपविक्रयः
थोड़ा – स्तोकं, अल्पम्, क्षुद्रकम्
थोड़ा अंधेरा-अवतमसम्
थोड़ागर्म-कोष्णं कवोष्णम्
थोड़ावहुत-न्यूनाधिकम्
थोड़ा २-अल्पम् अल्पम्
थोड़ेसे—ईषदल्पं,स्तोकं क्षुद्रम्
द-भार्या,दया दाद [त्रि०]
दक्खन-दक्षिणम्
दक्खनका-दाक्षिणात्यः
दखल-प्रवेशः
दखलकरना-प्रवेशनम्(प्र-विश६प०
दंग व्याकुलःसंभ्रान्तः विमनस्कः व्यग्रः
दंगई-विवादशीलः युयुत्सुः
दंगल-रंग.मल्लभूमिः अखवाटः
दंगा-संक्षोभः प्रकोपः भंगः
दंगाकरना-संक्षोभनम् [सम् क्षुभ् ४प०]

धमकाना-परितर्जनं(परि-तर्ज१०प०)
धमकी-भर्त्सना, भयप्रदर्शनम्
धमकीदेना-भर्त्सनम् (भर्त्स१०प०)
धमाचौकड़ी-ध्वनिः,रवः,कोलाहलः
धमासा-धन्वयासः, यासः
धरणीकंद-धरणी, कंदालुः,वनकंदः
धरम-धर्मः
धरम शास्तर-धर्मशास्त्रम्
धरमी-धर्मिन् [पु०]
धरी-(पांचसेर) आढकम्
धागा-सूत्रम्, गुणः
धाड़-[लुटेरोंकी] दस्युगणः
धाड़ा-अभ्यवस्कन्दः
धाड़ा मारना-अभ्यासादनम् अभ्यवस्कंदनम् [अभि-अव स्कन्द् १०उ०]
धाड़ेमार-प्रसह्यचौरः
धाणे-धान्याकं, कुस्तुंबरुः
धात-धातुः
धान-धान्यं, व्रीहिः
धाय-परिदेवनं, आर्तनादः
धायमारना-क्रोशनम् (क्रुश्१प०)
धार-(नदीकी) स्रोतस् (न०)
धारणकरना-धारणम् (धृ१प०)
धारी-रेखा
धारीदार-रेखामयम् रेखावत् (त्रि०)
धावा-आक्रमः अभिनिर्यातिः
धावामारना-आक्रमणम् [आक्रम्-१प०]
धीमा-मन्थरः मन्दगामिन् (त्रि०)
धीमाधीमा-मन्दंमन्दम्
धीमाई-मन्थरता, मन्दता
धीरज-धैर्यम्
धीरे - शनैस् [अ०)
धुंगारी-उपसेकः
धुंगारीलगाना-उपसेकनम् [उप-सेक १ आ० अभि-घृ १० प०]
धुंधला - मलिनम्
धुंधलाई - मलिनता
धुनना - [कपास या बालोंका] विशदीकरणम् [विशदी कृ ८ उ०]
धुर } धुरी } प्रानमुखम्
धुलवाना - शोधनम्, प्रक्षालनम् [प्र-क्षालय्]
धुलाई - शुद्धिः, शोधनवस्त्रम्
धुवां- धूम्रः
धुवांसा - धूम्रइव
धुस्सा-ऊर्णकम्बलम्

दगा—छल,कपट, [छलय]
दगाकरना-संक्षोभनम् (सम्‌क्षुभ् ४प)
दगाबाज-कूटकृत् धूर्तः
दगाबाजी-धूर्तता कूटत्वं
दच्छिना-दक्षिणा
दंडवत—साष्टाङ्गप्रणामः
दन्तैल-महादन्तः
दफ्तर-लेखनालयः कर्मस्थलं, कार्यालयम्
दफा=वारम्
दफा-[कानून] धारा
दफादार-धारापतिः [पु०]
दबका-घातः
दबदबा—प्रतापः
दबना—दमनम् (दम् ४ प०]
दबला-भूषामञ्जूषा
दबाना-दमनम् [दम् ४ प० । पीड़१० प०)
दबाना-[जमीनमें] निखननं (नि-खन् १ प०)
दबाव—प्रभावः, गौरवम्
दम—श्वासः
दमक—प्रभा, द्युतिः,वर्चा उज्ज्वलता
दमकना—उज्ज्वलनम् (उद्-ज्वल् १ प०)
दमडी—अर्धकाकिनी
दमबाज़—वञ्चकः, प्रतारकः
दमबाज़ी—वञ्चकता
दमभरना-विकत्थनं (वि-कत्थ् १आ० आत्म-श्लाघ् १ आ०)
दमचढ़ना—निःश्वसनम् (निःश्वस् २ प०)
दमदिलासा—प्रसादनं, सान्त्वनम्
दमरोकना—प्राणायामः (प्राण्-आ यम् ४ प०)
दमा—श्वासरोगः
दयानत-सत्यम्, धर्मः
दयानतदार—सत्यसंधः विश्वासपात्रः
दयानतदारी-सत्यसंधता, विश्वासःपात्रता
दयार-देवदारुः, भद्रदारुः
दर-द्वारम्
दरकना-(फटना) विदलनं, भञ्जनम् (विदल् १ प०)
दरकार—अपेक्षा
दरकारहोना—अपेक्षणम् (अपईक्ष् १आ० । ईप् ६ प०)
दरख्त—वृक्षः, तरुः, पादपः
दरख्त [मुंड] शिफा, जटा
दरख्त [कटाहुवा] स्थाणुः, शङ्कुः
दरख्त [फलदार) फलिन्,फलिनः [पु०]
दरख्त [बेफल)अफलः,अवकेशिन [पु०)
दरखान—शिल्पिन् (पु०]
दरख्वास्त-निवेदनपत्रम्, अभ्यर्थना

धूंअंधार - सन्तमसम्
धूनी - अग्निशाला, अग्निकुण्डम्
धूप [राल]-यक्षधूपः शालनिर्यासः
धूम—कीर्तिः प्रख्यातिः
धूर - धूलिः,पांशुः, रजस् [न०]
धूर [झाड़ू की]—अवकरः
धेला-काकिनीद्वयम्
धेली-अर्धमुद्रा, रूप्यकार्षम्
धौंकनी-भस्त्रा
धोखा-वञ्चना, प्रतारणा, विप्रलम्भः, व्याजः
धोखा देना-वञ्चनम्, [वञ्च १ प०]
धोखेबाज-वञ्चकःविश्वासघातिन् [पु]
धोखेबाजी—वञ्चकता, विप्रलम्भता
धोतर-स्थूलपटः
धोती-परिधानं, अन्तरीयं, शाटिका, अर्धोशुकः
धोना-शोधनं,प्रक्षालनम् शुध् १प० । प्र०क्षाल १० प०)
धोबिन-रजकी
धोबी-रजकः निर्णेजकः
धौन-[आधमन] कलशः
धौलर-हर्म्यम् प्रासादः
धौला- श्वेतम् शुभ्रम्
धौंस-(धमकी) भर्त्सना, भयप्रदर्शः
धौंसा – पटहः, दुंदुभिः
न-उपमा, बन्धनम्, निषेधः
नकछिकनी-छिक्किका, छिकनी
नकटा-विकः, नतनासिकः
नकटाई-गलबन्धः
नकसीर—नासिकारुधिरं
नकारा-तुच्छम्, क्षुद्रम्
नक्कारखाना-वाद्यालयम्, वाद्यवृन्दम्
नक्कारची-पाणिघः, मार्दंगः
नक्कारा (बाजा) - पणवः, मर्दलः
नक्कारा (बड़ा) काहलः
नक्काल-अभिनायकः
नक्काल (आवाज़में) अस्वरः असौम्यस्वरः
नक्काश-चित्रकारः
नक्काशी-चित्रकृतिः
नक़द-प्रस्तुतमुद्रा
नक़दी-धनं, द्रव्यम्, प्रस्तुतधनम्
नक़ल (सांग) स्वांगः, अभिनयः
नक़ल (लेख) अनुकृतिः अनुलेखः
नक़लकरना-अनुकरणम्(अनु-कृ८उ०)
नक़लनवीस-अनुलेखकः
नक़लनवीसी-अनुलेखकता
नक़ली - कृत्रिमः
नक़ीवाल-उपदेशः

दरगाह-(ईश्वरकी) आयतनम् अधिकरणम्
दरगाह-(राजाकी) राजसभा धर्माधिकरणम्
दरगाह-(दलीज) देहली, द्वारपिंडी, प्रवेशपथः
दरगुजरकरना-शमनं(शम् ४प०)
दरदरा-अर्धचूर्णम्
दरपरदा-पत्रकम्
दरवदर-द्वारं द्वारम्
दरवार-राजसभा
दरवारआम-साधारणसभा
दरवारखास-विशेषसभा
दरवारी-सभ्यः
दरवाजा-द्वारम्
दरवाजा-(बाहिरका) तोरणं बहिर्द्वारम्
दरवाजा-(शहिरका) गोपुरं, पुरद्वारम्
दरवान-द्वाःस्थः द्वारपालः
दरवानी-द्वारपालता,द्वाःस्थता
दरवेश-साधुः
दरस-दर्शनं, दर्शः
दरहकीकत्त-वस्तुतस् (अ०)
दरा-मार्गः द्वारम्
दराज़-पिप्पली, कोला

दरार-रंध्रं भेदः,
दरिया-नदी, नदः
दरी-(पुनरंजी) आस्तारः
दरेग-प्रत्यादेशः अस्वीकारः, अवधीरणा
दरेगकरना-प्रत्याख्यानम् (प्रति-आ-ख्या२प० / नि-षिध् १प०)
दरोग-मिथ्या (अ०)
दरोगा-कार्याधीशः
दर्ज-प्रवेशः प्रविष्टिः निवेशः
दर्जकरना-निवेशनम्
दर्जन-द्वादशकं
दर्जा-पदं, श्रेणी
दर्जा बदर्जा-यथाधिकारम्यथापदम्
दर्जी-सौचिकः तुन्नवायः
दर्द-पीड़ा, वेदना, यन्त्रणा
दर्द-(सख्त) यातना
दर्द करना-तोदनम् (तुद् ६प०)
दर्दनाक-दुःखार्थः,क्लेशदायकः,
दर्भ-कुशा, दर्भः
दर्मियान-मध्यमम्
दर्मियान में-अन्तरा[अ०] अन्तरेण[अ०] मध्ये-[अ०]

नक़ली आंख-उपनेत्रम्
नक्श-चित्रम्
नक्शदार-चित्रकः, चित्रवत् (त्रि०)
नक्शा-मानचित्रं, आलेख्यपत्रं, चित्रपटम्
नकेल-नस्योतः, नाथः
नखलिस्तान-शाद्वलं, रम्यस्थलं
नखी-नखिन् [त्रि०]
नगर-नगरं, पुरं, पुरी, पत्तनम्
नगारा-मर्दलः
नंगा-नग्नः, दिगम्बरः
नगीना-(थेवा) रत्नम्, हीरकम्, मणिः
नगीनासा-रत्नमिव (अ०]
नगीनासाज़-रत्नपाजकः
नचाकरके-नर्तयित्वा
नचाताहुआ-नर्तयत् (त्रि०)
नचाना-नर्तनम् (नर्त् धृ०)
नचाने के लिये-नर्तयितुम्
नचाने लायक-नर्तनीयम् (त्रि०)
नचानेवाला-नर्तकः
नचाया गया-नर्तितः (त्रि०]
नजदीक-निकटं, अन्तिकम्
नजदीकजियादा-नेदीयस् (त्रि०)
नजदीक सब से-नेदिष्ठः (त्रि०)
नज़दीक-(गांव के) उपग्रामम्
नजदीकी-नैकट्यं, सन्निधिः
नजदीकीमें-समया (अ०) निकषा (अ०)
नज़र-दृष्टिः, कटाक्षः, आरातीयः
नज़रबंद-(कैदी) संयतः, समर्यादः
नजरबंद-इन्द्रजालिकः
नज़रबंदी-इन्द्रजालः
नजरबंदी-(कैद) कारागुप्तिः निरोधः
नज़रसानी-समालोचना, पर्यवेक्षा
नजरसानीकरना-पुनरवलोकन (पश्चात्-अवलोक् १० प०)
नज़राना-उपहार, उदारनं, उपदा
नज़ला-पीनसम्
नज़ाकत-तानमन् (त्रि०) कोमलता
नज़ारा-दृश्यम्
नज़ीर-उदाहरणम्, उपमा, दृष्टांतः
नट-नटः, शैलषः, जायाजीवः
नटखट, नटवा-व्यंसकः, धूर्तः
नटखटी-धूर्तता, व्यंसकता
नटिनी-नटी
नठीक-विसंवादः
नड़-नडः, धमनः
नड़ी-नडी, धमनी

दर्मियानी-मध्यवर्तिन् [न०]मध्यभागः
दर्राना-(फटना) विदलनम् (वि दल् १ प०)
दल-संघः व्रातः
दलकरके-दलित्वा
दलतावाहु-दलत् (त्रि०)
दलदल-पंकः, जंबालः, शादः कर्दमः
दलना-पेषणं,भेदनं,दलनम् (दल१प०
दलनेके लिये—दलितुम्
दलने लायक-दलनीयम् (त्रि०)
दलनेवाला-दलकः
दलवा करके-दालयित्वा
दलवाता हुवा-दालयत् [त्रि०]
दलवाना-दालनम् (दाल्य)
दलवानेके लिये-दालयितुम्
दलवाने लायक-दालनीयम् (त्रि०)
दलवाने वाला-दालकः, दालयितृ (त्रि०)
दलवाया गया—दालितः (त्रि०)
द(र)लयाई-दर्शनीयवस्त्रम्
दला गया-दलितः (त्रि०)
दलाल-मध्यस्थः, स्थेयः
दलालिन-कुट्टनी, शंभली
दलाली-मध्यस्थता, स्थेयता
दलीज-देहली, प्रवेशपथः
दलील-युक्तिः, उपपत्तिः, वितर्कः
दलीलउठाना-ऊहनम्[ऊह १आ०]
दवना-(फूल)दमनकः, दान्तः
दवर-[डाट] तोरणम्
दवर-कुण्डः
दवरी-(कूंडी] कुण्डिका
दवाई-औषधिः, भेषजम्
दवात-मसीपात्रम्
दवाफ़रोश-औषधिकम्
दस्तकारी-हस्तकला
दस्तख़त-हस्ताक्षरम्
दस्तन्दाज़ी-हस्तक्षेपः, प्रवृत्तिः
दस्तवस्ता-कृताञ्जलिः, कृतकरपुटः
दस्ता-[कागज़ों का] हस्तकम्
दस्ता-[इमामका]-अश्मभालः
दस्ताना-अंगुलित्रं,हस्तत्राणं, अंगुलित्राणम्
दस्तावेज़-हस्तलेखः
दस्तावेज़-(जाली) कपटलेख्यम्
दस्ती-हस्त्यम्
दस्ती-(खत) हस्त्यपत्रम्
दस्तूर-विधिः, नियमः
दस्तूरी-वेतनम्, उपजीविका
दस-दश १० [त्रि०]
दसअरव-खर्वः १०००००००००
दसकरोड़-अर्बुदम् १०००००००००
दसखरव-महापद्मम् १००००००००००००

नतीजा-परिणामः, उदर्कः
नतो-ननु
नत्थी-ग्रंथिः, संश्लेषः
नथ-(स्त्रियों की) कुण्डलिनी, कुण्डला
नथ-(नकेल) योक्त्रं, योत्रम्
नदी-नदी
ननंद -ननांदा (स्त्री०)
नंदोई-ननांदृपतिः
ननिहाल—मातामहगृहम्
नन्हा-लघुः
नफ़रत-ग्लानिः, घृणा
नफ़स-इन्द्रियः
नफ़सकुश-जितेन्द्रियः
नफ़सकुशी-जितेन्द्रियता
नफ़सानी-विषयासक्तः
नफ़सानीयत - विषयासक्तिः
नफ़सानफ़सी - स्वार्थपरता
नफ़ा - लाभः, आयः
नफ़ी - न, नैव
नफ़ीस - पेशलः, उत्कृष्टः
नब्ज़-नाड़ी, धमनी
नम्बर - संख्या, क्रमांकः, राशिः
नम्बरदार - संख्यापतिः
नम - आर्द्रः

नमक - लवणम्
नमकख्वार - भृत्यः, दासः
नमकख्वारी - भृत्यता, दासता
नमकहराम-कृतघ्नः
नमकहरामी-कृतघ्नता
नमकहलाल-कृतज्ञः
नमकहलाली-कृतज्ञता
नमकीन-लावणं, लावणिकम्
नमी-आर्द्रता
नमूना - आदर्शः, उदाहरणम्
नया - नूतनं, नवम्
नये सिरसे - प्रारम्भतस्
नरगस - (फल) नारगसम्
नर्मदा - (नदी) रेवा, मेकलकन्यका, नर्मदा
नरम - कोमलं, मृदुलं, चिक्कणम्
नरमाज़ियादा - म्रदीयस् (त्रि०)
नरम सब से - म्रदिष्ठः (त्रि०)
नरमी - सौम्यता, प्रवणता
नल - (पानी का) जलयंत्रम्, जलोत्तोलनयंत्रम्
नली - नालिका
नवाब - राजन् [पु०] भूपः,
नवाबी - राजता
नव्वीवां - नवतितमः
नव्वीवीं - नवतितमी

दस तरह-दशधा (अ०)
दसदिनका-दशाहीनः
दस दिनकी-दशाहीना (१)
दसनील-जलधिः
१०००००००००००००
दसपद्म-मध्यमम्
१००००००००००००००००
दस बरसका-दशवर्षः
दस बरसकी—दशवर्षा (२)
दसमासका-दशमास्यः
दसमासकी-दशमास्या
दस रातका-दशरात्रीणः
दसरातकी-दशरात्रीणा (३)
दसलाख-प्रयुतम् १००००००
दसवां-दशमः
दसवां हिस्सा—दशमः, दशमांशः
दसवार-दशकृत्वस् (अ०)
दसवीं-दशमी
दस से खरीदा-दशकः (४)
दस हजार-अयुतं १००००
दहरिया-नास्तिकः, अनीश्वरवादिन् (पु०)

दहलीज-देहली, गृहावग्रहणी
दहशत-भयं, त्रासः, भीतिः
दहाई-दश १० (त्रि०)
दही-दधि (न०)
दही-(पतली) द्रप्सम्
दही-(अम्ल) मस्तु (न०]
दहेज-यौतकं, सुदायः
दाई-अंकपालिका, उपमातृ (स्त्री०)
दाएंबाएं-दक्षिणवामम्
दांत-दशनं, दंतः
दांतन—दंतधावनम्
दाखिल-प्रविष्टः
दाखिल होना-प्रवेशनम् (प्र-विश् ६ प०)
दाखिला-प्रवेशशुल्कं, समावेशः
दाग़-कलंकः, संस्कारः
दाग़-(फोड़ेका) व्रणचिन्हम्
दाग़दार } कलंकितः, चिन्हितः, कलंकिन् (त्रि०)
दाग़ी }
दाढ़-दंष्ट्र

(१) इसी प्रकार आगे बना लेना। जैसे—
एकादशाहीनः, द्वादशाहीनः इत्यादि
(२) इसी प्रकार आगे बना लेना जैसे एकादशवर्षः, द्वादशवर्षः
(३) इसी प्रकार आगे बनाते जाओ
(४) इसी प्रकार आगे २ बनालो

नव्वे – नवतिः
नव्वे से खरीदा – नवतिकः
नशा – मदः, उपविषः
नशीला – मादकः
नस – धमनी, नाड़ी
नसल – कुलं, वंशः
नसवार – छिक्कनी
नसीब – भाग्यम्, दैवम्
नसीबा – वरः
नसीहत – उपदेशः, शिक्षा
नहरनी – नखोच्छेदनी
नहलवाना – स्नापनम् (स्नापय)
नहाकरके – स्नात्वा
नहाता हुवा – स्नात (त्रि०)
नहाना – स्नान (स्ना २ प०)
नहाने के लिये – स्नातुम्
नहाने लायक – स्नानीयम्, स्नातव्यं (त्रि०)
नहाने वाला – स्नायकः, स्नायिन् [त्रि०]
नहाया – स्नातः (त्रि०)
नहारुवा – नाड़ीरोगः
नहियर – पितृगृहम्
नाइटस्कूल – रात्रिपाठशाला
नाइत्तफाकी – अनैक्यम्
नाइन – नापिती
नाई – नापितः क्षुरिन्, [पु०]
नाई – (ब्राह्मण) न्यायिन्, नायकः, नेतृ (त्रि०)
नाउमैद – हताशः निराशः
नाउमैदी – आशाभङ्गम्
नाक – नासिका
नाक मैल – सिंघाणम्
नाका – केन्द्रम्
नाकाबंदी – केन्द्रप्रबंधः
नाकाबिल – अशक्यः अयोग्यः
नाकारा – असारः, हीनः
नाकिस – सदोषं, अयोग्यम्
नाख – (फल) अमृतफलं, रुचिफलम्
नाखुश – अप्रसन्नः
नाखून = नखः
नाग – नागः, बिलेशयः
नाग केसर – केशरः देववल्लभः
नागफांस – नागपाशः
नागरी – देवनागरी
नागवार – अप्रसिन्नः, वल्मीकः
नागहानी – दैवघटितम्
नागा – अनुपस्थितिः
नागा – (साधु) नग्नः दिगम्बरः
नागिन – सर्पिणी

दाढ़वाला-दंष्ट्रिन् (पु०)
दाढ़ी-कूर्चम्, श्मश्रुरोमः
दात्री-दात्रं, लवित्रम्
दाद-(इंसाफ़) न्यायः, सुविचारः
दाद-(रोग) दद्रुः
दाद वाला-दद्रुणः
दादा-पितामहः
दादी-पितामही
दान-दानं, वितरणं (दा-१प० । वि तॄ १प०)
दाना-कणः
दानाह-बुद्धिमत् (त्रि०) धीमत् [त्रि०] मेधाविन् [त्रि०)
दानाही-बुद्धिमत्ता
दानिशमंद-बुद्धिमत् (त्रि०)
दानिशमंदी-बुद्धिमत्ता
दानिस्त-विचारः
दानी-दातृ (पु०) दानिन् (त्रि०)
दाब-पीड़ा
दाबना-सम्पीडनम् (सम्-पीड् १० उ० सम्-कुच् ६ प०]
दाम-मूल्यम्
दामन-वस्त्रांतः
दामनगीर-सम्बद्धः
दामाद-जामातृ [पु०] दुहितृपतिः(पु०)
दायम-नित्यं, शाश्वतम्
दायरा-चक्रं, मंडलं, कटकः
दायां-दक्षिणम्
दारचीनी-गंधवल्कलं, वरागम्
दारजिलिंग-[देश] दार्दलिंगम्
दारमदार-प्रतिपत्तिः, अभ्युपगमः
दारुलखिलाफ़ा } राजधानी,
दारुलसल्तनत } मूलनगरम्
दाल-सूपः
दालचीनी-त्वक्पत्रं, भृंगम्
दालहलदी-दारु, [न०] हरिद्रा, पचंपचा
दालान-अट्टालकः
दाव-[जूआ का] पणः, ग्लहः
दावत-निमंत्रणं, निमंत्रणा
दावत देना-निमंत्रणम् [नि-मंत्र १० उ०)
दावेदार-अभियोक्तृ [त्रि०)
दाश्तःऔरत-उपपत्नी
दास-प्रेष्यः दासः
दांसा-वलभीखण्डम्
दासी-प्रेष्या,दासी
दास्तान-उपाख्यानम्
दिक़त-वैषम्यं, काठिन्यम्

नाचकरके-नर्त्तित्वा
नाचघर-नाट्यशाला, रंगगृहम्
नाचता हुवा-नृत्यत् (त्रि०)
नाचना-नर्त्तनम् (नृत्४प०)
नाचनेके लिये-नर्त्तितुम्
नाचने लायक-नर्तनीयम्, नर्त्तितव्यम् (त्रि०)
नाचने वाला } नर्त्तकः
नाचा }
नाचागया-नृत्तः
नाचीज-असारम् तुच्छम्
नाज़-गर्वः
नाज़नखरा-हावभावः विभ्रमः
नाजायज-अनुचितम्
नाज़िर-आलोचकः
नाज़ुक-सुकुमारः, कोमलः, क्षीणः
नाज़ुक वदन-तन्वी
नाटक-नाटकं, अभिनवः
नाड़ा-(इज़ारबंद) कटिसूत्रम् नीवी
नाड़ीका शाक-नाडिकं कालकं
नातजर्बाकार-निरनुभविन् (त्रि०)
नातमाम-असर्वम्
नाता-संबंधः
ना ताकत-असमर्थः
नातादार-सम्बंधिन् (त्रि०)
नातिन-पौत्री
नाती-पौत्रः
नाथना-नाथनं (नाथय)
नाद-शब्दः, रवः
नादान मूर्खः मूढः
नादुरुस्त-असत्यं अयोग्यम्
नानवाई-पक्वः
नाना-मातामहः
नानी-मातामही
नाप-परिमाणं, परिमितिः
नापना-मानम् [मा२प०३आ४आ०]
नापसंद-अनभिमतःअरुच्यःअमनोज्ञः
नापाक-अपवित्रः
नापाकी-अपवित्रता
नापायदार-अदृढम्
नाफ़-नाभिः
नाबालिग़-कुमारः शिशुः अयुवन् (पु०) अबोधः
नाम-अभिधानं नामधेयं नामन्
नाम जद-प्रसिद्धनामन् (त्रि०)
नामर्द-नपुंसकं, क्लीबम्,
नामर्दी-नपुंसकता
नामवर-प्रख्यातनामन् (त्रि०)

दिक करना-अपरोधनम्
(अपरुध७३०)
दिखा करके-दर्शयित्वा
दिखाता हुवा-दर्शयत् (त्रि०)
दिखाना-दर्शनम् (दर्शय)
दिखाने केलिये-दर्शयितुम्
दिखाने लायक-दर्शनीयम्
दिखाने वाला-दर्शकः,दर्शयितृ
दिखाया गया-दर्शितः (त्रि०)
दिखावट-दृश्यं, प्रदर्शनम्
दिन-दिनं दिवसं अहस् [न०) दिवा
(अ०)
दिन-(झरीका) दुर्दिनम्
दिनका-दिवातनम्
दिनका-(काम) आन्हिकम्
दिन व दिन-प्रतिदिनम् प्रतिदिवसम्
दिनभर-यावद्दिनम्
दिनमान-दिनमानम्
दिनौंध-दिवान्धः
दिमाग़-(मग़रूरी) दर्पःगर्वः-अवलेपः
दिमाग़-मस्तिष्कम्
दिमाग़ दार ⎫
दिमाग़ी ⎭ मस्तिष्कवत् (त्रि०)
दिमाग़ी-[मग़रूर] अवलिप्तःगर्वितः
[त्रि०] सदर्पः

दियागया-दत्तम् (त्रि०)
दियासलाई-अग्निशलाका
दिल-हृदयं चित्त वक्षस् [न०]
दिल अज़ारी-हृत्तोदः
दिलगीर-म्लानः ग्लानः
दिलचस्प-मनोहरम्
दिलाकरके-दापयित्वा
दिलाता हुवा- दापयत् [त्रि०]
दिलाना-दापनम् (दापय्)
दिलानेके लिये-दापयितुम्
दिलाने लायक-दापनीयम् दापयितव्यम् (त्रि०)
दिलाने वाला-दापकःदापयितृ(त्रि०)
दिलाया गया-दापितः [त्रि०]
दिलावर-साहसिकः वीरः शूरः विक्रान्तः
दिलावरी-वीरता, शूरता
दिलासा सान्त्वना
दिलासा देना-सान्त्वनम्
[सान्त्व् १०प०]
दिल्ली- (नगर) इन्द्रप्रस्थम्
दिली-हार्दिकम्
दिल्लगी-उपहासः
दिलेर-साहसिकः विक्रान्तः

नामवरी-प्रतिष्ठा, कीर्तिः प्रसिद्धिः ख्यातिः
नामाकूल-अभाजनम्
नामानिगार-संवाददातृ (पु०) संवाददायिन् (पु०)
नामालूम-अज्ञातम् अविदितम्
नामिनल - नामधातुः
नामिनल (एफिक्सस) तद्धितप्रत्ययः
नामी-प्रख्यातः
नामीनेटिव-प्रथमाकर्तृ (पु०)
नामुकम्मल-असंस्कृतम्
नामुनासिब-अयोग्यम्, अनुचितम्
नामुमकिन-असंभवम्
नामुवाफ़िक-प्रतिकूलम्
नायब-सहकारिन् (त्रि०)
नायाब-दुर्लभः
नारंगी-(संगतरा) नागरंगः
नारंजी-(रंग) नागरंगः
नारमल-वैधकः विद्यारंभशिक्षकः
नारा-(लालतागा) रक्तसूत्रम्
नाराज-अप्रसन्नः
नाराजगी-अप्रसन्नता
नारियल-नारिकेलः लांगली कूर्चशीर्षम्
नारियली-नारि[illegible]
नारी-स्त्री, योषित् (स्त्री०) नारी
नाल-(लोहेकी) लोहस्तंभः
नाला-(इजार बंद) नीवी
नाला-कुल्या, वाहः
नालायक-अयोग्यः
नालायकी-अयोग्यता
नालिश-अभिहारः
नालिशकरना-अभिहरणम् (अभि हृ१प०)
नाली-नालिका, प्रणालिका
नाव-नौका, तरणी
नावबंध-(खूणा)कूपकः गुणवृक्षकः
नावभारा-आतरः तर्पणम्
नावल-उपन्यासः
नावाकिफ़-अपरिचितः,
नावां-नवमः
नावांहिस्सा-नवमः, नवमांशः
नावीं-नवमी
नाश्ता-प्रातर्भोज्यम्
नाशायस्तगी-असभ्यता
नाशायस्ता-असभ्यः
नाशुकरा-कृतघ्नः
नास-नाशः, ध्वंसः
[illegible]

दूर होना–दूरीभवनम् (दूरीभू १प०)
दूरी–दूरता
दूसरा–द्वितीयः अन्यः अपरः,
दूसराहिस्सा–द्वैतीयिकः
दूसरी तरह–अन्यादृशम्
दूसरीदफ़ा–अन्यदा
दूसरेका–परकीयम्
दूसरेदिन–अपरेद्युस् अ० अन्येद्युत्
देकरके–दत्त्वा
देखकरके–दृष्ट्वा
देखता भालता–निरीक्षमाणः
देखताहुवा–पश्यत् [त्रि०]
देखना–दर्शनम्, लोचनं,[दृश १प० लोचृ १ आ०)
देखनेके लिये–द्रष्टुम्
देखने लायक–दर्शनीयम् द्रष्टव्यम् (त्रि०)
देखने वाला–दर्शकः द्रष्टृ (त्रि०)
देखभाल–निरीक्षा
देखागया–दृष्टः (त्रि०)
देखाचाहना–दिदृक्षा
देखादेखी–अनुकृतिः, सादृश्यं, अनुसरणम्
देखाभाला–निरीक्षितः
देग–स्थाली, पिठरः
देगची–लघुपिठरः

देताहुआ–यच्छत् (त्रि०)
देना–दानम्, दाशनं-(दा १प० दाश १ उ०)
देनेकेलिये–दातुम्
देनेलायक–देयम् ,दातव्यम् [त्रि०]
देनेवाला–दायकः, दातृ (त्रि०)
देर–विलंबः, चिरं,-[अ०] चिराय (अ०)
देरतक–चिरम् (अ०) चिराय(अ०)
देरा–आवासः
देरी–विलंबः,चिरं(अ०)चिराय(अ०)
देवता–देवः, सुरः, अमरः, निर्जरः विबुधः
देवर–देवृ, (पु०) देवरः
देवरानी–यातृ (स्त्री)
देवलक–मूर्तिपूजकः, देवलकः
देवसभा–सुधर्मा
देस देशः
देसनिकाला–निर्वासनम्
देसी–स्वदेशिन् (पु०)
देहात–ग्रामः, प्रत्यन्तः
देहाती–ग्रामीणः ग्राम्यः प्रत्यन्तवासिन् (त्रि०)
दैत–दैत्यः, असुरः, निशाचरः
दो [औरतें] द्वे
दो –[मर्द] द्वौ

नासपाती-अमृतफलम्
नासवार-नस्यं, चुक्करी
नासूर-नाड़ी, व्रणम्
नाहक-अन्यायः, अधर्मः अनर्थः
नाहिं-न, नैव, नो
निकम्मा-निःसारः तुच्छम्
निकलना-निःसरणं(निस्-सृ१प०)
निकालना-निष्कासनं,निराकरणं
(निस्-कास्१०प०)
निकाला-बहिर्भूतः उद्धृतं समुद्धृतम्
निकास-निःसृतिः प्रस्थितिः,निष्कासः
निकाह-विवाहः, उद्वाहः
निखरना-परिशोधनम् (परि-शुध्४प०)
निखारना-परिष्कारणम् (परिष्-
कारय्)
निगरानी-निरीक्षा, प्रबंधः
निगलकरके-निगरित्वा, निगरीत्वा
निगलताहुआ-निगिरत् निगिलत्
(त्रि०)
निगलना-निगरणं,निगलनं
(गृ (गिर्-गिल्)६प०)
निगलनेकेलिये-निगरितुम् , निग
रीतुम्
निगलनेलायक-निगरणीयम्-निग-
लनीयम्
निगलनेवाला-निगारकः निगरीतृ
निगरितृ (त्रि०)
निगलगया-निगीर्णः (त्रि०)
निगाह-दृष्टिः
निगाहबन्द-दृष्टिरोधः
निगाहबान-रक्षकः
निगाहबानी-रक्षा
निगोड़ा-शठः
निचोड़-सारः,अन्तः,फलितम्
निचोड़ना-निष्पीडनं[निस्पीड्१०प०
निछावर-बलिहारः
निजात-मुक्तिः मोक्षः अपवर्गः
निठुर-कठोरः कर्कशः
निठुराई-कठोरता कर्कशत्वम्
निडर-निर्भयं, अशंकः
निन्दना-निन्दनम् [निन्द्१प०]
निदान-अन्ततस्
निधड़क- निर्भीकः निर्भयः
निनानवां-नवनवतितमः
निनानवीं- नवनवतितमी
निनानवे- नवनवतिः
निनावां-(गड़] करकः वर्षोपलः
निपट-अत्यन्तम्,नितान्तम्,निरन्तरम्
निपटना-समापनम् (सम्-आप्५उ०)

दो – (नपुंसक) द्वे	दोपाया – द्विपदम्
दोकोना – द्विकोणः	दोफांक – द्विदलः
दोगला – संकरः	दोबरसा, दोबरसका – द्विहायनः, द्विवर्षः
दोघड़िया – द्विघटिका	
दोचंद – द्विगुणः, द्विगाधः	दोबरसी, दोबरसकी – द्विहायना, द्विवर्षा
दोजख़ – नरकः, निरयम्	
दोज़ख़ी–नारकिन् (त्रि०)	दोबारा – पुनर्वारं, पुनरुक्तम्
दोजोरूवाला – द्विपत्नीकः	दोभाखिया – द्विभाषकः
दोतर्फ़ा – उभयपक्षकः	दोभांति – द्विधा (अ०) उभयथा (अ०)
दोतरह – द्विधा, द्वैधम् (अ०)	दोमंजिला – द्विभूमिकः
दोतरहका – द्वैविधम् (अ०)	दोमाण – शूर्पः
दोतीनबारकहाहुवा – आम्रेडितम्	दोमहीने – मासद्वयम् (१)
दोदफ़ा – द्विस् (अ०)	दोमहीनेका – द्विमास्यः
दोदिनका - द्व्यहीनः, द्वैयन्हिकः	दोमहीनेकी – द्विमास्या
दोदिनकी – द्व्यहीना, द्वैयन्हिका	दोमानी – उभयार्थकः
दोदो – द्विशः (अ०)	दोमुहां–द्विमुखः
दोधारा – द्विधारम्	दोमेंएक – एकतरः
दोनोंजगह – उभयत्र (अ०)	दोमेंकौन – कतरः
दोनोंतरफ़ – उभयतस्	दोमेंजो – यतरः
दोनोंतरह – उभयथा (अ०)	दोमेंवह – ततरः
दोनोंदिन–उभयेद्युस् (अ०)	दोरंगा – द्विरागः
दोपत्ता – द्विदलः	दोरातका – द्वैरात्रिकः, द्विरात्रीणः
दोपहिर – मध्यान्हः	दोरातकी–द्वैरात्रिका, द्विरात्रीणा

(१) इसी तरह दोवर्ष 'वर्षद्वयम्' दोदिन 'दिनद्वयम्' इत्यादि सबमें बनालो।

निपटाना--समापनं [समापय]
निफ़ाक-विरोधः अनैक्यम्
निब-चञ्चुः
निबटेरा-निश्चयः निर्णयः
निबड़ना--साधनं, निष्पादनम् [साधय१०प० निष्पादय१०प०]
निबातात-वनस्पतिः
निबाह-निर्वाहः
निबाहना-निर्वहनम् (निर्-वह् १ उ०)
निमाज़-विनयः
निमरल-संख्यावाचकं
निमोनया-त्रिदोषः
नियामत-वरः
नियोला-नकुलः, पिंगलः, बभ्रुः
निर्ख-भावः, अर्घः
निरखना—अवलोकनम्
निरा-निरंतरं, नितान्तम्
निराला-भिन्नः, एकांतः
निरी-केवलम्
निवाड-(पटार) दीर्घपट्टः, बंधनी
निवारू-(नेवारी) नवमालिका, नेपाली
निशान-चिन्हं, संकेतम्
निशानदार-चिन्हितम् (त्रि०)
निशाना-लक्ष्यम्
निशानाकरना-लक्षणम् (लक्ष् १० प० । लक्ष्यी कृ० ८ उ०)
निशानी-चिन्हं, संङ्केतम्
निशास्ता-(माया) पिच्छम्
निस्तर-प्रासः, कुन्तः
निस्तार } मुक्तिः, मोक्षः
निस्तारा } मुक्तिः, मोक्षः
निस्तारना-त्यजनम् (त्यज् १ प०)
निस्वत-अनुपातः, अपेक्षा
निसवत-वाक्सम्बंधः
निसयान-विस्मरणम्, विस्मृतिः
निहायत-अधिकं, नितांतम्
निहोरा-अनुग्रहः
नीक } उत्तमम्, उत्कृष्टम्, उपादेयम्
नीका } उत्तमम्, उत्कृष्टम्, उपादेयम्
नीच-पामरः, प्राकृतः, अधमः, नीचः
नीचा-अधस् ,(अ०)अधस्मात् (अ०)
नीचाई-अधमता
नीचे-नीचैस् (अ०) निम्नम्
नीचेऊपर-(खुर्दरा) दन्तुरम्
नीचेमुख-अधोमुखः, नततुण्डः
नीचेगिरना-भ्रंशनं(भ्रंश् १ आ०)
नींद-निद्रा
नींदू-निद्रालुः

दोराहा – द्विपथः
दोलड़ा – (हार) द्विपट्टिका
दोवार – द्विस् (अ०)
दोस्त – मित्र, वयस्यः, मियः
दोस्ताना – मैत्रतस्, मित्रभावतस् (अ०)
दोस्ती – मित्रता
दोसौसेखरीदा – द्विशतकम्
दोहत्थर – द्विहस्तकं, उभयहस्तकम्
दोहत्री – नप्त्री
दोहना – दोहनम्, (दुह् २ उ०)
दोहर – (खेस) क्षौमं, कर्बुरक्षौमम्
दौड़ – मधावः
दौड़धूप – आयासः, कष्टम्
दौड़ना – धावनम् (धाव् १ प०)
दौना – (दवना) दमनकः, गंधोत्कटः
दौना – पुटकः
दौरा – पर्यटः
दौराकरना – पर्यटनम् (परि-अट् १प०)
दौलत – धनं, द्रव्यं, वसु (न०) वित्तम्
दौलतखाना – अन्तःपुरं, अवरोधनम्
दौलतमंद – धनिकः, इभ्यः, आढ्यः, समृद्धः
दौलतमंदी – धनिकता, इभ्यता

ध – धर्मः, कुबेरः, ब्रह्मन् (न०) धनम्
धकधकी – हृदयकंपः
धका – (ठोकर टक्कर) आघातः प्रहारः अभ्याघातः
धकेलना – अपसारणं, अभिहननं (अप सारय । अभि-हन् २ प०)
धकेलू – अपसारकः
धजा – ध्वजा
धड़ – कबंधः
धड़क – कंपः
धड़कना – कम्पनं (कम्प् १ आ०)
धड़ाका – महाध्वनिः
धड़ी – (५ सेर) आढकम्
धड़ीभर – आढकमात्रम्
धणक – (अनाज) किशारुः सस्यशूकम्
धतूरा – धत्तूरः, कितवः
धंधा – कार्यम्, कर्मन् (न०)
धन – वसु [न०] धनम्, द्रव्यम् वित्तम्
धनिया – धान्याकं, कुस्तुम्बरुः
धनी – धनिन् (त्रि०) धनाढ्यः
धनुक – धनुष् [न०] चापः कार्मुकम्
धप्पा – चपेटः
धब्बा – कलंकः
धमक – शोभा

नींबू–निंबुकं, निंबूकं, निम्बूः [स्त्री]
नीम – निम्बः, सर्वतोभद्रः
नील–[रंग] नीलं, रंजनी
नील–[गिन्ती] शंकुः १०००००००००००००
नीलगाय – गवयः
नीलडौन–जानुपातः
नीलम – नीलमणिः, इन्द्रनीलः
नीला – नीलं, नीलिनी, रंजिनी
नीलाई – नीलिमन् (त्रि०)
नीलाथोथा – तुत्थम्
नीलाम – घोपविक्रयः, घुष्टम्
नीव – मूलं, जड़म्
नुक्ता–विंदुः
नुकल – भोज्यम्
नुकल – (मिठाई] निचोलकणम्
नुकसान – क्षतिः, हानिः
नूर – तेजस् (न०)
नेक – (थोड़ा) किंचित् (अ०)
नेक – सुचरितः, पात्रः
नेककाम – प्रशस्तकर्मन् (न०)
नेकनाम – प्रख्यातकीर्तिः
नेकनीयत – सुसंकल्पः, सुचिकीर्षा
नेकबख्त – सुभाग्यशालिन् (त्रि०)
नेकमंद – सुचरितः
नेकी – यशस् [न०] कीर्तिः

नेचर – सृष्टिः, प्रकृतिः, स्वभावः
नेचा – नडः
नेचाबंद – नाडिकः
नेजा – [चिलगोज़ा] दंतीफलं, सपाकृतम्
नेज़ा – [हथयार] प्रासः
नेज़ाबाज़ – प्रासिकः
नेनुआ – [घीयातुरई] धामार्गवः, हस्तिपर्णः, महाफला
नेपाल – नयपालः
नेम – नियमः
नेरे – समीपम्
नेवता – निमन्त्रणम्
नेवारी – [फूल]वनमालिका,वासंती
नेस्ती – नास्तित्वम्
नेह – प्रेमन् [पु० न०]
नैनसुख – [वस्त्र] नेत्रसुखम्
नैगेटिव – [नफ़ी] न, नैव
नैश्नल – राष्ट्रीयम्
नैहर – पितृगृहं, मातृगृहम्
नोक–शिरा, कोटिः
नोक– (कमानकी) अटनिः,धनुष्कोटिः
नोकदार / नोकीला – तीक्ष्णाग्रः, मार्मिकः

नोचना-विलिखनं (वि-लिख् ६ प०)
नोट-(रुपयेवाला) मुद्रापत्रम्
नोट प्रॉमिसरी-प्रतिज्ञामुद्रापत्रम्
नोट—टिप्पणी, अंकः, लक्षणं, अभिज्ञानम्
नोटपेपर-लेखपत्रम्
नोटिस-सूचना, विज्ञप्तिः, ख्यापनं, घोषणा, मासादिपत्रम्
नोनिया -(लूणक-साग) लोणी, लोणा, घोटिका
नौ-नव
नौकर- (वेतनख्वाह) कर्मकारः वैतनिकः
नौकर-भृत्यः, अनुचरः, भारहारः
नौकरी-सेवा, भृत्या, शुश्रूषा
नौछावर-दानम्,
नौजवान-नवयुवन् (पु०)
नौजवानी-नवयौवनम्
नौतरह-नवधा (अ०)
नौदिनका-नवाहीनः
नौदिनकी-नवाहीना
नौबत-दुंदुभिः, भेरिः, वीनाहः
नौबतखाना-भेरिगृहम्, वाद्यागारम्
नौबरसका-नववर्षः
नौबरसकी-नववर्षा
नौरातका-नवरात्रीणः
नौरातकी-नवरात्रीणा
नौवार-नवकृत्वस् (अ०)
नौसादर-नवसारः
न्यारा-भिन्नः
न्यारिया-सुवर्णान्वेषिन् (पु०)
न्योता-निमंत्रणम्
न्युहालण्ड-(देश) चंद्रशंकः,सौम्यम्
न्यूटर-नपुंसकं, क्लीवम्
प-पानं, आज्ञा, वायुः, पत्रम्, अरटः
पऊडर-क्षोदः, चूर्णम्
पकाकरके- पक्त्वा, संपच्य
पकड़-गृहीतिः, ग्राहः
पकड़करके—गृहीत्वा
पकड़ताहुवा—गृह्णत् (त्रि०)
पकड़ना-ग्रहणम् [ग्रह ९ उ०)
पकड़नेकेलिये-ग्रहीतुम्
पकड़नेलायक-ग्रहणीयम्,ग्रहीतव्यम् (त्रि०]
पकड़नेवाला-ग्राहकः, ग्रहीतृ (त्रि०]
पकड़वाकरके—ग्राहयित्वा
पकड़वाता हुवा-ग्राहयत् (त्रि०)
पकड़वाना-ग्राहणम् [ग्राहय)
पकड़वानेकेलिये-ग्राहयितुम्
पकड़वानेलायक-ग्राहयितव्यम्

पास – (इम्तिहान में) उत्तीर्णः
पासंग – तुल्यभारः
पास्टटैंस भूतकालः
पांसा – पाशकः, अक्षः, देवनः
पाहुना – प्राघूर्णिकः, आगन्तुकः
पिघल करके-द्रुत्वा
पिघलता हुवा-द्रवत् (त्रि०)
पिघलना-द्रवणम् (द्रु १ आ०]
पिघलने के लिये-द्रोतुम्
पिघलने लायक-द्रवणीयम्
पिघलने वाला-द्रावकः
पिघला-द्रुतः
पिघला करके-द्रावयित्वा
पिघलाता हुवा-द्रावयत् (त्रि०]
पिघलाना-द्रावणम् [द्रावय]
पिघलाने के लिये-द्रावयितुम्
पिघलाने लायक-द्रावणीयम्
पिघलाने वाला-द्रावकः
पिघलाया गया-द्रावितः (त्रि०)
पिघलाव-द्रवः, द्रुतिः
पिचकारी-नलिका, धारायंत्रम्
पिच- (चावल] मंडा
पिछला-पाश्चात्यः, पश्चिमः
पिछला पहिर- अगेतनम्
पिछले पहिर का-अपराह्णेतनम्
पिछाड़ी-पादरज्जुः (स्त्री०)
पिंजर- कंकालः
पिंजरा- (परिंदों का) पञ्जरम्
पिंजरा- (रोशनदान) गवाक्षः
पिटवाना-ताड़नं (ताड़य)
पिटारा, पिटारी – कंडोला, पिटः, फरंडः (पु० स्त्री०)
पिट्ठी- (दालकी) पिष्टिका
पिड़वाना-पेषणं (पेषय)
पितपापड़ा- पर्पटः, वरतिक्तः
पित्ता-पित्तम्
पिता-जनकः,पितृ(पु०)जनयितृ(पु०)
पिदरी-पैतृकम्
पिन- (कोका) शंकुः, कीलः
पिनकी-तीव्रता, उन्मादः
पिनवाना-याचनं [याचय)
पिन्नी- (मिठाई) पिण्याकम्
पिपलीमूल-ग्रंथिकं, पिप्पलीमूलम्
पियाजी- (रंग] पाटलम्
पियादा – पदातिः, पदगः
पियाला-शरावः
पियाली-शराविका
पिराकरी-(गूंजा मिठाई) संयावः

पकड़वानेवाला – ग्राहकः, ग्राहयितृ
पकड़वायागया – ग्राहितः (त्रि०) ग्राहितवत् (त्रि०)
पकड़ागया – गृहीतः (त्रि०). गृहीतवत् [त्रि०]
पकताहुवा – पचत्, पचमानः [त्रि०]
पकना – पचनम् [पच् १ प०]
पकनेकेलिये – पक्तुम्
पकनेलायक – पचनीयम्, पक्तव्यम् (त्रि०)
पकनेवाला – पाचकः
पकवाई – पक्ति, पाकमूल्यम्
पकवाकरके – पाचयित्वा
पकवाताहुवा – पाचयत् (त्रि०)
पकवान – पक्वान्नम्
पकवाना – पाचनम् (पाचय्)
पकवानेकेलिये – पाचयितुम्
पकवानेलायक – पाचनीयम्, पाचयितव्यम् (त्रि०)
पकवानेवाला – पाचकः, पाचयितृ (त्रि०)
पकवायागया – पाचितः (त्रि०)
पक्का – स्थिरः, दृढम्, निश्चलम्
पक्का – (भोजनआदि)सिद्धं, सिद्धान्नम्
पक्का – (फलआदि) पक्वं
पकायागया – पक्वम् [त्रि०]
पकोड़ा – वटकवरः, वेशनसंप
पकोड़ी – (मंगौरी) वटिका
पंख – पत्त्रः, पत्रं, छदः
पंखा – व्यजनम्
पंखा – [आकासी] आकाशव्यजनम्
पंखा – [कलवाला] यंत्रव्यजनम्
पंखा – [बड़ादस्ती] महाव्यजनम्
पंख – (बेड़ीका) नौव्यजनम्
पखवारा – पक्षः
पखाणभेद – पाषाणभेदः, अश्मघ्नः
पखावज – मृदंगः, मुरजः
पखावजी – मार्दंगिकः, मौरजिकः
पखी – पक्षिन्(पु०)खगः, विहङ्गः, शकुनिः अंडजः, विष्करः
पग – पादः, चरणः अंघ्रिः
पगड़ी – शिरोवेष्टनम्, उष्णीशः
पगडंडा – संसरणं, चरणवीथिः
पंगत – श्रेणी, पंक्तिः
पंगुरा – मेखला
पचत्तर – पञ्चसप्ततिः
पचत्तरवां – पञ्चसप्ततितमः
पचत्तरवीं – पंचसप्ततितमी
पचपन – ५५ पंचपंचाशत् (स्त्री)

पुजवाना-पूजनम्
पुजारी-देवलकः देवाजीवः पूजारिः
पुठकंडा-(ओंगा) अपामार्गः अधःशल्यम्
पुट्ठा-नितंबः
पुर्टेशल-(मूड)विधिलिङ् विधिः संभवनीयम्
पुड़ा-पोटलः कूर्चः
पुड़िया } कूर्चिका पत्रवेष्टनं पोटलिका
पुड़ी }
पुत्र-पुत्रः आत्मजः, तनुजः,
पुत्रवधू-स्नुषा, पुत्रवधूः
पुत्री-कन्या आत्मजा पुत्री
पुतला-प्रतिमा, मूर्त्तिः प्रतिकृतिः
पुतली-पुत्रिका, पाञ्चालिका
पुतली-[धातुकी] किरणी [स्त्री]
पुन-पुण्यम्
पुनवाना-गालनम् (गालय)
पुनेरा-[अनाज] पत्रनालः
पुरजा-अवयवः
पुराण-पुराणम्
पुरातन-चिरंतनं, चिरत्नम्
पुराना-प्राक्तनं, प्राचीनं, जीर्णम्
पुरोना-विरचनम् (वि-रच् १ प०)

पुरोहित-पुरोधस् (पु०) पुरोहितः
पुरोहितानि-पुरोधा, पुरोहिता
पुल-सेतुः, आलिः
पुलाओ-(चावल का) ओदनं, भक्त शाल्योदनम्
पुलाओ-(पतला) तरला यवागूः (स्त्री०)
पुलिस-रक्षिवर्गः, नगरपालः
पुश्त-(पीठ) पुरुषः
पुष्पक-पुष्पकं, कुबेरविमानम्
पूआ-अपूपः, पिष्टकः
पूंछ-(दुम) लांगूलं, शेपः, पुच्छः
पूंछकरके-पृष्ट्वा
पूंछताहुवा-पृच्छत् (त्रि०)
पूंछना-प्रच्छनम्
पूंछनेकेलिये-प्रष्टुम्
पूंछनेलायक-प्रच्छनीयं, प्रष्टव्यम् [त्रि०]
पूंछनेवाला-प्रच्छकः, प्रष्टृ (त्रि०)
पूंछपांछ-तत्त्वानुसंधानम्
पूंछागया-पृष्टः (त्रि०)
पूजकरके-पूजित्वा [त्रि०]
पूजताहुवा-पूजयत्
पूजना-पूजनम् (पूज् १० प० । यज् १ उ०)

पचपनवां-पंचपचाशः
पचपनवीं- पंचपंचाशी
पचनवा-पंचनवतितमः
पचपनवीं-पञ्चनवतितमी
पचानवें-पंचनवतिः
पंचायत-पञ्चजनं, कुलम्
पंचायतनामा- गणपत्रम्. पंचजन पत्रम्
पंचायती-पंचजनीनं, गणीयम्
पचालीस-पंचचत्वारिंशत् [स्त्री०)
पचालीसवां-पंचचत्वारिंशत्कः
पचालीसवीं-पंचचत्वारिंशी
पचाव-जीर्णता, पाचनशक्तिः
पचासी- ८५ पंचाशीतिः
पचासीवां-पंचाशीतितमः
पचासीवीं-पंचाशीतितमी
पचीस-पंचविंशतिः
पचीसवां-पंचविंशः
पचीसवीं-पंचविंशी
पचीहोना -लज्जनम्, अनुतपनम् (लज्ज् ६ आ० । अनु तप् १ प०)
पच्छ-पक्षः
पच्छताना-पश्चात्तपनं, अनुतपनम् (पश्चात्-तप् १प०)
पच्छतावा-पश्चात्तापः, अनुतापः
पछना – उल्लिखनं छेदनं (उल् लिख् ६ प० छिद् ७ प०)
पच्छम – पश्चिमः
पच्छमका – पाश्चात्यः
पछाड़ – आस्फालः
पछाड़खाना – अधः पतनम् (अधः पत् ६ प०)
पछाड़ना – आस्फालनम् आ स्फाल् १० प०)
पछाड़ी – पादरज्जुः (स्त्री०)
पछी – करण्डिका
पंजमणी – द्रोणी
पंजा – पञ्चाङ्गुलम्
पंजा – (मनुष्यों का) पञ्चजनम्
पंजाव – पंचापः, पंचालः
पंजावी – पांचापः, पांचालः
पजामा – पादजामा, पादयामः
पंजाल – [बैलोंकी] मासंगः
पंजीरी – घृतचूर्णम्
पट-द्वारम्,आवरणम्
पटकना—भ्रंशनं पातनम् [भ्रंशय पातय्]
पटका-उष्णीः शिरोवेष्टनम्
पटड़ा-पटः फलकः

पूजनेकेलिये – पूजयितुम्
पूजनेलायक – पूजनीयम्
पूजनेवाला – पूजकः
पूजा – अर्चा, पूजा
पूजागया – पूजितः (त्रि०)
पूंजी – मूलधनं, भांडः
पूरब-पूर्वः
पूरबका – पौरस्त्यः
पूरबा – पूर्वीयः
पूरमा – पूर्णिमा, पूर्णमासी
पूरा – पूर्णम्
पूरी – पोलिका
पूरीफ़रोश – आपूपिकः
पेच– (मैशीन के) कर्पणी, मऊसूत्रम्, आकुञ्चः
पेच– (कुशती) कौशलं, व्यूहम्
पेचदार– छेकोक्तिः, गहनं, कठिनम्
पेचिश– [रोग] आमांशयः, संग्रहणी
पेचीदगी–काठिन्यं, वैषम्यम्
पेचीदा–अशक्यार्थः
पेज–पृष्ठम्
पेट–उदरं, जठरम्
पेटभर–उदरमात्रम्
पेटवाला–तुंदिलः,

पेटी– (संदूक) पेटिका, मंजूषा, पेटा
पेटी–(कमर की) अधोबंधनं, कटिबन्धः
पेटेन्ट–सुप्रसिद्धं, सुव्यक्तं, स्वायत्तम्
पेठा– कूष्माण्डः, कर्कारुः
पेड़–[दरख्त) वृक्षः, तरुः, पादपः महीरुहः
पेड़ा– (मिठाई) दुग्धवाटिका,
पेड़ा– (आटेका] पिंडम्
पेपर–पत्रम्
पेविंद–पुनर्योगः, नियोगः
पेविंद करना–पुनर्योजनम्नियोजनम् (पुनर्–युज् १०प०) नि-युज् १०प०)
पेविंद कारी–नियोजिन्, (त्रि०)
पेविंदी–नियोगमम्
पेश करना–पुरस्करणम् [पुरस् कृ ८ उ०)
पेशकार–प्रवेशकः प्रबन्धकः
पेशकारी–प्रवेशकता
पेशगी–अग्रिमम्
पेश्तर–प्राक् [अ०]
पेशबंदी–पूर्वोपायः
पेशवा–नेतृ (त्रि०) सेनाध्यक्षः
पेशवाई–नेतृता

पटरानी--राजमहिषी पट्टमहिषी
पटरी--क्षुमार्गः मार्गप्रान्तः
पटवारी--भूमापकः
पटाखा--फटात्कम्
पट्टा- [कागज़]सहपत्रपत्रम् मुद्रितपत्रम्
पट्टी- [लिखनेकी] पट्टिका
पट्टी- बंधनं, वेष्टनम् ,पटपातिका, प्रान्तिका
पट्टीदार-समान्तम्
पट्टीदारी-समान्तता
पट्ठा-[जिस्मका] स्नायुः
पटुआ-पट्टशाकः नाडीकः
पट्टू – पट्टू वस्त्रम्
पट्टे – काकपक्षः
पटोल – पटोलं, कलकः
पटोली-[गुंथनेवाला] कौशेयगुम्फकः
पड़ताल – आलोचना
पड़तालकरना – आलोचनम् [आ लुच१०प०]
पड़दा-अपवारणं प्रावरणं अन्तर्पटः व्यवधानम्
पड़ना-पतनम् संक्रमणम् (पत१प०सम् क्रम १ प०)
पड़वा – प्रतिपद्
पंडा – पूजारि

पड़ाव – आस्पदं, निवासस्थानम्
पंडित – पंडितः,धीमत् (पु०)मनीषिन् (पु०) सूरिः विद्वान् (पु०)
पंडिताई – पाण्डित्यम्
पंडितानी – पण्डिता, विदुषी
पड़ोस – प्रतिवेशः
पड़ोसी – प्रतिवेशिन् (त्रि०)
पढ़करके – पठित्वा
पढ़ताहुवा – पठत् (त्रि०)
पढ़ना पठनम् अध्ययनम् (पठ १प० (अधि इ २ आ०)
पढ़नेकेलिये – पठितुम्
पढ़नेलायक – पठनीयम् पठितव्यम् (त्रि०)
पढ़नेवाला – पाठकः, पठितृ (त्रि०)
पढ़ा – पठितम् (त्रि०)
पढ़ाई – शिक्षा
पढ़ाकरके – पाठयित्वा, अध्याप्य (अ०)
पढ़ाताहुवा – पाठयत् अध्यापयत् (त्रि०)
पढ़ाना – पाठनम् (पाठय् अध्यापय्
पढ़ानेकेलिये – पाठयितुम् अध्यापयितुम्
पढ़ानेलायक – पाठनीयम् अध्यापनीयम् (त्रि०)

पेशा-वृत्तिः
पेशाब-मूत्रं, प्रस्रावः
पेशाब खाना-प्रस्रावालयम्
पेशी-उपस्थितिः, प्रविष्टिः
पेशीन-प्रथमम्
पेशीनगो-भविष्यद्वक्तृ (त्रि०)
पेशीन गोई-भविष्योक्तिः, भविष्यद्वाणी
पैकिट-पत्रवेष्टनं, पोटलिका
पैगाम-संदेशः
पैगाम देना- संदेशनं (सम्-दिश् ६ प०)
पैडा-मार्गः, यात्रा
पैंतालीस-पञ्च चत्वारिंशत् (स्त्री०)
पैंतालीसवां-पंच चत्वारिंशः
पैंतालीसवीं-पंच चत्वारिंशी
पैंतीस-पंचत्रिंशत् (स्त्री०)
पैंतीसवां-पंचत्रिंशः
पैंतीसवीं-पंचत्रिंशी
पैदल-पदातिः, पदगः, पदिकः
पैदा-उत्पन्नम्
पैदा करना-सर्जनम् (सृज् ६प०)
पैदायश-उत्पत्तिः, उद्भवः
पैदायशी-प्राकृतिकम्
पैदावार-निष्पत्तिः, प्रसवः, उद्भवः
पैदा होना-उद्भवनम् (उद्-भू१प०)
पैनशन-विरतिवेतनं, वृत्तिभोगिता
पैनशनर-विरतिवेतनकः, वृत्तिभोगिन् (त्रि०)
पैना-तीक्ष्णम्
पैमाइश-मापः
पैमाना-मानं, मानपात्रं, मानदण्डः
पैया-चक्रम्
पैरवी करना-अनुसरणं, अनुधावनं (अनु-सृ १प० अनु धाव् १ प०)
पैराग्राफ़-परिच्छेदः, प्रकरणम्
पैंस-एकाणकम्
पैंसठ-पंचषष्ठिः
पैंसठवां-पञ्चषष्ठितमः
पैंसठवीं-पञ्चषष्ठितमी
पैसा-पणः
पैसाभर-पणिकम्
पैसिव् वाइस-कर्मवाच्यम्
पैसिवऐकटिववाइस-कर्मकर्तृवाच्यम्
पैंसिल-तूलिः, वर्चिका, मसीलेखिनी
पोइटरी-कविता, काव्यम्
पोई- (साग) पोतकी, मोदिका
पोकरमूल-गोकरणी

पढ़ाने वाला – पाठकः, अध्यापकः
पढ़ाया – पाठितः, अध्यापितः (त्रि०)
पत – यशस् (न०)
पतंग – [कागज की) चिल्लार्भ, क्रीड़नकम्
पत्तल – पत्रावली,
पतला – अघनं, विरलं, शीर्ण द्रवः
पतला करना – (धातुका) द्रावणम् [द्रावय]
पतला करना – (लकड़ी आदिका) तक्षणम् (तक्ष् १ प०)
पतलापन – विरलत्वं, द्रवत्वम्
पतलून – पादवेशिका
पता – (निशान] संकेतः, चिन्हम्
पत्ता – (वृक्षका) पत्रं, दलं, पर्ण, पलाशम्
पताल – पातालं, विवरम्
पति – पतिः (पुं०) धवः, भर्तृ (पु०)
पतिव्रता – साध्वी, सती
पत्ती – दलकम्, पत्रकम्
पतीला – स्थाली,
पतीसा – [मिठाई] झर्झरः
पतोहू – वधूः
पत्थर – पाषाणः ग्रावः
पत्थर – (नीचे गिरे हुवे) गंडशैलाः
पत्थर फोड़ा – टंकः
पथरी – (रोग) अश्मरी
पथरीला – शिलामयम्
पत्रा – पत्रम्
पत्री – पत्रिका
पदना – पर्दनम् (पर्द् १आ०)
पंदरह – पंचदश
पंदरहवां – पंचदशः
पंदरहवीं – पंचदशी
पधारना – गमनम्, आगमनम् (गम् [गच्छ] १ प०]
पनघड़ी – जलघटिका
पनचक्की – जलपेषणी
पनसारी – गंधपण्यः
पन्ना – [रत्न] गोमेद, गारुत्मतम्
पनारा – कालिका, अवक्रयः
पनाह – शरणं, आश्रयः
पनाहगाह – आश्रयस्थानम्
पपड़ी – पर्पटी.
पंप – उत्तोलनयंत्रं, जलोत्क्षेपणम्
पपीहा – चातकः, सारंगः
पब्लिक – प्रजा
पर – पक्षः
परकार – प्रकारः
परख – अभिज्ञा
परखना – परीक्षणम् [परि ईक्ष् १ आ०]

पोंछना-प्रोञ्छनं (प्र-उञ्छ् ६ प०)
पोजीशन-प्रतिष्ठा
पोट } कूर्चः
पोटली }
पोतना-लेपनम् (लिप् ६ प०)
पोता-पौत्रः
पोती-पौत्री
पोथी-पुस्तकम्
पोदीना-रोचनी
पोपा-सौभाग्यभूषणम्
पोर्तुगाल-पशुशीलम्, भावकच्छः
पोला- (खोखला) निष्कुहः, विवर कोटरम्, गुहा
पोलिटिकल-नीतिज्ञः, नैतिकम्
पोशाक-चेलं, परिच्छदः
पोशाक पहिने-निवीतः
पोशीदगी-संगोपनता
पोशीदा-गुप्तं, रहस्यं, अस्पष्टं, सुनिभृतम्
पोस्ट-पदं, अधिकारः
पोस्ट कार्ड-वार्तापत्रम्
पोस्टमैन - पत्रवाहकः
पोस्त - खसखलः, खसतिलम्
पोस्ती - खसखलिकः

पोसना - पालनम् पोषणम् [पुष् ४ प०]
पोह - पौषः
पौंची-वलयः
पौंड-(सिक्का) दीनारं, सुवर्णम्
पौंड-[वज़न] अर्धमस्थं अष्टमलम्
पौडर-पिष्टातकः पटवासकः चोदः, चूर्णम्
पौधा-उद्भिदम्, अंकुरः,
पौन-ऊनम्
पौना } निर्झरः
पौणा }
पौने-ऊनम्
पौनेदोसौ-त्रिपादशतम्
पौनेदो हज़ार-त्रिपादसहस्रम्
पौपटना-अरुणोदयः
पौर-द्वारम्
पौवा-पादः, तुर्यांशः
प्याज़-पलाण्डु सुकंदकः
प्याज-[सब्ज] लताकंदुद्रुमः
प्याजी-[रंग] पाटलम्
प्यार-प्रेमः प्रणयः
प्यारा-प्रियःवल्लभः हृद्यं दयितम्
प्यारा जियादा-प्रेयस्ईदीयस[त्रि०]

परखाई - अभिज्ञापपर्यं, अभिज्ञता
परखाना-परीक्षणम् (परि-ईक्षय्)
परगना-परिधिः
परचा-पत्रम्
परचाना-सान्त्वनं (सान्त्व् १०प०)
परचून-अल्पशः [अ०]
परचूनया - अल्पशोविक्रयिन्[त्रि०]
परछती - लघुच्छदिः
परछा-कटम्
परछाई-प्रतिच्छाया, प्रतिबिंबः
परताल- अवेक्षणा गणितशुद्धिः अन्वेक्षा
परताल करना-अन्ववेक्षणं,शोधनम् (अनुअव ईक्ष् १आ० । शुध् १०प०)
परतीत-प्रत्ययः, प्रतीतिः
परन्तु-परञ्च (अ०) किन्तु (अ०)
परदादा-पितामहः
परदादी-पितामही
परदार-पक्षवत् (त्रि०)
परदेस-विदेशः, प्रवासः
परदेसी-विदेशिन्,[त्रि०] प्रवासिन् (त्रि०)
परनाना-प्रमातामहः
परनानी-प्रमातामही
परनाला-नालकः, प्रणालः
परनाली-नालिका, प्रणाली
परपंच-माया, छलं, कपटं,छद्मन्(न०)
परपंची-मायाविन् (त्रि०)
परपोता-प्रपौत्रः
परपोती-प्रपौत्री
परफ़ैक्ट-सम्पन्न, सिद्धं, समाप्तम्
परभात-प्रातस् (अ०)
परमट- करस्थानम्
परमटा-(वस्त्र) पारमतम्
परमेनेंट-स्थायिन् (त्रि०) नित्यम्
परलोक-परलोकः, अमुत्र, प्रेत्य
परवारिश-पोषः, पालनम्
परवारिश करना-पालनम् (पाल् १०.प०)
परवल- (साग) पटोलः, कूलकः
परवस-पराश्रयः, पराश्रितः
परवाना- (जीव) पतंगः, शलभः
परवाना- (हुकुम) आज्ञापत्रम्
परवाह-आस्था, गणना
परसन-पुरुषः
परसाल-परुत् (अ०)
परसालका-परुत्नम्
परसों- (गुज़रा हुवा) परह्यस् (अ०)
परसोंका- " परह्यस्तनः
परसों- (आनेवाला) परश्वस् (अ०)
परसों का- " परश्वस्तनः
परहेज-पथ्यं, निवृत्तिः
पराठा-घृतरोटिका

प्यारा सबसे–प्रियतमः (त्रि०)
प्यारी–प्रिया, वल्लभा
प्याला–शरावः वर्धमानः
प्याला–(शराबका)चषकः पानपात्रम्
प्याली–पानपात्री, पात्री
प्यास–तृषा, पिपासा
प्यासा–तृषितः तृषार्त्तः पिपासितः
प्रगट–प्रकटम् (त्रि०)
प्रगटना–प्रकटनम् (प्र-कट्१प०)
प्रपोज–प्रस्तावः उपक्षेपः
प्रपोजिल–सिद्धान्तः प्रमेयम्
प्राइवेट–विजनं,आत्मीयम्
प्रायमरी–प्रारंभिकः
प्रास्पैक्ट–उत्तरकालीनं आगतिपत्रम्
प्रिवीकौंसल–मंत्रिसभा
प्रिंसीपल–महोपाध्यायः,प्रधानः आचार्यः
प्रिंसीपललेडी- महोपाध्यायी, आचार्यानी (१)
प्रिंसीपल- (स्त्री) महोपाध्याया, आचार्या (२)
प्रीमाफ़ोन – नवत्राद्यम्
प्रूफ़ – प्रमाणं, लक्षणम्
प्रेजिन्ट – वर्तमानं, प्रस्तुतकालम्
प्रेटराइट – (फास्टइम्परफैक्ट)लङ्
प्रेटराइट – [सैकंड] लिट्
प्रेटराइट – [थर्ड] लुङ्
प्रेडीकेट–विशेषणं, विधानम्
प्रेपोजीशन – उपसर्गः
प्रेस – मुद्रायन्त्रम्
प्रेक्टिस – अभ्यासः
प्रोग्राम – समयविभागः
प्रोनौन – सर्वनामन् (न०)
प्रोपाइटर – स्वामिन् (त्रि०) प्रभुः
प्रोफ़ेसर–उपाध्यायः
प्रोफ़ेसरलेडी – उपाध्यायी [३]
प्रोफ़ेसर – [स्त्री०] उपाध्याया [४]
प्रोमोट – पदोन्नतिः, वृद्धिः, उपचयः
प्लुरल – बहुवचनम्
प्लेग – महामारी, उपलयः
प्लेट – फलकः, पुटः
प्लेटफार्म – वेदिका, वेदिः मञ्चः मञ्चमण्डपः

(१) प्रिंसपलकी धर्मपत्नी के लिये है।
(२) जो स्वयं कालेज में प्रिंसीपलका काम करती है।
[३] प्रोफ़ेसर की स्त्री के लिये है।
[४] जो कालेज में स्वयं प्रोफ़ेसरी करती हो।

परायी—परकीयः
परार साल—परारि (अ०)
परार साल का—पराविनम्
परिंदा—विहंगः, खगः, शकुनिः, पक्षिन् (पु०)
परिपाटी—क्रमः
परी—अप्सरस् (स्त्री०) देवांगना
परेड—युद्धस्थानं, व्यूहागारः
परेशान—परिक्लिष्टः, विक्षिप्तः, विकलः
परेशानकरना - विकलनम् विकल् १० उ)
परेशानी—व्यग्रतां, द्विविधा
परोपी—[वज़न] शरावः, अष्टपलः
परोसना—परिवेषणं, [परिवेषय्]
परोसा—परिवेषितम्
पर्त (तह) तलम्
पर्दा—आवरणं अन्तर्पटः
पर्दाकरना—आवरणम् (आ-वृ५उ०)
पर्दानशीन—अवरोधिनीअन्तःपुरीया
पलंग—पर्यंकः खट्वा
पलंगपोश—परिच्छदम्
पलटन—सेना, चमूः ध्वजिनी, वाहिनी पृतना, अनीकिनी
पलटना—प्रत्यावर्त्तनम्(प्रति-आ-वृत् १ आ०)
पलटा—विनिमयः
पलटाना—प्रत्यादानम् (प्रति-आ-दा)
पलड़ा—तुला, आधारः
पलत्थी—पद्मासनम्
पलवाकरके—पोषयित्वा
पलवाताहुवा—पोषयत्
पलवाना—पोषणम् (पोषय)
पलवानेकेलिये—पोषयितुम्
पलवानेलायक—पोषणीयम् पोषयितव्यम्
पलवानेवाला—पोषकः
पलवाया - पोषितम् (त्रि०)
पलस्तर—पुस्तं, लेपः
पलीत—अपवित्रः
पलीता - स्थूलवर्तिका, महालातः
पल्लू—पटप्रान्तः
पल्लूदार—पटप्रान्तिकः
पलेथण - चूर्णम्
पंवारदाना—प्रपाटः
पशम—ऊर्णा
पशमीना—मञ्जुकम्बलम्
पस—अतस्(अ०) इतिहेतोः(प्रमीत्रि०) ततस् (अ०)
पस्तकद--वामनं, खर्वः ह्रस्वः
पसंद—मनोनीतं, अभीष्टं रोचकः अनुनीतं
पसंदकरना—अभिप्रीणनम्

फ

फ – फूत्कारः, झञ्झावातः, फलप्राप्तिः
फ़क़त – केवलं, इति
फंका – मुष्टिः, पाणिपूर्णम्
फंकी – चूर्णम्
फ़कीर – साधुः, भिक्षुकः
फ़कीरी – साधुता, भिक्षुकता
फ़ख़र – गौरवम् (त्रि०)
फ़ज़ल – कृपा
फ़ज़लकरना – कृपणम् (कृप् १ आ०)
फ़जी – (मरीरी) कोटरः, भण्डीरः
फ़जीलत – श्रेष्ठता, औत्कर्ष्यम्
फ़ज़ूल-वृथा, निरर्थकम्
फ़ज़ूलख़र्च – अतिव्ययः
फ़ट – व्रणं, क्षतम्
फटकना – (छरना) शोधनं, कण्डनं (शुध् १० प० । कण्ड् १० प०)
फटकार – भर्त्सा, तर्जना
फटकारना – भर्त्सनं (भर्त्स् १० प० तर्ज् १ प०)
फटना – विदारणं, उच्छेदनं (वि-दृ६ आ० स्फुट्६प० उद्-भिद्७प०)
फटा – भग्नः, विदीर्णः (त्रि०)
फटामकान – विदीर्णम्
फटावस्त्र – विशीर्णम्
फटादूध – आमिक्षा
फटेदूधकाजल-मोरटम्
फंड – कोषः, साहाय्यकोषः
फड़क – स्फूर्तिः
फड़ककरके – स्फुरित्वा
फड़कताहुवा – स्फुरत् (त्रि०)
फड़कना – स्फुरणम् (स्फुर् ६प०)
फड़कनेकेलिये – स्फुरितुम्
फड़कनेलायक – स्फुरणीयम्(त्रि०)
फड़कनेवाला – स्फारकः
फड़का – स्फुरितः (त्रि०)
फड़काना – आस्फालनम्(आस्फाल् १० उ०)
फड़फड़ाहट – व्याकुलता
फड़ाना-ग्राहणम् (ग्राहय्)
फ़तह – विजयः
फ़तहकरना – विजयनम् (वि-जि १ आ०)
फतहकावाजा – ढक्का विजयवाद्यम्
फतहमंद } फतहयाब } विजयिन् [त्रि०] विजेतृ [त्रि०]
फतूही-अन्तरीयम्
फंदा – पाशः, जालम्
फन – फणा, फटा

अभी-मी६उ० } रुच् १आ०
अभी-मी४आ० }

पसरना-प्रवेशनम् (प्र-विश् ६प०)
पसली-पार्श्वम्
पसारना-प्रसारणं(प्रसारयवितन्८प०)
पसारा-प्रसारः
पसारा-गांधिकःऔषधिविक्रयिन्(नि०)
पसीना-प्रस्वेदःघर्मजलम्
पंसेरी-आढकम्
पसोपेश-संदेहः
पहलू-पार्श्वम्, पक्षःकोटिः
पहाड़-पर्वतःगिरिःशैलःअद्रिः अचलः महीध्रः शिखरिन् (पु०)
पहाड़-(मशरकी) उदयाचलः
पहाड़-[मगरबी] अस्ताचलः
पहाड़या-पार्वतीयः
पहाड़ा-[खोरा] गणनाघोषः, घोषः
पहाड़ी-[छोटी] पादः प्रत्यन्तपर्वतः
पहिचान-परिचयः
पहिचानना- परिचयनं, उद्बोधनं, अभि-ज्ञानं (अभि–ज्ञा ६ प०)
पहिनना-परिधानम् (परि-धा ३उ०)
पहिनाना-परिधापनम् [धापय्]
पहिया-चक्रं, रथांगः
पहिर-प्रहारः, यामः
पहिर- [सुबह का] प्राह्णः
पहिर- [दो पहिर का] मध्याह्नः
पहिर- (तीसरा) अपराह्णः
पहिरा- (चौथा) चरमयामः
पहिरा-उपरक्षणं, सज्जनम्
पहिराना-परिधापनम् (परि-धापय)
पहिरेदार- रक्षकः
पहिरेदारी-रक्षकता
पहिल-आरम्भः, प्रारंभः
पहिला-प्रथमः, अग्रिमः आदिमः
पहिलाज़माना-प्राकालः
पहिलामुल्क-प्राग्देशः
पहिली- प्रथमा,
पहिले - प्राक् (अ०] पुरा [अ०)
पहिलेही से - प्रथमत एव (अ०)
पहिले दिन - पूर्वेद्युस् (अ०)
पहिलपहिर-प्राह्णेतनं, पूर्वाह्णेतनम्
पहुंच-गम्यं, प्राप्तिः
पहुंचना-प्रापणं [प्राप् ५ प०आगम् १ प०]
पहुंचाना-उपस्थापनं,वहनं [वह् १उ०
पहुंची-(ज़ेवर) हस्ताभरणं, वलयम्
पहोरा-(फावड़ा) काष्ठकुद्दालःअभ्रिः
पां- [रोग] पामन् [पु०] विचर्चिका
पाई-पणांशः

फायदामंद-उपयोगिन् [त्रि०]
फार्म-पद्धतिः
फारस-[मुल्क]पारसःपारसीकःपारस्यः
फारिग़-मुक्तः
फ़ालतू-निरर्थकं,व्यर्थम्,निष्पयोजनम्
फ़ालसा-परूषकं, परापरम्
फावड़ा-(पहोरा) काष्ठकुद्दालः अभ्रिः
फास्ट-तीव्रम्
फासिला-अन्तरं दूरता
फांसी-(सज़ा) जीवदंडः
फांसी लगाना-उद्बंधनं (उद्-बन्ध् ९ प०)
फाहिशा-वेश्या, व्यभिचारिणी
फिक्र-उत्कण्ठा, चिन्ता
फिकर करना-शोचनम् (शुच् १प०)
फिक्रमंद-उत्तप्तः, सचिन्तः
फिकरमंदी - चिन्ता
फिकरा - वाक्यम्
फिंकवा करके - क्षेपयित्वा
फिंकवाता हुवा - क्षेपयत् (त्रि०)
फिंकवाना - क्षेपणम् (क्षेपय)
फिंकवाने के लिये - क्षेपयितुम्
फिंकवाने लायक़ - क्षेपणीयम्, क्षेपयितव्यम् (त्रि०)
फिंकवाने वाला - क्षेपकः, क्षेपयितृ (त्रि०)
फिंकवाया गया - क्षेपितः (त्रि०)
फिज़िक्स - पदार्थविज्ञानशास्त्रम्
फिट - धिक्कारः
फिटकरी - काक्षी, सुरमृत्तिका
फिटकारना - धिक्कारणम् (धिक्-कृ ८ उ०)
फिटिन - पुष्परथः
फिडा - मद्गुः मद्गजालुकः
फ़िदवी - अनन्यः,सेवकः
फ़िदी-[पखी] चलपुच्छः
फिर - पुनर् (अ०)
फिरकभी - अन्यदा (अ०)
फ़िरक़ा - जातिः, श्रेणी, समुदायः सम्प्रदायः
फिर क्या - किमुत (अ०)
फिर क्या हुवा - ततस्ततस् (अ०)
फिरना - भ्रमणं (भ्रम् १ प० अट् १ प०)
फिरना - (कुवे की) कूपकाष्ठं
फिर भी - पुनरपि (अ०)
फिरानी - भ्रामणम् (भ्रामय,आटय्
फिराव - भ्रान्तिः,भ्रमः,चक्रम् ,मंडलम्
फ़िलफ़ौर-तत्क्षणं, सपदि (अ०)
फ़िलहाल - अधुना, संप्रति (अ०)
फ़िलासफ़र - विज्ञानिन् (त्रि०)

पाक-पवित्रं, पूतं शुद्धम्
पाकड़-पर्कटी स्त्रः
पाकरके-प्राप्य [अ०]
पाकिट—कोषः आधारः
पाकिटबुक-निजपुस्तकम्
पाखाना-पुरीषालयं, कुम्बा
पागल-उन्मत्तः प्रमादिन् [पु०]
पागलखाना-उन्मत्तालयः
पांच—पञ्च (१)
पांचगुना—पंचगुणः
पांचतरह—पंचधा (अ०)
पांचदिनका—पंचाहीनः
पांचदिनकी-पंचाहीना
पांचपांच- पंचशः (अ०) (२)
पांचबरसका-पंचवर्षः
पांचबरसकी-पंचवर्षा
पांचमासका-पंचमास्यः
पांचमासकी-पंचमास्या
पांचयज्ञ-पंचमहायज्ञाः
पांचरातका-पंचरात्रीणः
पांचरातकी-पंचरात्रीणा
पांचवार-पंचकृत्वस् (अ०)
पांचवां-पंचमः
पांचवांहिस्सा-पंचमः, पंचमांशः
पांचवीं-पंचमी
पांचसेर-(धरी) आढकम्
पाछना-छेदनं, उल्लेखनं (उत्-लिख् ६ प० छिद् ७ प०)
पाछे-पश्चात् (अ०)
पाजी - दुर्जनः, दुष्टः
पाजीपन - दुर्जनता, दुष्टता
पांडी - भारवाहः, भारिकः
पाताल - रसातलं, नागलोकः
पाताउवा - प्राप्तुवत् (त्रि०)
पान - ताम्बूलं, नागवल्ली
पानदान - करंकः, ताम्बूलः
पानदार - ताम्बूलिकः
पाना - प्रापणम् (प्र-आप् ५ उ०)
पानी - जलं, वारि (न०) नीरं, अंबु (न०)
पानी - (मैला) कलुषं, आविलम्
पानी - (साफ़) प्रसन्नः, अच्छः

१ पांचसे ले कर आगे शब्द एक ही रूप में रहेंगे उसी रूप से तीनों लिगों में लिये जावेंगे।

(२) इसी प्रकार 'शः' प्रत्ययलगाकर बना सकते हैं।

फ़िलासफ़ी – विज्ञानं, तत्त्वज्ञानं

फ़िश – धिक् (अ०) अरेरे अ०) अपैहि (अ०)

फिसलना – स्खलनम्, च्यवनम् (स्खल् १ प०। च्यु १ आ०)

फिसलाना – स्खालनम् च्यावनम् [स्खालय च्यावय]

फ़िसाद – उत्पातः, उपद्रवः

फ़िसादी – उत्पातिन् (त्रि०)

फ़िहरिस्त – (मजमून) अनुक्रमः, अनुक्रमणिका

फ़िहरिस्त—(वस्तु) सूचीपत्रम्

फीका – नीरसः, विरसः

फीता–दीर्घपट्ट, बंधनी

फ़ीस–शुल्कः, करः

फ़ीसदी–प्रतिशतम्

फीहा–प्लीहा

फुकना–भस्मीभवनं (भस्मी-भू १प०)

फुकनी–अग्निवायुः

फुंकार–फूत्कारः

फ़ुजूल–व्यर्थम्, निरर्थकम्

फ़ुजूलखर्च–अतिव्ययिन्, अनियन्त्रणा, व्यर्थव्ययः

फुट–पादः पादमानम्

फुटकर-(परचूण) अल्पशः, (अ०)

फुटबाल–पादकंदुकम्

फुड़वा करके–भञ्जयित्वा

फुड़वाता हुवा भञ्जयत् (त्रि०)

फुड़वाना–भञ्जनम् (भञ्जय्)

फुड़वाने के लिये–भञ्जयितुम्

फुड़वाने लायक–भञ्जनीयम् (त्रि०)

फुड़वाने वाला–भञ्जकः

फुड़वाया–भञ्जितः (त्रि०)

फुनसी–गंडः, पिटिका

फुफिया सास–श्वशुरभगिनी

फुफ्फुस–क्लोमन् (न०)

फुफेरा–पितृभगिनीसुतः

फुफेरी–पितृभगिनीसुता

फुर्ती–कौशलं, पाटवम्

फुर्तीला–चंचलः

फ़ुरसत–अवकाशः

फुरी–कटः, किलिंजकः

फुलका / फुलकी – पूलिका

फुलकारी–पुष्पवस्त्रम्

फुलझड़ी–अग्निपुष्पम्

फुल फुला–निःसारः

फुलबूट–पुष्पपादुका

फुलवंच–पूगा

पानेकेलिये – प्राप्तुम्
पानेलायक – प्रापणीयम् (त्रि०)
पानेवाला – प्रापकः
पाप – किल्बिषं, पापं, अघः, एनस् (न०)
पापड़ – पर्पटः, अरम्
पामा-(पां-रोग)पामन् (पु०)विचर्चिका
पायजेब-नूपुरः, मंजीरः
पायतख्त – राजधानी, मूलनगरम्
पायदार – स्थिरः, दृढः
पायदारी – दृढता, स्थिरता
पाया – प्राप्तम् (त्रि०)
पार – (नदीका) पारः
पारका – " पारीणः
पारखी परीक्षकः
पार्ट – भागः, खंडः
पार्टी – पक्षः, आत्मपक्षः
पार्टसीपल – कृदन्तः
पार्लीमेंट – अष्टकौशलम्
पार्वती – पार्वती, गिरिजा, गौरी
पावा – पाशः
पार्स-पदविच्छेदः, पदभंजनम्
पार्सल – कूर्चः, भाण्डः
पारस – (देश) पारसीकः
पारसपटी – पारसमणिः
पारा – पारदः, रसः, सूतः
पालक – पालकः
पालक (साग)पालंकी, कुंदरूः(स्त्री०)
पालकरके–पालयित्वा
पालकी – शिबिका
पालताहुवा – पालयत् (त्रि०)
पालतू – गृह्यकः, छेकः
पालना – पालनम् (पाल् १० प०)
पालनेकेलिये – पालयितुम्
पालनेकेलायक – पालनीयम्
पालनेवाला--पालकः
पालागया-पालितः, पालितवत्(त्रि०)
पालिसी – नीतिः, राजनीतिः
पाव – (वज़न) कुडवः
पावआना – पणं, पादाणकम्
पांव – पादः, चरणः, अंघ्रिः
पांवकापानी – पाद्यम्
पांवड़े – पादवस्त्रम्
पावपाव – कुडवशः (अ०)
पांवफूटना – पादस्फोटः
पावभर – कुडवकः, कुडवमात्रम्
पावला – पादः, पादमुद्रा
पास – (नजदीक) समीपम्

फुलवाड़ी-पुष्पवाटिका

फुलाना-वर्धनं (वृध् १ आ० आ-ध्मा १प० स्फाय् १ आ]

फुली-(आंखकी) नेत्रपुष्पम्

फुलेल-पुष्पतैलम्

फुलेली-गंधवणिज् (पु०)

फुस फुसाना-कर्णेजपनं (कर्णे-जप् १ प०)

फुस फुसाहट-कर्णजापः

फुसलाना-उप-छन्दनम् [उप-छन्द् १० उ०]

फुसलाव-उपच्छन्दः

फुहार-लघुवृष्टिः,शीकरः

फूंक-फूत्कारः

फूंकना-प्रदहनं,ज्वालनं,ध्मानं, (ध्मा (धम) १ प० प्र-दह् १ प०)

फूंकनी-भस्त्रा, चर्मप्रसेविका

फूंकमारना-ध्मानं (ध्मा १ प०)

फूट-मतभेदः

फूट २ रोना-विक्रोशः

फूटकरके-स्फुटित्वा

फूटता हुवा—स्फुटत् [त्रि०]

फूटना—स्फुटनम् [स्फुट् ६ प०]

फूटने के लिये—स्फुटितुम्

फूटने लायक-स्फुटनीयम् (त्रि०)

फूटने वाला-स्फोटकः

फूटा-स्फुटितः [त्रि०]

फूफा-पितृस्वसुःपतिः

फूफी-पितृस्वसृ [स्त्री०]

फूल-पुष्प, प्रसूनं कुसुमं

फूल- (अधखुला) मुकुलितं

फूलकली-मुकुलं, कलिका

फूलधूर-परागः पुष्परागः

फूलना-(जानदार का) स्फायनम्

फूलना- (फूलोंका) फुल्लनम् (फुल्ल १ प० । स्फुट् १ आ०)

फूलरस-पुष्परसः, मकरन्दः

फूला-प्रोपचितः विकसितः (त्रि०) [वि-कस् १० प०]

फूला- (जानदार) स्फीतः

फूस- पलालः, कडंगरः, तृणम्

फूहा- विकेशिकः, चौमबंधः

फेंग-बिन्दुः, फेनम्

फेंटा-कटिबंधः

फेनी- [मिठाई] फेनिका, पुटनी

फेफड़ा-फुप्फुसः, वायु कोषः

फेफड़ी-ओष्ठशोषः

फेर-(मोड़) परिवर्त्तःआवृतिः परिक्रमः प्रवणता

फेरफार-अन्योन्यानुवर्तिता,परिवृत्तिः

फेरना / फेरखाना } परिभ्रमणं (परिभ्रम्१प० आवृत् १आ०)

फेरनी-(कुवेंकी) त्रिका

फेरा—परिक्रमा
फेरी–प्रदक्षिणा परिक्रमा
फेरीवाला–पर्य्यटकः
फेल-(वर्ब) क्रिया
फेलहोना-(गिरना, अनुचरणं पतनम्
(अनु-चर्-तृ१प० पत् ६प०)
फेंक–प्रक्षेपः
फेंककरके–क्षिप्त्वा प्रक्षिप्य
फेंकताहुवा- क्षिपत् (त्रि०)
फेंकना–प्रक्षेपणम् [प्रक्षिप्६प०]
फेंकनेकेलिये–क्षेप्तुम्
फेंकनेलायक-क्षेपणीयम् (त्रि०)
फेंकनेवाला—प्रक्षेपकः
फेंकागया–प्रक्षिप्तः [त्रि०]
फैलना–व्यापनम् [वि-आप्५उ०]
फैलाना–तननम् [तन् ८उ०]
फैलाव-विस्तारः प्रसारः
फैज–अनुग्रहः
फैमीनन–स्त्रीलिङ्गम्
फैयाज़ उदारः दातृ त्रि० महामनस्
[पु०] दयालुः
फैयाजी–उदारता
फैशन-रीति,लोकाचारः प्रथा
फैसला-निर्णयः निस्तोकः
फोग- [साग] रंगी सुक्ष्मपुष्पं
फोटो-प्रतिकृतिः
फोटोग्राफर-आलोकलेखिन् [त्रि०]
फोड़करके - भङ्क्त्वा, प्रभज्य (अ०)
फोड़ताहुवा - भञ्जत्
फोड़ना – भेदनं,भञ्जनं, [भंज्७प०]
फोड़नेकेलिये - भङ्क्तुम्
फोड़नेलायक - भञ्जनीयम्
फोड़नेवाला - भञ्जकः
फोड़ा–विस्फोटः,पिटक ,रक्तस्फोटकः
फोड़ागया - भग्नः, [त्रि०]स्फुटितः
[-त्रि०]
फोड़ावड़ा – व्रणः, ईर्मम्
फोनोग्राफ - श्रुतवादः
फोला – [सूतका] सूत्रचक्रम्
फोश - अश्लीलम्
फोहारा–जलयंत्रम्
फौज – सेना, चमूः, (स्त्री) पृतना
फौजदारी – दण्डाधियोगः
फौजी – सैनिकः
फौत – देहान्तं, मृत्युः, निधनम्
फौतनामा – मृतसंख्यापत्रम्
फौती – मृतः
फौरन – शीघ्रं, तत्क्षणं, क्षिप्रम्
फौलाद –लोहसारः, तीक्ष्णायसम्
फौलादी – लोहसारीयः

यहांतक–यावत् (अ०)
यहां से–इतस् (अ०)
यहीं–अत्रैव (अ०)
या–वा (अ०)अथवा(अ०)आहो(अ०) उताहो (अ०)
याजक–पुरोहितः, आचार्यः
यातो – वापि (अ०)
याद–स्मृतिः
यादकरके–स्मृत्वा, संस्मृत्य (अ०)
यादकरताहुवा–स्मरत् (त्रि०)
यादकरना–स्मरणम् (स्मृ १ प०)
यादकरनेकेलिये स्मर्तुम्
यादकरनेलायक–स्मरणीयम्
यादकरनेवाला–स्मारकः
यादकिया–स्मृतः (त्रि०)
याददिलाना–उद्बोधनम् (उद्बुध् १प
याद्दास्त–उद्बोधः, स्मरणम्
याने–अर्थात् (अ०)
यार–मित्रं, वयस्यः, सुहृदः
यार(औरत का) उपपतिः, जारः
यारवाश–मित्रवर्गः
याराना–मैत्रम्, मित्रता
यारी–मित्रता
यूं–एवं (अ०)
यूनीवर्सिटी–विश्वविद्यालयः
यूनीवरसल–विश्वम्
यूरुप– मत्यन्तः,हरिद्वीपम्, अश्वकांतः
यूंही–एवमेव
ये–इदम् की गर्दान देखो
यों–एवम् [अ०]
योंतो–एवंतु (अ०)
योम–दिनम्
योंही–एवम् , एवमेव
योंही सही–एवंस्यात् (क्रि०)
र–अग्निः, तेजस्
रईस–मान्यः
रंक–दरिद्रः, अकिंचनः
रकवा–क्षेत्रफलम्
रकम–धनं, द्रव्यं वस्तं मूल्यम्
रकाब–पादधारिणी
रकाबी=स्थाली
रखना–रक्षणम् (रक्ष् १ प०)
रखवाई–रक्षापणम् रक्षा
रखवाना–रक्षणम् [रक्षय]
रखवाला–रक्षकः
रखवाली–रक्षकी
रग–नाड़ी, शिरा, धमनी
रंग–रूपं, वर्णः रागः
रंगना–रंजनम् (रंज् १ प)

वंदूकची-लघुभुशुंडी
वंदोवस्त-प्रबंधः
वंदोवस्त करना-प्रबंधनम् (प्र-बन्ध् ६५०)
वदौलत-भाग्यतस् [अ०) कारणतस् (अ०)
वंधा करके—बंधयित्वा
वंधाता हुवा—बंधयत् (त्रि०)
वंधाना-बंधनम् (बन्धय)
वंधानेके लिये—बंधयितुम्
वंधाने लायक-बंधनीयम् बंधयितव्यं (त्रि०)
वंधाने वाला-बंधकःबंधयत् (त्रि०)
वंधाया गया-बंधितः (त्रि०)
वंधेज स्तंभनम् पुष्टिः
वन-धनं, काननं विपिनं, अरण्यम्
वनवड़ा -अरण्यानी
वन-(गिरोह) वन्या
वनरा-वरः
वनरी-वधूः
वनवाई-निर्मितिपण्यम् निर्मितिः
वनवाना-निर्मापनम् (निर्मापय्)
वनवया-निर्मापकः
वनाकरके विरचयित्वा
वनाता हुवा-विरचयत् (त्रि०)
वनाना-विरचनं निर्माणम् (विरच् १०प०)
वनानेके लिये-विरचयितुम्
वनानेलायक-विरचनीयं विरचयितव्यम् (त्रि०)
वनाने वाला—विरचकः
वनाया गया-विरचितः (त्रि०)
वनावट-निर्मितिः निर्माणरचना
वनावटी-काल्पनिकः कृत्रिमं कृतकः
वनावना-निर्माणम् (निर्णा२प०)
वनिया-वणिक् (पु०) वैश्यः
वनिया-(जाति)अर्या, आर्याणी
वनियाइनी-(स्त्री) अर्यी
वनिस्वत-अपेक्षा
वपुरा-दीनः
वपुरी-दीना
वपौतिहक्क-पैतृकाधिकारः
ववरी-बर्बरी, तुंगी,
ववूल-(कीकर) किंकरालः मब्बलः
वमका-अर्कनालम्
वमूजिव -तदनुसारम्
वयान-(अदालत) भाषा
वयान करना-वर्णनम् कथनं (वर्ण १०प० कृत् [कीर्त्] १०उ०)
वयावान-मरुभूमिः

रगड़ – संघर्षः, घृष्टिः
रगड़ करके– घर्षित्वा, घृष्ट्वा
रगड़ता हुवा – घर्षत् (त्रि०)
रगड़ना – घर्षणम्, आस्फालनम् (घष १प०)
रगड़ने के लिये – घर्षितुम्
रगड़ने लायक – घर्षणीयम्(त्रि०)
रगड़ने वाला – घर्षकः
रगड़ा – घृष्टः (त्रि०)
रंगढंग–आकृतिः, गतिः
रंगत–वर्णः
रंगदार–रंजितः (त्रि०)
रंगना–रंजनम् (रंज् १ उ०)
रंगबरंगी–विचित्रं, चित्रितं, किर्मीरः रम् चित्रवर्णः
रंगभंग–विघ्नः
रंगरूट–नवसैनिकः
रंगरेज–रागाजीवः, रंजकः
रंगमहल–रंगशाला
रंगवाना—रंजनम् (रंजय्)
रंगा–रंजितः (त्रि०)
रंगाई–रक्तिः
रंगीन–चित्रितं, रंजितः, रक्तः
रंगीनी चित्रिता, रक्तता, रक्तिमन् (त्रि०)
रंगीला–हृष्टः, मुदितः (त्रि०)
रचना–सृष्टिः, प्रपंचः
रछाणी=क्षुरभाण्डम्
रंज–परितापः
रजना–संतोषनम् (सम्-तुष् ९ प०)
रजवाड़ा–राज्यम्
रज़ा–इच्छा, सम्मतिः
रजाई–नीशारः
रज़ाई–(दुलाई) तूलिका, उत्तरच्छदः
रज़ामंद–इच्छुकः, सानुरागः
रज़ामंदी–इच्छा
रंजिश–शोकः
रजिस्टर–राजिष्टरः, पंजिका
रजिष्टरार–लेखकः
रजिस्टरी–राजिष्टिरी
रंजीदगी–अप्रसन्नता
रंजीदह–शोकातुरः, अपरुद्धः, दुर्मनस् (पु०) अन्तर्मनस् (पु०) विमनस् (पु०)
रटना–मुहुरभ्यसनम्(अभि-अस् २प०)
रंडा–विधवा
रंडापा–वैधव्यम्
रंडी–वेश्या, पण्यस्त्री
रंडीबाज–वेश्यागामिन् (पु०)
रंडी बाजी—वेश्यागामिता
रंडुआ–मृतपत्नीकः

वयानवाँ-द्वानवतितमः
वयानवीं-द्वानवतितमी
वयानवे द्वानवतिः
वयासी-द्व्यशीतिः
वयासीवाँ-द्व्यशीतितमः
वयासीवीं द्व्यशीतितमी
वरअक्स—असम्मतम्
वरकत-आशिष् (स्त्री०)आशीर्वादः भद्रवादः
वरखास्त-प्रत्यादेशः
वरखास्त करना-प्रत्यादेशनम् (प्रति-आ-दिश् ६प०)
वरखिलाफ़—विमुखः,प्रतिकूलः प्रमवः
वरखुरदार-प्रियः चिरंजीविन् (त्रि०)
वरगद-वटः, न्यग्रोधः
वरतन-भाण्डं भाजनं, पात्रम्
वरदारी-वाहनम्
वरदी-परिच्छदः, वेशः
वरना-(वृत्त) वरणः सेतुः
वरवाद-सत्यानाशः विनाशः
वरवाद होना-नशनं (नश् ४प० क्षि१प०)
वरवादी-अतिपातः
वरमला-स्पष्ट साधारणम्
वरमा-(औजार) वेधनिका आस्फोटनी छेदकम्
वरमी-(वामलूर) वल्मीकः
वरस-वर्ष वत्सरः
वरस-(मौजूदा) पेषमः
वरसका-वार्षिकः
वरसकी-वार्षिकी
वरसगांठ-वर्षग्रंथिः
वरात—जन्या
वराती—जन्याकः
वरादरी—ज्ञातिः, जातिः
वरावर—सततं, समः, समानम्
वरावर—(किसीके) सदृक्षः, सदृशः, निभः, प्रतीकाशः
वरावरकरना—समीकरणम् [समी कृ ८ उ).
वरावरी-समानता, उपमा
वरांडा } प्रघणम्
वरामदा }
वरामद - निष्क्रमः, निर्याणम्
वरियाई - मानम्
वरी - (रिहा] निर्दोषः, अनघः, निष्पापः
वर्कंदाज़ —रक्षित् (पुं०)
वर्छी - शक्तिः

रतालु-रक्तालुकम्
रत्ती-गुंजा, कृष्णला
रतौंधा—रात्र्यन्धः
रथ—रथः
रथवान—सारथिः
रथवानी—सारथिता
रद—प्रत्यादेशः
रदकरना-निराकरणम्(निर्-आ०कृ८उ
रंदा-घर्षकः
रद्दी—निसारः क्षीणः अपसारः
रद्दी किया-निरस्तः निराकृतः
रदीफ़—अनुप्रासः
रंधना-पचनम् (पच् १उ०)
रनवास-अन्तःपुरम्
रपट-आवेदनम्
रफ़-उच्चावचं, उत्तालम्, अस्पष्टम्, अचिक्कणम्
रफ़ीक-सुहृद् (पु०)
रफ़ू-वस्त्रसंधिः
रफ़ू करना-वस्त्रसंधानं (सं-धा३प०)
रफ़ूगर—वस्त्रसंधायकः
रफ़ूगरी-संधायकता
रफ़ूचक्कर-स्रावितः (त्रि०)
रवड़-घर्षकः मार्जकः निर्यासः
रवड़ी-क्षीरशाकम्
रवा-स्तंबघ्नः
रवेल-(वेल) श्रीपदी वार्षिकी
रमज़-वक्रोक्तिः
रवन्ना-आज्ञापत्रं, मार्गपत्रम्
रवानगी-चालनं, प्रस्थितिः
रवाना होना-चलनं,प्रस्थानं (चल् १प० प्र स्था१प०)
रवैया-प्रथा
रस-रसः
रसद-खाद्यद्रव्यं, उपस्करणसंभारः
रसम-प्रचारः
रसाला-मासिकम्
रसाला-(फ़ौज) अश्वारोहः सादिनः
रसालदार-अश्वपतिः
रसालदारी-अश्वपतिता
रसीद-(रिसीव)स्वीकारपत्र प्रमाणपत्र उपगतम्
रसीला-रसपेशलः
रसोई—भोजनम्
रसोईया-पाचकः
रसौत-रसाञ्जनम्
रस्सा-संदानं दामन् (न०)
रस्साकशी-गुणाकर्षणम्

विहतर–वरम्, श्रेयस् (त्रि०) साधीयस् (त्रि०)
विहतरी-मंगलं, श्रेयस् (त्रि०)
बी० ए०–आंगलशास्त्रिन् (त्रि०)
वीघा–पादवर्गः एकविंशतिशतपादवर्गः
वीच–अन्तरम् (अ०) आन्तरम् (अ०
वीज–बीजम्
वीजक–मूल्यसूची
वीट–पुरीषम्
वीड़ा–पानपत्रम्
वीड़ा उठाना–साधनं, कारणम् (साधय् । कृ = उ०)
वीतना–निपतनं (निपत् १ प०)
वीतना [गुज़रना] संक्रमणम् [सं क्रम् ४ प०]
वीन – वीणा
वीनाई – दृष्टिः
वीमा – रक्षणं, रक्षा
वीमार – रुग्णः, रोगिन् (त्रि०)
वीमारखाना–रोगिगृहम्
वीमारी–रोगः, व्याधिः, गदः
वीरज–वीर्यम्, शुक्रं, बीजम्
वीरबहूटी–इन्द्रगोपः, इन्द्रवधूः

वीरी–दन्तचूर्णम्
वीवी–पत्नी, भार्या, स्त्री, अर्द्धांगिनी
वीस–विंशतिः
वीसवां–विंशः
वीसवीं–विंशी
वीसमन–वाहः (१)
बुकनी–चूरणं, पिष्टातः
बुखार–ज्वरः, तापः, बाष्पम्
बुखारात–(आग के) वाष्पजातम्
बुजुर्ग–वृद्धः, गुरुजनः
बुझना–निर्वाणम् (निर्-वा२प०)
बुझाना–निर्वापणं (निर्-वापय्)
बुझारत–प्रहेलिका
बुड़ाना–रंजनं, रंजितम्
बुढ़ापा–वार्द्धिकं, जरा (स्त्री०)
बुढ़िया–वृद्धा, पलिक्नी
बुत–प्रतिमा, मूर्तिः
बुधवार–बुधवारः
बुनकरके–ऊत्वा
बुनताहुवा–वयत्, वयमानः (त्रि०)
बुनना–वानम् (वे १ उ०)
बुननेकेलिये–वातुम्
बुनेनेलायक़–वानीयम्, वातव्यम् (त्रि०)

(१) वीसमन का 'वाह' देश भेद में होता है।

रस्सी-गुणः रज्जुः (स्त्री०)
रहन-(गिरुई) आधिः
रहनदार-आधिमत् (त्रि०)
रहना-निवसनम् (नि-वस् १प०)
रहनुमा-नायकः नेतृ (त्रि०) प्रभुः, पथसूचकः
रहम-करुणा, दया
रहम करना-दयनम् [दय् १आ०]
रहमत-ईश्वरीयकृपा
रहिम दिल-करुणामयःकारुणिकः
राई-[मोहर]क्षवःक्षुण्णिका राजी
राई-[सुफेद] क्षिपिंडा श्वेतराजी
राईभर-क्षवमात्रम्
राख-भस्मन् [न०] भूतिः
राखस-राक्षसःअसुरः निशाचरः
राज़-रहस्यम्
राजपाट-राज्यसम्पत्तिः
राजी-तुष्टः प्रसन्नः
राजीनामा-तोषपत्रम्
राजा-भूपःपार्थिवः राजन् [पु०]
राड़-द्वन्द्वम्
राणी-देवी,महिषी, राज्ञी
रात-रात्रिःदोषा [अ०] नक्तं रजनिः
रातका-दोषातनम्
रातिब-नैत्यकाशनम्
राध-[पूप] पूयम्
रांधना-पाचनम् (पाचय)
रान-[सांथल] ऊरुः जंघा
राब-[मिठासकी] मधूकं,फाणितम्
राम-रामचन्द्रः रामभद्रः रामः
राय-[खिताब] रायः
राय-सम्मतिः मतिः
रायज-प्रचलितम्
रायबुक-सम्पतिपुस्तकम्
राल-धूपः शालनिर्यासः
रावी-(नदी) ऐरावती इरावती
रास्कोप-रास्कोपघटिका
रास-राशिः
रासधारी-लीलाधारिन् (त्रि०)
रास्ता-मार्गः पथिन् (पु०) वर्त्मन् (न०)
रास्ता-(अच्छा) सत्पथः सुपंथः
रास्ता-(बुरा) कापथः कदध्वन् पु०)
रास्ता-(बंद) अपथम्
रास्ता-(चोरों का) कान्तारम्
रास्ता-(दूरवैरान) प्रान्तरम्
रास्ती-सत्यता
राह-मार्गः

बुननेवाला-वापकः
बुनयाद-मूलम्, वस्तु, प्रतिष्ठा
बुनयादी-आदिमम्, प्रतिष्ठाकम्
बुनयादीपत्थर-प्रतिष्ठाशिला
बुनयान-हृद्कञ्चुकम्
बुनाई-ऊतिः
बुनाकरके-वापयित्वा
बुनागया-ऊतः (त्रि०)
बुनताहुवा-वापयत् (त्रि०)
बुनाना-वापनम् (वापय्)
बुनानेकेलिये-वापयितुम्
बुनानेलायक़-वापनीयम्, वापयितव्यम् (त्रि०)
बुनानेवाला-वापकः
बुनायागया-वापितः (त्रि०)
बुरका-अवगुण्ठनम्
बुरकेवाला-गूढा, गुप्ता
बुरा-विगुणः
बुराई-व्यसनं, अशुभं, अपकारः
बुराकरना-अपकरणम् (अप-कृ८उ०)
बुराजवाब-उत्तराभासः
बुरीवला-विकटपिशाची
बुरुश-कूर्चिकं, आघर्षणी, तूलिका, कूर्चिका
बुर्ज-स्तंभः

बुलंद-विशालः
बुलंदी-विशालता
बुलबुल-वर्त्तिका, बुल्बुलः, प्रियगीतः
बुलबुला-बुद्बुदम् (न०)
बुलवाना-आकारणं (आ-कारय्)
बुलाक़-कुण्डलिनी
बुलाकरके-आहूय (अ०)
बुलाताहुवा-आह्वयत्, आह्वयमानः (त्रि०)
बुलाना-आह्वानम् (ह्वे १ उ०)
बुलानेकेलिये-आह्वातुम्
बुलानेलायक़-आह्वानीयम् (त्रि०)
बुलानेवाला-आह्वायकः
बुलायागया-आहूतः (त्रि०)
बुहारना-परिष्करणम् (परिष्-कृ८ उ०)
बुहारी-संमार्जनी, शोधनी, कण्टनी
बुहारू-परिष्कारकः
बू-गंधः
बूझना-अवगमनं, बोधनं, (बुध् १ उ०)
बूट-(जूता) पन्नद्धा, पादत्रम्
बूटा-स्तंबः
बूटी-(जड़ी) स्तम्बा
बूढ़ा-वृद्धः, स्थविरः

रिकार्ड-लेख्यम् , निदर्शनम्
रिझाना-वशीकरणम् (वशी-कृ८उ०)
रिड़क-मन्थः
रिड़कना-मन्थनम्, विलोडनम् (मथ्-९ प० । वि-लुड् १ प०)
रिपोर्ट-विज्ञप्तिः, आख्या
रिम-विंशतिकम्
रिमार्क-व्यवस्था, लक्षणम्
रियाजी - गणितम्
रियायत - प्रसादः, कृपा, प्रीतिः, अनुग्रहः
रियायती-प्रासादिका
रियासत - राज्यं, राजसत्ता
रिवाज - प्रचारः, प्रथा, देशाचारः
रिवाजी - प्रचलितम्
रिश्तहदार - संबंधिन्, (त्रि०) अभिजनः
रिश्ता - संबंधः
रिशवत - उत्कोचः, उपदा
रिशवतखोर - उत्कोचिन् (त्रि०)
रिहटारिक - अलंकारशास्त्रम्
रिहा - विमुक्तः
रिहाई - विमुक्तिः, निष्कृतिः
रिहायश - वासः
रीछ - ऋक्षः, भालुः

रीछनी - ऋक्षी
रीझना - संतोषणम् ,(सम्-तुष्४प०)
रीस - सपत्ता, अभिध्या
रुकना - रोधनं (रुध् १० प०)
रुक्का - (चिक) माप्तिपत्रम्
रुकाना - रोधनं (रोधय्)
रुकावट - प्रतिरोधः, विघ्नः, विबंधः
रुख - विंवः
रुखसत - अवकाशः
रुतबा - पदम्
रुद्रास - रुद्राक्षः, शर्वाक्षः
रुपया - कार्षिकः, रूप्यकं, मुद्रा, कार्षापणम्
रुमाल - कर्पटः, करवस्त्रम्
रुलाकरके - रोदयित्वा
रुलाताहुवा - रोदयत् (त्रि०)
रुलाना - रोदनम् (रोदय).
रुलानेकेलिये - रोदयितुम्
रुलानेलायक - रोदनीयम् (त्रि०)
रुलानेवाला - रोदकः,रोदिन् (त्रि०)
रुलाया - रोदितः (त्रि०)
रूई - कार्पासः, तूलः, पिचुः
रूईदार - तूलकः, कार्पासवत् (त्रि०)
रूखा-रूक्षम्
रूंगटा--रोमम्

वेध-छिद्रम्
वेधडक-अकण्टकम्
वेनजीर-अनुपमम्
वेनमक- निर्लवणम्
वेनमकी-निर्लवणता
वेनसीब-निर्भाग्यः
वेनसीबी-निर्भाग्यता
वेनाप- अपरिमितः
वेपर- अपत्तः
वेपरदा- अनवरोधः
वेपरवाह- अनपेक्षकः
वेपरवाही- अनादरः,अवधीरणा, उपेक्षा, प्रमादः
वेपीर-शठः
वेफ़ायदा- मुधा,वृथा,व्यर्थःमोघं, निरर्थकम्
वेफ़िकिर- निश्चिन्तः
वेफ़िकरी- निश्चिन्तता
वेबाक- निश्शेषः
वेबाकी- निश्शेपता
वेबुनयाद- निर्मूलम्
वेमजा- विस्वादः विरसः
वेमाने- निरर्थकम्
वेमेल- भिन्नम्, असंयुक्तम्

वेमोका- अकाण्डः असाम्प्रतं (अ०) असमयम्
वेमौसिम- अकालम्
वेमौसिमी- अकालिकम्
वेर- बदरी,कर्कन्धुः
वेर- (पेंडी) सौवीरम्
वेरवेर-वारंवारम्
वेरहम-निर्दयः
वेरहमी-निर्दयता
वेराह-विमार्गः
वेरोक - अबाधः
वेल - (रवेत फूल श्रीपदी,वार्षिकी
वेल - लता,वल्ली
वेलजियम - (देश) कुक्कुटः
वेलदार - सुकर्मकरःकार्यरक्षिन् [त्रि०]
वेलना - वेल्लनम्
वेलनी - वेल्लनी
वेलबूटा - चित्रकारता
वेलबूटेदार - सचित्रम्
वेलिहाज - निर्लज्जः
वेवक्त-असमयः
वेवक्तमौत-अपमृत्युः, अकालमृत्युः
वेवकूफ़-जाल्मः, बालिशः, वैधेयः, असमीक्ष्यकारिन् (त्रि०)

रूगटे होना - रोमाञ्चनम्, रोमहर्षणं, पुलनं [पुल १=१० प]
रूट - धातु, मूलं, बीजं
ठना - रोपणम् [रुप ४ प]
रूठा - पराचीनः, पराङ्मुखः
रूप - रूपम् , स्वरूपम्
रूबरू - संमुखम्
रूम - वेश्मन् [न] वासः, स्थानम्
रूमी मस्तगी - पित्तरसः भंगुरः
रूल - [दण्डः] रेखादंडः
रूल - [क़ायदा] अधिकारः नियमः
रूस - रूपः
रूह - आत्मन् [पु] जीवः
रूहानी - आध्यात्मिकम्
रे - अरे [अ)
रेंगना - उदरगमनं, रिंगणं [रिङ्ग१प]
रेगिस्तान - मरुः, मरुस्थलम्
रेगुलर - सनियमम्
रेगुलेटर - नियामकः,शास्तृ (त्रि०)
रेज़ा - वस्त्रखण्डम्
रेट - भावः, मूल्यं मानम्
रेत - वालुः, सिकता
रेतना - परिष्करणम् (परिष्कृ ८ उ)
रेतला-सैकतं, सिकतामयम्

रेती-(औज़ार) व्रश्चनः, पत्रपर्शुः
रेल-अग्निरथं, वन्हियानं, लोहावरणम्
रेवड़ी-(मिठाई) पललम्
रेशम-कौशेयम्, पट्टसूत्रम्
रेशमी-कौशेयम्
रेशा-तन्तुः
रेशादार-तन्तुमत् (त्रि०)
रेहम- (जेर) उल्वम्
रैहिन-(गिरवी) बंधकं, आधिः
रोआं- लोमन् (न०)
रोआंदार- लोमशः
रोक-रोपः, नियमः
रोकड़-प्रस्तुतमुद्रा,
रोकड़िया-कोषाध्यक्षः
रोकना-प्रतिरोधनं, निग्रहःनियमनम् वर्जनम् (वर्ज् १ प०)
रोकरके-रुदित्वा।
रोज़-दिनम्, दिवसम्
रोज़गार-आजीविका,वृत्तिः, जीवनम्
रोज़नामचा-लेखापुस्तकम्, पंजिका
रोज बरोज़- प्रतिदिनम्, प्रत्यहम्
रोजमर्रा-नित्यप्रति (अ०)
रोज़ह-(फ़ाक़ा) उपोषणं, उपवासः
रोज़ाना-दैनिकं, अन्वहम्
रोज़ी-दैनिकवृत्तिः, आजीविका,वृत्तिः

बेवकूफ़ी-मूर्खता
बेवपार-निर्व्यापारः
बेवफ़ा-भक्तिहीनः, अश्रद्धानः
बेवफ़ाई-भक्तिहीनता, अश्रद्धानता
बेवस-अवशः
बेशक-निःशंकं, अवश्यम्
बेशकीमत-बहुमूल्यं, अमूल्यम्
बेशर्म-निर्लज्जः
बेशर्मी-वैधात्यम्
बेशुमार-असंख्यं, अगणितम्
बेसन - बेशनं, हरिमन्थचूर्णम्
बेसुरा - विस्वरः
बेहद - अपरिमितः
बेहया - अपलज्जः
बेहयाई - अपलज्जा, निर्लज्जता
बेहाल - निकृतः, विप्रकृतः
बेहिसाब - अनन्तः, संख्यातीतः
बेहुनर - निष्कलः, अकुशलम्
बेहूदा - अनुचितम्
बेहोश - अचेतनः, निर्बोधः, मूर्छितः
बेहोशहोना - मूर्छनम् (मूर्छ १प०)
बेहोशी - मूर्छा, कश्मलम्
बेहौसला - अधीरः, कातरः
बैंक - जनकोषः
बैंगन - वृन्ताकः, कण्टालु
बैट - (बल्ला) पटः
बैठक आयतनं, आस्थानम्
बैठकरके - आसित्वा
बैठताहुवा - आसीनः
बैठना - आसनम् (आस् २ आ०]
बैठनेकेलिये - आसितुम्
बैठनेलायक - आसितव्यम् (त्रि०)
बैठनेवाला - आवकः
बैठा - आसितः (त्रि०)
बैठा करके - उपवेश्य
बैठाता हुवा - उपविशत् (त्रि०)
बैठाना - उपवेशनम्
बैठाने के लिये - उपवेशितुम्
बैठाने लायक - उपवेशनीयम्
बैठाने वाला - उपवेशकः
बैठाया गया-उपवेशितः (त्रि०)
बैंड - वादित्रगणः
बै - विक्रयः
बैनामा - विक्रयपत्रम्
बैर - शत्रुता
बैरंग - अशोधितः, अप्रदत्तः, सशुल्कम्
बैराग - वैराग्यम्
बैरागिन्-साध्वी, तपस्विनी

रोज़ीना दैनिकवेतनम्
रोटी-रोटिका
रोड़ा-पाषाणखंडः
रोता हुवा- रुदत् (त्रि०)
रोदा-ज्या
रोना-रुदनम्, क्रन्दनम् (क्रन्द् १ प०)
रोनेके लिये-रोदितुम्
रोने लायक— रोदनीयम् (त्रि०)
रोने वाला—रोदकः
रोया—रुदितम् [त्रि०]
रोब—प्रभावः, प्रतापः, तेजस्
रोबदार—तेजस्विन् [त्रि०] ऊर्जस्विन् [त्रि०]
रोम [देश] रुमः, रोमः पट्टचरः
रोशन—उज्ज्वलः
रोशनदान—गवाक्षः
रोशनाई (स्याही) मसी
रोशनी—दीप्तिः प्रकाशः प्रभा
रोशनी करना—दीपनम् [दीप् ४ आ०)
रौ - प्रवाहः, धारा
रौग़न—मेदरागः, रंजनलेपः
रौला - कलहः, विसंवादः, बाग्युद्धम्

ल

ल—इन्द्रः
लकड़फोड़ यष्टिभेदिन् [त्रि०]
लकड़हारा-काष्ठहारः
लक्कड़-दण्डः
लकड़ा-काष्ठम्
लकड़ी-[सूखी] एधस् [न०] समित् [स्त्री०]
लक़ब-पदवी, उपाधिः, उपनामन् (न०]
लक़वा- वातरोगः
लकीर-रेखा, पंक्तिः
लखपति-लक्षाधिपः
लखवार-लक्षकृत्वस् (अ०)
लग-पर्यन्तं, अवधिः
लंगड़ा—खंजः, खोडः, पंगुः, तिर्यञ्च् (त्रि०)
लंगड़ाई- पंगुता
लंगड़ाना-खञ्जनम् [खञ्ज् १ प० वह् १ प०)
लगन-लग्नम्
लगना- लगनं (लग् १ प०)
लगभग-समीपप्रायस् [अ०] प्रायस् (अ०) समीपं समीपम्
लंगर- कूपकः, लांगलम्
लंगरगाह- नौकाबंधनस्थानम्

मश्क-अभ्यासः
मश्क करना-अभ्यसनम् (अभि अस् २प०)
मशक-[चमड़ेकी] खल्लः दृतिः
मशक्कत-परिश्रमः
मशकूर-अनुगृहीतः बाध्यः
मशगूल-कार्यरतः, आसक्तः प्रसितः
मशरक-पूर्वम्
मशवरा-परामर्शः, सम्मतिः
मशवरा-(सिर्फदीका) अपड्क्षीणः
मशवरा करना-परामर्शणम् (परा मृश् १प०)
मशहूर-विख्यातः प्रथितः विश्रुतः
मशहूर-(गुणोंसे) कृतलक्षणः
मशहूरकरना-प्रथनम् [प्रथ् १आ०]
मशाल-उल्कः अंगारं अग्निकुक्कुटः
मशालची-उल्किन् (त्रि०) अंगारधृत् (त्रि०)
मशीन-यंत्रम्
मसखड़ा-विदूषकः, प्रहासकः
मसखड़ापन-प्रहासकता
मस्त-मत्तः, अनुरतः
मस्तगी-अनुरक्तिः
मस्तान-अनुरागिन् (त्रि०)
मस्ती-मदः
मस्ती (नीदकी) तंद्रा, प्रमीला
मस्जूल-कृशः
मसरूफ़-व्यापृतः, उद्यमशीलः
मसलना-मर्दनम्
मसान-श्मशानम्
मसानिया-श्मशानपः
मसाना (पेटमें) मूत्राधारः, वस्तिः
मसाला (सागका) वेशवारः, उपस्करः
मसालेदार-औपस्करः
मसूढ़ा-दन्तमांसम्
मसूर (दाल) मसूरः, मांगल्यामसूरिका
मसें-मुखचर्मन् (न०)
मसौदा-लेखः, निबन्धः
महक-सुगंधः, गंधः
महकदार-सुगंधितः
महकमा-आस्पदम्
महंगा-महर्घः, बहुमूल्यम्
महंगी-दुर्भिक्षम्
महज़-अत्यन्तम्, सर्वथा
मजहब-धर्मः
मजहबी-धार्मिकः
महंत-महत् (पु०) साधुः
महंताई-महत्ता, साधुता
महफूज-परिरक्षितम्
महबूब-प्रियः, प्रेष्ठः
महरा-कहारः
महरी-कहारी

वोट-अनुमोदनम्
व्योछार-धारा वर्षा वृष्टिः शीकरः
व्योरेवार-सविवरणम्
श-मंगलं महादेवः शस्त्रम्
शऊर-विवेकः
शऊरदार-विवेकज्ञः
शक-संदेहः संशयः शंका विकल्पः
शककरना-शङ्कनम् (शङ्क १आ०)
शकर —शर्करा
शकरकंद } खंडकर्णः
शकरखंडी }
शकल-आकार,ः स्वरूपः
शकलछुपाना-आकारगोपनं अवहित्था (आकार-गुप्)
शकी-संशयात्मकः अनिश्चितः
शकीपा-संदिग्धः
शकील-सुंदरः मनोज्ञः रुचिरः
शख़्स-जनः, व्यक्तिः
शख़्सी-व्यक्तिगतम्
शगुन-शकुनम्
शगुनया-शाकुनिकः
शतरंज-(खेल) शारिफलं चतुरंगम्
शतरंजबाज-चातुरंगःशारिफलकः
शतरंजबाजी-चातुरंगता, शारिफलकता

शतरंजी—(दरी) सप्तरंगी
शनाख़्त-प्रत्यभिज्ञा स्मृतिः
शनाख़्तकरना-प्रत्यभिज्ञानम् (प्रति-अभि-ज्ञा ६३०)
शनिवार-शनैश्चरवारः
शफ़ा-चिकित्सा, आरोग्यम्
शफ़ाख़ाना-चिकित्सालयः
शमशेर=करवालः
शमा--प्रदीपः
शमादान--दीपवृक्षः
शर्त--पणः ग्लहः, प्रतिज्ञा
शर्ती-पणिकः ग्लहकः
शरह - व्याख्या, भावः, टीका, भाष्यं, टिप्पणम्
शरहकरना - व्याख्यानम् (वि-आ-ख्या २.प)
शरहबंदी - भावविभागः
शरहवार - यथाभावम्
शराकत - संबंधः, संयोगः
शराकत करना - संयोजनम्
शराटा - रवः
शराफ़त - सज्जनता, सौजन्यम्
शराब - मदिरा, मद्यं, सुरा
शराबख़ाना } (दुकान)शुन्डापानं
शराबगुथा } मद्यस्थानम्

महल्ला=वीथिका, रथ्या
महल्लादार-रथ्यावासिन् (त्रि०)
महमूर (घेराफौजका) आसारः, प्रसारणम्
महमूल-राजस्वं, शुल्कं, करम्
महमूली- शुल्कीयम्
महाकमा-(दफ्तर) कार्यालयम्, लेखागारम्
महाजन—महाजनः, पञ्चजनः
महाजनी—महाजनीनः

१महादेव-शिवः, शर्वः, शंभुः, शङ्करः ईशानः
महापात्र-पूज्यतमः, सत्पात्रः, संस्कार संपादकः, दक्षिणार्हः
२महाब्राह्मण-प्रौढब्राह्मणः, ब्रह्मवित् (पु०) विज्ञानिन् (त्रि०) ब्रह्मानंदः
महाब्राह्मणी-विज्ञात्री, ब्रह्मानन्दा प्रौढब्राह्मणी
महारत-अभ्यासः
महाल-(कुंवेकी) घटीयंत्रम्

नोट— १ देवे द्विजे नरे क्षेत्रे राजनि बहु वस्तुषु ।
दीयमानो महच्छब्दः समुत्कर्षं प्रकाशते ॥ स्मृति

अर्थ—देव, द्विज, पुरुष, क्षेत्र, राजा, बहुत वस्तुवों में दिया हुवा महत् शब्द उत्तमता को प्रकट करता है। जैसे महादेव। द्विजनाम ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य तीनों वर्णोंका है जैसे महाब्राह्मण वसिष्ठादि, महाक्षत्रिय दशरथादि, महावैश्य तुलाधारादि। महा पुरुष, महाक्षेत्र, महाराज, महावस्तु जैसे महाजन, महाधन, महामान्य इत्यादि।

२—ताण्ड्यमहाब्राह्मण नामक ग्रन्थ जो सामवेद के आठ ८ ब्राह्मणों में प्रथम महाब्राह्मण है उसमें लिखा है "अति बृहत्त्वादिदं महाब्राह्मणं प्रौढब्राह्मणं चेत्य भिधीयते" अर्थ— यह बहुत बड़ा होने से महाब्राह्मण और प्रौढब्राह्मण कहा जाता है। यहां महाब्राह्मण और प्रौढब्राह्मण एक दूसरे का पर्याय हैं॥

बृहदारण्यक उपनिषद्के द्वितीयाध्याय प्रथम ब्राह्मणके १८ वें और १९वें मंत्र में महाब्राह्मण शब्द आया है हम यहां केवल १९ वां मंत्र दिखलाते हैं

मन्त्रः—स यथा कुमारो वा महाराजो वा महाब्राह्मणो वातिघ्नीमानन्दस्य गत्वा शयीतैवमेवैष एतच्छेते।

अर्थ—जैसे कुमार (बाल्य अवस्था के कारण) महाराज (निज देश में शत्रु के भय से रहित होकर) महाब्राह्मण (ब्रह्मसाक्षात्कार करने वाला) आनन्द की सुखावस्था को प्राप्त होकर सोवे इसी प्रकार यह आत्मा पुरीततीमें शयन करता

शराबखोर – मद्यपः, सुरापः
शराब खोरी – मद्यपता
शराब भट्ठी – संधानं अभिषवः
शराबी – मद्यपः सुरापः
शराबी सभा – आपानं, पानगोष्ठिका
शरारत-दुष्टता, धूर्त्तता
शरारती-धूर्तः, शठः
शरीक=संमिलितः
शरीकहोना–संमिलनम् (सम्-मिल् १ प.)
शरीफ़-उच्चः, सज्जनः, भद्रपुरुषः, अभिजनः
शरीर-(जिस्म) शरीरम्, देहः
शरीर-(आदमी) दुष्टः, शठः, निकृतः, अनृजुः
शरीह-(वृक्ष) शिरीषः, कपितनः
शर्त-पणः, ग्लहः, प्रतिज्ञा
शर्त लगाना-पणनम् (पण् १०प०)
शर्ती पणिकः, ग्लहकः
शर्बत – शर्करोदकम्
शर्म – लज्जा, व्रीड़ा, ह्री
शर्मबूटी – लज्जालु, मेढनी
शर्माना – ह्रीकरणम्, त्रपणम्, लज्जनम् (ह्रीकृ=उ०। त्रप् १आ०[लज्ज ६प०)
शर्मिंदा – विलक्षः, लज्जितः, संकोचिन् (त्रि०)
शलगम – (गोंगलू) सर्षपकंदम्, पञ्जोष्मातकम्
शशमाही – षाण्मासिकम्
शहतीर – पृष्ठाधारः, छद्याश्रयः, तूला
शहतूत – तूदम्
शहद – मधु, क्षौद्रं
शहदमक्खी-मधुमक्षिका, सरघा
शहर – नगरं, पुरं, पुरी, नगरी, पुर् (स्त्री०)
शहरपनाह – अन्तर्दुर्गः
शहरी – नागरिकं, पौरम्, नागरः
शहवत – कामः
शहवती – कामुकः
शहंशाह-सम्राज् (पु०) सार्वभौमः, चक्रवर्त्तिन् (त्रि०)
शहंशाही – साम्राज्यम्, सार्वभौमता
शहादत – साक्षिता
शहीद – देहत्यागिन् (त्रि०)
शाइस्ता-(आदमी) प्रियंवदः, दक्षिणः सुशीलः, सभ्यः, शिष्टः
शाकी सांशयिकः
शाख – शाखा
शाखदार – शाखिन् (त्रि०)

मौक़ूफ़ – पदच्युतः भुक्ताधिकारः
मौकूफ़ करना – दूरीकरणं(दूरी-कृ ८ उ० पद-च्यु १ प०)
मौकूफ़ी – पदच्युतिः
मौज – तरंगः, संकल्पः विचारः
मौज़ा – (गांव) ग्रामः
मौजूद – उपस्थितं, प्रस्तुतम्
मौजूदगी – उपस्थितता, अभिमुखता विद्यमानता
मौजूदा – वर्त्तमानम्
मौत – मरणं, मृत्युः निधनम्,
मौरी – (मौली) मांगलिकसूत्रम्
मौरूसा पैतृकम्, परंपरीणः, क्रमागतः
मौलवी – पण्डितः
मौलसरी-बकुलः मधुगंधः
मौसिम – ऋतुः
मौसिम वहार – ऋतुवसन्तः
मौसिम गरमी – ऋतुग्रीष्मः
मौसिम बरसात – ऋतुवर्षा
मौसिम शरद – ऋतुशरद् (स्त्री०)
मौसिम सरमा – ऋतुहेमन्तः
मौसिमख़िज़ां--ऋतुशिशिरः
मौहरी – (दाल) मसूरिकः मसूरः
म्याद – अवधिः
म्यादी – आवधिकम्
म्यूनिसिपल्टी–नागरीयं, पौरम्
य – वायुः, यशस् (न०) यज्ञः, गतिः, संयमः
यकदम – एकपदे [अ०]
यकसां – समानम्
यकीन – निश्चयः, श्रद्धा, विभावना
यकीनकरना – निश्चयनम् [निस्-चि ५ उ०]
यकीनन – निश्चयतस्, अवश्यम्
यकीनकरना – अवधारणम् [अव-धृ १० प०]
याकूत – रत्नमणिः
यक्ष – यक्षः
यज्ञ – यज्ञः, यागः, मखः, क्रतुः
यजुर्वेद – यजुर्वेदः
यतीम – अनाथः
यतीमखाना – अनाथालयः
यमराज – यमराजः, धर्मराजः
यस – बाढं[अ०]एवं[अ०]आम्[अ०]
यह – इदम् की गर्दान देखो
यहां – अत्र [अ०]
यहांका – इहत्यः, अत्रत्यः

सामने - संमुखः, साक्षात् [अ०)
समक्षं, प्रत्यक्षम्
साम वेद - सामवेदः
सायत - समयः कालः
सायबान - [बरामदा] अलिंदः
सायर - प्रासंगिकम्
सायर खर्च - [कंटनजंट) प्रासंगिकव्ययम्
साया - छाया
सायादार - छायावत् (त्रि०)
सारंग - सारङ्गः मृगः
सारंगिया - सारंगीवादकः
सारंगी - सारंगी
सारजंट - गणपतिः
सारस - सारसम्
सारसुत - सारस्वतः
सारा - समग्रम्, निखिलं, सर्वम्
साल - वर्षः,
साल गिरह - जन्मोत्सवः, वर्षग्रंथिः
सालतमाम - वर्षसमाप्तिः,
साल ब साल - प्रतिवर्षम्
सालभर - यावद्वर्षम्
साला - श्यालः
सालिम - सम्पूर्णम्, समग्रम्
सालियाना - वार्षिकम्
सालिस=पंच जनः विचारकः
सालिसी-पंचजनता
साली-पत्नीस्वसृ (स्त्री०)
सांवक-[समाअनाज]श्यामाक,नीवार
सांवन-श्रावणः
सांवनी-श्रावणी
सांवला-श्यामः
सांवी-(बराबर) सामकम्, समानम् समम्
सांस-श्वासः, प्राणः असुः
सांसलेना-श्वसनम् (श्वस् २प०)
सास-श्वश्रूः (स्त्री०)
सास ससुर- श्वशुरौ
साहिब-महाशयः महेच्छः
साहिब जादा- कुमारः
साहिबा- महाशया
साहिबान-महाशयवराः.
साहू कार-महाजनः
साहू कारा- महाजनिकः
साहू कारी-महाजनी
सिक-पीड़ितः रुग्णः
सिकत्तर—मंत्रिन् (त्रि०)
सिकलीगर-शस्त्रमार्जकः,असिधावकः
सिक्का-(सीसाधातु) नागं, सीसकम्
सिक्का -[शाही]नाणकं, टंकः

सिकुड़ना-संकुचनम् (आ कुञ्च १५०)
सिकुड़ा- संकुचितः
सिकोड़ना-आकुञ्चनम्(आ-कुञ्च १५०)
सिख -शिष्यः
सिखला करके-शिक्षित्वा
सिखलाता हुवा-शिक्षमाणः(त्रि०)
सिखलाना-शिक्षणम् [शिक्षय]
सिखलाने के लिये शिक्षितुम्
सिखलानें लायक-शिक्षणीयम् [त्रि०]
सिखलाने वाला-शिक्षकः
सिखलाया गया - शिक्षितः[त्रि०]
सिंगल - असहायः अविभक्तः
सिगनल - संकेतः
सिगार - [चुरुट] धूम्रवर्त्तिः
सिंगार-शृंगारः, भूषा
सिंगारना-भूषणम् [भूष् १०प०]
सिंगुलर - एकः, अनन्यः
सिंघाड़ा - शृंगाटकः
सिंचाकरके - सेचयित्वा
सिंचाताहुवा - सेचयत् (त्रि०)
सिंचाना - सेचनम् (सेचय)
सिंचानेके लिये - सेचयितुम्
सिंचानेलायक - सेचनीयम् (त्रि०)
सिंचानेवाला-सेचकः,सेचयितृ(त्रि०)
सिंचायागया - सिक्तः (त्रि०)
सिजदा - साष्टांगप्रणामः
सिट्टा / सिट्टी - (अनाजकी) कणिशं, सस्यमञ्जरी
सिडीशन - राजद्रोहः, संक्षोभः
सिण - शणपर्णी, शीतलः, उमा
सितम - उत्पातः, पीड़ा, भारः
सितार - वीणा, वल्लकी
सितार - (दंडा) प्रवालः
सितारबंध - उपनाहः
सितारा - भाग्यं, तारा
सितारा - (दुमदार) धूम्रकेतुः
सितारी - वैणिकः, वीणावादः
सिंदूर - सिंदूरं, नागसंभवम्
सिंध - (नद) सिंधुनदः
सिण - सणः, त्वक्सारः
सिनेटहाल - शिष्टसभा,सचिवसभा
सिंपल - शुद्धं, अमिश्रः
सिपह - सेना
सिपहगरी - सेनात्वम्
सिपहसालार - सेनापतिः
सिपाही - सैनिकः, सैन्यः, रक्षिन् (त्रि०) योद्धृ (त्रि०)

सेवती-[सफ़ेद गुलाब]तरुणी, शत- का शतपत्री
सेवा-सेवा,शुश्रूषा
सेवाकरना-सेवनम् [सेवृ १ आ० सि १३०)
सेवाल-शैवालः शैवलः
सेविंग-सुरक्षितम्
सेह-(जानवर)शल्यः श्वावित्(पुं०)सेधा
सेह-(बाल) शलली
सेह-(कांटा)शलं शलली
सेहत-स्वास्थ्यम्
सेहरा-पुष्पमाला
सेकंडक्लास-द्वितीयश्रेणी
सेकंडमास्टर-द्वितीयाध्यापकः
सेकंडपरसन-मध्यमपुरुषः
सैकड़ा-शतं १००
सैकड़ों-शतशः [अ०]
सैंतीस-सप्तत्रिंशत् [वि०]
सैंतीसवां-सप्तत्रिंशः
सैंतीसवीं-सप्तत्रिंशी
सैयद-[मुसल्मान]विशिष्ट मुसल्मानः
सैर वायुसेवनार्थ चलना विहारम्
सैलानी-विलासिजनः भ्रमितः
सो-तत्

सो करके-शयित्वा
सोच-विचारः
सोचना-चिन्तनं, ध्यानं,(चिन्त् १० प० । ध्यै १ प०)
सोचा-चिन्तितम् (वि०)
सोजस-शोथः, श्वयथुः
सोटा-काष्ठाग्रम्
सोंठ-शुण्ठिः, महौषधम्
सोता हुवा-शयानः
सोनचंपा-हेमपुष्पकं, चाम्पेयः
सोनहलवा-रसालः
सोना-(धातु) सुवर्णं, काञ्चनं, कनक हाटकम्
सोना-(लेटना) शयनम् (शीङ् २ आ० ष्वप् २ प०)
सोनिया-(सिवारा) हेमान्वेषः
सोने के लिये-शयितुम्
सोने लायक-शयितव्यम्
सोने वाला-शायकः, शयित (वि०
सोफ़याना-मन्दः, साधारणम्
सोमवार-चन्द्रवारः
सोया-सुप्तः (वि०)
सोरठा-(दोहरा) सौराष्ट्रः
सोलह-षोडश (वि०)

सोलहवां – पोडशः
सोलहवीं – पोडशी
सोसाइटी–समाजः, सभा
सोहोंजना – शोभांजनः, शिग्रुः
सौ – शतम् १००
सौगंध – शपथं, सौगंधः
सौगात – उपायनम्
सौगाती – औपायिनम्
सौज़ाक – मूत्रकृच्छ्रः
सौतरह – शतधा (अ०)
सौतिन – सपत्नी
सौतेलयाडाह – सपत्नीभावः
सौतेलापुत्र – सपत्नीसुतः
सौतेलीमां – विमातृ (स्त्री०)
सौतेलाभाई – विभ्रातृ (पु०)
सौदा – वस्तु, पण्यं, भाण्डम्
सौदा – (बीमारी) वातः
सौदागर – वणिजः,व्यवसायिन्(त्रि०)
सौदागरी – वाणिज्यम्, व्यवसायः
सौदागरीकरना – व्यवसानम् (वि अव-सो ४ प०)
सौंपना – समर्पणम् (सम्-अर्प १प०)
सौंफ़ – शतपुष्पा, सितच्छत्रा
सौवार – शतकृत्वस् (अ०)
सौसेखरीदा – क्रनकम्
सौसेजियादा – परःशतम्
सौसौ – शतशः (अ०)
स्कीम – प्रणालिका
स्टडी – अभ्यासः, विमर्शः
स्टांप – राजपत्रम्, मुद्राङ्कितम्
स्टाफ़ – गणः, समुदायः, अधिकारि-गणः, वर्गः
स्टीम – वाष्पः
स्टीमर – पोतः
स्टील – तीक्ष्णायसम्
स्ट्रीट – प्रतोली, रथ्या, वीथिः
स्टूल – पादपीठं, पादासनम्
स्टेज – रंगभूमिः
स्टेशन – प्रयाणगृहं,आस्पदं,स्थानम्
स्टोर – सञ्चयः, संग्रहः, कोषः
स्टोरकीपर – संग्राहकः
स्टोररूम – संग्रहस्थानम्
स्पीक – आलापः, वचनम्
स्पीरिट – चेतस् (न०) वीर्य,उत्साहः
स्प्रिंग – उपशाखम्
स्यापा – अत्यनुशोकः, महाप्रलापः
स्याह – (रंग) श्यामः, कृष्णः
स्याहा – (बहीखाता) पंजिका
स्याही – मसी, पत्राञ्जनम्

स्यूइंगमैशीन - सीवनयन्त्रम्
स्पेन - (मुल्क) साम्पदेशः
स्लेट - पाषाणपट्टिका
स्लो - मन्दम्
स्वाद - स्वादः, रसः
स्वादलेना - स्वादनम् (स्वाद्१प०)
स्वे - (साग) सितीवारः, कुरुटी

ह

ह - प्रसिद्धम्, जलं,मंगलं,शून्यं,शिवः
हक - स्वत्वम्
हक्दार - स्वत्वाधिकारिन् (त्रि०)
हकावका - चकितः
हक़ीकत - वास्तवः, दशा
हकीकतमें - वास्तवतस्
हकीकी - वास्तविकः, सत्यम्
हकीम - वैद्यः, भिषज्(पु०)
हकीर - तुच्छं, क्षुद्रम्
हकूमत - अधिकारः, शासनम्
हगना - हंगनम् (हंग् १ आ०)
हगाना - हंगनम् (हंगय)
हंगामा - जनसंबाधः
हजम - जीर्णम्
हजमकरना - जरणम् (जृ१०प०)
हजमहोना - जरणम् (जृ(जीर)४प०)
हजरत - श्रीमत् [त्रि०]
हज्जाम - नापितः
हजामत - क्षौरम्
हजार - सहस्रं १०००
हजारतरह - सहस्रधा [अ०]
हजारवार - सहस्रकृत्वस् [अ०]
हजारहजार - सहस्रशः [अ०]
हजारा - सहस्रकः [त्रि०]
हजारी - सहस्रका
हजारों-सहस्रशः (अ०)
हजूर - तत्रभवत् [त्रि०]
हटकना - वर्जनम् (वर्ज् १प०)
हंटर - कशा
हटताल - हट्टरोधः
हटना - निवर्तनं [नि-वृत्१आ०]
हटाना - निवर्त्तनं, परिहारणम्, प्रतिसारणम् (प्रति-सारय्) [नि-वर्तय]
हट्टाकट्टा - हृष्टपुष्टांगः
हट्टी - विपणिः, पण्यवीथिका
हठ - आग्रहः, हठः
हठकरना - आग्रहणम् [आ-ग्रह् ६ उ० । हठ् १ प०]
हठी - हठिन् (त्रि०)
हड़पना - आत्मसात्करण (आत्मसात् कृ ८ उं०)
हड्डी - अस्थि (न०)
हड्डीला - अस्थिमयम्

हतक – मानहानिः, अपमानम्
हत्ताकि–यावत्
हत्या – हत्या
हत्यारा – घातकः
हथकड़ी – निगडम्
हथनी – हस्तिनी, धेनुका, वशा.
हथलेवा – पाणिग्रहणम्
हथियार – शस्त्रं, आयुधम्
हथेली – करतलम्
हथौड़ा – उद्घातः
हथौड़ी – मुद्गरः
हद—अवधिः, पर्यन्तः, सीमा, संस्था धारणा
हदबंदी – अवधिः
हनुमान – हनुमत् (पु) मारुतिः
हफ्ता—सप्ताहम्
हफ्तेवार–साप्ताहिकम्
हबशी—श्याममानवः
हब्स–कारावासः, उष्णतातिशयः
हम–अस्मद् की गर्दान देखो
हमअंदाज़–समपरिमाणम्
हमकदर–समगौरवम्
हमचाल–सध्र यञ्च्
हमजमायत } सतीर्थ्यः
हमजमायती } सतीर्थ्यः
हमनाम–एकसंज्ञकः
हमबिस्तरा–मैथुनम्, भोगः
हमल–गर्भः
हमला–आक्रमणम्, आक्रान्तिः
हमलाकरना–आक्रमणम् (आ-क्रम् १ प
हम वतन–स्वदेशिन् (त्रि०)
हमवतनी=स्वदेशीयः
हमवारिस–समांशहारिन् (त्रि०)
हमसर–समपदस्थः
हमसाया–प्रतिवेशिन् (त्रि०)
हम्माम–स्नानालयम्
हमारा–आस्माकः, अस्मदीयः आस्माकीनः
हमारे जैसा–अस्मादृशः
हमारे जैसी–अस्मादृशी
हमेशा–सदा (अ०) नित्यम्
हमेशा कभी–सदा कदाचित्
हया –लज्जा
हयात–जीवनम्
हयादार–लज्जान्वितः
हरएक–प्रत्येकम् (अ०)
हरकत–चेष्टा, गतिः
हरकरके - हृत्वा
हरकारा–दूतः, संदेशहरः
हरकोई–प्रत्येकम्
हरख–हर्षः
हरखना–हर्षणम् (हृष् १ प०)
हर्गिज़–कदापि (अ०)
हरघड़ी – प्रतिक्षणम्

हाईस्कूल=उच्चविद्यालयः
हांक–नादः, गर्जः, नर्दः
हांकना–नोदनम्(नुद,६उ०। चुद ६ उ
हांकमारना – नर्दनम् [नर्द् १प०]
हाकिम – शासकः
हाकी – [खेल] लगुडक्रीडा
हाजत – आवश्यकता
हाजिम – पाचकः
हाजिमा – पाचनम्
हाजिर – उपस्थितः
हाजिरजवाब – रसिकोत्तरम्
हाजिरजवाबी – रसिकोत्तरता
हाजिरजमानत – दर्शप्रतिभूः[पु०]
हाजिर व नाजर – सर्वव्यापकम्
हाजिरबाश – नियमितः, नैत्यकः
हाजिरबाशी – नियमितिः
हाजिरी – उपस्थितिः
हांजी – बाढम् [अ०]
हाड़ – [महीना] आषाढः
हाड़ – [हड्डी] अस्थि,[न०]कीनाशम्
हांडी – भाण्डम्, पात्रं, स्थाली
हाथ – हस्तः, करः, पाणिः
हाथजोड़ना – अंजलीकरणम् [अंजली कृ८उ०]
हाथदेना-हस्तदानम् [हस्त-दा१-३प०
हाथधोना – हस्तप्रक्षालनम् [हस्त-प्र क्षल् १० प०]
हाथपकड़ना-हस्तग्रहणम् [हस्त-ग्रह् ६ उ०]
हाथपंखा – हस्तव्यजनम्
हाथपसारना – हस्तप्रसारणं[हस्त-प्र सारय्]
हाथफूल – हस्तपुष्पम्
हाथफेरना–हस्तचालनं(हस्त–चालय)
हाथमिलाना–हस्तसंयोगः (हस्त संयुज् १० प)
हाथी=हस्तिन् (त्रि०)द्विपः कुञ्जरः,गजः
हाथी (मतवाला) मदोत्कटः मदकलः
हाथी (बच्चा) कलभः करिशावकः
हाथी (काठका) डित्थः
हाथीभर–हास्तिनं, हास्तिद्वयसम्
हाथोहाथ–हस्ताहस्ति (अ०]
हादसा–दुर्घटना
हादह–न्यूनकोणः
हांफना - प्रश्वसनम् (प्रश्वस् २ प०)
हाफ़िज़ - संरक्षकः
हाफ़िज़ा–स्मरणशक्तिः
हामला–अन्तर्वत्नी
हामीभरना स्वीकरणम् (स्वीकृ८उ०)
हाय–हाहा (अ०) हा (अ०)
हायहाय–हाहाकारः

हार (कण्ठका) हारः
हार (एकलड़ा) एकावलिः एकयष्टिका
हार (दोलड़ा) द्वियष्टिका
हार (तीनलड़ा) त्रियष्टिका
हार (शिकस्त) पराजयः, पराभवः
हारना–पराजयनम् (परा–जि १ आ)
हारमोनिका–जलतरङ्गम्
हारमोनियम–गुप्तवाद्यं, अतन्त्रम्
हाल–समाचारः, वर्दतः वृत्तांतः
हाल (बड़ाकमरा) महाशाला
हाल (मौजूदहज़माना) वर्त्तमानकालः
हालत–अवस्था, दशा
हालत–वृत्तजातम्
हालदुहाई–विक्रोशः
हालेंड–सैनिकः
हावभाव - कटाक्षः, हावः
हावी–अत्यधिकः
हाशिया–प्रांतः उपकण्ठः एकदेशः
हाशिया (किताब] टिप्पणी
हाशिया चढ़ाना–टिप्पणीकरणम्
(टिप्पणी कृ८ उ)
हासपीटल–(हस्पताल) रुग्णागारं, आतुरशाला
हासिद–ईर्ष्यालुः मत्सरिन् [त्रि०]
हासिल - प्राप्तम् लब्धम्
हासिलकरना - लभनं लभ् १आ०)
हिकमत–तत्त्वज्ञानं, वैद्यकं चिकित्सा शिल्पम्
हिकमती–तत्त्वज्ञानं (त्रि०)
हिकारत – तिरस्कारः अवज्ञा
हिंगुल – हिंगुलः मणिरागः
हिचकना–अभिशङ्कनम्
(अभि·शंक् १आ·)
हिचकाना–अभिशङ्कनम्(अभि·शङ्कय)
हिचकी–हिक्का
हिचकीलिना–हिक्कनम् (हिक् १आ०)
हिजमैजिस्टी–(हजूर)प्रतापःराजश्रीः
हिज्जे–वर्णविन्यासः, विन्यासः
हिज्जे करना–विन्यसनम्
(विं·नि·अस् ४प०)
हिंडोला–दोला,हिंदोला
हिंदवाना–(तरबूज) कालिंगम्, बीजपूरकम्
हिंदसा–अङ्कम्
हिदायत–शिक्षा,आम्नायः
हिंदी–आर्यभाषा
हिंदु–आर्यः
हिंदुस्तान–भारतवर्षम् कुमारिका नाभिवर्षम् कर्मभूमिः
हिनहिनाना–हेषणम्(हेष् १आ०)
हिनाई–कपिशम् पिङ्गलम्

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११	१२	विमशर्नं	त्रिनर्शनम्
१२	३	गडरिया	(गडरिया)
,,	६	अट्टा	अट्टौ
,,	६	वालक	(बालक)
,,	६	अ.ग्नगभः	अग्निगर्भः
,,	२१	आदव	आदाव
१३	६	निशिथम्	निशीथम्
१४	१८	अयाकरना	आयाकरना
,,	६	औज़ार	(औज़ार)
,,	२४	शस्त्राम्	शस्त्रम्
१५	६	खेल	(खेल)
,,	३२	व्यूः	व्यूहः
,,	६	रंग	(रंग)
,,	२५	निःष्वस	निःश्वस
,,	२७	अः	आः
१७	२२	इंज्ञा	इज्ञा
१८	२०	परितोपिकम्	पारितोपिकम्
,,	१०	लङ्घः	सङ्घः
१८	१७	ककोणिः	कफोणिः
१९	१०	वद्यक	वैद्यक
२०	२०	टङ्क्यु	टङ्कय
२२	१	उजाड़	उजाड़ू
२४	१३	उस	उंस
२४	१०	बन्धरम्	बन्धुरम्
२५	१३	उष्ट्रः	उष्ट्रः
२६	२३	आकंचनं	आकुंचनं
२८	९	शाकरा	शर्करा
२९	११	आदरणम्	आदरणीयम्
३१	१२	ख्रद्र	क्षुद्र